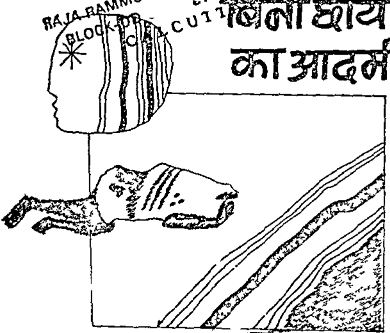
बिना छाया का आदमी



योगेश गुप्त

पचशील प्रकाशन, जयपुर

ISBN 81—7056—046—2

प्रकाशक पचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, जयपुर 302003

सस्करण प्रथम, 1989

मूल्य साठ रुपये

मुद्रक सोहन प्रिंटस, शाहदरा, दिल्ली-32

BINA CHHAYA KA ADMI (Novel)
By Yogesh Gupta Rs 60 00

अतिरिक्त

आरम्भिक युवावस्था मे किया गया कोई भी अपराध किसी भी सचेत सवेदनशील व्यक्ति के जीवन को हमेशा के लिए धुध से भर देता है। जीवन के सामान्य क्षणो को वह सामान्यतया नही जी पाता। किसी भी श्रेणी का सौन्दय उसके लिए मिट्टी हो जाता है और सामाजिक सम्बन्धो को निभाना उसके लिए ऐसा ही होता है जैसे किसी श्राप को जीना।

लेकिन एक दिन जब वह एक ऐसे व्यक्ति से मिलता है जो उसे इस श्राप से मुक्ति दिला सकता है, जो उसके सौन्दय-बोध को पुनर्जीवित करने मे समथ होता है, उसमें जीने की एक ललक पैदा करता है, तब वह आश्चय के साथ अनुभव करता है कि उसकी अपराध भावना अनुपात मे और त्रास देनेवाली हो गई है।

सौन्दय बोध और अपराध-भावना का यह सघष और इससे उभरने वाले अनेक सवाल ही इस उपन्यास के प्राण और शरीर हैं। मैंने तो केवल इन दोनो मे सम्यक भाव बनाये रखने की कोशिश की है—सफल या असफल।

85, शिवाखण्ड
विश्वकर्मानगर
शाहदरा, दिल्ली 32

—योगेश गुप्त

बिना छाया का आदमी

अपराध-बोध

1

उसे मालूम है इसका परिणाम अच्छा नही होगा। फिर भी वह खिचा चला जा रहा है। ऐसा क्यो होता है उसे मालूम है। मालूम होता तो भी वह शायद वापिस नही लौट सकता। उसे अपनी लाचारी पर अकुलाहट होती है। पर अदर की दुविधा और द्वन्द्व उसे उसके पास जाने से रोक नही पाता। पैदल, बसें बदलता हुआ, कभी कभी स्कूटर पर वह उस सुखद सान्निध्य के मोह मे भागा चला जाता है।

आज भी वह वही जा रहा है।

अगस्त का महीना। सुबह धुआधार बारिश बरसी है। इस समय भी हल्की बूदें पड रही हैं। सडक पर कीचड है। चप्पलो को एडियो से दबाकर सवारता, छीटो से बचाता वह एक बस से उतरा है और दूसरी के लिए स्टैड पर खडा हो गया है। नीचे चारो तरफ भीड है और ऊपर आसमान मे बादल ही बादल हैं। जमीन की चिपचिपाहट मन खराब कर रही है, बादल शरीर पर पख उगा रहे हैं और बस का न आना दिमाग मे उद्वेग को पिघला रहा है। उसके साथ हर मौसम मे यही होता है। शरीर और मन का तालमेल कभी नही बैठता। और इसलिए

वह उससे एक साल से मिल रहा है।

दिल्ली शहर की कई खूबिया हैं। हर पोश कालोनी के नीचे एक गन्दी बस्ती है। घूमते हुए, छोटे गाव, कस्बे और शहर का मजा एक साथ लिया जा सकता है। एक ही आदमी मे ग्रामीण भाव-बोध और महानगरीय चेतना की झलक समय-समय पर मिलती है। आधा घटे का सफर बस मे करने पर आपका मन दोबारा नहाने को कर सकता है। दिन मे दस-बीस आदमियो से राजनीति पर बहस हो जाये तो शाम को आप दस बीस साल की अपनी राजनीतिक सोच के प्रति अनिश्चित हो उठने को बाध्य हो सकते

हैं। स्त्री को लेकर यहा 'स्कैण्डल' ऐसे उठते हैं जैसे सहस्रधारा मे झाग। और सबसे बडी खूबी दिल्ली शहर की यह है कि इसमे हरियाली बहुत है। कुछ सडकें तो हरी साडी म लिपटी पडी औरत जैसी लगती हैं। ऐमी एक सडक पर उसका घर है। यानी एक कोठी म उसका घर है, वह रहती है अपने परिवार के साथ।

नाम है उसका प्रतिभा दत्त। खुद उत्तर प्रदेश की है पर शादी की है एक बगाली स।

और दिल्ली की सबसे बडी खूबी यह है कि यहा बस तब तक नही आती जब तक जानेवाले मे आन्तिक अनिच्छा पैदा न हो जाए। पर इस जगह जाने के लिए अनिच्छा पैदा हो ही नही सकती। इसलिए वह अनिश्चित काल तक प्रतीक्षा करने को तैयार है। पर उस डर है कि बारिश यदि फिर शुरू हो गई तो वह भीग जायेगा और भीगे कपडो मे वहा जाना सभव नही होगा। वह सिकुडा हुआ एक पेड के नाचे खडा है। पेड पर स बूदें टपक रही हैं। सुधीर सोच रहा है

एक साल हो गया प्रतिभा से मिलते हुए, पर

वह उस दिन की बात याद करके हल्का सा हस दिया

सुबह के ग्यारह बजे सुधीर को उसके घर पहुचना था। कुछ लेट हो गया था। बस से उतरकर घर की तरफ लपका। नजर उस मोड पर थी जो उसके घर की तरफ मुडता था। गर्मी का मौसम, ग्यारह बजे की धूप थी। उगलिया झुलसी जा रही थी। अचानक उसे महसूस हुआ कि पैर के अगूठे म कुछ हुआ है। ध्यान मोड पर मे हटाकर उसने नीचे देखा। देख कर भौंचक रह गया। अगूठे पर से एक मोटी पापडी सडक पर पडे तार ने छील दी थी। और अब पूरी चप्पल पर पैर के नीचे लहू ही लहू था। पर को चप्पल से बाहर निकालकर वह पल भर देखता रहा। फिर सामने नजर डालकर उसने परिचित मोड को देखा। अब और देर हो जाएगी। ऐसी हालत म कैसे वहा जाए ? ये दोनो वाक्य एक साथ उसके दिमाग म उभर और वह तेजी से अगूठा सगवाने मे लग गया। पास बैठे पानवाले ने मदद की। साथ मे सलाह भी दी थी जग लगा तार है बाबूजी, इजैक्शन लगवा लेना।'

कोई पन्द्रह मिनट लगे उसे इस काबिल होते कि वहा जा सके। अगूठा चिमचिस कर रहा था। पर उससे भी ज्यादा बचैनी मन मे थी। उसे लग रहा था कि उसने जिन्दगी के बेहतरीन पन्द्रह मिनट खो दिए है।

यह सब क्या है? कसे होता है? वह सोच-सोच कर खुद चकित होता रहा है। क्या लगती है प्रतिभा उसकी? कोई सबध नही किसी सबध के होने की गुजायश भी नही। शायद आशा भी नही। ठीक है, उसके मन मे सुधीर के प्रति सहानुभूति है, उसे कृतज्ञ होना चाहिए, पर कृतज्ञता इतनी अदम्य तो नही होती। यह सच है, वह बहुत सुदर है पर सौंदर्य तो किशोर चेतना पर हावी होता है। फिर दोनो कभी भी सौंदय के विषय म तो बात नही करते। उसने शायद ही कभी अलग से उसके सौदय की तारीफ की हो। फिर यह क्या है? यह कैसा बधन है? यह उसका जड मानस किस गर्मी मे पिघला जा रहा है? यह प्रतिभा दत्त उसके लिए क्या है?

बारिश और बस दोनो साथ ही आइ। सुधीर भीगने से तो बच गया। दौडकर बस मे चढती हुई भीड की ठोकरो कोहनियो से नही बच सका। दोना पैर औरो के जूतो के कीचड से सन गए। कपडो की क्रीज कुचली जाकर टूट गई। सिर के तहाये हुए बाल बिखर कर फैल गए। पर जो भी हुआ हो, बस उसे मिल गई और यह आशा कि वह ठीक वक्त पर पहुच जाएगा, उसके मन को सतुलित करने लगी। एक कोने म पीठ दीवार से लगाकर वह चुपचाप खडा हो गया।

बस के बाहर तेज बारिश हो रही है। आधा घण्टे का सफर है देखा जाएगा।

एक दिन और लुढक गया, हर शाम यह वाक्य उसके दिमाग के किसी न किसी कोने से उभरता है और वह हस पडता है। कभी उसे यह हसी बडी सार्थक लगती है और कभी एकदम हास्यास्पद, शुद्ध मूखता। पर आज उस कोन म खडे सुधीर के अन्दर यह वाक्य शाम से पहले ही उठकर खडा हो गया। वाक्य को उसने थोडा ठीक किया—'एक दिन और लुढक रहा है। शाम तक लुढक जाएगा। कोई रोक नही सकता।' उसने सोचा और हसी का एक छोटा सा टुकडा उसके अन्दर चक्र मे घूमने लगा। हसी बाहर न आए तो मन को घूमते शीशे के टुकडो की तरह काटती है। पर अकेला

[आदमी हसे कैसे ? प्रतिभा होती तो 'लुढ़क गया' पर हसते-हसते लोट पोट हो जाती। वह हसती बहुत है। हसने का उसे बहुत रोग है। बहुत मीठी हसती है। उसे हसने के लिए बात छाटनी नही पड़ती। किसी बात पर हस देगी। कोई आदमी छत से कूद कर जान द दे, तो उसकी सूचना पर हस देगी। कहेगी जान देने का यह तरीका गलत है, आदमी को ' सुधीर बात काट देगा। कहेगा, 'खबर दी है तरीका नही पूछा।' तो हसते-हसते कहेगी, 'तुम तो ऐसे मुह बना रहे हो जसे तुम्हें इसी तरीके स मरना हो।' न चाहते हुए भी सुधीर को उसकी बातो पर हसी आ ही जाती है। शायद उसके बात कहने के तरीके पर।

तो एक दिन और लुढक रहा है। उसने दोहराया है। मन ही मन।

कितने दिन लुढक गए। चालीस साल म कितने दिन होते हैं? कौन हिसाब लगाए। हिसाब उसका वैसे ही कमजोर है।

बारिश रुक गई। नही, रुकी नही। इधर शायद हुई ही नही। सड़कें सूखी पडी हैं। चलो, अच्छा है, बच गए। क्या मजेदार बात है, उधर कितनी धुआधार बारिश बरसी और इधर

इधर लुढकता हुआ दिन कीचड मे नही सनेगा, सोच कर वह खिलखिलाकर हस पडता है, अकेला ही।

पाच दिन से प्रतिभा थी नही शहर मे। कल ही वापिस आई है। पाच दिन सुधीर का मन शुद्ध विषाद मे रहा है। कल से कुछ बादल छटे हैं। सुधीर जानता है प्रतिभा शहर म होती है तो उसका लघु मस्तिष्क ठीक काम करता है। नही होती तो उस पर शाम के रगो की पतरिया चढी रहती हैं। वह यह भी जानता है कि आने के भी कई दिन बाद ये रग घुल घुल कर साफ होते हैं और वह सहज इसान बन पाता है। वसे मानसिक रूप से सहज वह कम ही होता है। एक तनाव म जीना उसका स्वभाव है, शायद जरूरत भी। जरूरत इसलिए कि बिखरी हुई चेतना सिर्फ तनाव क कारण ही जसे तसे जुडी पडी रह सकती है। प्रतिभा ने उसके अदर की फ्रेंजी को बढाया है। पर अब यह फ्रेंजी सुधीर की जिंदगी का रस है। पहले जो उद्वेग उसके शरीर को जलाया करते थे आज मिठास दत है।

सुधीर को हसी आती है। वह पहला दिन याद आता है जब प्रतिभा मिली थी।

छोडो क्या याद करना है। मन खराब होता है।

अपना छोटापन याद करना किसे अच्छा लगता है।

हा था तो छोटापन ही।

किसी को पूरी तरह जाने बिना उसके बारे मे हल्की राय बनाना अपने ही अन्दर का छोटापन होता है।

वह तो होता ही है।

होगा। हो गया। उसका काफी पश्चाताप वह कर चुका है। खुद को उसी पश्चात्ताप मे उसने बहुत छोटा किया है। पर आज भी उसके मन म उस बात की करक तो है। अब क्या करे ? जो हो गया उसे अनहुआ तो किया नही जा सकता हा, यह तो है, जो हो जाता है, उसे भूलना तक सभव नही होता, अनहुआ कर सकना तो बहुत दूर की बात है, सोचना भी मूखता है।

पर प्रतिभा का सोचने का तरीका गलत है। वह कहती है—जो हो गया, हो गया। होते ही अनहुआ तो वह खुद-ब-खुद हो जाता है। इसके बारे में सोचना क्या ? आगे कुछ और नही करना क्या ? वह रोज ही तो कहती है—'जो हो गया, अनहुआ हो गया। आगे बढो।'

सुधीर ने एक दिन पूछा था, "तुम इस कदर खूबसूरत हो, अपनी खूबसूरती को कायस क्यो नही हो ?"

वह हस दी थी, कहा था, "उस काम के लिए तुम रहते तो हो साथ।"

"क्या मतलब।"

"बता तो दिया, मैं जानती हू, मैं खूबसूरत हू।"

"तो ?'

'कायस वह होते हैं जो नही होते। समझे।"

'नही, नही समझा।"

"और समझोगे भी नही। जरा गहरी बात है। तुम्हारे बस की नही है। और यह बात सिफ खूबसूरती के ही होने पर लागू नही होती समझे ? पर छोडो, तुम उडद की दाल के भाव बताओ। क्या है

आजकल ?"

कहकर वह हस दी थी और बहुत देर निर्बाध हसती रही थी।

वह ऐसी ही है। चुटकी लेगी। अचानक बहुत गम्भीर हो जाएगी फिर सामने बैठे आदमी को नकार कर अस्तित्व इतना दूर कर लेगी कि छूना तो दूर पूरा स्वरूप देखना भी मुश्किल हो जाएगा। तब सहानुभूति म कोई पागलपन की बात करेगी और सहज सामान्य होने की कोशिश करेगी। पर एक बार दूर जाकर उसके लिए भी लौटना मुश्किल होता है और तब उसके चेहरे पर दो रग अलग-अलग चमकने लगते हैं। अपनी इस हालत को वह देर तक बर्दाश्त नही कर पाती। कुछ देर इधर उधर की बातें लुढका कर वह अपने घर की तरफ निकलती है। इस मन स्थिति मे वह बेहद खूबसूरत लगती है। उसकी बातें बहुत बामानी हो जाती हैं।

एक दिन बोली थी, 'तुम्हें मालूम है सुधीर, डूबने से पहले सूरज के चारो तरफ ये रग क्यो बिखरते हैं ?"

"नही, मुझे नही मालूम।"

"हा, तुम्ह क्यो मालूम होगा। तुम्हारे डूबने का वक्त अभी आया भी कहा है।"

"तुम्हारा आ गया।

"ये सुधीर, उसकी दिन भर की रग बिरगी स्मृतिया होती है।"

"होती होगी। मेरी बात का जवाब दो।'

पल भर चुप रह कर वह पूछती, "कौन-सी बात ?,

पर चाहकर भी सुधीर प्रतिभा के डूबने की कल्पना को प्रश्न बनाकर उसी के सामने न रख पाता। धीमे से कहता, 'तुम्हारे मन मे क्या है प्रतिभा, कभी बताओगी ?"

तो वह हस पडती कहती 'मेरे मन म कुछ भी हो, यह तय है कि तुम नही हो। मालूम है ?'

है मालूम। मैं पूछ रहा हू, तुम्ह कोई दुख है ?"

सीधे प्रश्नो से वह बहुत चिढती है। बोली, 'है। तुमसे मिलना पडता है यही मेरा सबस बडा दु ख है।"

प्रतिभा की यही विशेषता है। मन के नही शरीर के रग भी इतनी

तेजी से बदलते हैं कि वाकई डूबते सूरज का ख्याल आता है। मन उसका खरगोश की तरह दिशा बदल-बदल कर भागता है और शरीर लगता है जस खुली हवा मे न पलकर अलग-अलग कमिकल्स से भरे अलग-अलग टबो मे रखा जाकर अपना अस्तित्व जसे तसे बनाए हुए है।

देखो, आज किस रग मे मिलती है।

2

तीन दिन पहले की बात है।

सुबह का वक्त। सुधीर की आख खुली खुली है। दिमाग अभी तक गुनगुना है। रात उसे बहुत कम नीद आई है। न जाने वह कहा कहा घूमता रहा। प्रतिभा के शहर मे न रहने पर वह रात को भटकता बहुत है। प्रतिभा मुसल्सल साथ रहती है। और सारी रात की भटकन सुबह तक शरीर को तोड़कर रख देती है। मारे बदन म दद है। आवारगी का हैंगओवर दारू के हैंगओवर से ज्यादा गुनूदगी पैदा करता है। इस तन्द्रा का अपना मजा है। कोई इसे तोडन की कोशिश करता है तो गुस्सा आता है।

वह खाट पर उठकर बैठ गया है और तन्द्रा की गाठो के खुलने का मजा ले रहा है। रात की यात्राओ के छोटे छोटे टुकडे चेतना स टूट-टूट कर गिर रहे है। खिडकी से बाहर हवा का मौसम दीख रहा है। खुशनुमा है। गहरे घूसर बादल पूरे आकाश को ढके हैं। बूदें शायद नही बरस रही। मौसम तन्द्रा को गाढा कर रहा है।

पत्नी ने सुबह का अखबार लाकर सामने रख दिया है। वह जानती है सुधीर की तन्द्रा तोडने का एकमात्र तरीका अखबार है। अखबार वह प्रेम-पत्र की तरह पढता है। और यह सच है कि दूसरा प्रेम पत्र ही पहले प्रेम-पत्र के अक्षरो को धुधला कर सकता है। सुधीर भी जानता है कि अखबार उसकी तन्द्रा तोड देता है। पर उसका तर्क अलग है। वह मानता है कि व्यक्तिगत भ्रम सामाजिक भ्रम म घुलकर ही रूप खोते हैं। बहुत

मे व्यक्तियो को भ्रामक स्थिति से उबारना हो तो एक बडा सा सामाजिक भ्रम पैश कर दो। बस, सब ठीक हो जाएगा। ये सब नीति, धर्म और आदर्श विचारधाराए और है क्या उसे अपने इस तर्क पर कभी-कभी हसी भी आती है पर अपनी इस धारणा को ध्वस्त कर सकने योग्य तर्क वह कभी इकट्ठे नही कर पाया। सीधे अनुभव मे से भी यही बात सिद्ध होती है। इतिहास इस धारणा को झुठलाता दीखता है पर इतिहास का सत्य

उसने अखबार पढना शुरू कर दिया।

दो मिनट बाद पत्नी चाय का गिलास उसके हाथ म पकडा गई।

गिलास मे से पहला घूट भरते हुए उसने जाती हुई पत्नी की तरफ देखा। सिर्फ झम्पर और पेटीकोट मे से उसके शरीर के कटाव झलक दे रहे हैं। बहुधा सुधीर को यह अच्छा नही लगता। रमा के शरीर ने अभी अनुपात नही खोया है। जैसी ब्याह के वक्त थी वैसी ही आज है। तीन बच्चो की मा है पर अभी चाहे दोबारा ब्याह कर ले। सोचकर उसे हसी आई। साथ ही रमा पर प्यार भी आया। चाय का दूसरा घूट भारा और साथ ही पत्नी को पुकार उठा, "रमा-आ।'

रमा फिर कमरे म दीखी। पूछा, 'क्या है ? चीनी कम है ?"

"नही ठीक है। और यह तुमने धोती क्यो नही पहन रखी ?"

रमा ने पति की तरफ देखा फिर हसकर कहा 'शुक्र है। आज तुमने मेरी तरफ देखा तो सही।

'जो पूछ रहा हू उसका जवाब दो।'

'दूसरी बार आऊगी तो धोती पहनकर आऊगी।"

'क्या मतलब ?

"मतलब यह कि जब एक घटे बाद दूसरी चाय लोगे तब तक धोती किसी कदर सूख जाएगी और मैं पहनकर आपके सामने हाजिर हो जाऊगी। जाऊ ?'

बहुत मुहावरेदार भाषा बोलने लगी हो।

लेखक की पत्नी हू खेल थोडे ही है।'

"तुम्हारे पास दूसरी धोती नही है ?

"है क्या नही। ट्रक भरा पड़ा है। पर कौन निकाले ? मैं बहुत आलसी हू ना। चलू, स्टोव खाली जल रहा है।"

वह चली गई। सुधीर बहुत देर बैठा सोचता रहा। पता नही क्या-क्या। फिर अचानक जोर से हस पड़ा। अखबार पढने को मन नही किया। खबरें आती भी क्या ह ? कैसे एक नेता ने दूसरे नेता की टाग खीची और कैसे वह नेता गिरते गिरते भी हमलावर को टगडी मार गया। वह भी गिर गया सभी साले गिरे पडे है और सब समझते है कि पर कम से कम अपराध समाचार तो पढ ही लेने चाहिए। उनमे मजा आता है। पर

उसने फिर पुकारा, "रमा ऽ !"

"अब क्या है ?" रमा ने दूसरे कमरे से ही कहा।

"यहां आओ।"

रमा आई तो धोती पहने थी। शायद गीली ही पहन आई। पर सुधीर के दिमाग मे अब वह बात थी ही नही। उसने रमा के दीखत ही कहा।

"बैठो यहा आकर, तुम्हें एक कहानी सुनाता हू।"

"अरे, कहानी सुनने का वक्त है यह। खाना तैयार करना है। बच्चो के जाने का वक्त हो रहा है। मैं तुम्हारी तरह निठल्ली नही हू।"

सुधीर तिलमिला उठा, "होशियारी छोडो, बैठो पाच मिनट। बस पाच मिनट से ज्यादा नही लगेंग। बैठो।"

रमा खाट पर बैठ गई "बोलो।'

सुधीर ने कहानी शुरू की, "तुम्हें तो मालूम नही है रमा, हमार एक बडे भाई थे। ताऊजी के लडके। उम्र म हमसे बहुत बडे। मर गए। अभी मरे हैं तीन चार साल हुए। सम्बन्ध नही रह थे इसलिए तुमसे जिक्र करना याद नही रहा। मुझे भी मरने के बहुत बाद पता चला था। उनके साथ एक बहुत विचित्र घटना घटी थी। कहते हैं उनकी पहली शादी के कुछ ही दिनों बाद एक सांप उनके घर मे आकर रहने लगा। उसे बहुत निकालने की कोशिश की। हडिया मे बद करके दूर जगल म छुडवाया पर वह फिर आ जाता। और एक दिन तो कहते हैं रमा, वह सारी रात

भाभी के बिस्तरे मे पडा रहा और भाभी को पता भी नही चला। फिर एक दिन तय किया गया कि साप को मरवा दिया जाये। साप पकडने वाले बुलाए गए और साप को मरवा दिया गया। तुम्हें मालूम है रमा, भाभी भी एक महीने के अन्दर मर गई। भाई साहब की दूसरी शादी बडी मुश्किल से हुई थी। अरे तुम हस रही हो ?'

"तो क्या करू ? सच बताना यह कौन सी फिल्म से उडाई है ?" कहकर रमा खिलखिलाकर हस दी।

पर सुधीर गम्भीर था, बोला, 'हमने की बात नही है रमा, यह एक-दम सच्ची घटना है।"

'तुमने देखा था साप ?"

'पिताजी बताया करते थे और उन्हे झूठ बोलने की बिलकुल आदत नही थी। साथ ही उनका इस सब पर विश्वास भी नही था। वे हमेशा चकित भाव से ही इसे सुनाते थ। उनकी बात को '

रमा ने बात काट दी, "आज यह कहानी क्यो याद आ गई।"

'रात सपने म भाई साहब दीखे थे।

रमा उठकर खडी हो गई। वह भी अब गभीर हो गई थी। एकदम रूखी आवाज मे बोली, तुम्हे चिन्ता करने की जरूरत नही है, यहा कोई साप नही आता और सुनो, मन पर जो काम वजन डाले वह नही करना चाहिए, रात को बुरे बुरे सपने दीखते हैं समझे ? '

' क्या मानी ?"

"मानी यह कि मेरे पास फालतू बातो के लिए वक्त नही है। और मरे म तुम उतनी ही बात किया करो जितनी जरूरी हो।'

रमा चली गई। सुधीर सामने पडे अखबार को उलटने पलटने लगा पर अखबार क सभी अक्षर उसके लिए धुधले पड गए थे। उसी की सुनाई कहानी को रमा न जिस तरह घुमाकर उसके मुह पर मार दिया था उससे वह सुन्न रह गया था। यह बात सच है कि यह कहानी उनके घर म सच्ची घटना की तरह कही-सुनी जाती रही थी। रमा पर आज सुबह उसे स्नेह आया था। उसने सोचा था कि एक मनोरजन और चौंका देने वाली कहानी सुनाकर वह उसे भी सरस कर देगा। पर रमा ने

किनारा पकडकर सारी चौपड गोटिया समेत उलट दी। उनका मन एक दम खराब हो गया।

वह खाट पर फिर पसर गया।

दो छोटे छोटे कमरो के इस छोटे से फ्लैट मे सुधीर, पत्नी रमा और तीन बच्चो के साथ रहता है। कहने को वह लेखक है जरूर पर लेखक की एक भी अदा उसमे नही है। दिखावट मे एकदम साधारण, स्वभाव से उग्र और निहायत अस्थिर चित्त आदमी वह माना जाता है। सुधीर अन्दर ही अन्दर खुद को जानता है। वह जानता है वह मूलत कायर और डरपाक प्रकृति का आदमी है। उसकी साधारणता सिर्फ दिखावटी नही है, वह है ही साधारण। चरित्र मे जो एक गरिमा होती है, वह उसम नही है। पर अपनी सभी कमजोरियो को कही छिपाने और कही युक्तिसगत साबित करने के लिए उसने एक बेहद उलझा हुआ तर्कजाल बुन रखा है जिसके पक्ष मे वह हमेशा एक जिद मे अडा रहता है, कभी पीछे नही हटता। यह तर्कजाल अगर कही छिन्न भिन्न होता है तो सिर्फ प्रतिभा के सामने। वहा सुधीर की सारी आक्रामक, उग्रता काफूर हो जाती है। उसके सामने उसकी निरीहता देखते ही बनती है। और यही शायद सुधीर मे प्रतिभा के फैलते मोह का कारण है। क्योकि वह अपनी कमजोरिया जानता है इसलिए अपने अच्छे रूप को महसूस करने के लिए तरसता है। वह उसे प्रतिभा के सामने होते ही उफक्न लगता है, तभी वह

ऐसा नही है कि प्रतिभा उसके लिए सिर्फ लेखिका है सुन्दर स्त्री है ही नही। है पर सुधीर के मन को उसका भूत और कापुरुषता इस तरह दबोचे रहती है कि साहस की बूद दो बूद जब भी उसमे उभरती, सिर्फ गर्मी म उभरी पसीने की बूदो की तरह, जो उसे, जाहिर है, पहले या बाद मे पोंछ कर फेंक देनी पडती है

पर आज आज सुधीर ने सोचा है, वह प्रतिभा से बहुत-सी बातें खुलकर करेगा।

बस स्टाप आने ही वाला है।

यहा बारिश नही हो रही।

3

दो स्टाप और हैं। उसका स्टाप आ जाएगा। बस म अब पहले
तरह भीड नही है। सुधीर का मन थोड़ा हल्का हुआ है। बहुत-सी ऊ
पीली धुप छट रही है। अच्छा लगने लगा है। प्रतिभा के पास पहुच
तक उसका मन बिलकुल साफ हो जाएगा, शीशे की तरह। मन के चा
तरफ जो घिरा रहता है वह प्रतिभा के प्रभाव-क्षेत्र के सामने टिक न
पाता। मन तो ठीक हो रहा है पर कपडे ? कैसे हो गए हैं ? जसे अभ
अभी घडे से निकाले हो। और पैर ? जैसे अभी गारा ढोकर आया हा
इन्हें तो धोना ही पडेगा। बस म सफर करके शरीर कैसा चिपचिपा ह
जाता है। अदर की कापुरुषता को और बढ़ाता है। मन शरीर से क
अलग चीज थोडे ही है। शरीर मला हो तो मन कैसे साफ रह सकता है
या फिर शरीर को आदमी एकदम नकार दे। पर नही, शरीर बहु
महत्वपूण होता है, माध्यम ! उसको नकारना प्रेम को नकारना
वह

ऐसे न जाने कितना ऊलजलूल सुधीर सोचता रहा। पर काम के
बात उसने एक नही सोची। यह तक नही कि आज प्रतिभा से क्या बा
करेगा ? खुलकर बात करने का फैसला किया था उसने मन ही मन
पर प्रतिभा से खुलकर बात करना इतना आसान है ? वह क्या

स्टाप आ गया।

वह बस से नीचे उतर आया। चारो तरफ देखा। खुला आसमान
तेज चुभने वाली धूप, पर हवा म नमी। धूप की चुभन हवा के झोंको
सख दे रही है प्रतिभा क सान्निध्य म जसा होता है उसकी बुद्धि क
चुभन और सौन्दय की नमी ! क्या कहेंगे इसे ? बौद्धिक सुन्दरता य
सुन्दर बुद्धि कुछ भी कह लो पर वह है लाजबाब हा, वाकई को
जवाब मिलना मुश्किल है

सुधीर का मन बहुत हल्का हो गया। दूसरे की प्रशसा से मन हल्क
होता ही है फिर प्रतिभा तो

रास्ते के एक नल पर उसने पैर धोए। रूमाल गीला करके मुह पर फेरा। बालो को दोनो हाथो से पीछे हटाकर जमाया और मन ही मन खुद पर हसता हुआ वह प्रतिभा के घर की तरफ चल दिया। अब पाच मिनट पैदल चलना पडेगा।

पाच मिनट बाद वह दीखेगी। उसने खुश होकर चारो तरफ देखा। सूरज चमक रहा है। पर दायी तरफ से घने बादल चढे आ रहे हैं। इधर भी बारिश होगी। हो, अब हमे क्या डर है। हम तो उसकी छाया मे जाकर बैठ जाएगे। बरसा करें। पानी से क्या भीगना है। सिर्फ शरीर गीला होता है उसकी दृष्टि का भूरापन पूरी चेतना को भिगो देता है। कितनी उद्दीप्ति है उसकी दृष्टि मे। दो दीये समानातर जलते दीखते हैं। पारदर्शी लौ

हरियाली मे लिपटी पडी सडक आ गयी। सडक से नीचे उतर कर चलना चाहिए। सोई पडी है। या किसी के ख्यालो म मोह जड है। चचल मन चेहरे पर एक ठोस पत्तरी चढा देता है। ठोस पतरी तो बीच-बीच म प्रतिभा भी चेहरे पर चढ़ा लेती है। मन तो चचल है उसका पर छोडो, उस दिशा मे नही सोचना चाहिए। शरीर का स्फुरण मन के स्वाद को तीता कर देता है। अनुभव को सीधा चेतन्य तक जाने दना चाहिए। किसी माध्यम की जरूरत नही। पर

घर आ गया।

तीन कोठिया से पहल खडे प्रेस वाले को देखकर उसे उसकी कोठी का ख्याल आता है। हाथ ठेले पर फैले कपडो की सल्न होठो से, सिलवटें निकालते प्रेस वाले के चेहरे की मन्नद्धता बहुत अच्छी लगती है। काला, सिलवटो भरा चेहरा, कैसे होठ भीच भीचकर प्रेस मरवाता है—उसे बहुत हसी आती है। कभी-कभी इसे ठेले पर एक तकरीबन जवान लडकी भी काम करती होती है। वह न होठ भीचती है न चेहरे पर तनाव लाती है। हस-हसकर काम करती जाती है। और पास खडे मूल ग्राहक के नौकर से बतियाती भी जाती है। सुधीर न कई बार सोचा है।—वह कपडे भी अच्छे प्रेस करती होगी। होठ भीचने से प्रेस की गर्मी बढ थोडे ही जाती

है ।—उसने आज भी सोचा और उसके चेहरे पर एक स्निग्ध मुस्कराहट खिल आई ।

कोठी आ गई । दौड़ते हुए बादल भी आकर सिर पर खड़े हो गए । पूरी दीखती दुनिया एक गुम्बद बन गयी । रोशनी की आखें मुद गई । अन्दर भूरा अधेरा बहने लगा । सब दिशाए एकमएक हो गई । गाल गुम्बद म क्या पूरब, क्या पश्चिम । पर दिशाओ का मिटना सुखद है या दुखद या दोनो स परे

प्रतिभा के पास बैठकर भी तो उसे दिशा बोध नही रहता ।

सुधीर तेज कदमा से कोठी म घुस गया । मेन गेट खुला था । वह पहली मजिल पर रहती है । एक लम्बा गलियारा । फिर बाइं तरफ मुडकर कुछ सीढिया चढनी होती हैं । गहरी ऊदी हरियाली मे लिपटे पडे इस दीघकाय स्फटिक मे कैद ओस की पारदर्शी बूद तक पहुचने के लिए । पर जितनी भी दफा वह यहा आया है, इन सीढियो पर भयभीत खडा रहा है आज भी रुककर खडा हो गया है । प्रतिभा का देखने का उद्दाम आवेग भी उसे दो-तीन मिनट तक खिसका नही पाया है ।

वह यहा खडे होकर हमेशा एक ही बात सोचता है—क्या किसी दिन ऐसा हो सकता है कि वह यहा आए, घटी बजाए, कोई और दरवाजा खोले और सूचना दे, 'सॉरी प्रतिभा हमेशा के लिए चली गई ?' या वह आए, दरवाजा खुला पडा हो । वह अदर घुस जाए । अदर कोई न हो । व पुकारे, कमरे कमरे मे, कोने कोने मे उसे ढूढे, वह न मिले और

क्या करेगा वह किसी दिन ऐसा हुआ तो ?

नही वह नही सोच पाता कि वह उस दिन क्या करेगा ? किसी दिन नही सोच पाया । न ही सोच पाएगा । उसकी सारी शक्ति यहा आकर कुद हो जाती है । इतने गहरे अधेरे में कल्पना की आखें भी क्या देख सकती हैं । सिवाय कुछ ऐसी आकृतियो के जो भय को और गाढा करें । और इस गहरे अधेरे से भयभीत होकर ही वह घटी का बटन दबा देता रहा है आज भी उसने बटन दबा दिया है

पर इस आत्रामक भय का एक फायदा भी होता है । उसके भीतर

उफनता असभ्य आवेश कुठित होकर सो जाता है। प्रतिभा के सामने वह सभ्य बन कर ही पेश होता है।

प्रतिभा के ड्राइग रूम की बनावट, सज्जा कल्प की कई भगिमाओ का मिश्रण है। बफ शेड की साफ-सुथरी दीवारें। फर्श पर गोल उन्नावी रग का कालीन। बडे-बडे कोच और बत की कुर्सिया भी। कोने म गमले और काठ पर उभरी अनथक-आकषण आकृतिया। कमरे की तीन दीवार सीधी है और एक चाप। चाप की तरफ छज्जा है। और छज्जे से कटा आसमान टेलीविजन के स्क्रीन की तरह दीखता है। प्रतिभा हमेशा छज्जे की तरफ मुह करके बैठती है। आकाश के विशाल ब्लू स्क्रीन को देखती हुई।

इस समय ब्लू स्क्रीन पर गहरे बादल छाए हुए हैं।

प्रतिभा बठी देख रही है।

सुधीर पास की कोच पर बैठा प्रतिभा को देख रहा है।

प्रतिभा कही गहरे मे डूबी है।

स्क्रीन पर देखा है। बारिश आ गई है।

छज्जे से दीखती पेडो की टहनिया और बेलो की लडिया पल भर को बूदो की छुअन से कापी हैं फिर मोह मुग्ध लय मे हिलने लगी हैं।

वातावरण की सुगन्धि को छितराता हुआ सुधीर बोला है, "कैसा रहा ट्रिप ?"

बोलकर उसे महसूस हुआ कि उसकी आवाज ककश है। आवाज ने चारो तरफ जमी प्रशान्ति को फोड दिया है। चुप रहता तो रस निबाध बहता रहता, पर अब

प्रतिभा ने कहा है, "ठीक रहा।"

"क्या हुआ।"

"कहा।"

"कुछ खोई-खोई हो।"

"हू, तो।"

"पूछ रहा हू, क्यो हो ?"

"वह मेरी व्यक्तिगत समस्या है। तुम कैसे जानोगे ? और क्यो जानना

चाहोगे ?"

सुधीर चकित रह गया। अन्दर की कुचमुचाहट ,को दबाकर उसने कहा, "चलो नही सही, कुछ और बात कहो।"

"क्यो बात करना जरूरी है ?"

"तो ?"

"चुप बैठो। चाय बन रही है पीना।"

"मैं इतनी दूर से चाय पीने आया हू ?"

"और क्या करने आए हो ? कुछ काम तो आज था नही।"

इस बार सुधीर ने आहत महसूस किया। रूखे स्वर मे बोला, "तो, बोलो, जाऊ ?"

' चलो, चाय पीकर ही चले जाना।"

सुधीर उठना चाह कर कर भी उठ नही सका। यही सुधीर की कमजोरी है। प्रतिभा के पास से उठना मुश्किल काम है। प्रतिभा के हल्के से इशारे पर वह जम कर बैठ जाता है और तब तक नही उठता जब तक कि प्रतिभा उससे सीधे न कहे—जाने के लिए। चाय पीकर जाना, सुनकर वह कोच मे पसर गया। यह तय करके कि इस दफा पहले प्रतिभा बोलेगी।

प्रतिभा बोली और फिर कई घटे तक दोनो बोलते रहे। हसते रहे। तरह तरह की बातचीत मे लुढकती पुढकती रही। देश की साहित्य की, राजनीति की और अपने सबधो की। मौसम की और मन की। बीच-बीच म चाय आती रही। दोना का महसूस हुआ कि बातचीत रस दे रहा है कि अचानक सुधीर पूछ बैठा, "आते आते तुम्हें क्या हुआ था प्रतिभा ?'

प्रतिभा मिनट भर चुप रही फिर बोली, ' बारिश बद हो गयी है, अब तुम जाओ।"

"चलता हू बताओगी नही।"

प्रतिभा का चेहरा सख्त हो उठा, बोली, "नही, तुम जाओ।"

"चलो नही पूछना। एक कप चाय और पिला दो।'

' नही, और अब तुम जाओ ही। सुबह फोन करना कल हो सका तो मिलगे और तुम्हें ऊटपटांग सवाल पूछने हो तो नही मिलेंगे, ठीक ?"

कहते-कहते प्रतिभा का चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो उठा। उसका मर्मरी रग पीला हो गया। उसकी दोनो असाधारण, बडी बडी आखो मे नमी निरती न होती तो सुधीर उस चेहरे से वाकई डर जाता। वह चुपचाप उठकर बाहर खिसक आया। कोठी से बाहर सडक पर आकर पीछे मुडकर देखा। दीघकाय स्फटिक नहा धोकर हरा कोपीन पहने खडा है। कही कही पानी की बूदें हरे कोपीन पर लटकी हुई हैं। अभी गिर कर फूट जाएगी। फूट जाने दो। पर स्फटिक के अन्दर वद वह

सुधीर पल भर को ठिठक गया।

उसने ऊपर आसमान की तरफ देखा। बादल जा चुके हैं। नीला-साफ आसमान कैसा भदेम लगता है। कोरी औरत की तरह

4

बस से उतरते ही सुधीर को महसूस हो गया—वह दूसरी दुनिया मे आ गया है। दूसरी दुनिया सुधीर की असली दुनिया , नही असली दुनिया नही, वह दुनिया जिसमे सुधीर रहता है, असली दुनिया से तो वह लौटा है। असली दुनिया मे रह कौन पाता है।

पर नही, असली दुनिया वही होती है जिसमे आदमी रहता है

सुधीर ने सडक पार की। वह धीरे-धीरे अपने घर की तरफ खिसक चला।

यहा के आसमान पर अभी भी बादल घिरे हैं।

इस आसमान के बादल अलग हैं। जैसे किसी ने धुए मे बोलकर काली-भूरी मिट्टी आसमान म उछाल दी हो इस कालोनी के चारो तरफ फैली फक्टरियो की चिमनिया धुआ उगलती भी बहुत हैं। धूल तो खैर बारिश स कीचड म बदल जाती है। और उडना बन्द कर देती है, पर कीचड सने पैरो स जब आदमी घर की तरफ बढ़ता है तो मन बहुत उडता है। सुधीर के घर तक जो गली छोडती है, उसमे दोनो तरफ लगातार फैक्टरिया हैं। बारिश न भी हो तब भी सारी गली म पानी भरा रहता है। फैक्टरिया

का फालतू पानी। गली के कीचड का क्लाईमैक्स गली के अ त म आता है। यहा एक तरफ रबर की चप्पलो की स्टेपीज बनाने का कारखाना है तो दूसरी तरफ शीशे के कचे बनाने का। दोनो तरफ से तीखा ग न्ध वाला पानी निकलकर गली म फैलता है। और फिसलन पैदा करता है। गली के इस हिस्से को पार करना उतना ही मुश्किल है जितना कि हनुमान के लिए लका तक पहुचने के लिए समुद्र पार करना। हनुमान जी को ता खर 'लाग जम्प' का अच्छा अभ्यास रहा होगा। पर यहा अक्सर जम्प मारते वक्त लोग पीठ के बल धराशायी होते देखे गए हैं और उठने की कोशिश मे बार बार फिसलने का करतब कम से कम चार आने का मजा तो द ही जाता है।

पर गली पार करते ही मजा आता है। रेल की पटरी पार करते ही— दो फर्लाङ्ग लम्बी कालोनी दीखने लगती है। पटरी के दोनो तरफ पानी इसलिए इकट्ठा नही होता क्योकि ढलान है। और फिर कतारों मे एक के ऊपर एक स्थान खडे हजारो क्वाटर—छोटे छोटे बारह-बारह का गुट बनाए। कतार मे खडे बच्चो की तरह। ड्रिल करते बच्चे सीधे होते हुए भी टढे हान का भ्रम पैदा करते हैं। बीच के गप से देखने पर—

पटरियो के ढलान पर उतरते हुए सुधीर का अगूठा एक पत्थर से टकराया। हल्का-सा दद हुआ। उसे याद आया कि प्रतिभा के घर जाते समय यही अगूठा फटा था। अब ठीक हो चुका है। अच्छा हुआ बरसात से पहले ठीक हो गया। नही तो कितना कष्ट दे सकता था। जिस तरह खुले पसे कीचड पानी म घूमता है, उससे तो—

कालोनी मे घुसते ही सुधीर की सोच, भाषा, चलने-खडे होने का ढग सब बदल जाता है। उसको यह परिवतन साफ तौर पर महसूस होता है। बहुत दिनो पहले एक और तरह का परिवतन अनुभव किया करता था। दिल्ली से जब अपने गाव जाता था तो गाव के बाहर बहती नदी पार करते ही उसे लगता काई हवा म से उसक शरीर मे प्रवेश कर गया है। या लगता जसे नदी से गाव के घर तक उसके साथ-साथ चल रहा है और उससे बात कर रहा है। उसके बात करते-करते ही अन्दर सब बदल गया

है। बदलाव पूरा होते-होते ही वह चला गया है। यह बदलाव उसे गाव के लिए और गाव को उसके लिए यथापूर्व परिचित कर देना और दह का रस ले पाता। गाव छूट गया। यह कालोनी भी किसी दिन छूट जाएगी। तो ?

जगह का भी एक चेतन व्यक्तित्व होता है।

वह तो होता ही है।

पर व्यक्तित्व चेतन वही होता है जो दायरे से बाहर भी अनुभव किया जा सके।

जैसे जैसे प्रतिभा का है वही तो

घर म घुसते ही सुधीर ने वातावरण मे एक तनाव की गन्ध पाई। रमा बाहर के कमरे मे बिछी एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई कोई मैगजीन पढ रही है। चेहरा नीचे झुका है पर उस तनाव की गर्मी साफ दीख रही है। लडकी सज्ञा दीवार की तरफ मुह किए पलग पर लेटी है। उसके आधे बदन पर चद्दर पडी है। उसके दोनो छोटे भाई सदीप और समीर अभी दस साल से कम हैं, और घर मे तैरती खुशी को जितनी जल्दी वे समझ लेते हैं, तनाव को नही सूघ पाते। इसलिए जमीन पर बैठे लड लड कर खेल रहे हैं।

सुधीर ने चप्पलें एक तरफ उतारकर पत्नी के सामने पडी कुर्सी पर बैठते हुए कहा "यहा भी दिन भर बारिश हुई ?"

पत्नी ने मगजीन मे सिर गढ़ाए-गढाए कहा, "जी हा। खाना लाऊ ? मुह हाथ धोओगे ?"

सुधीर चुप रहा। फिर धीरे से बोला, "क्या हुआ ?"

"खाना ले आऊ ?"

'हो क्या गया ? यह सज्ञा ऐसे क्यो पडी है ? तबियत तो ठीक है !"

रमा से कुछ भी पूछने से सुधीर कतराता है। एक तो उसे बात को गम्भीर बताने की आदत है। दूसरे स्थिति या वातावरण का तनाव उसके चेहरे पर इतना साफ अकित होता है कि घबराहट होती है। फिर भी घर मे तनाव हो और गृहपति न पूछे यह भी नही हो सकता।

सुधीर चाहता है खाने से पहले ही पता चल जाए कि क्या हुआ है, नही तो खाने मे किरकल आती रहेगी।

सुधीर ने फिर टटोला, "क्या हुआ रमा, बतानी क्यों नही ?"

इस बार रमा बोली, "सना से ही पूछो।'

"तुम्ही बता दो।"

"नही, इसी से पूछो।"

"अजीब पागलपन है। तुम्ही क्या नही बता देती।"

'खाना खा लो, फिर बता दूगी।"

"नही, पहले बताओ।"

और इस बार सुधीर का स्वर रूखा हो उठा।

रमा ने बताया—परसों इसके कालिज म कुछ है। इसे भी उसम शामिल होना है। कहती है नया सूट नही होगा तो नही शामिल होगी और शामिल नही होगी तो फिर कभी कालिज नही जाएगी। इसलिए '

सुधीर ने सुना। सुनकर समझा और समझकर जोर से ठहाका मार-कर हम/पडा और फिर काफी देर तक निरतर हसता रहा। सज्ञा जो अब तक दीवार की तरफ मुह किए पडी थी सीधी हा गई और पिता का मुह देखने लगी। रमा भी हतप्रभ थी। चुपचाप देखती रहकर वह बोली, "इसमे इतना हसने की क्या बात है ? '

सुधीर ने कहा, वही तो इसम इतना रोने की क्या बात है ?"

'बात क्यो नही थी। हमे पता है सूट नही बन सकेगा। और तुम जानते हो सज्ञा कितनी जिद्दी है।'

'और तुम दोनो को यह पता नही कि हम कितने जिद्दी है।"

तुम क्या करोगे ?

हम सूट सिलवा कर ही रहेगे।'

कहकर सुधीर फिर जोर स हसन लगा।

रमा न भी हसते हुए कहा "आज बहुत खुश नजर आ रहे हो। क्या मिल गया ?

सुधीर चुप हो गया।

'खाना लाऊ ?'

"हा।"

खाने पर रमा ने फिर पूछा, "आज इतने खुश क्यो हो ?"

"अरे, तुम दोनों की बेवकूफी पर हस रहा हू। और क्या—"

रमा गम्भीर थी। बोली, "बेवकूफी पर गुस्सा किया जाता है।"

"जिनसे आदमी प्यार करता है उनकी बेवकूफी पर हसी आती है, प्यार आता है। नही ? '

रमा इस बार हस पडी, बोली, "नही, आदमी जब अन्दर से खुश हो तो गुस्सा करने की बात पर भी हसता है।"

सुधीर ने स्वर को यथाशक्ति गरिमामय बनाकर कहा, "रमा तुम्ह हर समय कोरी दीवार पर तस्वीर लटकी क्या दीखती रहती हैं ?"

रमा गम्भीर हो चुकी थी। चौकन्न भाव से खाना परोसती हुई बोली "तस्वीर अगर लटकी हो तो औरो को ही दीखती है, खुद को जरा दूर से दीखती है। पर खैर, मुझे तस्वीर की न चिन्ता है, न एतराज है। पत्नी पास की दीवार होती है, तस्वीर कभी नही बन पाती। ठीक है। पर मरी चिन्ता है कि—"

' चुप क्यो हो गई ?"

"नही, चुप नही हुई। जरा शब्द ढूढ रही थी। तुम्हारी तरह मैं लेखक तो हू नही कि शब्द हर समय नाखूना से झरते रहे। मुझे सोचना पडता है। वसे भी सोच विचार कर बोलने की आदी हू।" कहकर रमा खिल-खिलाकर हस दी।

पर सुधीर गम्भीर था, उसने बात टूटने नहीं दी, "क्या कह रही थी ?'

रमा को खुद को समटने मे देर लगी। फिर धीरे धीरे बोली, "कोई खास बात नही। मैं कह रही थी कि तुम्ह तस्वीर उतर जाने पर दीवार को फिर कोरा करना नही आता। और तस्वीर लाकर दीवार पर न टागो यह भी तुम्हारे बस का नही है। दरअसल सम्बध सदा स्थाई होते है और तुम्हें इस शब्द से मैं तुम्हारे मन से डरती हू। और मुझे काई डर नही है, कोई चिन्ता नही है।"

सुनते-सुनते सुधीर का मन उखड गया। जल्दी-जल्दी उसने खाना खत्म

किया और यह कहकर, कि 'जरा घूमकर आता हू' वह घर से बाहर निकल आया।

5

जिस कालोनी मे सुधीर रहता है उसकी भौगोलिक स्थिति इस प्रकार है। दिल्ली के पूर्वी क्षेत्र का यह आखिरी सिरा है। कालोनी के पीछे एक पोश कालोनी है। बाईं तरफ रेल की पटरी पार करते ही छोटे उद्योगो की लम्बी कतार है जिसमे हजारो आदमी-औरतें बच्चे कम-से-कम तनख्वाह पर अधिक-से-अधिक काम करते हुए पाए जाते हैं। दाईं तरफ छोटे अपराधियो की बस्ती है जिसमे कच्ची शराब खीचने वालो से लेकर, चोरी बटमारी के अनुभवी मुजरिम तक रहते हैं। कालोनी के ठीक सामने एक विशाल मैदान है जिसमे क्वाटरो की ही तरह कीकर के छोटे-छोटे आदमकद पेड खडे हैं। इस मैदान के अनेकानेक उपयोग हैं। रात के बारह बजे से सुबह के आठ बजे तक इस मैदान मे बहुत चहल पहल रहती है।

सुधीर बाहर निकला तो खूब अधेरा छा चुका था। आसमान म बादल थे। ठडी हवा चल रही थी। मौसम बहुत ही अच्छा था। दिन भर के थके-मादे लोग खा-पीकर सडक पर घूम रहे थे। पान की दुकानो पर औरत से राजनीति तक जबडों मुह घुमाते तैश खा खा कर अपनी बात सही सिद्ध करने के चक्कर मे थे। काफी लोग कच्ची सूघ चुके थे। बात करने के उनके लहजे मे बनावटीपन कम था। मौसम का खुशनुमा होना उनकी अभिव्यक्ति को आक्रामकता दे रहा था जो राजनीति पर से फिसल कर औरत पर जमकर बठने की मजबूरी पैदा कर रहा था।

सुधीर बाहर निकला तो उसका मन खराब था। पर चारों तरफ फली रग बिरगी दुनिया ने उसका मन हल्का कर दिया। जी हुआ वह भी पान की किसी दुकान पर खडा हो, हसे, ठहाके लगाए। कालोनी के सभी लोग उसे जानते हैं, पर जिस तरह के लोग यहा रहते हैं उनकी बातो म देर तक रम लेना उसके बस की बात नही है पर एक दफा हसकर जल्दी उनके

चगुल से निकलना भी उतना आसान नही होता। फिर भी एक पान की दुकान पर खडी भीड मे सुधीर घुस गया।

पर घुसकर उसे पता चला कि वह बहुत गलत जगह फस गया है।

वहा बीच मे न राजनीति थी, न फिल्म, और न मैनेजमेट। मैनेजमेट मजदूरो का प्रिय विषय होता है। पर जो विषय उस भीड मे था। वह कालोनी के लोगो के लिए सबसे प्रिय था। और इसी समय भी वे उसी का मजा ले रहे थे। ठहाके, चुटकिया, गालिया एक-दूसरे पर उछाल कर वह खुशी को सामूहिक बना रहे थे।

बात दरअसल यह थी कि कालोनी के उत्तरी विस्तार के बीचो-बीच एक पुलिया है। ऊपर से रेल और नीचे स आदमी गुजरते हैं, इस पुलिया के नीचे एक जवान पगली अपने ताम झाम के साथ पडी रहती है। वैसे वह बहुत कम बोलती है पर उसका कोई प्रशसक उसे भर-मन कच्ची पिला देता है तो कहते हैं उस पर देवी आती है और उस समय वह सिर्फ सच बोलती है, सच के सिवा कुछ नही बोलती। सच वह कभी पूरा नहीं बोलती। टुकडा-टुकडा सच उसके मुह से चूता है और उसमे से पूरा सच बुनना पडता है। अभी-अभी चटर्जी का जो बारह साल का लडका रेल के नीचे कट मरा था उसे उसने मरने से दो दिन पहले ही बताया था—"पटरी से दूर पटरी से दूर नेता बन जाएगा नेता हा हा-हा, नही था नेता नहीं था हा-हा-हा।" उस समय पगली की भविष्य-वाणी का अर्थ नही समझा पर दुर्घटना के अगले दिन सबको पगली के फुटकर शब्द याद आए और हरेक ने उसके उन टूटे-फूटे वाक्यो के अलग-अलग अर्थ लगाए। जिसमे से कुछ दार्शनिक थे और कुछ शुद्ध राजनीतिक।

कालोनी के लोगों ने इस पगली का नाम प्यार से 'सबकी भाभी' रखा हुआ था।

उस भीड मे उस वक्त सबकी भाभी ही थी। और उसके मुह से टुकडा-टुकडा सच चू रहा था।

वह बोल रही थी—सिर झुकाए, आखें कभी-कभी खोलती, और बेहद उदास स्वर मे—"डूब गया एक आदमी मे दूसरा आदमी डूब गया कलई खुल गयी राम राम पुलिया-पुलिया चोर-चोर

सिपाही सिपाही चोर सिपाही, चोर सिपाही

अचानक भीड म स एक ने टोक दिया, "ओ भाभी, क्या चोर सिपाही, चोर-सिपाही लगा रखी है। कोई अच्छी सी-बात सुना यहा की। देख, य सुधीर बाबू आए हैं, तेरी बात सुनन।"

पगली चुप हो गई। उसने अपने चेहरे को धीरे धीरे सुधीर के ठीक सामने किया। पलको को हल्के से उठाया, सुधीर को देखा और खिल खिला कर हस दी। बहुत देर तक हसती रही। फिर अचानक चुप होकर बोली, "कालोनी का सबसे बडा पागल ?"

कहकर वह फिर गदन चक्रावत्त म घुमा-घुमाकर हसने लगी और साथ ही भीड ने एक सम्मिलित ठहाका लगा दिया। सुधीर की हालत खराब हो गई। वह भीड से निकलकर भागना चाहने लगा। पर वह जानता था कि कोई उसे बाहर नही जाने देगा। मजदूरो की भीड एक ऐसा ही चक्र-व्यूह होती है जिसम घुसा जितनी आसानी मे जा सकता है निकला नही जा सकता। सकपकाया सा सुधीर खडा रहा और फिर खुद को ढोला छोडने के लिए वह एक खिसियानी हसी हस दिया। पर भीड के ही एक और आदमी के एक सवाल ने सुधीर की नसो पर से सारे तनाव को छील दिया। वह खुलकर हसने लगा। उस आदमी ने उस पगली से पूछा, "क्या बोलती है भाभी, सुधीर बाबू को पागल कहती है। सुधीर बाबू बहुत होशियार आदमी है।"

ऐसी बात नही है कि सुधीर अपनी उस तारीफ से खुश हुआ था। पर चलती बात चलत पानी की तरह खुशनुमा होती है। बात शुरू होकर वही डूब जाए तो बस जोहड खोद देती है।

पगली न बेहद गम्भीर भाव स उस आदमी को बात का जवाब दिया, "अरे, पागल है तो क्या हुआ, वहा मेरे पास रहेगा।"

सुनकर सबने फिर ताली पीट दी।

इस बार सुधीर बिल्कुल उखड गया। तेजी से सबके रोकते रोकते वह बाहर खिसक चला। पगली ने भीड और सुधीर की धींगामुस्ती देखी तो ताली पीट-पीट कर गाने लगी, आने दो आएगा, जाने दो आएगा जाने दो

और सुधीर का पिंड तभी छूटा जब पगली ने खडे होकर ठुमका दे-देकर नाचना शुरू कर दिया।

"जाने दो आएगा, रे ए-ए ए जाने दो—आएगा।"

दूर जाते सुधीर के कानो में भी यह कसैला स्वर पडता रहा। उसका सारा शरीर खौलने लगा। उसे मालूम था कि उस पगली के बारे में कैसी-कैसी कहानियाँ प्रसिद्ध थी। कोई कहता—यह पगली नही है, पुलिस ने उसे यहा बैठा रखा है। तो कोई कहता कि यह कालोनी मे रहने वाले स्मगलरो की साथिन है। कोई कुछ कहता है कोई कुछ। पर इतना सुधीर निश्चय से जानता था कि कालोनी के बहुत से लोग पगली का 'सही इस्तेमाल करने से नही चूकते। उसने रात बिरात लौटते हुए कई दफा बहुत कुछ देखा है। आज अचानक इस मूर्ख ने कालोनी वालो की नजरो म उसे भी उन लोगो की कतार मे खडा कर दिया। सुधीर का मन एकदम फट कर रह गया। वह घर से मन हल्का करने बाहर निकला था। सना के सूट की चिन्ता थी पर इस समय तो सीधा जाकर सोना चाहने लगा। रात भी काफी हो गई थी। आज का दिन शायद

घर पहुचकर पाया कि चटर्जी उसका इतजार कर रहा है। सुधीर को मालूम था कि जिस दिन उसके लडके की मौत हुई यह घर पर नही था। उसी दिन क्यो, कई दिन से घर से गायब था। बच्चे की लाश पडोसियो ने चन्दा देकर फूकी थी। चन्दा देने की बाध्यता के कारण बच्चे की मौत का गम आधा हो गया था। कुछ लोगो ने चटर्जी को गालिया देकर ही अपना कर्त्तव्य समाप्त समझ लिया था। और कुछ लोगो के वक्तव्य की सीमा चटर्जी की बहू को सलाह और उसम स्त्रियोचित गुणों के अभाव का विशद विवेचन थी। दरअसल इसमे कुसूर चटर्जी का भी नही था। उसका खयाल था कि उसमे एक बडे पेन्टर के तमाम गुण विद्यमान हैं और आज तक पेशे से वह लाइनो आपरेटर था। उसके अन्दर का चित्रकार उसे इधर उधर प्रेम पीग बढाने को उकसाता तो गर्दन पर बैठा लाइनो आपरेटर उसकी गद्दी पर लात घूसे बरसाता। स्याह रग का मरतल्ला-सा चटर्जी कद मे बहुत छोटा था। पर जुबान उसकी बहुत तेज थी। सुधीर ने उसे घर म बैठा देखा तो फुक गया। बोला, "कहिए।"

"सुधीर बाबू आपको हमारा मदद करना पडेगा।"

सुधीर पहले ही जला बैठा था, वितृष्णा से बोला, "क्यो करनी पडेगी ?"

पर चटर्जी अपनी धुन मे था, 'आप हमारा बात तो सुनिए।"

'क्यो सुनू मैं आपकी बात ? और आपको मालूम है इस समय क्या बजा है ?"

चटर्जी ने फिर कहा, 'पर आप सुधीर बाबू हमारा बात तो सुनिए।'

और सुधीर कुछ कहने ही जा रहा था कि रमा ने टोक दिया, "तुम भी अजीब आदमी हो। बात सुनने म क्या हर्ज है ?'

सुधीर भभक उठा, बोला, 'तुम्हें मालूम है मैं चटर्जी को कब से जानता हू ?"

'ये वक्त उन बातों को करने का है ? कितनी बडी घटना घटी है बेचारो के साथ और पिछली बातें बतलाने बैठे हो। सुन लो क्या कह रहे हैं ?"

सुधीर अनमना था, पर बोला, "सुनाओ।"

चटर्जी को सास आया। उसने लाईन पर गाडी चढती देखी तो अधाधु ध कोयला झोंक दिया। धाराप्रवाह बोला, "वही तो सुधीर बाबू हमारा बात तो सुनिए। तुम तो जानता है, हमको पेंटिंग का शौक है। तुम तो जानता है मनमाफक काम मे जो मजा है, और काम म कहा। ये साला दिल्ली है, अपना देश होता तो लोग पर धो धोकर पीता। तुम तो खुद लेखक हैं सब जानता है, आर्टिस्ट है, कलाकार है।"

सुधीर का धय दम तोड रहा था। उसने ललकारा, "चटर्जी !'

"हा सुधीर बाबू।'

"काम की बात करो।'

'हा सुधीर बाबू वही तो। हम चाहता है इस कालोनी के लोगो पर मुकदमा करें। पुलिस म रपट कराए।'

"क्यो ? लोगो ने क्या किया है ?'

"इन्होंने हमारा बच्चा रेल के नीचे धकेल दिया। मार डाला।'

कहते-कहते चटर्जी की आवाज म कुछ ऐसी व्यथा गूजी कि सुधीर

और रमा दोनो जड तक हिल गए। बच्चे सब सो चुके थे। दोनों की समझ मे नही आया कि क्या कहें। पर चटर्जी अब भर आया था। उसी गूंजती आवाज मे बोल रहा था, "हा, हमारा ही दोष है। सब कहते हैं हमारे ही कारण घर बरबाद हो गया। होता है तो हो जाने दो। हम तो अब वही करेगा जो मनमाफक होगा। कितना साल हो गया लाइनो पर बैठकर टिक-टिक करते। कभी छुट्टी नही, कभी घूमता नही। दो रुपये हुआ तो सनीमा देख लिया। सौ रुपया कभी इकटठा हुआ नही कि बच्चो को हरद्वार घुमा लाए। सुधीर बाबू, यही वह लडकी है जिससे मैं उन दिनो प्रेम करता है, जब आपके साथ काम करता था। पद्रह साल पहले आज जी करता है इसे लात मारकर घर से भगा दू कोई सुख नही, कोई मनोरजन नही। बस, सनीमा देख लो, साला, दूसरे का मिथुन या दारू, साली कच्ची "

सुधीर ने बहुत कोमल स्वर मे टोका, "चटर्जी, चाय पियोगे ?"

चटर्जी की आखो मे चमक आ गई। बोला, "पिऊगा सुधीर बाबू, और कुछ खाने को हो तो वह भी दीजिए। कई दिनो स कुछ नही खाया और भाभीजी, आप जरा उसको समझाइये ना, न खाने से वह लौट थाडे ही आएगा आप, कल जरा "

अचानक चटर्जी चुप हो गया। कुछ मिनट एकदम सुन्न पथरीला मुह लिए बैठा रहा फिर झटके से उठा और बिना कुछ कहे कमरे से बाहर हो गया। सुधीर चुप बैठा देखता रहा। उसने चटर्जी को रोकने की कोई कोशिश नही की। वह जान गया था—चटर्जी रोना चाहता है। रो लेगा तो हल्का हो जाएगा। भूख प्यास तो तभी उसे ठीक से लगेगी। रमा चटर्जी के 'हा' कहते ही चाय बनाने अन्दर चली गई थी। स्टोव के भभकने की आवाज आ रही थी। सुधीर ने आवाज देकर रमा को सूचना दी।

"रमा, चटर्जी चला गया। रहने दो।"

रमा बाहर आई, "चले गए

"हा।"

"क्यो ?"

"मुझे क्या पता ? उठा और चला गया।"

"तुम पिआगे चाय ?"

"नहीं, और अब मेहरबानी करके सो जाओ।" कहकर वह बिना कपड़े बदले ही अपने बिस्तर मे पसर गया।

6

सुधीर ने बिस्तरे म लेटकर आखें मूद ली। उसे पता भी नहीं चला कब रमा ने बत्ती बन्द की और कब वह लेट गई।

पर यह उसे साफ महसूस हुआ कि नींद दूर तक कही नही है। उसके चारो तरफ बेहद भीडभाड, बहद ऊहापोह है। अंधेरे मे उभरती-डूबती आकृतिया उसे उद्वेलित कर रही हैं।

बाहर की बत्ती बुझ जाए और अन्दर का अबरक टूटा पड़ा हो तो पता नही कहा की रोशनी के अबरक पर पडते 'रिफलक्सन' मात्र से अदर का कमरा जगमगा उठता है। सुधीर के कमरे मे भी इस समय अबरकी रोशनी पिघल कर बह रही थी। कमरा सजा धजा है। सावली रोशनी म उन्नाबी कालीन महक रहा है। कालीन के चारो कोनो को चार कोच मुटि्ठयो म भीचे बैठे हैं। कमरे की दिशाओ मे विस्तार और कालीन की गहराई का अनुपात न बिगड जाए। दरवाजे से गुलमोहर और नागचम्पा झाक झाक कर हस रहे हैं। चटक हरे पत्ते गहरे हरे दीख रहे हैं। कमरे म कही कोई बल्ब नही जल रहा फिर भी खूब सारी रोशनी झिलमिल रही है। बहती रोशनी।

कमरे म कोई नही है।

कमरे मे कोई न हो तो कमरा रात का आकाश बन जाता है। अपने प्रभाव म रोशनी चाहे जितनी व्यथ क्यो न हो।

एक कोण पर कोई उभरा है
प्रतिभा है

यह प्रतिभा है?

नही, यह प्रतिभा नही हो सकती।

प्रतिभा इतनी सांवली कहा है। उसका मोतिया रग

ओह। वह उसके कमरे में है न। कमरे की रोशनी का रग कमरे मे बैठे आदमी के रग को बदल देता है

तो यह प्रतिभा ही है

उदास, चुप, सुन, बैठी हैं। चेहरे पर कैसा करुणाजन्य लमीलापन है ।

क्या हो गया इसे सुधीर सोच रहा है

सुधीर कमरे मे नही है

अचानक सब गडडमडड हो गया

कालीन गायब। कोच गायब। गुलमोहर, नागचम्पा गायब। प्रतिभा भी गायब। नगा कमरा।

नगे कमरे के नगे फश पर घूमते कत्थई रग के सलौने बालको जैसे काक्रोच! आख मिचौनी खेल रहे हैं। कोने मे आ-आकर छिप जाता है, कोई एक। सब उसे ढूढते फिर रहे हैं।

वह कोने मे बैठा रहता है। कोई उसे ढूढ नही पाता। शायद खुद ही उठकर कमरे के बीचों-बीच आ गया है। चारो तरफ से काक्राच खुश होकर उस पर हमला करते हैं। सब मिलकर नाच रहे हैं।

अरे! यह क्या हुआ?

यह कमरे के बीचो-बीच नगे फश पर सुधीर कहा से आ गया सुधीर नही सुधीर का शव कितना सपाट पडा है काक्रोच चारो तरफ नाच रहे हैं। उसे सब दीख रहा है

सुधीर का शव कितना सपाट पडा है काक्रोच कैसे ताल मे नाच रहे हैं

तभी कमरे मे चटर्जी अवतरित हुआ है उसने चटकीले रग का कुर्ता और बेहद झीनी धोती बगाली ढग से बाध रखी है। आधा मिनट वह अतिनाटकीय ढग से कमरे के दृश्य को अलग-अलग कोण से परखता है फिर अचानक उसके चेहरे पर विक्षिप्त आक्रोश उभरता है और वह कूद-कूद कर काक्रोचो को पैरो से कुचलना शुरू कर देता है। चटर्जी का काला रग आबनूसी काला हो उठा है उसकी भाव-भगिमाए ताण्डव नृत्य की झलक दे रही हैं काक्रोच भी कमरे के वातावरण के अमूत, निस्वर सगीत

के लय ताल पर उछल-कूद कर रहे हैं •

खट-खट की आवाज के साथ दृश्य फिर बदल जाता है कोच, कालीन, गुलमोहर, नागचम्पा, यथापूव अपनी-अपनी जगह उभर आए हैं।

प्रतिभा भी एक दूसरी कोच मे आ गई है अव उसकी दृष्टि गुल मोहर नागचम्पा की तरफ नही है उस तरफ उसकी पीठ है वह कमरे की एक दीवार की तरफ देख रही है दीवार पर एक विशाल कोरा कनवास टगा है कोरा

प्रतिभा टकटकी लगाकर कनवास को देख रही है

उसके शरीर का रग सहज मोतिया है

सुधीर ने कमरे मे बाहर से देखा है प्रतिभा के सारे शरीर का रग मोतिया है

वह उन्नाबी शनील मे बैठी दीख रही है कोरे कनवास पर दृष्टि टिकाए

सुधीर सोच रहा है काक्रोच, चटर्जी, सुधीर का शव अचानक कहा गायब हो गए

वह दृश्य डरा नही रहा था वह दश्य

हडबडाकर सुधार जाग गया है

बहुत दिनो बाद उसे कोई सपना दीखा है। उसे सपने दीखने बन्द ही थे। सपने मे डरने जसी कोई बात नही थी। फिर भी सुधीर को लग रहा था, उसकी पसलिया के नीचे डर घुडदौड मचा रहा है। उसने महसूस किया कि उसके सिर पर कुछ रेंग रहा है और सरसराहट पैदा कर रहा है, जो कनपटियों तक आ रही है। उसने सोचा—सिर मे कहीं काक्रोच तो नही घुस गया? सोचकर उसे हसी आ गई और मन हल्का हुआ। फिर भी अधेरा उससे सहन नही हुआ। वह उठा और उठकर उसने बत्ती जला दी। रोशनी के फैलते ही फश पर घूमते काक्रोच भाग भाग कर छुपने की जगह तलाश करने लगे। सुधीर को याद आया—बरसात में तो इन लोगो की आमद होनी ही है। रमा और छोटे बच्चे—समीर और सदीप—बाहर खुले मे सो रहे हैं। इन क्वाटरो मे नीचे वाले बाहर और ऊपर वाले

छत पर सोते हैं। पर सुधीर कभी बाहर नही सोता। बाहर सोना उसे बहुत अशिष्ट काम लगता है। वैसे भी बाहर मच्छर बहुत होते हैं। क्वार्टर के बिलकुल पास एक नाला बहता है। और सामने के मैदान से भी मच्छर घूमने फिरने आते हैं। उसे फिर एक मजेदार बात याद आई और वह ठहाका मार कर हस दिया। बहुत दिनों बाद एक बार जब वह उस गाव मे गया था जहा बचपन में रहता था तो उसकी एक सहेली ने कहा था—अरे सुधीर, मैं तेरे शहर मे आऊ तो तू मुझे शहर घुमा देगा ना? सुधीर ने कहा था—'हा'।

और उसने कहा था, "ना बाबा, कौन जाए इन बडे शहरो मे। सुना है बिल्कुल भूलभुलैया होते हैं। एक बार खो जाए तो मिलना मुश्किल। ठीक बात है यह?"

ठीक तो है ही। सुधीर ने सोचा। और ये मच्छर साले अपने कीकर के जगल से यह शहर देखने क्यो आते हैं? यहा दीवारों मे फस जाते है तो रहने वालो को काटते हैं।

कितना चुभता है इनका डक!

हा, डक तो किसी का भी हो, चुभता ही है।

डक? किसका? किसी का नही

कोई चुभन स्वाद लगती है और कोई

पर यह साला सपना कहा से आ गया?

सुधीर ने बत्ती खुली छोड दी और आकर अपने बिस्तरे पर बैठ गया। नजर उठाकर उसने देखा—सज्ञा पलग पर निश्चेष्ट लेटी है। इस समय उसका चेहरा बहुत ही सलोना लग रहा है। चेहरे पर उत्तेजना न हो तो कितना सलोना लगता है पर कुछ चेहरे तो उत्तेजना मे ही सुन्दर लगते हैं। हा, यह तो है

सुधीर का बिस्तर जमीन पर ही लगता है बिस्तरा!

सुधीर फिर हस पडा

पर यह सपना आज कैसे आ गया?

और इस सपने का मतलब क्या था?,

कल सज्ञा के सूट का प्रबन्ध करना है करना ही है

प्रतिभा के शरीर का रंग कैसा मोतिया है हरी-नीली शेड देता है ' एकदम न्योन लाइट से बना शरीर—एब्स्ट्रैक्ट इथीरियल
छूना नहीं चाहिए छुआ ही नहीं जा सकता
सज्ञा के सूट का प्रबन्ध तो होना ही चाहिए बहुत होनहार लड़की है—एकदम विजनरी—कल्पना-विहारी
पर सज्ञा के स्वप्न, उसकी महत्वकाक्षाए पूरी होगी ?
कितना दीघकाय प्रश्न चिन्ह है।

अपने हिसाब से सुधीर लेखक है। कुछ कहानिया, कुछ कविताए उसने लिखी भी हैं। उसमे से कुछ छोटी-बडी पत्रिकाओ मे छपी भी हैं। जैसा कि हरेक लेखक के साथ होता है, एक या दो रचना छपते ही वह खुद को लेखक कहने लगता है और लेखक महान तो होता ही है। इसमे उससे क्या लेना देना कि किसी की एक पीडा छपी है या दस। वह अच्छी थी या बुरी—लेखक लेखक होता है। यह पीडा कैसे छपी है यह भी कम महत्व की बात है और यह तो और भी मामूली बात है कि किस रचना की किसने तारीफ की और क्यों की ? बस तारीफ होनी चाहिए। तारीफ होते ही रचना महान हो गई और तारीफ नही हुई तो रचना और भी महान हो गई क्योंकि उसकी तारीफ इसलिए नही हुई कि वह सही मायनो म क्रान्तिकारी रचना है।

तो सुधीर लेखक है और अपने चारो तरफ सम्मानित भ्रान्तियो का एक वातावरण बनाए रखना चाहता है जो उसके 'इमेज' को व्यापकता प्रदान करे और अह को तुष्ट करे। इस तथ्य को कि सुधीर जिन भ्रान्तियो के वातावरण को अपने चारो तरफ बुनना चाहता है, वह औरो से अलग है उसके चारो तरफ फले लोगों मे कोई भी समझने को तयार नही है।

पर कुछ साल पहले तक सुधीर का लेखन काफी सीमा तक उसके अन्दर ही बन्द था। और वह एक सीधे इन्सान की तरह एक प्रकाशन सस्थान म प्रूफ-रीडर के तौर पर काम करता था। लेखक अन्दर कुल बुलाना, बाहरी व्यवहार को प्रभावित करता, कभी-कभी लोगो से झगडे भी करता पर सुधीर मानता था कि लेखक होने मे और माने जाने के बीच

बहुत बडी खाई है और वह उस खाई को पूरने मे असमर्थ है, उसमे वह होशियारी नही है। इसलिए वह काम करता है, बडे लेखकों की किताबो के प्रूफ पढता, उन किताबो और उन लेखको की खिल्ली उडाता, 'फ्रस्ट्रेटिड' आदमी कहलाता और मस्त रहता। ऐसा नही था कि घर उस समय बहुत अच्छी तरह चल रहा था, नौकरी के अलावा बाहर का काम करने पर भी उसे सिर्फ इतना ही मिलता कि दो वक्त की रोटी मिल जाए और कम से कम कीमत वाली कामचलाऊ शिक्षा बच्चो को मिलती रहे। कपडो का नम्बर तब भी कभी-कभी ही आता। बीच-बीच मे किसी एक इतवार को वह अपनी कहानिया और कविताए धूल अटी फाइलो मे से निकालता, उन्हे पढता, रमा से कहता, "लिखा तो हमने बढिया है। किसी दिन हमारे यह कागज तुम्हे पैसा देंगे।"

रमा पति की इस व्यथा को समझती थी पर इसमे उकसाने के खतरो से भी वाकिफ थी। इसलिए सान्त्वना देती हुई कहती, "पैसा ही क्यो, तुम्हें यश भी मिलेगा। वक्त आता है, तो सब कुछ हो जाता है। आदमी को वक्त का इन्तजार करना चाहिए।"

सुधीर हस पडता। पत्नी के चतुर वाक्य विन्यास का अर्थ वह भी समझता था पर जानता था कि पत्नी की सोच मे सतुलन, जो कभी-कभी जडता लगती है, कहा से और क्यो आयी है। रमा को दोष देने का उसके पास कोई बहाना नही है। फिर जब वह खुद ही मान चुका है कि लेखन एक ऐसा व्यवसाय है जो सम्मान सिर्फ तभी देता है जब सम्मानित व्यक्ति पर पतरी की तरह चढा हो। इस समाज मे साहित्य की सुगन्ध साहित्य मे न होकर साहित्यकार की सामाजिक स्थिति मे है। वह अपने पास है नही तो फिर लोभ देकर दलदल म फसा जाए। फिर भी सुधीर के बहुत लेखक दोस्त थे जिन मे उठ-बैठकर वह जैसे-तैसे लेखको की सूची को नीचे के सिरे से पकडे लटका रहता और बदन पर रेंगते कनखजूरो को उस स्थिति के सहारे सहन करता रहता।

धुध चित्रों की तरह ये ही सब बातें बिस्तर पर लेटे सुधीर के चित्त पर तैर रही थीं। बत्ती जली थी। दीखा सपना भी इन्हीं सब मे घुलमिल कर चित्र को धुधला कर रहा था। प्रतिमा कभी दीखती, कभी

जाती। चटर्जी के ताण्डव की गति बढती-घटती। काक्रोच छिपने की कोशिश की जगह अब चटर्जी को भिकाने और उसमे मजा लेने लगे हैं। गुलमोहर और नागचम्पा चटर्जी के नृत्य को सास्कृतिक कायक्रम की तरह देख रहे है और सिर हिला हिलाकर तारीफ कर रहे हैं। प्रतिभा का चेहरा कभी जड, कभी द्रवित और कभी विक्षिप्त होने की भगिमाए दे रहा है

प्रतिभा का चेहरा ‾योन लाइट से बना चेहरा

बत्ती जल रही है

सज्ञा शा त, निश्चेष्ट सो रही है

सुधीर सो गया है पर बोल रहा है सना का सूट कल जरूर सिलवाना है।

7

इस कालोनी का बाहरी भूगोल ही विशिष्ट नही है इसकी आ तरिक सरचना भी काफी सकुल है। हर प्रा त का आदमी यहा मिलेगा। हिदू, मुसलमान, सिख, ईसाई सब धर्मों के परिवार यहा मिलेंगे। हिन्दुओ की हर जाति अपनी-अपनी ध्वजा के नीचे एकत्रित होती है और दूसरी जाति को छोटा सिद्ध करने की प्रेरणा उस ईश्वर से प्राप्त करती है। कोई राजनीति दल ऐसा नही है जिसका प्र तिनिधित्व यहा के निवासी कम अधिक सख्या मे न करते हो। यहा अलग-अलग तरह की छोटी बडी फैक्टरियो के मजदूर और बाबू रहते हैं और अपनी-अपनी फैक्टरी के बडप्पन या छोटेपन का भार अपने क धो पर ढाते हुए जीते हैं। सम्मान या असम्मान के इतने सारे मानदण्डों को यदि कोई एक मानदण्ड खुले मैदान मे मात देता है तो वह है किस के पास अधिक पैसा है। या यो कहो कि कौन अधिक पैसा कमा सकता है। किसके घर टी० वी० है, किसके घर रेडियो या किसके घर ट्रांजिस्टर? कौन कैसा कपडे पहनता है? कौन है जिसको महीने मे उधार मागने की जरूरत पडती है किसको नहीं? उधार मागना, सवसम्मति म मानव-मात्र का सबसे निकृष्ट काय माना जाता है। फिर भी कालोनी म

रहने वाले अधिकाश लोग किसी न किसी के कर्ज के नीचे दबे हैं। कालोनी के बहुत से लोग जो पीछे से खानदानी है महाजनी का व्यापार करते हैं। इन लोगों से या कालोनी के चार-पाच दुकानदारो से हर क्वाटर के गहपति का मूल चरित्र माना जा सकता है।

ये क्वाटर सरकार की तरफ से उन कमचारियों को दिए गए हैं जो रजिस्टड फैक्टरियो मे काम करते हैं, फैक्टरी की गारटी पर और जो फक्टरी ऐक्ट की परिभाषा के अनुसार फक्टरी कमचारी की श्रेणी मे आते हैं।

सुधीर को यह क्वाटर तब मिला था जब वह उस प्रकाशन मे प्रूफ-रीडर था।

कानूनन सुधीर को अब यह क्वाटर खाली कर देना चाहिए। सुधीर की कोई बहुत अधिक आस्था कानून मे नही है पर सरकार तो चलती कानून के आधार पर है, इसलिए सुधीर को अच्छा नागरिक बनाने के लिए उसे कानून के तहत लाने के लिए सरकार ने उस पर मुकदमा कर रखा है कि मकान खाली करो। पर सुधीर छोडकर जाए कहा ? इसलिए वह भी सरकार से भिड गया है। मुकदमा जब तक चलता रहेगा तब तक तो पटा रहेगा। कचहरियो म फैला भ्रष्टाचार कभी-कभी *कितना न्यायसगत होता* है। उसका सुखद अनुभव सुधीर को इस मुकदमे के दौरान ही हुआ। फिर उसका खयाल यह भी है कि मुकदमा लडकर वह सरकारी न्याय को व्यापक मानवीय मच दे रहा है, तीसरे यह कि मुकदमे का तनाव उसे और कई तनावो से मुक्ति दिला रहा है, घर के लोग भी अपनी मांगें आगे खिसकाने से कतराते हैं। रमा कहती—देखते नही हो, कैसा मुकदमा चल रहा है, कितना पैसा बह रहा है। समीर और सदीप तो खैर कुछ नही *समझत पर सज्ञा कभी-कभी विद्रोह कर उठती, कहती "हम क्या करें।* क्यो छोडी नौकरी पापा ने ? उस समय सोचना चाहिए था कि नौकरी छोडते ही क्वाटर भी छोडना पडेगा। अब हर समय मुकदमा-मुकदमा करके हमारी जुबान बन्द करना चाहते हैं।"

रमा हसकर कहती, "देख लो, मैंने कभी तुम्हारी इस तरह टीका नही की। और चढाओ लडकी को सिर पर। क्या पटर-पटर जुबान चलाती है।"

सुधीर भी हस पडता, कहता, "बात तो ठीक ही कह रही है। तुम हर बात म मुकदमे का जिक्र करती ही क्यो हो ?"

"लो, यह कसूर भी मेरा ही हो गया।"

"मेरा मतलब है कि मुकदमा नही था तभी कौन घर मे दूध की नदी बह रही थी और जब नौकरी थी तब भी पैसा रखकर भूलने की दुविधा नही थी तुम्हे। फिर इस शब्द के खोल मे घुसकर कोई अतिरिक्त सुरक्षा मिलती है क्या। मत कहा करो, बच्चो के दिमाग पर बुरा असर पडता है।"

"तो क्या कहा करू ?"

"नही है, बस।"

"और वह मान जाएगी। जानती नही हो, कैसी भैरवी है।"

"भैरवी नही, उसका नाम सज्ञा है। बेहद सचेत लडकी है।"

"हा, तुम्हारी तरह।"

"वह तो है ही। लडकी बिल्कुल मुझ पर गई है।"

"मैंने कब कहा, तुम पर नही गई। भगवान मालिक है इस घर का।' कहकर रमा हस पडती।

रात भर की मानसिक ऊहोपोह ने सुधीर का मन बहुत भारी कर दिया था। उठते ही याद आया कि आज सना के सूट का कपडा खरीदना है और कल मुकदमे की तारीख है। सिल तो खैर सूट घर म ही जाएगा। पर इस समय तो सज्ञा कैसी निर्द्वन्द्व सो रही है देर तक सोना उसकी आदत है।

सुधीर ने आदत के अनुसार ऊचे सुर मे पुकारा, "चाय।'

बिना हाथ मुह धोए बिस्तरे म बैठकर एक कप चाय पीने की सुधीर की आदत है। रमा भी जानती है देर हुई तो वह हल्ला मचा देगा, इसलिए उसके उठने के लगभग साथ-ही-साथ वह चाय लेकर हाजिर हो जाती है। आज भी चाय' की आवाज के साथ ही साथ वह मच पर अवतरित हो गई। चाय सुधीर को पकडाती हुई बोली "रात भर क्या बडबड करते रहे ? बहुत अपने दीखे रात ? और बत्ती इसीलिए जलाकर छोड दी थी कि सपना साफ दीखे, अधेरे मे '

सुधीर ने चाय ली एक घूट भरा, आखो को पटपटाया, फिर कहा, "एक वक्त म एक सवाल ?"

"मुझे क्या करना है सवाल करके ! मुझे तो डर सिर्फ यह है कि सज्ञा तो तुम पर हसती ही है, बडे होकर यह दोनो भी हसा करेंगे। हसता कोई तुम पर है और शम मुझे आती है। मतलब आखें ही रात भर मट काते फिरो, मुह तो बन्द रखा करो।" कहकर रमा एक मस्त हसी हस दी।

सुधीर का मन खराब था। सुबह-सुबह यह पुराण उसे अच्छा नही लगा, बोला, "तुम्ह पता है, औरत और तोते म क्या फक होता है, मेरा मतलब दोनो के स्वभाव मे "

"पता है, कोई फक नही होता। फिर ?"

"एक ही कहानी हर समय "

"कहानी तो दुनिया मे एक ही है, बाकी तो सारी लघुकथाए है। हम लोग "

सुधीर भीक उठा, "तुम्हें मालूम है, मुझे "

बेहद तेजी से रमा ने बात पूरी की, "साढे आठ बजे जाना है। तीन बजे तक मैं आ जाऊगा। फिर सज्ञा का सूट का कपडा लेने बाजार चलेंगे। सो तो तुम घर पर लोगी ही "

"रमा" सुधीर ने आवाज ऊची की।

"पर मैं सोचती हू बारिश पानी का दिन है। कहा जाओगे आज ?"

"तो ? क्या करू ?"

"घर मे बैठो। आखिर हम भी तो हैं।"

"क्या हो गया आज तुम्हे ?"

"रात मैंने भी एक सपना देखा।" कहते कहते रमा सुधीर के पास ही बैठ गई।

"क्या ?"

"पहले तुम अपना सपना सुनाओ।"

"मैंने कोई सपना देखा ही नही।"

"छोडो, झूठ क्यो बोलते हो ?"

"झूठ नहीं, सच"

"तो बड़बड़ा क्यो रहे थे ?"

सुधीर ने पल भर चुप रहकर कहा, "भय और चिन्ता के टुकड़े कभी कभी जुड़कर सपने का भेस भर लेते हैं। ऐसे मे मुह से आवाजें निकलती ही हैं। उन आवाजो का—"

रमा झटके से उठकर खड़ी हो गई। अन्दर जाते जाते कह गई, "अपना यह मृत्यु पुराण बन्द करो। मुझे नही सुनना। उठकर निपट लो। मैं तुम्हारे जाने की तैयारी करती हू। और सज्ञा को उठा दो जो भी कहना हो उसी से कहकर जाना। मेरे बस का नही, उससे झक मारना।"

घर मे खटर-पटर, बच्चो की चीख पुकार और रमा के लहकते वाक्यो ने सुधीर के अन्दर की दुनिया को नेपथ्य तक खिसका दिया। पर साढे आठ बजे घर से बाहर कदम रखते ही छोटी छोटी धारदार चक्रिया तेज चाल से घूमकर दिमाग की नसो को काटने लगी। इस समय बारिश नही हो रही। पर आसमान पर बादल घुटे थे। रात भर भी शायद पानी नहा बरसा था। इसीलिए पथरीली और गढीली सडकें कुछ सूखी नजर आ रही थी। सुधीर को अच्छा लगा। सिर के ऊपर नमी हो और पैरो के नीचे सूखा तभी मजा आता है। ऊपर की नमी अगर नीचे कीचड़ कर दे तो मौसम का सारा रोमास

पुलिया आ गई। सुधीर ने देखा—पगली हाथ पर रखकर कुछ खा रही है।

सुधीर का सारा आक्रोश अचानक पगली पर केन्द्रित हो गया। रात की बात याद करके। पर इससे पहले कि सुधीर कुछ कहता पगली ने एक सीन खड़ा कर दिया। उसने सुधीर का देखा। हाथ पर रखी रोटी गूदड पर रखी। उठकर खडी हुई। सुधीर को तब दिखा कि वह सपाट नगी है। दो कदम आगे बढ़ी और पेट पर हाथ मारकर गाना शुरू कर दिया— "आएगा आएगा आएगा आनेवाला, आएगा '

सुधीर जुगुप्सा से भर उठा पर पता नही क्यो आदत के अनुसार वह भागा नहीं रुककर खड़ा हो गया।

पगली ने उसकी तरफ देखा। पल भर के लिए ठिठकी, कहा, "आओ।"

"क्या है ? रात तूने वह बत्तमीजी क्यो की। चल, कपडे पहन।"

पगली ने कहा, "आओ।"

कहकर पगली जोर-जार से हसने लगी। हसती जाती और कहती जाती, "सडक पर पडी और औरत से भी गदी बात नही करता। पगला कही का आओ दिन क्या और रात क्या "

और फिर जिस तरह के इशारे पगली ने शुरू किए, सुधीर झेल नही पाया। भाग लिया। बस स्टाप की तरफ उसे कही जाना है जाने कहा उसका दिमाग ठस्स हो गया

पगली, उसकी हसी की आवाज वे इशारे

वह पागल हो जाएगा

8

उसने मुडने के लिए दाई तरफ देखा ही था कि दीखा—एक और आदमी भी खुद मे डूबा हुआ बादलो से उल्टी दिशा मे बहते पानी को देख रहा है। और वह आदमी और कोई नही उसका बेहतरीन दोस्त आनन्द है जो पिछले दो साल से पता नही कहा गायब था। उसके घर जब भी सुधीर गया तो ताला बन्द मिला। एक दिन सुना आनन्द बनारस चला गया, साधु बन गया है। आनन्द की सफाई पसन्दगी नफासत, स्त्रैण सुन्दरता और बिना दारू, सिगरेट, चाय और औरत की जिदगी, दोस्तो की महफिल म सैकडों ठहाके उठवाती। आनन्द के चुटकुले तो पेट मे बल डाल डाल देते है। जिस होटल म आनन्द दूसरे-तीसरे दिन खाना खाता था, उसके बैयरे उस 'खुन्दकी' कहते पर उससे बेहद मोहब्बत करते। पहले वह आगे सामने गिलास, प्लेटें धुलवाता, फिर कभी सब्जी की देग म झांकता तो कभी आटे की परात के चारो तरफ घूमकर देखता। अपने सामने खड़े होकर रोटिया सिकवाता, वही कोई पकानेवाला उसमे ज्यादा था ॥

डाल दे। उसकी इन्ही हरकतो पर सब हसते पर वह कभी इनसे बाज नही आया। घर मे उसके पिता के सिवाय और कोई नही था। पिता रिटायर्ड जिंदगी बिता रहे थे। इसलिए ज्यादातर दिन तो दोनो फल-अडे खाकर ही गुजर करते। दूसरे तीसरे दिन जब रोटी के स्वाद को जी करता

पन्द्रह सोलह साल पहले आनन्द से दोस्ती हुई थी। दो साल पहले वह अचानक कही गायब हो गया था। सब दोस्तो ने उसे बहुत ढूढा, पर कही उसका पता नही चला। यहा तक नही कि उसका आखिर हुआ क्या। पिता भी पता नही कहा चले गए थे। घर मे हमेशा ताला बन्द मिलता।

आज कितने दिन बाद आनन्द दीखा है। कुछ कमजोर लगता है। कपडे भी कुछ मैले मले से लग रहे हैं। आनन्द और मैले कपडे ? कैसा ध्यान मे डूब नीचे बहते पानी को देख रहता है। इस 'प्यूरिटन' मे रोमास जाग गया क्या ? पर रोमास जागता तो ऊपर देखता नीचे क्यो देखता, तो ?

कुछ कौंधा और सुधीर ने आनन्द के ठीक पीछे जाकर हल्के से अपना हाथ उसके कधे पर रख दिया। सुधीर जानता था कि मुडकर उसे देखते ही आनन्द उसे कौली भर लेगा। कितने दिनो बाद उसकी धडकती छाती का स्पर्श नसीब होगा। कैसे वह कभी कभी इस स्पर्श के लिए तरस उठता रहा है। उसे अक्सर लगा है कि उसके गले लगाकर उसके पूरे शरीर के हर सैल को कोई हाथ से छूकर सात्वना दे रहा है। आज फिर उसे वह सुख मिलेगा। पर

आनन्द की यह बाहरी तन्द्रा तो टूटी पर अन्दर की तन्द्रा ?

आनन्द ने मुडकर देखा। दोस्त की आखो से नही, एक अपरिचित की आखो से।

सुधीर के मुह से चीख-सी निकल गई, 'आनन्द।'

आनन्द उतनी ही खाली दृष्टि से देखता रहा। उसकी दोनो हथेलिया रेलिंग पर पहले की तरह ही चिपकी रही।

सुधीर ने कुठित गले में से शब्द दागे, 'आनन्द, मैं सुधीर हू।"

'तो ? मैं क्या करू ? आगे बढ़ो।

"पागल हो गए हो। तुम मुझे पहचानते नही ?"

"पहचानता हू, तभी तो कह रहा हू आगे बढो।"

सुधीर का सारा दिमाग झटका खा गया। उसने यथाशक्ति सतुलन बनाए रखकर कहा, "क्या हो गया है आनन्द तुम्हे, तुम मुझे ?"

"मैं किसी को नही पहचानता। मैं किसी को पहचानना नही चाहता। मुझे पहचान शब्द से नफरत है। मैं किसी ऐसी गली मे नही घुसता जो कही न कही, मेरी पहचानी हुई दुनिया का हिस्सा रही है। 'और तुम, तुमने मालूम है क्या किया है इस वक्त तुम जाओ, आगे बढो सब भ्रम टूटने वाले थे एक मुरत, पर तुमने जाओ आगे बढो "

और झटके से आनन्द पीछे हटा, मुडा और शहर की तरफ भाग लिया। लगभग उतनी ही तेज चाल से, और उमी अन्दाज से जैसे एक जेब-कतरा किसी के गले से हार नोचकर भागता है। सुधीर को लगभग उसी तरह का झटका गले पर महसूस हुआ। वह कुछ दूर तक अपने उस बेश-कीमती दोस्त के पीछे भागा भी। फिर रुक गया। हतप्रभ पुल की रेलिंग का सहारा लेकर खडा हो गया। उसे लगा किसी ने उसे सैकडो बार घुमा कर अनायास ही धरती पर खडा कर दिया है। घुमेर ही घुमर सिर म और कुछ नही पैरों के नीचे की धरती पानी होकर बही तो घुमर आई थी सारा आकाश सिकुडकर प्रतिभा म सीमित हो गया था तब भी घुमेर आई थी पर किमी भी वक्त सुधीर का 'मैं' पूरी तरह मिटा नही पर यह कैसी घुमेर है धुरीहीन आदमी को देखकर तो देखनेवाला ही एकदम 'क्षर' मे पिघल रहा है चारो तरफ फैला सौदय पल भर म सारा काला पड गया है सडक पर लिसे चिपचिपे कीचड के सिवाय सारे राम एक पल म लुप्त हो गया

पता नही कितनी देर सुधीर उसी दशा मे खडा रहा

धरती तरल हाकर पैरो के नीचे स बहने लग तो सर्वव्यापी ब्रह्माण्ड तक जड हो जाता है , ।।

सुन सुधीर कब खिसकता हुआ पुल पार गया और कब वह घाटाघाट तक पहुच गया उसे खुद भी पता नही चला। गांधी भी हमेशा उडाता रहा है पर आज उसकी समाधि के पास से गुजरते हुए --

हुआ वह रो पडेगा। मरने के बाद आदमी के सुकून का कितना ध्यान रखा जाता है। कैसे शानदार हरे कालीन मे लपेट कर सुला रखा है गांधी को उसके 'पुत्र राष्ट्र' ने। कहते हैं, गाधी जब मारा गया मन से बहुत दुखी था। कितना खुशकिस्मत आदमी था, मन से दुखी हुआ और तत्काल मरने की सुविधा मिल गई। यह तो सच है, गाधी था खुशकिस्मत। जब जो चाहा, मिला। जो आन्दोलन धारा लोकप्रिय होने लगी उसका नेता मर गया। अच्छे बडे नेता अपने अपने कारणो से गाधी के चारो तरफ जुड गए। जिसने जरा भी चू-चपड की गाधी ने उसे मजबूर किया कि वह राजनीति की मुख्य धारा से खुद को काटने के लिए कुछ बडी गलतिया करे पर जो भी हो गाधी था सत ! दूसरे की चादर फाडो और अपनी फटी हुई चादर सियो, यह हिन्दू सत का प्रथम लक्षण रहा है। सत कहता है— किसी के प्रति क्रोध मत करो, किसी से घृणा मत करो, सबसे प्रेम करो यानि साधारण आदमी की तरह नही, महान आदमी की तरह पर यह आनन्द क्या हुआ इस आनन्द को ? यह साधारण से भी नीचे क्यो धस गया ? यह पागल क्यो हो गया ? नही, यह पागल नही है। अचानक इसके चेहरे पर से 'डबल' टूट कर गिर गया है। 'डबल टूट जाता है तो आदमी पागल हो जाता है। आज के समाज मे चेहरे पर चढा 'डबल' किसी के भी अस्तित्व की शत है पर यह अस्तित्व क्या चेहरे की कीमत पर

नही, वह सोचना नही चाहता सोच नही सकेगा। उसे कुछ-कुछ अन्दाज है कि आनन्द के साथ क्या हुआ है वह नीम-पागल क्यो हुआ है इसको सुधीर काफी सीमा तक देख सकता है पर इस समय वह सब वह देखना नही चाहता उसे सुकून चाहिए उसे समस्याओ का हल चाहिए, उस ठास सहानुभूति चाहिए उसे प्रतिभा के यहा चलना चाहिए

पर उसकी समस्याए ।

समस्याए हल करने का नैतिक साहस चाहिए

तो चलो वही चलते हैं

हां, नही

9

सब छूट जाता है। प्रतिभा की कोठी में घुसते ही पीछे चिपटा सब खुद ब खुद झड़ जाता है। चेतना अचानक तरल हो जाती है। कैसे होता है यह? व्यक्ति का भी 'फील्ड' होता है। चुम्बक लौह-चूर्ण के बिखराव को, उसकी असंगतियों को कितनी दूर से प्रभावित करता है। जैसे किसी आदमी के पीछे कुत्ते लगे हों, वह भागता-हाँफता किसी के पास पहुँचे और उसकी मात्र उपस्थिति उन कुत्तों को अचानक नेपथ्य में धकेल दे। पर जो भी हो, है यह जादू ही। जादू वहम भी हो तो भी सिर चढ़कर बोलता है।

हाँ, यह तो है, वहम और जादू एक ही तरह व्यवहार करते हैं। वही हरे कौपीन में लिपटा दीर्घकाय स्फटिक! और उसके भीतर बनी गुफा में गुड़ी मुड़ी बैठी वह ओस की बूँदें नहीं, गुड़ी-मुड़ी होकर वह कभी नहीं बैठती एक विश्वसनीय 'ह्यूमन फिगर' उभरती है वनवास पर उसके बैठने, खड़े होने, बोलने, सब में एक गरिमा है, एक विश्वसनीयता है वह वहम नहीं है न जादू है बस, अन्दर एक विश्वास जगाती है और अन्दर कहीं विश्वास जागे तो व्यक्तित्व जादुई अन्दाज से बदलता है बस, यही उसका जादू है यही उसका सौन्दर्य

पर, अविश्वसनीय तरल तपन भरा सौन्दर्य भी है उसके पास हाँ, है तो कभी कभी उसका मोतिया रंग अचानक सिर्फ सुनहरी नेक का हो नहीं उठता है

होगा, सुधीर को मोतिया पसन्द है सुनहरा उसके अन्दर तपिश पैदा करता है उसके बिखराव को बढ़ाता है कुछ पिघलने लगता है टूटने लगता है मोतिया में गहराई होती है सुनहरी किरणें सिर्फ बाहर को फेंकता है पर पिघले बिना कभी कहीं 'टैम्पोरल यूनिटी' स्थापित हुई है, हो सकती है?

पर, पर प्रतिभा का कद बहुत ऊँचा है वह उसके सामने ओह? क्या हो जाता है यह उसे, कितनी तेजी से भाव उतरने-डूबने लगते हैं यह क्या होता है

दो-दो सीढ़िया चढ़ता हुआ वह उस छोटे-से मच पर जा खडा हुआ जहा से वह अपने आने की सूचना देने के लिए बैल बजाता है

उसका हाथ बैल के बटन की तरफ बढा ही था कि अचानक उसे ध्यान आया कि शायद यह पहला मौका है जब वह बिना फोन पर तय किये आया है

यह तो गलत हुआ पहले ध्यान ही नही आया यह तो एकदम गलत है फिर ? वापिस चले पर वह शायद और भी गलत होगा यह भी ठीक है और इस तरह इस जगह खडे होकर सोचना तो शायद बहुत ही गलत है

कभी-कभी होता है कि एक क्षण के चारो तरफ गलत क्षणा का वत्त घिर आता है और देखते-देखते सिकुडना शुरू कर देता है तब इस क्षण मे जीते व्यक्ति के अस्तित्व को बचाने का एक ही तरीका होता है, बस कोई भी एक काम कर डालो एक नि शब्द विस्फोट होगा और सिकुडता दायरा फलकर टूट जाएगा और आदमी सुधीर ने जैसे जागकर पुश-बटन दबा दिया

उसे और दबावो से मुक्ति चाहिए
और मुक्ति सिर्फ प्रतिभा के सान्निध्य म मिल सकती है
पर यह प्रतिभा है कौन ?

काई साल भर पहले की बात है

और उससे भी दस साल पहले की बात है, जब उसकी कविताए, कहानिया छपा करती थी, यहा-वहा फुटकर और एक दिन उसने ऊबकर तय किया था कि उसे नही बनना लेखक, वह लेखक की तरह स्थापित होने की कभी कोशिश नही करेगा क्यो किया था उसने यह फैसला, ठीक से याद नही है पर था कुछ बहुत घिनौना बहुत त्रासद नही उसे नही बनना लेखक, उसने चीखकर खुद से कहा था और यहा-वहा से प्रकाशक-प्रेम से फुटकर काम लेकर जीना शुरू कर दिया था, और कभी कभी जब मन करता कि कुछ लिखे तो लिखता और धीरे से किसी दीमक लगी फाइल मे खिसका देता और पत्नी को धमकाकर कह देता, "मेरी कोई

चीज खोनी नही चाहिए।"

रमा हसकर कहती, "कह दूगी।"

"कह दूगी ? कह दूगी किससे ?"

"दीमको से। कि पूरी तरह नही खोनी चाहिए "

'तुम यह सब ठीक नही कर सकती ?"

"फायदा ? जो आदमी अपनी नई कविता भी दीमक लगी फाइल म रख सकता है, वह अपनी चीज की कीमत खुद ही नही "

सुधीर जोर से चीख उठता, "लक्चर मत दो, सब ठीक करो।"

और कुछ कभी ठीक न होता

फिर एक साथ पहले दीखी थी प्रतिभा

दीखी ही कहना चाहिए मिलना कहना तो गलत है हा, एकदम गलत

सुधीर उस प्रकाशक के दफ्तर मे घुसा तो दीखा, प्रकाशक के ठीक सामने की कुर्सी पर एक खूब सुन्दर, खूब चटकदार महिला बठी है, और जोर जोर से हस रही है। सुधीर ने सुना। हसी की आवाज कर्ण-मधुर ही नही थी, एक लय भी थी उसम। सुधीर के अनास्था-पीडित शरीर को एक मीठी झुरझुरी-सी महसूस हुई। वह बैठ गया। महिला की तरफ ध्यान से देखा सुन्दर है, वाकई बहुत सुन्दर है और खास बात यह है सुन्दरता शरीर विन्यास और चेहरे के नयन-नक्स की मोहताज नही है बस, सुन्दर है *क्या सुन्दर है, उगली उठाकर नही कहा जा सकता पर निस्सकोच* कहा जा सकता है कि बहुत सुन्दर है

प्रकाशक ने परिचय कराया, "प्रतिभा ये सुधीर हैं। कभी ये भी लिखा करते थे। अब—"

प्रतिभा ने धीरे से सुधीर की तरफ मुडकर कहा, "अब क्या हो गया ?"

सुधीर को याद है, उसने तोला था, प्रतिभा के स्वर मे व्यग नही था, फिर भी सुधीर की अनास्था-जनित कुठा सक्रिय हो उठी थी। उसने तुर्श आवाज मे कहा था, "बहुत लोग लिख रहे हैं, मैं भीड मे शामिल होना पसन्द नही करता।"

प्रतिभा ने तत्काल कहा था, "बिल्कुल नही होना चाहिए। आप अलग तरह का लिखिए। भीड मे शामिल भी नही होगे और लिखते भी रहेंगे।"

सुधीर ने देखा प्रतिभा उसी की तरफ देख रही है। उसने प्रतिभा की पुतलियो को पलक झपकते परखा। नहीं, व्यग कहीं नही है। इसी बार उसे दीखा कि प्रतिभा की आखें बहुत बडी हैं और आखों मे एक चाहत है दुनियादारी नही है उसकी दृष्टि किसी भी दबाव से स्वतन्त्र है। सुधीर का मन हुआ कि कहे आप बहुत भोली हैं, दुनिया से परिचित नही हैं। लिखने के लिए सवेदना को तीव्र करना होता है और छपने के लिए उसे कुठित। पर बिना किसी परिचय के

उसने धीमे से कहा, "आप ठीक कहती हैं। मैं लिख रहा हू और भीड से अलग हू। यही विस्तार का एकमात्र रास्ता है। क्योकि छपने के लिए भीड मे शामिल होने की बात तो छोडिए, भीड का गुलाम होना पडता है और वह मेरे बस का नही "

सुधीर को याद है प्रतिभा यह सुनकर उसकी तरफ ध्यान से देखती रही थी। होठ दढता से जुडे थे। दृष्टि अब भी व्यगहीन थी। पूरे चेहरे पर से हास्य गायब था, एक गम्भीर तन्मयता थी—सोच की, सहानुभूति की, विश्वसनीयता की।

सुधीर को याद है—उसने प्रतिभा का अनुभव किया था और मुग्ध रह गया था। उसके अन्दर की जडता को शॉक लगा था और वह उस 'शॉक' की गम गुदगुदी घर पहुचने तक महसूस करता रहा था। घर पहुचकर उसने अपनी पुरानी दीमक लगी फाइलें निकाली थीं और उन्हें बहुत देर तक उलटता पुलटता रहा था जिन्दा होने के चिह्न

किवाड खुलने की खटक से सुधीर का ध्यान टूटा। आधे खुले दरवाजो मे खडी प्रतिभा दिख रही थी

"तुम !"

"हा।'

' इस वक्त ?'

"हां, खाली न हो तो लौट सकता हू।"

"अरे ! पागल हो लौटोगे क्यो । अन्दर आओ ना "

सुधीर प्रतिभा के पीछे-पीछे ड्राइग रूम तक गया और पनाह लेते-से भाव म एक कोच मे धस गया

प्रतिभा खडी उसे देख रही थी । चिन्तित मन से

"पानी ?"

"नही ।"

प्रतिभा भी पास के एक कोच पर बैठ गई ।

"क्या हुआ ?"

"कुछ नही ।"

"मेरा मतलब अचानक बिना खबर किए ?"

"बस यो ही ।"

"यो ही ?"

"हा मन किया चला आया । तुम्हे बुरा लगा हो तो चला जाता हू ।" सुधीर ने बहुत धीमे से कहा ।

"ब्लैकमेल कर रहे हो ?"

क्या मतलब ?

जानते हो, मैं इतनी असभ्य नही हू कि कहू कि जाओ, इसलिए

"मैं तुमसे ये सब वाक्य सुनने नही आया "

"पूछ तो रही हू, क्यो आए हो ?"

"तुम्हे तो पुलिस मे होना चाहिए था सास नही लेने दोगी बत्तीसवी दफा कह रही हो क्यो आया ?"

"मैंने सिफ एक दफा पूछा है ।"

का मिलता "

"हा यह सच है, सौ दफा पूछती "

"पूछो ।'

"पूछूगी । बोलो चाय पियोगे या कॉफी ?'

"कॉफी । और कुछ खाऊगा भी, भूख लगी है ।"

"गुड, यह हुई न बात ऐसे बोला करो लाती हू "

प्रतिभा ज्यादातर चाय कॉफी खुद ही बनाती है । नौकर से नही

कहती। वह उठकर चली गई। सुधीर चुप नीले कनवास पर चिपकी हरियाली को देखता रहा। कहीं गहरे म सोच रहा था कि अब फिर अगर प्रतिमा ने पूछा कि क्यो आया है तो क्या जवाब देगा। पीछे-पीछे छूट जाने पर आदमी कितना खाली खाली महसूस करता है। आकाश मे लटकी बूंद की तरह। नहीं, बूंद म बन्द आकाश की तरह। वह कितना कोशिश करती है कि बूंद म बन्द आकाश बिखर जाए पर यहा तो समूचा आकाश पिघलकर चिम्मड हो गया है। उसे तो कोई नाखूनो से खुरचकर ही

'कॉफी।''

सुधीर ने प्रतिभा की तरफ देखा। कॉफी का प्याला थाम लिया। वह फिर रसोई म चली गई। शायद कुछ खाने को लेने के लिए। सुधीर के सिर पर लिपटा पल पिघलकर सिर को चिपचिपा करने लगा

क्या करती है यह प्रतिभा उसके साथ। वह होता है और उसकी काली छाया नही रहती। प्रकाश तेज हो जाता है और छाया गायब हो जाती है कैसा करिश्मा है बिना छाया का आदमी पर बात करने के लिए उसके पास कुछ और है भी तो नही, सिवाय उस काली छाया के, वीभत्स इतिहास के बात मजेदार है, बिना छाया का आदमी बिना इतिहास का आदमी नही, वह आदमी इतिहास जिसका पीछा कर रहा है बस, कभी सिर पर सवार तो कभी पीछे छूटकर आखा से ओझल

प्रतिभा के दीखते ही उसका इतिहास मुह फेरकर खडा हो जाता है पर होता तो है वही भी हो।

और जो होता है उसका प्रभाव भी होता है -

'लो, खाओ। पराठा बना दिया तुम्हारे लिए। कहा से आ रह हो, भूखे प्यासे?'

सुधीर चुपचाप खाने लगा।

'कॉफी ठडी तो नही हो गई?'

सुधीर ने एक घूट भरी, कहा, 'नही।''

सुधीर खाता रहा। प्रतिभा देखती रही। चुपचाप।

'क्या हुआ है बताओगे नही?'

सुधीर ने काफी का प्याला उठाया और एक ही दफा मे पूरा प्याला गले मे उडेल गया।

"ठडी थी ना। कहा क्यो नही। और बनाती हू।"

"नही।"

"एक पराठा और सेंक दू ?"

"नही।"

प्रतिभा खिलखिलाकर हस दी, "क्या 'नही-नही' लगा रखा है ? किसी बात पर हा भी बोलो।"

"हा बोलने को है क्या ?"

"क्यो, क्या आसमान गिर पडा तुम्हारे सिर पर ?"

"तुम नही समझोगी।"

"जी हा, और क्यो समझू और जब यह जानते हो कि मैं नही समझूगी तो घुमा फिराकर समझाने की कोशिश क्यो कर रहे हो ?"

पल भर चुप रहकर सुधीर ने कहा, "प्रतिभा तुम लोग—"

पर चील की तरह झपटकर प्रतिभा ने बात काट दी, "मेरी बात करो। मैं किन्ही लोगो की प्रतिनिधि नही हू।"

"मेरा मतलब—"

"मतलब कुछ भी हो, पर बात मुझसे कर रहे हो तो मुझसे ही करो, तुम्हारे पीछे हजार लोग हो सकते हैं, पर मेरे पीछे कोई नही। मैं किसी के कामो की जिम्मेदार नही हू, ना ही किसी को 'शील्ड' करने की मूर्खता मैंने कभी की है और गलत न समझो तो बताए देती हू कि इस तरह बोलने को मैं अपनी 'इन्सल्ट' मानती हू और यह हक मैंने आज तक कभी किसी को नही दिया।"

कहते कहते प्रतिभा का चेहरा आक्रोश से लाल हो गया। आखो की पुतलिया जलती रेत पर पडी मछलियों की तरह करवटें बदलती रही।

सुधीर सुन्न रह गया।

कई मिनट चुप रहकर फिर बोली, "बहरहाल पूछना चाहती हू कि बात क्या है जो इस कदर हिस्टब्ड हो। मुझे खुशी होगी अगर बता सकोगे। कुछ हुआ, तुमने नहीं बताया, और तुमने बताया और मैं कुछ

न सकी तो—"

प्रतिभा अचानक टूट गई।

"रुक क्यों गईं ?"

"तो रात को सोने के लिए पिल्स लेने पड़ेंगे।" कहते-कहते सुधीर ने देखा कि प्रतिभा की आखें नम हो गई हैं।

' तुम प्रतिभा, इतना महसूस करती हो ?"

"नही, मैं तो पत्थर की बनी हू तुम्हारे हिसाब से हम लोग तो पत्थर के बने होते है और "

"मैं माफी चाहता हू प्रतिभा, आई एम रीयली सॉरी !"

सुधीर विह्वल हो उठा।

' छोडो उसे, क्या हुआ है बताओ।"

"पर "

"मैं कहती हू बताओ।"

सुधीर का अह का नाटक बिखर गया। उसने सब कुछ बताया। पलक झपकते प्रतिभा ने समाधान भी कर दिया। सुधीर क्षण म हुआ जीने वाला प्राणी समस्या हल हुई, मन हल्का हुआ और लगा साहित्य और राजनीति के फारमूले बुनने उधेड़ने। प्रतिभा ने भी खुलकर हिस्सा लिया। और चाय पिलाई। खाने को पूछा। धीरे धीरे चलने का वक्त हुआ। चलने से पहले धीरे से, स्नेह से प्रतिभा ने कहा, "सकोच मत करना, आइन्दा भी।

पर कोठी से निकलते ही सुधीर एकदम घबरा उठा जो छूट गया था वह खड़ा उसका इतजार कर रहा था और कोई उसे चिढ़ा चिढ़ाकर कह रहा था— तुम यहा आए इसलिए थे कि वह तुम्हारी समस्या हल करेगी। तुम्हे रुपया देगी।

नही मैने छल नही किया। मुझे जरूरत थी। हो सकता है मैं इसी आशा म आया हू पर प्रतिभा मेरे लिए

सुधीर ने चीखकर खुद से कहा पर आगे की बात चारों तरफ गूजते ठहाको की आवाज से फट गई।

सुधीर ने दोनो हाथ पीछे बाधे, गदन झुकाई और किसी से कनी-सी

काटकर घर की तरफ बढ चला।

उसे लगा कोई उसके पीछे हो लिया है नि शब्द ठहाके लगाता हुआ।

10

सुधीर अपने क्वाटर के बाहर खाट बिछाकर कभी नही सोता। पखा हो या न हो वह कमरे मे किवाड बन्द करके ही सोता है। बाहर ठडी हवा हाती है, पर उसका मानना है कि ठडी हवा के साथ बदबू मन का बहुत खराब करती है। चीजो का अपना-अपना मेल होता है। बदबूदार ठडी हवा तो मुहावरे के तौर पर भी अजीब ही लगेगी। पर रमा का तक और है। उसके हिसाब से बहती बदबू कुछ नुक्सान नही करती। जिस तरह बहती गगा मे गिरकर सब अपवित्र पवित्र हो जाता है उसी तरह हवा पर बहती बदबू भी बहुत मनभावनी लगती है। वहा रहने वाले और लोगो का मन भी कुछ-कुछ इसी प्रकार है। सिवाय उन लोगो के जो अकसर इस बदबू होने की चर्चा को कुछ दिमागो का खलल बताते हैं और खुलकर कहते हैं—'साले बाबूगिरी दिखाते हैं। रहेगे मजदूरो की बस्ती में और बात करेंगे बदबू की। लगवाते हैं, सालो के लिए, रात की रानी।'

बात यह है कि सुधीर के घर के ठीक सामने से जो नाला बहता है उसम से होकर फैक्टरियो का फालतू पानी दूर तक जगल म जाकर पसर जाता है। दरअसल यह बस्ती पहले नही थी इसीलिए इस नाले को इधर से निकाला गया। बस्ती बनने के बाद इस नाले को ढक दिया जाए यह किसी को ध्यान ही नही आया। गर्मियो और सर्दियो मे तो खैर ठीक है पर बरसात मे यह नाला थोडा उफनकर बहता है। अच्छा भी लगता है। बच्चा को खेल मिल जाता है और माओ को बच्चो को बचाने का काम।

पर आज सुधीर ने घोषणा की, मैं बाहर "सोऊगा!'

रमा ने आश्चय से सुधीर की तरफ देखा, पूछा, "क्यो ?"

"क्यो क्या मानी ? बस मेरी मर्जी।"

"वही तो पूछ रही हू, आज यह मर्जी आई कहां से ?"

"तुम्हारा तो है दिमाग खराब, जो कर रहा है, बस।"

"बाहर बिछा देती हू तुम्हारी खाट, खुशी की बात है। पर एक बात बताए देती हू दो घंटे बाद फिर मत कहना कि मर्जी ने करवट ले ली, मैं तो अन्दर ही सोऊगा।"

"आहो, तो उसम क्या है, मन हुआ तो उठकर अपनी खाट अन्दर डाल लूगा।'

'हा वह तो मुझे मालूम है—खुद डाल लूगा। आदमियो वाला कोई काम तुमने कभी खुद किया है " कहकर रमा खिलखिला कर हस दी। सञा भी पास मेज कुर्सी पर बैठी पढ रही थी। उसे बातचीत म मजा आ रहा था। उसने अपनी किताब पर से सिर उठाया और पिता की नक्ल उतारते हुए कहा, 'सञा आ-ना बेटे एक गिलास पानी तो लाना, और सुन जरा माचिस भी।'

सुधीर को भी हसी आ गई। सञा और रमा तो हस हस के लोट पोट होने लगी। हसते-हसते रमा ने कहा, "सञा तुझे याद है उस दिन क्या हुआ था ?'

'किस दिन मा, कोई एक दिन हो तो याद भी रहे।"

'वह पहले वाले मकान में जब एक दिन लेखक जी, खुले में साए थे और बारिश आ गई थी। काफी देर पडे भीगते रहे थे। वह तो मरी नीद खुल गई। ध्यान आया तो जगाकर अन्दर लाई। पूछा तो बोल–ऐसा लगता रहा जैसे सपने में भीग रहा हू।"

कहते-कहते रमा फिर जोर से हस दी।

इस बार सञा ने टोहका दिया 'पापा, मम्मी को डाटो।"

सुधीर खिसिया रहा था बोला, "क्यो ?"

'ये तुम्हें पागल कह रही हैं।'

सुधीर उठकर खडा हो गया, धीरे से बोला, "पागल है।' फिर कमरे स बाहर निकलते हुए कहा, "हस लो खूब दोनो, फिर बिस्तरा बिछा देना। सोऊगा मैं आज बाहर ही।'

बहुत दिनो बाद सुधीर और रमा की खाटें बराबर-बराबर बिछी।

इस तरह के घरो मे स्त्री पुरुष नाम मात्र को ही पति पत्नी होते हैं। पति-पत्नी की तरह साथ सोना उनको बच्चो के साथ लुका छिपी खेलकर ही नसीब होता है। बाहर खाटें साथ पडने से भी सुविधा सीमित ही रहेगी। हाथ छू लिया। पैर पर पैर रख लिया। या इस तरह की कुछ फुटकर चेष्टाए। जिनसे पैदा हुई उद्दीप्ति की हत्या करने के लिए काफी मानसिक बल की आवश्यकता पडती है। वैसे भी सुधीर इस मामले मे थोडा अलग है। स्पर्श-सुख के साथ तत्काल उसे शरीर-सुख चाहिए। इसीलिए सामान्य तौर पर वह स्पर्श से कतराता है। बाद की हिंसक प्रक्रिया उसके शरीर मे बहुत सडन पैदा करती है। आज यो भी उसका मन कुछ और ही सोचने को कर रहा था। रमा अब अपनी खाट डाल रही थी तो एक बार उसका मन किया था कि कह दे—अपनी खाट जरा दूर को डालो, पर कह नही सका। रमा को बहुत बुरा लगेगा। उसने सोचा—लेटते ही सोने का नाटक किया जा सकता है।

पर नाटक चला नही। उसकी आखें खुली पडी थी कि रमा ने बात शुरू कर दी। बोली, "प्रतिभा जी कैसी हैं ?"

"ठीक हैं, बढिया।"

"आज मिली थी क्या ?"

"हा, मैं गया था। ये सज्जा के लिए पैसे उन्ही से लाया हू।"

"प्रतिभा जी से ?" रमा शायद चकित थी।

"हा। क्यो ? उनसे नही लेने चाहिए थे ?"

'मुझे क्या मालूम। यह तुम्हारे सोचने की बात है। पर क्या तुम घर के बारे मे सब उन्हें बताते हो ?"

"हा, लगभग सभी कुछ।"

"क्यो ?"

'अच्छा लगता है। और क्या ?"

"और पैसे लेना ?"

सुधीर मिनट भर चुप रहा। फिर धीरे से बोला, "सच पूछो तो बुरा नही लगा। एक मिनट को खयाल आया था कि कहीं मैं इसीलिए तो प्रतिभा के यहा नही जाता कि वह धनी है और समय पर काम आ सकती

है, पर वह गलत था। एकदम गलत था। मैंने यह बात खुद को खूब खोदकर जान ली है कि यह गलत है।"

"तो सही क्या है ?"

"सही ? सही क्या है क्या मानी ?'

"मतलब यह कि क्यो जाते हो वहा ?'

"मेरी दोस्त हैं और क्या !"

"तुम्हारा मोह नही है उन पर ?"

सुधीर फिर मिनट भर चुप रहा। फिर बहुत धीरे से रमा की तरफ करवट ली, बोला, "हा है।"

"अपने दिमाग को समझते हो ?"

"क्यो ? समझता हू तभी तो कह रहा हू।'

"वह नही कह रही। मेरा मतलब है कि जब तुम्हे मालूम होगा कि प्रतिभा जी सिफ तुमसे सहानुभूति रखती हैं और कुछ उनके मन म नही है तो तुम्हारे दिमाग की क्या हालत होगी, तुम्हें मालूम है, कुछ अदाजा लगा सकते हो ?' रमा पता नही क्यो, कहते-कहते हाफ गई।

सुधीर ने अब पूरी तरह रमा की तरफ करवट ले ली। उसकी तरफ ध्यान से देखते हुए उसने कहा, "मालूम है।'

"पागल हो जाओगे ना ?"

"नही, मैं कह रहा था, मुझे मालूम है प्रतिभा के यहा कुछ नही है। सब कुछ इकतरफा है।'

रमा को झटका लगा। उसने पति की तरफ आश्चय से देखा। ऊची फुसफुसाहट म बोली, 'मालूम है ? फिर ?'

'फिर क्या ? जो है सो है।

"क्या है ? तुम उनसे प्रेम करते हो, मानी करने लगे हो ?'

इस बार सुधीर बहुत देर चुप रहा। रमा उसकी तरफ टकटकी लगाकर देखती रही। सुधीर बोला तो रमा चौंककर जागी और सुनने लगी। सुधीर कह रहा है "मैं तो सिफ इतना कह सकता हू कि इस समय वह मेरे दिमाग पर बुरी तरह हावी है। मरा चेतन और अवचेतन उसके बिम्बों स आक्रान्त है। शायद इसको ही प्रेम कहते हों। मुझे यह भी

अच्छी तरह मालूम है कि यह सब इकतरफा है और शायद रहेगा भी। उसकी अपनी अलग दुनिया है और उसमें मेरे लिए कोई जगह नहीं है। पर मैं लाचार हूं। मुझे लगता है रमा, प्रेम शायद होता ही इकतरफा है तुम्हीं बताओ, तुम मुझसे प्रेम नहीं करती ?"

"मेरी बात छोड़ो, मैं पत्नी हूं।"

"मुझे मालूम है, तुम सिर्फ पत्नी नहीं हो। वह मुझे मालूम है।"

रमा हल्के से हंस दी, बोली, "तो अब तुम्हारी यह हालत हो गई है कि तुम गिड़गिड़ाने भी लगे हो।"

"क्या मतलब ? गिड़गिड़ाया किसके सामने हूं मैं ?"

"इकतरफा लगाव में गिड़गिड़ाने के सिवाय होता ही क्या है ?" रमा ने कहा, बात तोड़ी और पलभर रुककर फिर जोड़ दी, "खैर जो भी हो। पर दो बातों का ध्यान रखना। एक तो यह कि तुम्हारा स्वाभिमान और मेरा स्वाभिमान अलग चीजें है, और दूसरा यह कि बहुत दूर निकल जाओ तो मुझे बता देना, मैं आवाज लगाना छोड़ दूंगी। हां, एक बात और, *बिना पूछे बता रही हूं, मुझे विश्वास है कि तुम मोह करने के असली* कारण में हेरा फेरी नहीं कर सकते। मुझे विश्वास है, तुम उनसे प्रेम करने लगे हो मुझे विश्वास हो गया है "

"तुम्हें दुःख हुआ है रमा ?"

"नहीं सुख मिला है।"

दोनों चुप हो गए। सपाट लेट गए। दोनों ने मुंह आकाश की तरफ कर लिया। दिन में आज भी बादल घिरे रहे थे। बूंदाबूंदी भी बीच बीच में होती रही पर तेज बारिश नहीं बरसी। इस समय आसमान बिल्कुल साफ था। बिना सितारों का नीला-काला आसमान। नम और चिपचिपा।

पता नहीं कितनी देर बाद रमा फिर बोली, "जाग रहे हो ? '

"हां, क्या है ?"

' एक बात और, यह सोचकर कभी मुझे छोटा न करना कि मैं ईर्ष्या भी कर सकती हूं।"

सुधीर विह्वल हो उठा, हाथ उठाकर उसने रमा के माथे पर रखा और भारी आवाज में कहा, "मैं तुम्हें पहचानता हूं रमा, तुम्हारे बड़प्पन

को जानता हू । मैं "

रमा ने बात काट दी, "पर मेरे बडप्पन की छाया मे
पन मत करना नही तो मैं तुम्हें छोड दूगी।"

और इससे पहले कि सुधीर कुछ बोले रमा ने एक
सुधीर ने मुह फेर लिया। चाहकर भी फिर वह रमा
दरवाजा न खोल सका।

नीद नही आई सुधीर को। रमा का मालूम न
करवट नही बदली। सुधीर के मन पर कुछ ही देर रमा
तैर सकी फिर वह पिघलकर उस दुनिया मे ढुलक गया
इच्छा म आज वह बाहर सो रहा है

चारो तरफ जमी चुप्पी अधेरे को 'क्रिस्टल' मे बदर
का विशाल 'क्रिस्टल काले पत्थर से बने विशाल गुम्बद क
ऊघता हुआ सा। सुधीर उसमे एक मुनगे की तरह धसा
हुआ। सुधीर की दाइ तरफ कोई सौ डेढ सौ फीट पर एक
उसकी मदी मदी रोशनी गुम्बद को लिजलिजा बना र
म सितार होते तो पूरा गुम्बद थोडा सा रुमानी हो उठ
तो महसूस हो रहा है कि गुम्बद की गोल दीवारो के नी
फैला हुआ है और गुम्बद बस उडने ही वाला है प्रतिभा सु
के गुम्बद की दीवारो के नीचे फैला बारूद होती है उस
गुम्बद फटने ही वाला है फिर ? फिर क्या ? नया अ
पुराने अस्तित्व की चिदिया हवा म उडती हुई कितनी मन
पर ज्यादा दूर तक नही उड पाएगी गुम्बद म हवा
थोडा ऊचा उछलकर फिर उसके नए अस्तित्व के चारो त
हो जाएगी वह एक एक को उठाकर पढेगा घिसी अप
के पन्ना की तरह और हसेगा काले पत्थर से बने
हसी की आवाज गूजेगी वह सहमा-सहमा उस गूज मे लि
वह नही उसका चेतना पिड

अपरिचित के इतिहास की फैली चिदिया
एक-एक उठाऊ नही, उतना धैर्य कहा बचा है

जीने का छोटा
करवट ली और
से बातचीत का
ही। उसने फिर
की कही हुई बातें
जिसमें रहने की
देती है। अधेरे
तरह खडा है।
। फड-फडाता
लैम्प पोस्ट है।
ही है। आसमान
पर इस समय
के डायनामाइट
धीर के अस्तित्व
के अस्तित्व का
स्तित्व मिलेगा।
रजक लगेगी।
ही आ पानी न
फ आकर जमा
रचित इतिहास
म्बद मे उसकी
पटा रहेगा

तो क्या उडते-उडते जो चिदी जो शब्द झलका जाए बस, तुम निश्चेष्ट लेटे रहो चेष्टा करोगे तो इबारत का अर्थ बदल दोगे अर्थ बदलने मे बडा अन्याय असम्यता कोई नही और इबारत का मच चेष्टा करके नही पकडा जा सकता सच को महसूस किया जा सकता है चेष्टा करना कि जो महसूस करो उसकी इबारत बन जाए, हो सकता है कि मच की कोई झलक तुम ले सको अब यह प्रतिमा ही है क्या जानते हो तुम उसके बारे मे कुछ भी नही पर कितना तुम उसे महसूस करते हो बस, वही तुम्हारा सच है उससे इधर उधर मत हिलना, नही तो डूब जाओगे जो भी दिखे उसे अपने एहसास के 'प्रिज्म', म से देखना नही तो सब झूठ दिखेगा और

प्रतिभा खुद एक एहसास है, एहसास का बना 'प्रिज्म', उसमे से देखने से दुनिया बडी सतरगी दीखती है खूबसूरत दीखती है पर, पर दुनिया सतरगी तो है, उतनी खूबसूरत नही है जितनी दीखती है

खुद प्रतिभा की पलको पर वेदना की काली छाया हर समय ओट दिए रहती है

और ये चिदिए यह कसा खेल कर रही हैं खुल-खुलकर सुधीर की आखो तक चढकर वही खडी रह जाती है

कैसी कतार सी लग गई है

गुम्बद मे हवा नही होती ना

और सुधीर के अस्तित्व के गुम्बद मे गहरा नीला शून्य है जो जहा होगा वही रुका रहेगा जड आकाश शायद इसी को कहते हैं

तो ? आखें बन्द कर लू ?

पर पलकें भी तो जड हुई पडी हैं चिदिया पर लिखी इबारत पढनी तो पढेगी ही

तो पढो पर पर कही ऐसा न हो कि पढते-पढ़ते फिर जो छितरा रहा है, उसे ओढकर, ओढकर बैठ जाओ, नही तो

नही, ऐसा नही होगा, प्रतिभा उसे बचा लेगी, उसे विश्वास है

11

क्या हुआ था।

जो भी हुआ था, आज कितनी दूर है गहरे अंधेरे मे जुगनू की तरह चमक रहा है जुगनू भी खूब मच्छर होता है, पख खोलकर उडान भरेगा तो चमकेगा और पख बन्द करके कहीं बैठ जाएगा तो अधेरे म गुम वही, बीती घटना की याद की तरह कितने जुगनू हैं उसके दिमाग म पख फडफडाते हुए कभी चमकते, कभी अधेरे म गुम, कभी दूर, कभी पास और

क्या लिखा है, इस चिंदी पर ?

क्या मतलब हुआ इसका ?

लिखा है—तुम जब उसे मारोगे ता उसकी आखो मे इतनी मोहब्बत होगी, तुम्हारे लिए, कि तुम उम्र भर उसे भूल नही पाओगे ?

हु, क्या बेवकूफी से भरा वाक्य है भला

पर एक बात तो सच है, भूल तो नही पाता हा यह सच शायद सच है, यह जुगनू सबसे अधिक फडफडाता है अधेरे मे कभी गुम नही होता जिन्दगी का भरपूर अधेरा उसे कभी लील नही पाया, वह अधेरे का

दखो, हो गई न गडबड वही जुगनू सबसे पहले पख खोल बैठा जिससे तुम हमेशा कनराते रहे जिसने हमेशा तुम्हारा जीना मुहाल रखा जो

छोडो चिन्दी पर लिखा मजमून पूरा पढो हा आग लिखा है—हत्यारा मारने से पहले कुछ क्षण के लिए जिस डर को जीतता है, मारने के बाद उम्र भर उसी डर का गुलाम रहता है।

बहुत भयावह सच है आक्रामक सच पर रुको पहले पूरा मजमून पढ लो। अभी एक सतर और है—

लिखा है—जब वह उसे मार रहा था और तुम खडे देख रहे थे तो तुम उसे मार रहे थे। मारने वाला उसकी तरफ देखे न देखे, तुम्हारी तरफ भरपूर नजर से जरूर देखेगा और तुम उम्र भर उसे भूल नहीं पाओगे

ओह ! हटाओ इन चिंदियों को मुझे नहीं पढ़ना इनका मजमून मुझे नहीं याद करना अपना इतिहास मुझे नहीं

कोई हँसा है, जोर-जोर से, ठहाके लगाकर वही, जो तब हँसा था जब वह प्रतिभा के घर से बाहर निकला था वही है, बिल्कुल वही सुधीर हँसी की इस आवाज को बखूबी पहचानता है

दूसरी चिंदी ने पहली जगह ले ली है आँखों के सामने खड़ी चमक रही है उसे 'मेस्मराइज' कर रही है खुद पर लिखी इबारत को पढ़ने को मजबूर कर रही है शायद पढ़ना ही पड़ेगा

चलो पढ़ ही लेते हैं

इस पर भी वैसे ही तीन परे हैं

लिखा है—किसी की मदद से किसी का मत बचाओ, वह अपना हिस्सा जरूर मांगेगा और फिर जिसे तुमने बचाया है, तुम्हें कभी मुआफ नहीं करेगा

और लिखा है—मन जीतने से पहले शरीर मत लो। शरीर लेने के बाद मन जीतने का प्रयास मत छोड़ो। उलटा चलोगे तो विद्रोह ही पल्ले पड़ेगा और कुछ नहीं

और—बहुत चौकन्ना और डरपोक आदमी घर आए मेहमान का उचित सत्कार नहीं कर पाता। जो बाहर घटी घटना का अर्थ घर आकर समझते हैं उम्र भर पछताते हैं। अपने प्रिय के अहं को ठेस पहुँचाना उसकी हत्या करने से छोटा अपराध नहीं है

सुधीर हड़बड़ाकर जाग गया उठकर बैठ गया चारों तरफ देखने लगा अंधेरे में झाँककर रमा शान्त सोई है आसमान में बादल घिर आए हैं अंधेरा और गहरा हो गया है यह क्या था ? भूत या भविष्य ? या तीनों गड्डमड्ड भूत, भविष्य और वर्तमान कहीं कुछ खूबसूरत नहीं है—सुधीर के अन्दर, बस डर ही डर जो भी खूबसूरत है पहचान नहीं पड़ता इतने घुप अंधेरे में जीना गुम्बद में बिना किसी खिड़की के बिना

रमा को जगा लूँ ?

नहीं एक अमूर्त खिड़की भी बन्द हो जायगी

तो ?

तो क्या। लेट जाओ। अभी तो—

नही, और एक भी चिंदी पढने की सामर्थ्य नही है, उसमे पर इन दोनो का लिखा मजमून पिघल कर फल रहा है

तो उसी को ब्योरेवार पढू ?

कुछ पढा जा सकता है, तो पढ़ लो।

बहुत पुरानी बात है। वह कोई सत्रह साल का रहा होगा पूरे देश मे मारकाट मची थी हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के लिए हिंसक पशु थे आदमियो जैसी बोली बोलते और जानवरो जैसे काम करते कुत्तो की तरह बच्चे गायो भैंसो कुतियो की तरह खुली सडक पर दातुन कराती औरतें पास-पास लगी चिताओ की तरह जलते मकान घर छोडकर बीहड जगल की तरफ भागते आदमियो के काफिले चेहरो पर सिसकने के बाद का नम सन्नाटा लिए आतकित दुख से अभिभूत खुदा का नाम याद करते हुए राम सुमरनी लपेटते जिसके नाम पर मर रहे थे उसी का नाम मोहब्बत स लेते हुए

सुधीर को याद है उसके शरीर का लोहू भी तभी-तभी गम हुआ था हाथो पैरो मे शक्ति फूट रही थी उसके ग्रामीण शरीर मे सामान्य से अधिक जोर था गुमसुम सुधीर हमेशा अन्दर उबलता रहता कुछ न कुछ करने को मन करता अच्छा या बुरा

उसने देखा, चारो तरफ कुछ हो रहा है उसने महसूस किया, उसके हाथो पैरो म पख निकल आये हैं उसके शरीर का हर दाना रेगिस्तान की बालू के दानो की तरह भभक रहा है

उसने भूत की तरह देशव्यापी श्मशान म घूमना शुरू कर दिया है

उसने कही से एक गुप्ती प्राप्त कर ली थी

वह भीड म होता सामने से गोलिया बरसती दुश्मनो के मकानों मे बन मोर्चों से सुधीर के पास खडा एक आदमी गिर पडता सब भाग खडे होते, पर सुधीर टकटकी लगाए उस गिरे पडे आदमी को घूरता

रहता हा, उसे याद है कई आदमियो की चीखती आखो के बोल उसने सुने थे एक सुन्न नपुस की तरह और सुनकर वह चुपचाप वहा से हट जाया करता था एक 'मेस्मराइज्ड' जमूरे की तरह

फिर ?

फिर एक दिन उसने भी एक आदमी की पसलियो और पेट के बीच बने छोटे-से गढे मे अपनी 'गुप्ती' खोलकर घुसेड दी थी।

पूरा फल कुछ क्षणो के लिए उसकी दृष्टि से ओझल हो गया था जब फल बाहर आया था उसने महसूस किया था, एक लेस-सा उस पर लिसा है

वह चिपचिपा लेस आज तक उसकी छाती पर, उसकी चेतना पर लिसा है

उसकी आखो की मोहब्बत आज भी उसकी आखो मे बसी है

अनचाही 'गुप्ती' जब शरीर मे जाती है तो सारा शरीर चिपचिपा हो जाता होगा

तभी तो तभी तो वह मर गई थी पता नही, तभी की बात है या कुछ दिन बाद की पर उसे अच्छी तरह याद है उसके अपने दोस्तो की 'गुप्तिया' एक एक कर उसके शरीर मे घुसी थी और वह मर गई थी इन्ही दोस्तों की मदद से उसने उसे एक बहुत वीभत्स स्थिति से उबारा था और उन्ही दोस्तो ने उसकी गैर हाजिरी मे

मरते हुए कहा था मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूगी, मर कर भी—

और वह सुधीर के साथ है

दोनो सुधीर के साथ हैं

उसके चारो तरफ घूमते हैं उसके आडम्बरी रूपो पर जोर-जोर से हसते हैं उसका पीछा करते हैं उसे खिजाते हैं

पसीने मे तरबतर सुधीर हडबडाकर चारपाई पर ही घुटनो मे सिर देकर बैठ गया सच्चाई से बुना दुःस्वप्न और भी भयावह होता है भयाक्रान्त सुधीर का मन कर रहा था है कि वह उठकर प्रतिभा के घर की तरफ भागना शुरू कर दे भागता चला जाये जब तक वह बेहोश न हो जाय चाहे रास्ते मे चाहे उसके दरवाजे पर या हो सके तो उसके

पैरो मे   एक अपराधी की तरह

पर वह उठ नही पाया है   उसका शरीर टूट रहा है   अधेरे मे बने विशाल गुम्बद म अकेला बैठा सुधीर बुदबुदा रहा है—'तुम्हारे होठो की हल्की सी छुअन, प्रतिभा, मेरी चेतना की तमाम सिलवटो को निकाल देती, पर तुम्हारे गव ने कभी तुम्ह झुकने न दिया और मुझे, मेरे अपराध जनित सकोच ने कभी उबरने

अधेरा बहुत गाढा हो गया है

सुधीर के अदर थोडा सा अधेरा पिघलकर उसकी आखो मे छलक आया है

रमा ने उसकी तरफ करवट ली है

12

अगले दिन सुबह सुबह रमा ने याद दिलाया, "तुम्हे याद है ना, कल मुकद्दमे की तारीख है।

सुधीर ने कहा "याद है।'

'और चाय पिओगे ?"

' पी लेंगे।'

रमा ध्यान से सुधीर का चेहरा देख रही थी। धीरे से बोली, ' तुमने बहुत दिनों से कुछ लिखा नही ?"

'लिखूगा।"

' क्या हुआ ऐसे क्यो बोल रहे हो ?'

सुधीर ने बेहद ठडे स्वर म कहा, "चाय।"

रमा मिनट भर खडी रही फिर मुडी और रसोई मे चली गई। सुधीर ने जल्दी-जल्दी चाय पी। तैयार हुआ और घर स निकल आया।

उसके दिमाग म इस समय एक ही बात है। कल की तारीख के लिए इन्तजाम करना है। कल तो वकील को भी देने होंगे। कई तारीखो स टाल रहा है।

सबसे पहले सुधीर जहा पहुचा वहा घुसते ही सुधीर को दिखा कि दरबार लगा है। हिन्दी साहित्य केन्द्र के दफ्तर म मालिक की विशाल मज के चारो तरफ पडी कुर्सिया पर हिन्दी के दिग्गज, गैर-दिग्गज साहित्यकार जमे थे। मालिक महोदय—सेठ राममनोहर जी—स्वय एक अच्छे लेखक थे पर अचानक उन्हें महसूस हुआ कि प्रकाशन सस्थान के माध्यम से हिन्दी और हिन्दी साहित्य का अधिक प्रचार प्रसार हो सकता है। वह अक्सर कहते—सिर्फ लिखता रहता तो यश मुझे ही मिलता न, पर यह छोटा-सा मच बना कर मैं हिन्दी के 'कॉज' की यथा शक्ति सेवा कर सकता हू। यही होना चाहिए। आदमी को सामाजिक होना चाहिए सिर्फ अपने बारे मे सोचना—

इस समय राममनोहर जी अपनी मनोरजक शैली म कोई घटना सुना रहे थे—सुधीर भी पीछे की एक खाली कुर्सी पर बैठ गया और सुनने लगा—

"वह तभी-तभी पहुची थी कि हम पहुच गये। खूबसूरत तो वह है ही। उस दिन कुछ ज्यादा चटक लग रही थी। मुझे मालूम था कि उस महफिल मे उसके बनठन कर पहुचने का कारण क्या था। पर हमे क्या। नमन् नमस्कार हुआ। उसकी तात्कालिक सुन्दरता की तारीफ की। वह खुश हुई। हमने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रखा। पूछा, 'नई किताब आ गई?' तो हसी, बोली, 'अरे राममनोहर जी, यह भी कोई चाइल्ड बर्थ है कि समय पर होगी। आप लोगो का 'पीरियड' तो एक महीने से दस साल होता है जब भी डिलीवर कर दे वार गहरा था, पर औरतें हम 'बोट' कर दें डूब मरने को जगह न मिले। हमने फौरन कहा, 'हमे देकर देखिए, कभी अपनी किताब, फिर देखिए ठीक वक्त पर डिलीवर होती है या नहीं। पर साहब मानना पडेगा, 'सेन्स ऑफ ह्यूमर' उसमें है, ऐसी निर्बाध खिल-खिलाकर हसी कि तबीयत खुश हो गई। तय कर लिया फौरन कि इसकी किताब जरूर छापनी है। हम तो भई 'ह्यूमन रिलेशन्स' में विश्वास करते हैं। दरअसल

किसी ने एक कुर्सी पर से कहा, 'ह्यूमन नहीं, वूमन रिलेशन्स भ। ना राममनोहर जी आदमी आप अभी तक—"

राममनोहर जी विदक पड़े, "अभी तक क्या मानी ?' एक ओर ने कहा 'ये तो मरते दम तक जवान रहेंगे। शर्त यह कि 'साइंस' तरक्की करती रहे।"

सब हम पड़े। राममनोहर जी भी। सबके साथ हसते हुए उनकी आदत थी कि चारो तरफ बठे अपने सभासदो की तरफ देखकर हरेक से नजर मिलाते थे। चारो तरफ देखा तो सुधीर बैठा दिखा "सुधीर से उनका विशेष प्यार है। एकदम उछल कर बोले, "अरे सुधीर, तुम कब आए।

हसी मजाक मे सुधीर भी हल्का नही पडता था। बोला, "बस, वह आई थी कि मैं आया था।"

एक वद्ध दिखते सज्जन ने मुह विचका कर कहा, "हा जी राममनोहर जी के यहा किताब की डिलीवरी हो और सुधीर न आए। यह तो भाई दाई हैं। प्रोडक्शन' का काम तो यही देखते हैं।

इस बार ठहाका जोर का पडा। कुछ लोग जरा मुह घुमाकर हसे। कुछ लोग अचानक उठकर खडे हो गए। बोले "अच्छा भाई चलते हैं।"

धीरे धीरे सभा विसर्जित हो गई। सुधीर अपनी कुर्सी पर से उठा और राममनाहर जी के ठीक सामने जाकर जम गया। कुछ दर इधर उधर की हाकता रहा फिर अचानक बोला "आज मुझे सौ रुपये चाहिए, जरूर।'

राममनोहर जी गम्भीर हो गये। कई मिनट तक अपनी मेज के कागज इधर उधर पलटत रहे। फिर नजरें बचाकर बोले क्यो चाहिए ?"

'कल मुकदमे की तारीख है।

ता ?"

'तो क्या ?"

'तो यह कि उसका टैक्स मुझ पर क्यो ? तुम्हारा कोई बिल तो हमारी तरफ है नही बल्कि कुछ रुपया इधर का ही तुम्हारी तरफ निकलगा। देखो, तुम्हारे ही फायदे की बात कह रहा हू, हिसाब को हिसाब की तरह चलाया करो।'

सुधीर चुप हो गया। एक मिनट सोचता रहा। बात तो ठीक ही है। हिसाब तो हिसाब की तरह चलना चाहिए। पर यह भी ठीक है कि पसे चाहिए। तो ? तो क्या, कही और चलो। भिक्षा ही मागनी है तो

निराशा क्या। भिखारी दुनिया का सबसे बड़ा आशावादी होता है।

मन म आई इस बात पर सुधीर को मन ही मन हसी आई। वह उठ खडा हुआ। बोला "तो चलते हैं।"

"नाराज हो गये ?"

"नाराज होने की इसमे क्या बात है। बात आप सही कह रह है पर पैसे का इन्तजाम तो करना ही है।"

"कहा जाओगे ? '

' वह यहा मे निकलकर सोचूगा। '

'हा जाय तो मुझे खबर करना, चिन्ता रहेगी।"

"न हो, तो खबर न करू।"

राममनोहर जी एक तटस्थता की हसी हस दिये, बोले, "अरे भला यह कैसे हा सकता है कि तुम चाहो और इन्तजाम न हो। तुम इस काम मे बहुत माहिर हो।"

सुधीर का मन खराब होने लगा था, बोला, "हा माहिर तो हू, पर सिफ इसी काम म।"

कह कर तजी से सुधीर हिन्दी साहित्य केन्द्र से बाहर पडी सडक पर उतर आया।

किधर चलें ?

चलते हैं। पहले एक पान खाते हैं। जबाडा ऊपर-नीचे होगा तो दिमाग की थाडी कसरत होगी, जडता दूर होगी।

हा, यह ठीक है।

आपको मालूम है सुधीर जी, आपकी बुनियादी कमजोरी क्या है ?

नही, नही मालूम।

हम बताते हैं, सुनो—तुम जहा प्रूफ-रीडर हो सिफ प्रूफ-रीडर रहा करो, उसी अन्दाज मे बात किया करो। विनय से और जहा लेखक हो—पर नही शायद उल्ट बता गया। जहा प्रूफ-रीडर हो वहा लेखक की तरह बात किया करो—गिडगिडाकर और हा, यह ठीक है, इस मामले मे आजकल लेखक लाजवाब हैं। उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। पर उनके जरा सास्कृतिक हात हैं और जरा महगे भी उसके बस का।

पान के लिए कहकर सुधीर ने जेब मे हाथ डाला तो उसके मन म एक हूक सी उठी—' किधर चलें अब ?"

पर चारा तरफ देखने, पान तज-तेज चबाने, धीमे तेज चलने और सडक के बीचोबीच खडे होकर मोटरो-कारो साइकिलो की भवर म पर जमाये खडे रहन, और बच निकलने के कौतुक को झेलने के बावजूद सुधीर को कोई रास्ता नजर नही आया। और बिना कुछ सोच वह एक तरह को चल दिया।

निरुद्देश्य चलना सुधीर की एक आदत है। असली मकसद छोडकर इधर उधर की बातें साचने लगता है। इससे उसे कुछ राहत मिलती है शायद शक्ति भी। और आज तो उसक पास सोचने को बहुत कुछ है, प्रतिभा और हत्या गुडीमुडी हुए पडे हैं। उगते सूरज की किरणें बस्तियो से उठते काले विपले धुए का रग बदल देती है हा पर सिफ रग ही बदल दती हैं ना प्रभाव तो धुए का विपला ही रहता है वह तो है वह माला पारस पत्थर अब कही नही मिलता मिलता क्यो नहा मिलता है। पहचानना पडता है और

यह मुकदमा भी गरम्न मे तौक की तरह आ पडा है नौकरी करा तो चार सौ रुपये महीना मिलता है और न करा तो

लेखक होने म सिफ यश मिलता है वह भी तब, जब

सुधीर जोर से खिलखिलाकर हस पडा

वह मोड आ गया। मोड नही, विशाल चौराहा। किसी एक सडक के किनारे खडे होकर देखो ता लगे कि सकडा सडकें अलग-अलग दिशाओं मे फूट रही हैं। दरअसल दिग्भ्रम होता ही उन लोगो को है जो किनारे खड रहना पसद करते हैं और दिग्हीनता का बोध ज्यादातर उ हें जो हर बहाव क साथ बहना अपना कत्तव्य समझते है। दोना म स त्रासदायक अधिक कौन है एक स एक बढ़कर है इसी चौराहे स एक सडक प्रतिभा के घर की तरफ जाती है चलें नही ई बिल्कुल नही फिर किसी दिन चलेंगे जी तो कर रहा है जी कर रहा है या समस्या का हल ढूढ रहे हो नही बिल्कुल नही तभी ता कह रहा हू आज नही जाऊगा आदमी का गरीब होना भी कितना बडा अभिशाप है गरीब हाना नहीं

अमीर होना इनसे प्रेम करो तो अपने ही मन मे 'गिल्ट' पैदा होने लगता है कही लालच म तो कुछ नही कर रह । अन्दर 'गिल्ट' हो तो रग साफ दिख सकता है ? नही, रग और शब्द अपना अथ खो देते हैं वह प्रतिभा से

सुधीर कल मुकदमे की तारीख है वकील मुशीजी पशगार

हा, है तो तो ?

जितना वक्त तुम इस तरह बरबाद करते हो, उतने वक्त काम करो तो यह स्थिति ही क्यो आये

सुधीर के चेहरे पर एक गहरी तीखी मुस्कराहट बिलबिला गई—हा, यह सच है मैंने कभी काम नही किया मुझे काम करना आता ही नही वैसा काम करना जिससे ऐसी स्थिति नही आती ।

पर अभी काम करने स तो अभी पैसा मिलने से रहा

घर चलो आसपास कही देखेंगे

आसपास ? आसपास क्या रखा है ? क्या होगा ?

नहीं होगा तो रात को नर्नूसिंह म बात करेंगे

हा यह ठीक है इन तिलो मे तल है ।

सुधीर ने निस्कृति की गहरी सास ली और घर की तरफ मुड गया पैदल ही

बरसात के मौसम का सूरज मन-बदन को खुरज रहा है

13

इसी चौराहे से एक सडक सुधीर के घर के पास वाली सडक से जाकर मिलती है । कोई दस किलोमीटर लम्बाई की सडक । बीच म चौराहे आते हैं सडकें फूटती हैं, पर यह सडक निर्द्वन्द्व सीधी, छोटे-मोटे मोड लेती बहती चलती है काफी चौडी है दो हिस्सो मे बटी हुई आना जाना आना अलग जाना अलग इसे कहते हैं सीधा रास्ता आदमी को भीड होने से बचाना है आदमी आदमी बना रहता है और

हर सड़क पर पैदल चलने वाले के लिए एक कार्पेट खुलता चलता है रात को चितकवरा दिन को अबरक इस कार्पेट के रेशे मुलायम नहीं होते, पैरों में चुभते है परों और सिर का सीधा संबंध होता है बाल तभी खड़े होते है, जब बहुत दिनो से सोया कुछ उठ बैठता है

कुछ

जोहड़ के पानी में से एक जानवर सतह पर आने की कोशिश कर रहा है कितना घिनौना जानवर है छोटी सी गर्दन कमर पर काले गोल गोल सिक्के जड़े हुये उलट गया शायद पैर आये थे सतह पर कितने अजीब पंजे हैं कैसे हिल रहे हैं

लो डूब गये पर

पर इन पजो के कितने गहरे निशान उसके दिमाग पर खुदे हैं

हर ऐसा निशान एक इबारत होता है

पढ़ू इसे? पढो पर डरना नहीं नहीं, डरूगा नहीं, डरने लायक सवेदना अब बची भी कहा है अरे डरने के लिए सवेदना की जरूरत क्या है सिर्फ शरीर डरता है याद नहीं है जिस शरीर को उसने साल भर साथ रहने पर भी अछूत की तरह दूर रखा था। उसने इसलिए कि मन और शरीर का द्वैत जब तक मिट न जाये तब तक किसी एक को छूना नहीं चाहिए अलग एक को छूने से दूसरा चाट खाता है, उसी शरीर को जब कैसा डरा था दोनो मन और शरीर के बीच की खाई कितनी चौड़ी कितनी गहरी हो गई थी कैसी विक्षिप्तता थी उसकी आखो में वो देखती रह गई थी वह उसकी तरफ

छोटा शहर पक्के मकान कच्ची पक्की सड़कें और तरल भावुक मन वाले लोग। बहुत प्रेम करते बहुत लड़ते। यहा रात की दुनिया कुछ और ही होती। बच्चे शहरों में दापदाप धाम्रा के नीचे बीच वाई जमी होती है यहाँ धूल धक्कड की गन्ध तले फूल खिले होते हैं। खुला मन शहर पर फून बिना रुना है। अन्दर ना भी है अच्छा-बुरा सामने है और बाहर बाहरो में साग जग भराई में जेवर पीतल पर सोने की पतरा पतरी कहीं माटी कहीं मीनी इन लोगो की सारी जिन्दगी इस पतरी

को बचाए रखने म जाती है कही से टूट न जाए कि नीचे का पीतल और निरन्तर उपेक्षा से अन्दर का पीतल तक काला पड जाता है। पतरी कभी-कभी खिडकी खोल दे तो काला स्याहा छेद गहरे अन्ध-कूप जैसा भ्रम पैदा करता है हर शरीर म अन्ध-कूप की आशका और हर मन पर लगा जग भय का एक स्टील वातावरण पैदा करता है पर

तब सुधीर की शादी नहीं हुई थी

वह पतली सी गली जिसमे सुधीर रहता था—अकेला—बहुत गहरी थी। दूर तक गली ही गली। गली के दोनो तरफ लोग ही लोग। ज्यादा तर मुसलमान। दो चार घर हिन्दुओ के भी। सुधीर एक मकान म नीचे बनी एक छोटी सी कोठरी म अपने सक्षिप्त से बिस्तरे को एक छोटी-सी खटिया पर लपेटता-लुढकाता। उम्र कोई तेईस चौबीस साल। ठीक ठीक जवान हम उम्र दोस्त सब मुसलमान। रात दिन गालिब मीर और फिराक की महकती छाया। और

और

और वह रजिया नाम उसका रजिया था, पर सुधीर उसे रधिया कहता वह खुश होती वह हमेशा खुश रहती कितनी साफ दिल, साफ जुबान लडकी थी जो दिल म होता, वही जुबान पर कोई भ्रम नहीं कोई छल नहीं मन की बात कहने मे किसी सही वक्त का इन्तजार नहीं अदाओ की मोहताजी नहीं यह फरेब नहीं कि कहो भी और मुकरने की सुविधा मुट्ठी मे बद रखो 'मैंने कब कहा तुमसे यह' उसने कभी नहीं कहा। हमेशा कहा।—'कह तो दिया। कितनी बार पूछोगे।

सुधीर ने कहा था, "रोज। जब भी मिलोगी।"

'तुम समभते हो मैं बदल जाऊगी।"

"कान का मैल, नजरो की धुध और मन की दुविधा तुम्हारे इस एक जुमले से साफ हो जाती है बस, मुझे भरोसा है। तुम बदलोगी नहीं, पर वक्त "

'वक्त से नहीं डरना चाहिए।"

"नहीं रजिया, दुनिया मे सिफ दो ही चीज से डरना चाहिए, एक वक्त से और एक खुद से, बस और किसी से नहीं।"

"तुम अपने-आपसे डरते हो ?"

"बहुत।"

'फिर तो मुझे भी तुमसे डरना चाहिए।"

"मुझसे नहीं, अपने आप से।'

रजिया हस पड़ती, कहती "इतनी कम उम्र म ही यह तुम उस्ताद जी कैसे हो गये।'

सुधीर भी हसकर कहता "हुआ तो नही पर तुम्हारे बिना उम्र गुजारनी पड़ी तो हो जाऊगा।"

रजिया हस पड़ती, हसती रहती, हसते हसत कहती, "तुम्ह एक बात सुनाऊ ?"

"हू।"

एक बार मैंने अम्मी से पूछा, 'अम्मी, सच सच बताना तुमने भी कभी किसी से इश्क किया है। तो अम्मी कुछ देर चुप रही, फिर भीतर की गुदगुदी को दबाते हुए बोली, 'अरी रानी, ऐसी भी कोई किशमिश होती है, जिसकी पीठ मे तिनका न हो।' मैं हसने लगी तो वहद समझ दारी की आवाज मे कहा, 'पर बन्नो, किशमिश का स्वाद तिनका उतार कर खाने मे है। समझी। मुझे भला क्या समझना था। जब तक पीठ म तिनका है तब तक ठीक है, जब कोई चूट कर फेंक देगा, और खाने की कोशिश करेगा तो देखेंगे।

'तुम्हारी अम्मी को सब पता है ?'

हा।

और अब्बाजान को।'

रजिया फिर हस पड़ी 'जिस दिन उन्ह पता चल गया, तुम्हारी खाल म भुस भरवा देंगे। उस वक्त से डरना।' कहकर वह जोर से हस पड़ी।

'अम्मी कुछ नही कहती ? '

'अरे अम्मी हमारी बहुत रगीन हैं। वह तो उकसाती रहती हैं। तुम्ह पता है सुधीर अम्मी हमारी कौन हैं।

'कौन हैं क्या मानी ?"

इस पूरे इलाके की मशहूर मारूफ रक्काशा रही हैं, हमारी

अम्मी। कहते हैं लोग पागल थे इनके नाच पर, आज से पहले, पन्द्रह साल पहले तक। पांच बार निकाह किया और पाँचों में एक एक लड़का हुआ। फिर इश्क किया। पूरी शिद्दत से। मुश्किल से दो महीने रहा वह इस शहर में। पेशावर की तरफ का था। इस शहर में लकड़ी का कुछ सामान बनवाने आया था। अम्मी कहती हैं, मेरा अब्बा वह था। मुझसे ही सिर्फ उसके बारे में बात किया करती है। कहती हैं, 'दो महीने में ही मेरी रूह बदल गई। वह चला गया। दोनों जार बेजार रोए। मां ने धंधा बन्द कर दिया। पहले पैसे से लड़कों को पढ़ाया लिखाया और हिस्से बांटकर सबको अलग कर दिया। अम्मी उनके पास कभी नहीं जाती। छठा निकाह किया और मेरे साथ इस गली में रहने लगी। तुम्हें मिलाऊंगी किसी दिन अम्मी से। आज भी नजर फिसल न जाये तो कहना। इतनी मीठी आवाज है।"

'तुम बहुत प्यार करती हो अम्मी से?"

'हां, बहुत।"

सुधीर पाता कि मां का जिक्र करते करते रजिया आत्म विस्मृत सी हो जाती है। अलौकिक सौंदर्य उसके चेहरे पर उलझ आता है।

सुधीर सोचता, कितनी निर्द्वन्द्व है। क्या कहानी है, और कैसे ब-हिचक सुना रही है।

पवित्रता भला और किसे कहते हैं।

जगाना तो जाग जाती और अचानक उठकर घर चली जाती।

रजिया खुद किस कदर खूबसूरत है।

चलते चलते सुधीर का मन किया कि वहीं बैठ जाये। थोड़ा सुस्ता ले। पर चारों तरफ धूप ही धूप है। कहीं छाया नहीं है। इतनी में भी किस कदर भागदौड़ है—कार के पीछे ट्रक, साइकिल के पीछे स्कूटर, बस के पीछे रिक्शा। उसकी छाया। इस मद रूप की औरत के पीछे भला कौन हो सकता है। रजिया? कौन प्यार करे। हिन्दू धर्म की महानता यही है पर आवागमन तो चलता ही रहता है। सब भगवान करता है।

सुधीर थोड़ा बैठ गया। मेनरोड की गहमागहमी से हटकर एक मोड़ पर पड़े एक पत्थर पर। मोड़ का दृश्य कुछ और ही आनन्द देता है।

हर वाहन हल्का सा अपना रूप बदलता है, या शायद एक किनारे से एक बदलाव का भ्रम देता है। बदलते हुए हर चीज लडखडाती है गिरते गिरते को होती है मुड जाती है तो फिर सभलकर सुथरी चाल से चलने लगती है और आखो से ओझल हो जाती है। कितने लोग सुधीर को देखते देखते मुडकर ओझल हो गये। अन्दर बाहर तो रोज ही होते हैं। हो रहे हैं। कौन जानता है इन जाते हुए वाहनो मे कोई एक उनका घनिष्ट परिचित अपरिचय की धुध म लिपटा चला जा रहा हो और अपरिचय की धुध नही, गलत मुहावरा है धुध परिचय मे होती है अपरिचय तो साफ-सुथरा शून्य है शून्य आकाश परिचय ही कम्बख्त आकाश मे बहुत सारी चीजें उगा देता है कही फूल, कहीं बादल कहीं चाद और फिर धुध के चक्रवात से चलने लगते हैं परिचय व्यक्ति की आमदी है और अपरिचय एक यूटोपिया

चलो चलें घर

यूटोपिया से आमद भूमि की ओर

कमभूमि युद्धस्थल

सुधीर उठा और फिर चलने लगा बहुत सारे लोग साथ साथ, आगे पीछे कोई ऐसा आदमी हो सकता है जिसका कही कोई परिचित न हो हो क्यो नही सकता कालोनी मे रहने वाली पगली का कौन परिचित है। आनन्द अगर इसी तरह व्यवहार करता रहा तो कुछ ही दिनो म कौन उसका परिचित रहेगा वह लेखिका जो सबके लिए महफिल की शोभा है क्या वास्तव म उन सबकी परिचित है और वह खुद कौन है उसका परिचित ? या किसके लिए वह परिचित है ये क्षणिक परिचय अपरिचय की कितनी गहरी नीव खोद जाते हैं पर क्षण निरपेक्ष परिचय स्थापित करने मे आदमी जीने का लोभी हो जाता है और मौत तक पहुचने की गति तेज हो जाती है

कर तो रहा है आजकल वह इसका अनुभव

चाहता तो है प्रतिभा से ऐसा ही परिचय बनाना पर इके बक्त म कोई किसी की तरफ कैसे बढ सकता है नही [illegible] आ

अहसास तुम्हारी अपनी दृष्टि की धुंध है। ध्यान से देखोगे तो दिखेगा कि वक्त अपनी सहज गति से चल रहा है पर धुंध में खड़े आदमी से हाथ मिलाते से सब कतराते हैं। दृष्टि भ्रम दूर करो, कहीं ऐसा न हो कोई तुम्हारे दरवाजे से होकर गुजर जाये अपरिचय की केंचुली अपने शरीर से उतारे और पीछे को उड़ा दे उस केंचुली में लिपटकर जीना तुम्हारी जिन्दगी की शर्त बन जाये और अपनी जड़ता का दोष उम्र भर तुम निर्दोष वक्त पर चुकाते रहो तुम

यह क्या हो रहा है !

वक्त कट रहा है !

हां, काफी कुछ कट रहा है

अचानक सुधीर को ध्यान आया, वह आनन्द के घर के सामने से निकल रहा है

देख ही लें, है क्या

सुखद आश्चर्य से खुले पड़े कमरे में झांककर सुधीर ने देखा कि आनन्द अपनी चारपाई पर सपाट खुली आंखों लेटा है

चारपाई पर सपाट लेटा आदमी कितना कृशकाय लगता है

सुधीर कमरे में घुस गया

"आनन्द" उसने डरते डरते पुकारा।

आनन्द समाधि में था। आवाज ने कांच तोड़ दिया। आनन्द ने करवट ली। लेटे ही लेटे सुधीर की तरफ देखा। धीरे से कहा, "तुम?"

"हां। पहचान लिया तुमने? क्या है, कुछ तबीयत खराब है?"

"आओ, बैठो। कुर्सी घसीट लो या यहीं आ जाओ चारपाई पर, मेरे पास तुम तो मेरे दोस्त हो ना"

सुधीर लगभग भागकर आनन्द की चारपाई पर लेटे आनन्द से सटकर बैठ गया

'क्या है, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?'

"अच्छा हुआ तुम आ गए। इस समय तो चाहता था कोई भी आये।"

क्या बोल रहा है यह आनन्द? सुधीर की आंखों में आंसू छलके पड़

रह हैं

कई मिनट दोनों चुप रहे

आखिर आनन्द की आवाज सुनाई दी, ऐसे जैसे कुए से आती आवाज हो

मुझे बोलने देना सुधीर। बहुत दिनों से मैं बोला नहीं हूं। अच्छा हुआ तुम आये हो। कोई और आता तो शायद सुधीर मैं जरा जल्दी में हूं, आवाज टूट भी जाये तो भी बात समझ लेना तुम मेरे दोस्त हो ना, कोई ऐसी हरकत न करना जैसी दोस्त नहीं करता कितने ताज्जुब की बात है तुम आये हो किवाड खुले हो तो कोई भी आ सकता था, पर कोई भी क्या आएगा आएगा दोस्त दोस्त को दोस्त की जरूरत होती है ढूंढ़ते-ढूंढ़ते तुम आए और अब मेरी बात सुन रहे हो कोई क्यों सुनेगा मेरी बात पर, तुम दोस्त हो दोस्त

तो सुधीर मेरे दोस्त मैं जा रहा हूं डरो नहीं, भाग मत जाना मैंने कुछ नहीं खाया मैं जा रहा हूं, यानी, इस शहर से तुम्हें याद है एक दिन मैंने कहा था कि इस शहर से मुझे मोहब्बत है यह शहर मैं एक ही दिन छोड़ूंगा कमरे की सपाट दीवारें और खाली अलमारियां देख रहे हो सब किताबें और जो आज तक लिखा था रद्दीवाले को बेच दिया तभी तो शहर छोड़ रहा हूं तुम आखें फाड़ फाड़ कर मेरी तरफ क्या देख रहे हो मैं आनन्द हूं तुम्हारा दोस्त '

सुधीर के मुंह से धीरे से निकला 'आनन्द चुप रहो।"

'तो मैं कह रहा था, सुधीर कि मैं जा रहा हूं तुम्हें मालूम है आदमी को सबसे ज्यादा तकलीफ कब होती है, जब कोई दीखे, आखें उसे पहचाने और वह पहचानने से इन्कार कर दे। देखने वाला घिर कर रह जाता है। मैं जा रहा हूं क्योंकि रोज राज घिरने की मेरी सामर्थ्य अब खत्म हो चुकी है सुनो मेरा एक काम करोगे?'

हां बोलो।'

मुझे अकेला छोड़ दो।

सुधीर सुन्न रह गया।

आनन्द कई पल मत दृष्टि से सुधीर को देखता रहा फिर बहुत थके

स्वर मे बोला, "दोस्त नही हो ?"

"हू।"

"तो जाओ।"

"बताओगे नही आनन्द, आखिर हुआ क्या ?"

"नही थक गया हू, बहुत बता नही सकूगा पर यह समझ लो, नही, या समझ लो कि नही, तुम जाओ बस जाओ।"

"आनन्द, तुम कभी मुझसे " कहते-कहते सुधीर का गला रुध गया।

आनन्द एकदम चुप रहा। उसकी आखें तक मृतप्राय थी।

सुधीर ने हिम्मत करके फिर कहा, ' किसने तुम्हें इस किनारे "

"तुमने ?" नेपथ्य से आनन्द ने कहा।

"मैंने ?"

"हा, तुमने और तुम जाओ सुधीर मेरा दम घुट रहा है।"

"पर ?"

"तुम नही समझोगे बताऊगा तो भी नही। तुम जाओ।"

"तुम्हे ऐसी हालत में छोडकर "

"जाओ।" कहकर आनन्द ने दीवार की तरफ करवट ले ली और फिर सुधीर के बार-बार पुकारने पर भी उसने उसकी तरफ मुह नही किया। सुधीर धीरे धीरे खिसककर बाहर जाने लगा तो उसे महसूस हुआ कि आनन्द ने करवट लेकर फिर खुद को समाट कर लिया है।

बाहर सडक पर आकर सुधीर को लगा कि वह चकराकर गिर पडेगा। आनन्द कहता है—मैंने उसकी यह हालत की है। मैंने उससे प्रेम करने के सिवाय कुछ नही किया। रजिया कहा करती थी—तुम्हारा यह इतना प्यार हर वक्त गले पर छुरी की तरह घिसता रहता है। रमा कहती है—कुछ भी हो, कुछ है जो मुझे तुमसे बाधे है। इस दमघोट वातावरण के बावजूद न कभी भागने को मन किया न मरने को

क्या कहा होगा, मानो जिसे मैंने—वह भी मुझे ।

पहचानता था पहचानता न होता तो मरते वक्त चीखता जरूर पहचान ने उसके होंठो पर आई चीख होठो पर ही जड कर दी चीख जड होती है तो अन्दर का सब सीसे की तरह पिघलकर

सुधीर का लगा और वह सोच नही पाएगा किसी ने अचानक स्विच ऑफ कर दिया है पर

यह प्रतिभा अधेरे म बैठी क्या कर रही है एकदम सादी धोती म सद्य स्नाता सी चेहरा कैसा धवल-पुष्प सा खिला है यह क्यो हर समय मुझ शापग्रस्त की जिजीविषा की तरह

शापग्रस्त की जिजीविषा अच्छा नाम है प्रतिभा का कहूगा कि अपना एक बडा सा फोटो दे दो उसके नीचे किसी स लिखवाऊगा, किसी आर्टिस्ट स शापग्रस्त की जिजीविषा अच्छा नाम है बहुत अच्छा सबोधन नही बनता, नही तो उसे इसी नाम से।

इस इतने गहरे मूत अधेरे म—उगली पकड लो प्रतिभा—इतनी अमूत मत रहो

मुझसे साहस की आशा मत करना सब चुकाकर तुम्हारे पास आया हू।

14

घर म घुसते ही सबसे छोटे लडके सदीप ने सूचना दी, "पापा, आज पगली को लोगो ने खूब मारा।

"मारा?"

'हा पापा, बहुत मारा, कई जगह उसके खून निकल आया। उसके सब कपडे फाड दिये। एकदम नगा कर दिया।"

कौन थे?"

'पता नही।

कालोनी के नही थे?'

'नही।

"वहां के लोगों ने छुड़ाया नहीं ?'

"सब खड़े हंसते रहे। किसी ने नहीं छुड़ाया।"

"तूने क्या नहीं छुड़ाया ?'

सदीप चुप रहा। पापा की तरफ देखता रहा।

सुधीर बैठ गया तो रमा आकर पानी का गिलास दे गई। पाच मिनट सुधीर चुपचाप बैठा रहा। रमा चाय ले आई। कुछ देर चुप खड़ी सुधीर का चेहरा देखती रही। चेहरा शायद रोज से अधिक रुग्ण था। वह जानती थी, ऐसे में बोलना खतरनाक होता है और न बोलना भी। इस सदीप के बच्चे ने यह अखबार पढ़कर सुना दिया। वह भी जानती थी कि इस तरह की खबरें सुधीर को बहुत बौखला देती हैं। बाहर निकला तो जरूर किसी से झगड़कर लौटेगा। सोचते-सोचते अचानक उसे मुकदमे की तारीख का ध्यान आया। एकदम पूछ बैठी, "कल के लिए पैसे का इतजाम हो गया ?"

"नहीं।"

"तो कैसे होगा ?"

'हो जाएगा। यह पगली का क्या हुआ ?"

'मुझे क्या मालूम।"

सुधीर चुप रहा। फिर पास खड़े सदीप से बोला "सदीप, जा एक धोती अम्मा से ले ले और पगली को दे आ।"

रमा भड़क उठी, "दो हैं मेरे पास कुल और एक मैं दे दू पगली को।"

'अच्छी लगेगी वह कालोनी के दरवाजे पर नगी बैठी हुई है।"

"तो मैं क्या करू ? मैं ही रहती हू इस कालोनी मे। नौ सौ क्वाटर हैं। और शायद ही कोई और हो जिसके पास सिर्फ दो धोतियां हों।"

'औरों स क्या मतलब ?'

"तुम्हें औरों से क्या है ? पगली पर तो तुम्ह बहुत रहम आ रहा है, मुझ पर तो कभी नहीं आया।"

"रमा मैं बहुत थका हू। तुम्ह भेजनी हो तो भेज दो, नहीं तो '

'नहीं तो '

सुधीर ने त्रस्त दृष्टि से रमा की तरफ देखा, फिर बोला, "नहीं तो

एक कप चाय और बना दो।"

रमा हंस पड़ी। बोली, "कपड़े बदल लो।"

"पहले चाय "

"कल पैसों का क्या होगा?"

"पहले चाय "

रमा चली गई। इस बार दो कप चाय बनाकर लाई। एक अपने लिए। कुर्सी घसीटकर पास बैठ गई। धीरे से बोली, "सुनो, एक बात बताओगे?"

'हूं।

'तुम लोग, ये किस्म कहानियां क्यों लिखते हो?"

इतनी मानसिक ऊहापोह में भी सुधीर को हंसी आ गई। बोला, "आज क्या हुआ?

'नहीं ऐसे ही पूछ रही हूं।"

जी करता है इसलिए लिखते हैं।"

क्या जी करता है? सबका क्यों नहीं करता?'

सुधीर को शब्द ढूंढे नहीं मिले। जितने सरल तरीके से रमा पूछ रही थी जवाब न देना भी संभव नहीं था। पर ऐसे प्रश्नों के सरल जवाब नहीं होते। इसलिए वह बहुत देर बैठा सोचता रहा। फिर बोला, "रमा, मुझे औरों की तो मालूम नहीं, अपनी जानता हूं। मैं जो कह नहीं सकता वही लिखता हूं। आदमी जो कहता है वह पूरा सच नहीं होता क्योंकि कहने में आधे डर को जीतता है, आधे यानी छोटे डर। पर बड़े, यानी मूलभूत डरों को वह लिखने की प्रक्रिया में ही जीत पाता है और डर जीतना मानसिक स्वतन्त्रता की उपलब्धि है, बस यही

रमा ने टोक दिया, 'यानी वह अन्दर-बाहर के डरों से मुकाबला न करके घुमा फिराकर उनसे डरने का ढोंग करता है।"

वह कैसे?"

देखो मैं कह रही हूं कि डर सामने खड़ा हो तो उसकी तरफ मुंह करके उससे लड़ना चाहिए। यह नहीं कि उसकी तरफ पीठ करके बैठ जाओ और दूसरी दिशा में कुछ शब्द उछालकर समझो कि डर को जीत

लिया। तुम लोग तो यही करते हो। डर से लड़ने की जगह उस पर कहानी लिखते हो। डर तुम पर वार न कर सके और जनता तुम्हें वीर कहकर पुकारे। क्यों, यही है न तुम्हारी चालाकी।" रमा के चेहरे पर कहते कहते एक शरारत उलझ आई।

पर सुधीर बात मे मज़ा ले रहा था। उसके अन्दर की तन्द्रा टूट रही थी। उसने रमा को उकसाते हुए कहा, "कोई मिसाल देकर समझाओ।"

रमा हस दी, बोली, "लो, मिसाल दिए देती हू। इसमे क्या है। एक क्या हजार मिसाल दे सकती हू। यह पड़ोस मे जो भटनागरनी रहती है, मालूम है?"

"हा।"

"तुम्हें मालूम है जिस कारखाने मे वह काम करती है वहा से उसे कितने पैसे मिलते हैं?"

"शायद सौ रुपये महीना।"

"नहा, सत्तर रुपये महीना। उम्र तो उसकी क्या है पर सिर के आधे बाल सफेद हो गए हैं, नही तो शायद सौ रुपये भी मिल जाते। तुम्हे मालूम है, कानूनन यह जुर्म है। पर होता है। जुर्म के खिलाफ लड़ो नही तो वह जुर्म नही होता। भटनागरनी लड़ी थी तुम होते तो उस पर एक कहानी लिखते बस यही भेद है, आदमी मे और एक लेखक मे। आदमी सहता है, लेखक बैठा लिखता है

सुधीर ने समझाने के स्वर मे कहा, "रमा, लड़ने से पहले वातावरण तैयार करना होता है, एक नेता "

रमा बहुत बेताब थी। उसने फिर बात काट दी। बोली, "वह सब क्या तुम्हारी इन कहानियो मे होगा। सात जनम नही। कभी नही। करके देख लो।"

"तो कैसे होगा?"

"मैं क्या जानू। पर ऐसे नही होगा। यह सब निरर्थक "

दोनो ने देखा, उषा कमरे मे घुसी है। कंधे पर लटका बैग एक कोने मे मेज पर पटका है और गुसलखाने की तरफ बढ़ गई है।

"लो, आ गई तुम्हारी लाडली। अब इसके सामने बात मत बढ़ाना,

नही तो पूरा भाषण सुनना पड़ेगा। और धोती मैंने तुम्हारी पगली को भिजवा दी थी, कभी इसी कारण बेचैन रहो।"

सुधीर ने कहा, "रमा, जरा समीर को भेजकर दिखवाना नन्नूसिंह है या नही।"

"नन्नूसिंह ?"

"हा।"

"ब्याज पर लोगे रुपया ?"

"हा, कही से हुआ जो नही।"

"क्यो, प्रतिभा जी दूसरे झटके मे टूट गइ ?"

सुधीर चुप रहा। एकदम सुन्न। उसे रमा से शायद इस तरह के वाक्य की उम्मीद नही थी। वह चुप ही रहता पर सज्ञा के लौटने की आवाज ने उसे जगा दिया। बडबडाहट के स्वर मे उसने कहा, "रमा, आइन्दा कभी प्रतिभा पर व्यग न करना। मैंने आज उससे कुछ नही कहा। पर यदि कहू और वह मना कर दे तो उसका कद जरा ऊचा ही होगा। मैं जानता हू किसी एक का भिखारीपन सबको छोटा करता है। पर मेरे कारण अगर वह छोटी होनी है, तो कम से कम तुम—

रमा ने बात समझी। महसूस किया। धीरे से कहा, "मैंने तो सिफ मजाक किया था।"

सुधीर ने कहा, "अच्छा मजाक किया करो। आदमी का मजाक उसकी सोच का आईना होता है। मैं नही चाहता कि जो तुम साफ न कह सका, मजाक म कहो। तुम तो खुद उसके खिलाफ हो।'

'अच्छा बाबा, माफ करो।'

'छोडो। समीर को भेज दो।'

हा।

"और सुनो रमा। तुम्ह आनन्द की याद है ?"

"अरे, उन्हें कोई भूल सकता है।'

'पागल हो गया।'

रमा ने घूरकर सुधीर को देखा।

'यह भी, तुम्हें याद है बहुत मजाक करता था।'

आगे, न पीछे पीछे ।"

सुधीर ने हसकर कहा, "चलेंगे।" फिर एक पल सोचकर बोला, "और हमारा तुम्हारा विरोध हुआ तो ?"

निद्वन्द्व सज्ञा ने कहा, "हम और तुम आमने सामने होंगे या अपनी अपनी पगडंडी पर चलो मम्मी, खाना दो।"

खाना परसते परसते रमा ने सज्ञा से कहा, "सज्ञा, वह जो आन्‍ थे ना तेरे पापा के दोस्त पागल हो गए।"

सना ने सुना। कुछ देर सोचती रही। गहरे म फिर बहुत धीरे स बोली, 'तुम्हें मालूम है मम्मी, आदमी पागल क्या होता है ?"

रमा चुप रही।

"जो लोग सोचते हैं, करते नही, पागल हो जाते हैं। ये लेखक कुछ इसी किस्म के लोग होते हैं। उनकी खोखली मानव सहानुभूति इन्हे ले डूबती है। जिससे सहानुभूति होती है उसके लिए लड क्यो नही मरते। ऊची आवाज और जड सकोच चतना इनके मनोविकार का मूल कारण है राजनीतिन कभी पागल नही होते पापा को ही लो—"

रमा ने बात काट दी। स्नेह से सज्ञा की तरफ देखती हुई बोली, 'तू तो एकदम बहुत होशियार हो गई सना। मुझे पता तक नहीं चला।"

सज्ञा ने कहा, 'यह तुम दोनो के चल रहे खेल की कृपा है।"

सना मैं तेरे साथ हू बोल, रखेगी मुझे अपने साथ ?"

सज्ञा चुप रही। उसने कोई जवाब नही दिया। उस मालूम था कि इस समय का कोई भी जवाब कल को झूठ साबित हो सकता है। मा से वह झूठ नही बोल सकती। फिर अभी उसी को मालूम नही है कि वे लोग क्या करने जा रहे हैं।

रात को रमा ने पति से धीरे से कहा, 'सज्ञा बडी हो गई है।"

"हा, हम लोगा से बडी।

नत्थूसिंह से प्रबन्ध हो गया था। इसलिए सुधीर का मन निरुद्वग था।

15

कचहरी की विशाल पाच-मंजिली बिल्डिंग अपने व्यक्तित्व से ही एक भय पैदा करती है। कचहरी की बिल्डिंग बड़ी ना भी हो डर उस से पैदा होता है। एक अपराध जन्य उदासी उसकी हवा में घुली होती है। हर चेहरे पर लिखा होता है—मुझसे धीरे बोलो, मैं सोच रहा हूं—पर हर आदमी बहुत तेज बोलता है। चाहे वह वकील हो या ग्राहक, मुंशी हो या पत्रकार। कारिडोर में से गुजरते हुए पेपर मार्किट की गन्ध आती है और कोर्ट रूम में बैंच पर बैठा आदमी टक लगाकर नाटक सा देखता रहता है। मुकदमा चाहे किसी भी चीज का हो—फौजदारी हो या दीवानी—आवाज लगते ही दिल जरूर धड़कता है। न्याय और भय अपने देश में पर्यायवाची हैं। अपराध करके एक क्षणिक मानसिक स्वतन्त्रता जो व्यक्ति को प्राप्त होती है, कचहरी में घुसते ही वह एक ऐसी त्रासद उम्र-कैद का रस देती है कि लगता है इससे छुटकारा कभी नहीं हो सकता। सुधीर ने कई बार सोचा, 'फांसी की सजा सुनकर बंदी को पता नहीं कैसा लगता होगा।' पर साथ ही उसके दिमाग में हर बार यही आया, एक छुटकारे की सांस लेता होगा वह। कहता होगा 'कचहरी से छुटकारा दिला दो, कहीं भेज दो।' उसे याद है उसने एक दिन सोचा था उस पर अगर हत्या के अपराध में मुकदमा चलता तो वह यही कहता जज से भी और पुलिस से भी, मैंने मारा, 'मुझे फांसी दो, मुकदमा न चलाओ। कचहरी न ले चलो।' एक बार बहुत पहले रजिया के मामले में वह कचहरी में फंसा था, और उसे याद है उसमें हां, मुकदमा नहीं चला था पर इसी बिल्डिंग में एक सी० आई० डी० इंस्पेक्टर के यहां उसे पेश होना पड़ता था। सुबह पौने दस वह आता और शाम पौने छः जाता उस इंस्पेक्टर ने उसे बचा लिया था—सिर्फ दो सौ रुपये लिए थे—पर दस-बारह दिनों की उस बैंच की बन्द ने उसकी सारी मानसिकता बदल दी थी। रजिया उसके हाथ से निकल गई थी और वह अपने हाथ से निकल गया था उसके बाद कभी वह पहले वाला सुधीर नहीं दिखा और

उह! क्या याद आ गया। कल सारे दिन का हैंग-ओवर ही बाकी है, यह आज फिर भूत पीछे लगने लगा था अच्छा हुआ समय पर चेत गया तारीख है चलो, मुशीजी को ढूढो आज किसी तरह तारीख मिल जाय तो बढिया पाच सात रुपये देकर देखो पटाते हैं, मुशीजी को

मुशीजी साले अपना टैक्स मागेंगे

देखते हैं मागेगा तो है ही चलते हैं, बस्ते पर वकील तो आया नही होगा अभी साढे नौ बजे हैं पौने दस से पहले कभी नही आता आ गया होगा तो पचास रुपये दे देंगे कह देंगे, और अगली तारीख पर देंगे तरीख ले रहे हैं तो खुश होगा पिंजरे का तोता पिंडार मे फिक्र काहे की पच्चानवें हैं जेब मे, रात सौ लिए थे ना नन्नूसिंह से अच्छा आदमी है, नन्नूसिंह बडा लिहाज करता है सबसे पाच रुपये सैंकडा लेता है, उससे तीन रुपया कभी मना नही करता

तारीख मिल जाय तो मजा आ जाए

मजा क्या आ जाएगा? दस-बीस रुपये फालतू के जाएगे

चाहे जेब के सारे ही चले जाए तारीख मिल जाय जल्दी से जल्दी यहा से हा! उससे मिलेगा क्या

बिल्ली के दिखते ही कबूतर को आख मूदने पर क्या मिलता है, तुम्हे क्या मालूम

मूख का खिताब!

यह तो तुम देते हो, पर उसे भीतर ही भीतर क्या मिलता है, तुम्हे क्या मालूम हो भी कैसे सकता है

मालूम है मौत

वह भी तुम्ही देते हो पर

अच्छा छोडो, चलो मुशीजी को ढूढते हैं

सुधीर खिसकता खिसकता बस्ते पर पहुच गया, बस्ता, यानी वकील साहब की दुकान।

एक मैली-कुचैली कुर्सी खुले मे। कुर्सी के दोनो तरफ दो लम्बी बाहो की तरह फली दो बचें। बाहें न हो तो आदमी छिटक जाए। इन बाहो की गिरफ्त मे आकर एक बच की जड मे चिपकी एक मेज पर सजा

टाइपराइटर जाहिर है, टाइपराइटर के पीछे बैठा टाइपिस्ट एक और कुर्सी पर

दूसरी बच के एक कोने पर सजे मुशीजी बराबर मे रखा फाइलो का ढेर हाथ मे एक पैड पैड के क्लिप मे अटके कुछ कागज सबसे ऊपर के कागज पर आज के मुकदमो का चिट्ठा

मुशीजी यानी छोटे से कद के बूढे से सरदार जी

सुधीर ने उन्हें सुदामा-भाव से देखा। भागकर उनके पास पहुचा। चरण छूने को मन तो किया पर उनकी टागो पर चिपके पायजामे से छूटे पैर बहुत ही मैले थे। पायजामे म घुटनो की जगह उभरे गूमड भी तीखी घिन पैदा कर रहे थे। मुशीजी के गालो की खाल, आखो के ऊपर चिपकी भवें और नाक की नोक हर समय हिलती रहती है। लगता है जैसे किसी बटुए मे चाभी भरकर

सुधीर ने कठ को तर किया और पुकारा, "मुशीजी।"

मुशीजी ने ऊपर देखा, पहचाना और रुके पर ऊचे स्वर मे कहा, "आ भाई सुधीर, आ गया, आज तो तेरी तारीख है। चल फिर पहुच जा इक्सठ न० मे "

सुधीर ने कहा, "वकील साहब तो आए नही, अभी"

"आते ही होगे।"

सुधीर एक मिनट चुप रहा फिर बोला, "मुशीजी, आज तो कुछ तारीख लेने का चक्कर चलाओ।"

'क्यो?"

"मुझे कही जाना है।"

'देख भाई सुधीर, यह आई दफा का चक्कर गलत है। तू कही मुकदमा खराब न कर दे, मुझे डर है।"

"आज तो कराओ ही मुशीजी।"

"अच्छा तो आने दो वकील साहब को।"

"तुम भी मुशीजी, समझने नही हो। इस वक्त तो पेशकार फुरसत मे होगा। जज के आने पर "

"तो वकील साहब स नही मिलोगे?"

"लौटकर मिल लेंगे।"

"अरे सुधीरबाबू तारीख मिलने के बाद कौन वकील से मिलता है। वकील और वश्या, इनकी अदायगी बाद मे नही होती। पसो का इन्तजाम आज भी नही हुआ शायद ?'

"नही।"

'तो तारीख कैसे लोगे ?"

"उतने तो हैं।"

"कितने हैं ?"

"पन्द्रह रुपये।"

"पन्द्रह म क्या काम चलेगा। लम्बी तारीख लेनी पडेगी। मैं जानता हू। गरीब आदमी हो। पसे का इन्तजाम होते-होते ही होगा। वह अग्रवाल साला बहुत कमीना आदमी है। दस से कम मे नही मानता। क्या जमाना आ गया है, पहले एक रुपये म तारीख मिलती थी। मैंने अपने हाथ से हजारो अच्छा चल, निकाल पन्द्रह ही निकाल। कराते हैं तेरा काम तो—गरीब आदमी है

सुधीर ने मजा लेने के लिए दस रुपये का नोट निकालकर मुशीजी की तरफ बढा दिया।

मुशीजी फुदककर खडे हो गए। बोले 'और दे पाच।"

"तुम तो कह रहे थे कि अग्रवाल दस मे मान जाएगा।"

"और उसका स्टेनो, और वह साला हनीफ, दोनो साले मुह बाए देखते रहते हैं।'

"पर मेरे पास कुछ नही बचेगा'

"देख लो भाई पन्द्रह से कम म तो नही होगा। और जो करना हो जल्दी कर। वकील साहब आने वाले हैं। मैं अपने काम म लगूगा।

सुधीर जानता था अग्रवाल को मुशीजी पाच से ज्यादा नही देंगे। बाकी दस अपनी जेब मे रखेंगे। पाच रुपये देकर वह खुद भी तारीख ले सकता है, पर उसे तारीख देने म अग्रवाल ग्यारह बजा देगा। कहेगा — बैठो बच पर अभी करता हू तुम्हारा "सुधीर का मन आज बिल्कुल

नही है यहा ठहरने का। उसने मुशीजी के और जरा-सा नजदीक खिसक कर कहा, "देता हू पाच पर एक शर्त पर।"

"क्या ?"

"मै देकर चला जाऊगा। तुम डलवा लेना तारीख।"

"दो।

"मामला खराब मत कर दना।'

'ऐसी बात आइन्दा मत कहना। बाल सफेद हो गए इसी काम मे, कभी किसी का काम "

सुधीर ने जेब से निकालकर पाच रुपये दिए, फिर पूछा, "जाऊ ?'

"जाओ, पर अगली दफा मुझे मत फसाना इस दलदल म। यह हर दफा का खेल नही है।"

सुधीर हस पडा, बोला, "अच्छा तरीख का काड डाल दोगे ?"

"डाल दूगा। और वकील साहब को क्या कहू ?"

कहना घर आऊगा एक दो दिन मे।"

'तो तभी पूछ लेना तारीख भी।" कहकर मुशीजी ने सुधीर की तरह से मुह फेर लिया। सुधीर भी विरक्त हो चुका था। मुडा और कचहरी के विषैले वातावरण से बाहर निकलने के लिए कदम बढा दिए। वह मन ही मन बहुत खुश था बहुत जल्दी पिंड छूट गया और इसलिए भी कि मुशीजी को उदास छोडे जा रहा है। मुशीजी वाकई उदास थे। उनका खयाल था कि सुधीर से और पसा खीचा जा सकता था, उन्होने इसे सस्ता बख्श दिया है पर जो भी होना नियत था, हो चुका था

सुधीर कचहरी की सीमा से बाहर खिचा आ रहा था

वह चाहता था आज प्रतिभा से मिले थोडा सुकून

प्रतिभा परतीभा—तीभा नही, भरतिआ

सुधीर को अपने उस मानसिक खेल पर हसी आन को हुई। वह मेन गेट से बाहर निकल रहा था कसी मनोहारी निष्कृति कैसी ठडक पर तभी किसी ने पुकारा, "कौन ? सुधीर"

सुधीर न उधर देखा। ये! अरे, कौल साहब ?

कौल साहब पास आए। सी० आई० डी० इसपेक्टर कौल। वही

रोबदार चेहरा। पन्द्रह साल बाद भी कोई कैसे अपने आपको ज्यों का त्यों रख सकता है। सुधीर ने उत्साह मे एक कदम आगे बढकर कहा, "कौल साहब आप ? '

'और तुम यहा कैसे ? फिर कुछ इश्क विश्क मार दिया क्या ?'

"अरे कौल साहब क्यू मजाक "

"बहुत दुबले हो गए हो। तुम्हारी सेहत ता "

"मैंने आपको बाद मे बहुत खोजा।'

"क्यो ? '

' आपके साथ एक कप चाय पीने की इच्छा थी।'

"हम पिलाएगे।

'यह तो बात गलत होगी।"

'नही, गलत नही होगी। तुम्हारे दो-सौ रुपये मेरे पास जमा हैं।"

"आपको सब कुछ याद है ?"

"हा वह केस ऐसा था। अच्छा चलो चाय पीते हैं।"

सुधीर मन्त्रमुग्ध-सा इसपेक्टर के पीछे हो लिया।

रेस्ट्रा मे सुधीर कौल साहब के ठीक सामने बठा। कुछ देर दानो चुपचाप बैठे रहे। सोचते से। शायद एक ही घटना के बारे मे अलग अलग कोण से। सुधीर को याद था—यदि यह इसपेक्टर उसे न बचाता तो उसके पाच-साल-दस साल आराम से जेल में बीतते। अचानक सुधीर जरा सा आगे झुका और गहरी दृष्टि मे कौल की तरफ देखकर बोला, ' एक बात बताइए इसपैक्टर साहब।"

'हू।"

"आपने मुझे क्यो बचाया था ?"

कौल साहब हलका सा मुस्करा दिए, ' तुमने दो सौ रुपये दिए थे।'

"मजाक नही सच बताइए।'

कौल चुप हो गए। एक मिनट चुप रहे, फिर बोले "तो सच यह है कि अपराध तुमने नही किया था।"

' पर—"

"छोडो बहस से कुछ साबित नही होगा। पर यह समझ लो हम रात

दिन यही काम करते हैं। कौन अपराध कर सकता है, कौन नही, पहली नजर मे जान लेते हैं। मैंने तुम्हें देखते ही—"

"मैं अपराध नहीं कर सकता ?"

"ना कभी नही। मैं देख रहा हू तुम बदले नही हो।'

सुधीर को वाक्य बहुत गहरे म छू गया। इतने विश्वास से कभी किसी ने उसके बारे मे ऐसा वाक्य नहीं कहा था। वह चुप बैठा इसपैक्टर का चाय का पीना देखता रहा।

इन्सपैक्टर भी सोच रहा था। सोचते-सोचते प्याले को एक लम्बे घूट मे खत्म करके बोला, "मैं जरा जल्दी म हू सुधीर, चाय पी लो। उठेंगे। मैंने भी तुम्ह बाद मे बहुत खोजना चाहा। वक्त नही मिला, नही तो खोज लेता। तुम्हारी रकम तुम्ह वापस करना चाहता रहा। मन पर उस रकम का बोझ था। चलो, आज मिल गए हो, तो बोझ उतर जाएगा। एक बात तुम्ह बताऊ। हम लोग 'सैंटीमेंटल' नही होते। पर तुम पहले आदमी हो। मेरे पूरे पुलिस के कैरियर मे जिसने मुझे अन्दर से हिला दिया था। मेरे लिए वह एक नया अनुभव था। अच्छा लगता है सुधीर, यह देखकर कि कोई किसी से इतनी शिद्दत से प्यार करे। खैर, चलें। उठो।"

कहकर कौल साहब ने जेब से एक भारी सा बटुआ निकाला। दो नोट बहुत स नोटो मे से खीचे और एक विजिटिंग काड। पहले काड दिया "यह मेरे घर का पता। किसी दिन घर आना जरूर और यह तुम्हारी अमानत। मना नही करोगे। भले आदमी हो, क्यो चाहोगे कि मेरे मन पर वजन रहे। लो। और चाय के पैसे तुम दे देना। मुझसे लेगा नही।"

और अपना 'मोनोलाग' समाप्त करके कौल ने अपना भारी-भरकम हाथ मिलाने के लिए बढा दिया। मोह मुग्ध सुधीर का हाथ ऐसे उठा जैसे मशीन का पुर्जा उठता है। इसपक्टर ने पुर्जे को छुआ और सुधीर को उसी तरह सोचता छोड वह लम्बे सतुलित डग भरता हुआ रैस्ट्रा से बाहर हो गया। सुधीर की आखो से ओझल

ओह! यह कैसी घटना सुधीर की सारी चेतना को झिझोडती निकल गई वह रैस्ट्रा मे पडी मेजो की दो कतारो के बीच खडा है। एक हाथ म दो नोट और विजिटिंग काड है सामने रैस्ट्रा का काउटर

है कुछ ही मिनटो म उनकी आँ
घटना के सारे स्टिल घूम गए ह

16

रजिया साधारण
आखें बिना गाठो की भरी
हाथ रखो तो पैर के अगूठे । ग।
पुतलियो से फूटते लावे की गर्मी
उसने एक शाम कहा,
' जब तुम कहो।"
"तो चलो, अभी चलते हैं
"

आ
दूभर
मे कुछ भी
सुधीर को उस
तग होत सुधीर
था
घर छोड
थमाया था उसने उस
उस चूट कर फेंक दिया

लगने लगा था, घर का मतलब ही सुधीर और रजिया के पास पडे बिस्तर से होता है रजिया नही तो घर काहे का जगल के चारो तरफ दीवार खीच देने से घर नही बनता वह रजिया के होने का अहसास

रजिया के अब्बा ने पुलिस मे रपट दर्ज करा दी थी और इन्ही कौल साहब ने

ठहरो सुधीर वह सब याद मत करो माथे की नस फट जायेगी

दरवाजे पर पडी दस्तक की खडखडाहट से रजिया कसे काप कर रह गई थी कुछ ही देर पहले तो घर रही थी वह, ' सुधीर, बहुत डर लग रहा है "

"किससे ?"

"यो ही।"

"मुझसे डर रही हो ? और तो यहा कोई है नही।"

रजिया चुप हो गयी थी।

"तुम्हें पता है रजिया जब कोई लडकी किसी लडके से डरती है, तो समझो उसे "

"क्या फिल्मी 'डायलाग' बोल रहे हो। मुझे तुमसे कभी डर नही लगा।"

"तुम्हारा मतलब है—"

और किवाड को किसी ने जोर से भडभडा दिया था।

उसके बाद,

"साहब खडे क्यो हैं ? बैठ जाइए ना ?"

रस्त्रा का मालिक काउटर से उठकर सुधीर के पास आ गया है, और कह रहा है, "यह कमिश्नर साहब आपके दोस्त हैं ? '

सुधीर जागा है। अपनी स्थिति देखी है, फिर पूछा है, "कौन कमिश्नर साहब ?"

"अरे यही, जो आपसे हाथ मिलाकर गए हैं।"

"कौल साहब।"

' हा-आ पुलिस कमिश्नर आर० एन० कौल। वही तो थे। आपके दोस्त हैं शायद ?"

है कुछ ही मिनटो म उनकी आखो के सामने चलचित्र की तरह उस घटना के सारे स्टिल घूम गए हैं

16

रजिया साधारण नयन-नक्श, पर बेहद आकर्षक हर समय ललकती आखें बिना गाठो की भरी भरी देह इकहरे धागे से बुनी हुई। कधे पर हाथ रखो तो पैर के अगूठे का नाखून काप उठे पलको पर होठ रखो तो पुतलियो से फूटते लावे की गर्मी महसूस हो शरीर स्पश सुख अनुपमेय।

उसने एक शाम कहा "सुधीर कब चलोगे ?"

"जब तुम कहो।'

'तो चलो, अभी चलते हैं इसी वक्त !"

"होश मे हो ?"

"हा क्यो ?"

अरे, कही, ऐसे चला जाता है। कुछ सोचना पडेगा।'

"तो सोच लो, मैं आधे घटे मे तैयार होकर आती हू।

कहकर वह उठकर चली गयी थी और ठीक आधे घटे मे तयार होकर आ गई थी।

दरअसल रजिया के अब्बा को पता चल गया था गली मे रहना दूभर हो गया था रजिया बाप से यह न कह देती कि अगर उसके सुधीर से कुछ भी कहा तो वह जहर खा लेगी तो रजिया का बाप मिनट भर म सुधीर को उस गली से भगा देता पर अब उसे हथकडे अपनाने पडे तग होते सुधीर के कारण ही रजिया ने घर छोडने का फसला कर लिया था

घर छोड दिया था दूसरे शहर म चले आए थे पर दूसरा शहर बसाया था उसने उस शहर म घर और खुद ही, नही सब के साथ मिलकर उस चूट कर फेंक दिया था तब से उस घर शब्द से नफरत है उसे

लगने लगा था, घर का मतलब ही सुधीर और रजिया के पास पड़े बिस्तर से होता है रजिया नहीं तो घर काहे का जगत के चारो तरफ दीवार खींच देने से घर नहीं बनता वह रजिया के होने का अहसास

रजिया के अब्बा ने पुलिस मे रपट दज करा दी थी और इन्ही कौल साहब ने

ठहरो सुधीर वह सब याद मत करो माथे की नस फट जायेगी

दरवाजे पर पड़ी दस्तक की खडखडाहट से रजिया कैसे काप कर रह गई थी कुछ ही देर पहले तो घर रही थी वह, 'सुधीर, बहुत डर लग रहा है "

"किससे ?"

"यो ही।"

"मुझसे डर रही हो ? और तो यहा कोई है नही।'

रजिया चुप हो गयी थी।

"तुम्हे पता है रजिया जब कोई लडकी किसी लडके से डरती है, तो समझो उसे "

"क्या फिल्मी 'डायलाग' बोल रहे हो। मुझे तुमसे कभी डर नही लगा।'

"तुम्हारा मतलब है—"

और किवाड को किसी ने जोर से भडभडा दिया था।

उसके बाद,

"साहब खडे क्यो हैं ? बैठ जाइए ना ?"

रैस्ट्रा का मालिक काउटर से उठकर सुधीर के पास आ गया है, और कह रहा है, "यह कमिश्नर साहब आपके दोस्त हैं ? '

सुधीर जागा है। अपनी स्थिति देखी है, फिर पूछा है, "कौन कमिश्नर साहब ?"

"अरे वही, जो आपसे हाथ मिलाकर गए हैं।"

"कौल साहब।"

'हा-आ पुलिस कमिश्नर आर० एन० कौल। वही तो थे। आपके दोस्त हैं शायद ?"

सुधीर समझा। धीरे से बोला, "मैं किसी पुलिस कमिश्नर कौन को नही जानता ?"

कहकर सुधीर रेस्ट्रां से बाहर निकल आया है। सडक पर भीड मे खोने के लिए। धूप म

वह घर की तरफ चल दिया है

वह किस कदर राई थी रजिया अब छोडो क्या याद करना है दीवारो से घिरे जगल की तरफ भागो चारो तरफ का माहौल जल रहा हो तो जगल बडी राहत देते हैं।

घर मे घुसते ही सुधीर ने सामने कुर्सी पर बठी रमा से कहा, पलग ठीक कर दो लेटूगा।'

'क्या हुआ मुकदमा बिगड गया ?'

"नही तारीख लग गई।'

'तो ?

सुधीर झुकला उठा, 'जिरह ही करती रहोगी या '

रमा उठ गई। पलग ठीक ही था पर सुधीर की यह आदत थी। लेटने से पहले चद्दर वगरह झडे नही तो उसे बहुत किचमिचा लगता था। रमा पलग ठीक करती रही और सुधीर एक हाथ दीवार पर टिकाये खडा रहा। ठीक हो गया तो वह बिना कपडे बदले पलग पर ढेर हो गया। रमा पास खडी देखती रही। बोलने का साहस उसमे ऐसे समय मे नही हुआ। वह जानती है, वह व्यक्ति बहुत से विस्फोटक तत्व सिर म घुमाए घूमता है। जिस समय लावा उबल रहा हो तो उस समय किसी की भी आवाज़ बहुत घातक असर डालती है। पर अन्दर की उत्कण्ठा उसका दम घोट रही थी। कहीं मुकदमा तो नहीं बिगड गया ? पर उस समय कुछ भी पूछना

"रमा ?"

रमा जरा-सा पास खिसक आई।

'एक कृपा करो। कुछ देर के लिए कमरा बाहर से बन्द कर दो और यहीं पडोस मे बठ जाओ।"

"अच्छा।"

"सदीप और समीर तो स्कूल गए होंगे। कब तक आएंगे।"

"काफी देर है उनके आने म। कोई एक घटा।"

"और सशा ?"

"वह तो शाम तक आती है।"

"ठीक है। तुम जाओ। बच्चे आ जाए तो आना, बुरा न मानना।"

रमा मुड गयी। दरवाजे तक पहुची उसकी आखें छलछला आई। वह मुडी। पलग तक पहुची और एकदम सुधीर पर झुककर बोली, "क्या हुआ ? बताओगे नही।"

सुधीर एकदम ठडा हो गया। चुप पडा रमा की विह्वलता देखता रहा रमा ने अपनी उगलिया सुधीर के बालो मे डाल दी, एकदम उबलते स्वर मे बोली, "मुझे नही बताओगे ? मुझसे नाराज हो ?"

सुधीर ने आखें मूद ली।

"मैं तुम्हे बहुत कष्ट देती हू ? '

सुधीर धीरे से बुदबुदाया ' नही।"

"मेरा मतलब, मेरा यहा आना "

"पागल तुम अच्छी हो राहत हो सच पर इस वक्त तुम जाओ मैं हाथ जोडता हू '

रमा चली गई। बाहर से किवाड बन्द कर गई। और दरवाजा बन्द होते ही सुधीर फफक कर रो उठा। बहुत अर्से बाद आज वह रोया है। कौन जान सकता है, क्यो आज यह रोना फूटा है ? खास तौर से कारण क्या है ? इतने धागो मे उलझा सुधीर मुडी अगुलियो से धागो का और उलझता जाना ही देख सकता है। उसकी इच्छा शक्ति तो जाने कब से समाप्त हो चुकी है। अब तो लगता है आदिम जिजीविषा ने भी चेतना से बाहर चूना शुरू कर दिया है। कितना सुख है, चले जाने मे—चुपचाप। तो जाए पर जीने के लिए जिस इच्छा शक्ति की जरूरत होती है वह, हा रजिया मे थी वह कैसी जीवन्त और जीवनदायिनी रहती थी हर समय चली गई उसकी सोच चलती रहती है सुनी सुधीर, क्या रजिया की मौत का कारण तुम नही थे

मैं तो खुद मानता हू। तुम इतनी जोर से चीख कर क्यो कह रहे हो।

धीरे बोलो। धीमी आवाज का अर्थ साफ समझ मे आता है अर्थ ? अर्थ समझने की सामर्थ्य तुममे होती तो इतने सारे अनर्थ तुम्हारे गिर्द न घटते

सुधीर ! इस व्यथा से छुटकारा पाना चाहते हो तो

तो ?

एक ही रास्ता है, खुद से छुटकारा पा लो।

यानी आत्महत्या कर लू।

नाम पर न जाओ। नाम भ्रामक होते हैं। हत्या की तो फासी मिलगी और आत्महत्या तो नरक पागल लोग तुम्हारा जीवन है जीना चाहो जिओ न जीना चाहो तो सुधीर सब अपनी अपनी जिन्दगी जीते हैं और उन्हें पूरा अधिकार होना चाहिए कि

बिना मतलब सोच मे सिलवटें डालने से कोई फायदा नही है सोच को जरा सपाट कर लो, जिन्दगी भी आसान हो जाएगी और चाहो तो मौत भी

सोचते सोचते सुधीर का सिर एकदम खाली हो गया खालीपन बहुत तेजी के साथ फैलता है रोना तो सोच शुरू होने के साथ ही रुक गया था शरीर फैलते शून्य मे लिपटकर शून्य हो जाता है कैसी सुखद आत्महत्या है सवेदनशील प्राणी इस तरह की आत्महत्या शायद रोज करता है अस्थायी इसलिए तो उसे इसका फल नही मिलता शायद यह स्थायी साधक आत्महत्या की रिहसल है या शायद यह चेष्टाहीन आत्महत्या है इसीलिए न फल देती है न सिद्ध होती है बस, कुछ घुलता है टूटता है और वक्त और शरीर की गर्मी से यथापूर्व होने का आभास देता है आदमी जिन्दा रहता है सुधीर जिन्दा है

सुधीर सो रहा है

17

रमा ने सुधीर को झिझोड कर उठाया। वह जोर-जोर से चीख रही है, "उठो, उठो पुलिस आई।"

सुधीर उठकर बैठ गया। सोते सोते उसने कहा, "पुलिस आ गई।" अपने ही वाक्य के झटके से वह जागा, उसने देखा, एक सब इन्सपैक्टर और एक सिपाही उसके कमरे म उसकी कुर्सियो पर बैठे हैं।

इस्पैक्टर न उसकी खुली आखो मे झाकते हुए कहा "आप क्या सपना देख रहे थे ?"

"नही तो।"

"पुलिस आ गई तो आपने ऐसे कहा जैसे सपने मे इन्तजार कर रहे हो।"

"नही मैं सपना नही देख रहा था, कहिए ?"

इस्पैक्टर मिनट भर उसे देखता रहा, फिर उसने हाथ मे पकडी फाइल खोली और पूछताछ शुरू की।

"आपका ही नाम सुधीर है ?"

"हा।"

"आप किसी आनन्द नाम के व्यक्ति को जानते हैं ?"

'आनन्द ? आनन्द मेरा दोस्त है। क्या हुआ उसे ?"

आप कल शाम उसके घर गये थे ?"

'हा गया था। फिर ? पर हुआ क्या उसे ?"

"क्यो गए थे ?"

सुधीर झुझला उठा, "दोस्त के घर आदमी क्यो जाता है ?"

इस्पैक्टर पल भर चुप रहा, फिर बोला, "कुछ बता सकते हैं, उस समय वह किस 'मटल स्टेट' मे था।"

"मटल स्टेट ? पर हुआ क्या उसे ?"

इस बार इस्पैक्टर ने स्वर कुछ अतिरिक्त ठडा कर लिया। धीरे-धीरे बोला "आनन्द ने आत्महत्या कर ली। उसका मृत शरीर आज सुबह

उसके विस्तर पर पड़ा मिला। "सुइसाइड नोट तो वहा कोई नही मिला पर एक चिठ्ठी मिली है जिसमे आपका नाम है वही चिठ्ठी लेकर हम आपके पास आए हैं। चिट्ठी ले लीजिए। हमने भी यह चिठ्ठी पढ़ी है। हमे कुछ इसमे अपने काम का नही मिला। आप इसे पढ़िए "

"तो आनन्द ने आत्महत्या कर ली ?"

"अभी तक तो यही माना जा रहा है।"

"और क्या हो सकता है।"

"अभी कुछ नही कह सकते।"

सुधीर चुप ही रहा।

इस्पेक्टर ने फिर कहा, 'शाम को पाच बजे आप थाने आइएगा क्या कि आनन्द की चिट्ठी सिर्फ आपके नाम है इसलिए आपका बयान जरूरी है। यह चिट्ठी पढ़कर साथ लाइएगा।"

"उसका शव ?"

"वह पोस्टमार्टम के लिए गया है। आप क्लेम 'करेंगे' तो मिल जाएगा।"

इस्पैक्टर और सिपाही चले गए

घर मे एक सन्नाटा छा गया।

सुधीर चुपचाप चिठ्ठी पढ़ने लगा। लिखा था—

सुधीर,

तुम आए चले गए मैं जा रहा हू कारण खोजने की कोशिश मौत का—उतना ही निरर्थक है, जितनी अर्थ खोजने की कोशिश करना—जिंदगी का—मैंने कोशिश की कुछ लिखकर और इस तलाश को जीवन की सार्थकता मानने लगा था क्या हाथ लगा शायद अपने निरर्थक होने का बोध बढ़ा ही जितना सह सकता था सहा अब, इसलिए कि मर नहीं सकता, जी नहीं सकता हम सब दरअसल जितनी चाहे कोशिश कर लें, दायरे से बाहर आएंगे ही फिर इतना-सा सन्तोष छीन लेना कि अपनी मर्जी से समझ गए ? पर, मैं आज मानता हू कि यह

दुनिया का सबसे बडा भ्रम है कि कोई तुम्हारी बात समझ सकता है

ठीक है

आनन्द

सुधीर का चेहरा एकदम पीला जद पडा है। नजरें छत के एक कोने म लटकी हुई हैं।

बहुत देर बाद रमा और सज्ञा ने डर कर सुधीर को जगाया

प्रभाव-प्रक्षेप

प्रभाव-प्रक्षेप

1

वह रजिया को लेकर उस छोटे शहर मे जब एक रात के लिए उन वैद्यजी के यहा ठहरा था। वयोवृद्ध वैद्यजी उसके पिता के पक्के दोस्त थे कट्टर आर्यसमाजी, शुद्धि आदोलन मे पिताजी बतलाया करते थे कितनी ही मुसलमान लडकियो को वैद्यजी ने उडाया, शुद्ध किया और आर्य समाज मदिर मे हिन्दु बनाया था वैद्य जी कैसे-कैसे लडकी को नरक से निकाल कर लाये उसकी अनेक रोमाचक कहानिया सुधीर ने सुनी थी उसी सब के भरोसे वह रजिया को लेकर उनके घर पहुच गया था एक दो रात वहा बिताने के लिए। वैद्यजी ने बहुत स्नेह से उन्ह ग्रहण भी किया था

पहली रात

हा शायद वह पहली ही रात थी जब इस तरह पूरी रात के लिए वह और रजिया एक कमरे मे पास-पास पडी दो चारपाइयो पर लेटे थे कमरा अन्दर से बन्द। कमरे मे घुप अधेरा भय और निश्चयहीनता का चिपचिपा-सा वातावरण। दोनों सपाट लेट थे।

सुधीर ने करवट लेकर रजिया के चेहरे सिलहुट पर अपना दाया हाथ टिका दिया और धीरे से कहा, "रजिया आज पहली रात है।' रजिया ने भी करवट ले ली थी। बोली कुछ नही थी। चन्दन का स्पर्श सुधीर को उद्दीप्त कर रहा था, "डर रही हो ?"

"नही तो।"

"डरो डर आदमी को पिघला देता है। तुम्हें मालूम है रजिया जो आदमी डरना नही प्यार नही कर सकता। कैसा डर लगता है "

"तुम्हारे पास आ जाऊ।"

"अरे पगली कूदकर "

दोनो हल्के से हस दिये थे। कूदकर शब्द को लेकर उनका एक पटट

मजाक था। भूलचूक से भी यह शब्द बीच मे आ जाये तो दोनो बेपनाह हसते थे

आनन्द को निपटे कई महीने हो गये। इस अर्से मे सुधीर लगभग घर म ही बन्द रहा। प्रतिभा के यहा भी कुल तीन बार गया। उसे शायद सुकून की जरूरत ही नही है। कभी कभी मानसिक क्लेश मे भी एक खास किस्म का मजा आता है।—फिर प्रतिभा सुकून देती है तो उद्वेग बढाती भी है। यह गलती तुम्हारी है। सुधीर प्रतिभा पूरा सुख दे सकती है। तुम यदि दुख के बीज न बोओ।

छोडो यह व्यक्तिगत किस्सा—वह क्या बात याद आ रही थी तुम्हे ? जिस पर तुम्हे हसी आ रही थी। वह—हा, बात तो हमने योग्य है। सच और झूठ के हाइफन की करामात—वह

सुधीर अपने कमरे म एक आराम कुर्सी पर बैठा है—सिर कुर्सी की पीठ पर टिकाए—एकदम कही डूबा हुआ खिडकी से आती सूरज की रोशनी मे नहाता—घर के सब लोग कही बाहर गए हैं।

कुछ याद आ रहा है उसे और हसी आ रही है। कोई एक बात नही है बहुत सी बातें हैं। गडडमडड ये सब लोग कहा गए हैं ?

गए होगे कही। कितना सुकून है। अधेरा होने वाला है। किवाड खोल ले नही सुकून बाहर निकल जाएगा। हा किवाड खोलने से कोई अन्दर आए न आए कुछ बाहर जरूर निकल जाता है

वक्त बहते-बहते बहुत कुछ साथ बहा ले जाता है आनद बह गया रजिया बह गई नदी सहज गति स बहती है तो सब कुछ समय पर बहता है, पर बाढ आती है, तो समय से पहले ही बहुत कुछ बह जाता है दोनो तरफ के किनारे भी और किनारो पर रुके घर मकान भी बाढ तेज हो तो किनारो से दूर के मकान भी लपेट म आ जाते हैं और और भी तेज हो तो

सुधीर के दिमाग म बाढ आ गई है, आनद की मौत ने रेत के बने कंटूर ढहा दिए। ढेर की ढेर मवाद बहकर बाहर आन लगी। घर की बिगडती आर्थिक स्थिति ने जख्म को गहरा खोदना शुरू कर दिया। सागा के सीधे हमले चोट म ठसक की तरह दद उभार जात और रमा की मौन भर्त्सना सुधीर के सिर मे फसे इट रोडो को हिला बजाकर उसे

लगभग अचेत कर देती ले-देकर प्रतिभा उसे जगाती पर जागकर सुख उसे मात्र रोने को ही मिलता और रोते रोते वह फिर बेहोश हो जाता जागता हुआ पर बेहोश

वक्त बहता रहा

और ठूठ की तरह कटा खडा सुधीर बहते वक्त को प्यासी दृष्टि से देखता रहा

घर की आर्थिक स्थिति ढलान पर से अचानक लुढकती रही

लिखने के नाम पर सुधीर ने अनगिनत अधूरी कहानिया लिखी जो पूरी होने से पहले ही फ्यूज हो जाती रही और सुधीर मे झुझलाहट बढाती रही लेखक बनने का उसका भ्रम टूटने लगा

प्रतिभा के यहा से इस उस बहाने से पैसा आता रहा जीते रहने के लिए जीते रहने की बाध्यता की मानसिकता ने सुधीर के परिवार के क्षितिजो पर धूल ही धूल बिखेर दी

मुकदमा एक विशालकाय जानवर की तरह जमीन पर पूछ पटकता रहा और धूल उडाता रहा

प्रतिभा चकित थी कही उसने इस आदमी की तक्लीफ को कम करने के बजाए बढा तो नही दिया।

सज्ञा का विद्रोह फन पटकता रहा रमा हतप्रभ, कुठित, रुआसी-सी सब कुछ होता हुआ देखती रही

सुधीर चारो तरफ की ऊहापोह, सबके अदर पनपते सदेह से परिचित रहा, देखता रहा पर ऐसे ही जैसे आदमी सपना देखता है - प्रतिक्रिया विहीन, निष्क्रिय, तद्रा जड

और साल बीत गया, सुधीर की तद्रा नही ही टूटी

फिर एक दिन

एक ही दिन मे तीन चार छोटी छोटी घटनाए घट गईं। सज्ञा ने सुबह सुबह बताया, "कल पापा मेरी फीस जाएगी आज आखिरी तारीख है एक सौ अस्सी रुपए।"

सुधीर एक मिनट तो खबर निगलकर जुगाली करता रहा फिर एक-दम चीखकर बोला, "कल आखिरी तारीख है और आज बता रही हो।"

"आज से पहले बताने से क्या हो जाता। बैंक से निकालने के लिए एक दिन का नोटिस काफी है।"

'बोलने बहुत लगी हो। मेरी दी हुई कटार मुझे ही भाक रही हो "

"बोलने की आजादी कटार होती है ?"

"होती ही है इस बात पर मुनस्सर करता है, कौन उसे कैसे इस्तमाल करता है।"

सज्ञा ने हसकर कहा, 'अच्छा विषय है पापा। कभी इस पर बात करेंगे, इस वक्त तो पर कल फीस जरूर जाएगी, याद रखना।"

सना कालिज चली गई।

रमा आकर सुधीर के सामने खडी हो गई।

"क्या है ?"

"शाम के लिए आटे से नमक तक कुछ नही है।"

'अच्छा।"

रमा जाने लगी तो सुधीर ने पूछा, "क्या बजा है रमा ?"

'आठ। अब चाहो तो उठ जाओ।"

'सज्ञा आज इतनी जल्दी कालिज क्यो चली गई ?"

'कोई मीटिंग वीटिंग बता रही थी। मुझे तो ठीक से समझ नही आया।"

एक कप चाय और मिल सकती है।"

"नही अच्छा, देखती हू "

'छोडो, रहने दो यह बहुत सुबह, पीछे शोर-शराबा कैसा था ?"

'अरे वह हरद्वारी रहता है ना पीछे उसकी बहू मर गई, जलकर, कोई कहता है स्टोव पर गिर पडी, कोई कहता है जानबूझ कर मर गई। और कोई कहता है जानबूझकर मार दी गई। यानी हरद्वारी, उसकी मा और बहिन ने बाध-बूध कर जला दी, मार डाली बडी अच्छी थी बेचारी उम्र ही क्या थी पिछले साल तो शादी हुई थी मुश्किल स 16 17 की रही होगी "

'सुबह शोर काहे का था ?"

"पुलिस आई थी और शोर पगली मचा रही थी "

"उसने क्या किया ?"

"पता नही क्या नाच रही थी, किसी की समझ मे नहीं आया। पर पुलिस ने उसका नाच बडे ध्यान से और शौक से देखा।"

सुधीर चुप हो गया।

पाच मिनट मे रमा चाय बना लाई। प्याला सुधीर के हाथ मे थमाती हुई बोली। "अब और मत मागना। डिब्बा निचोडकर चीनी डाल दी है।"

"अच्छा।"

"सुनो, मैंने अपने लिए एक नौकरी तलाश की है। सौ रुपए महीना देने को तैयार हैं, कल से जाऊंगी।"

सुधीर अचानक उठकर बैठ गया

"कब से ?"

"कल से।"

"मुझसे पूछा तक नही। मुझे सिर्फ खबर दे रही हो।"

"नहीं, पूछ रही हू अभी एक दिन बाकी है और नौकरी तो करनी ही है। सशा भी टयूशन ढूढ रही है। घर तो चलाना है ना।"

"ओह।"

रमा चली गई। सुधीर फिर लेट गया, और भी सपाट भाव से। सोच तक के स्तर पर सपाट

हा, कुछ दिनो से सुधीर की सोचने की शक्ति कुछ कुद हो गई है वह कभी कभी सोचता है वह क्या सोचे ?

बाहर तो उठकर जाना ही पडेगा

फीस का इनजाम तो होना ही है

चाय पीकर सुधीर की तद्रा गाढी होती है

वह सुषुप्त चेतना की खाई मे लुढक गया

कुछ टूट रहा है

कुछ हो रहा है गहमा गहमी है आपाधापी दर आजादी

की बात है, आदमियो का मरना जब आदमी नही मरत और कुछ हो जाता है, तो ऐसा लगता है, कुछ हुआ ही नही हिंदुस्तान को आजादी मिली है और अनगिनत आदमी मर रहे हैं और देगो म आजादी से पहले मरे हैं यहा बाद म मर रहे हैं गाधी भला आदमी था आदमिया को मरने से बचान की भरसक चेष्टा करता रहा, पर अब

गाधी दरअसल नास्तिक था भगवान के काम म बाधा दह दिया भगवान ने उसे इसका महात्मा कहलाया और शिकार की तरह मारा गया ठाय-ठाय और महात्मा की आत्मा परमात्मा के चरणा म बुद्ध बेचारा और उस करुणा कुज बुद्ध ही का क्या हुआ ? सूअर का मास पेट म और करुणा का सूय अस्त कहते हैं सूय अस्त हो भी जाए पर प्रकाश रह जाता है हा, वह तो है पर अधकार भी रह जाता है हिरोशिमा और नागासाकी का अधकार आज हर जीवित आदमी की चेतना में घुला मिलेगा और वह वह मानी सुधीर उसने भी तो एक छोटा सा हिरोशिमा अपने अदर आबाद किया था गुप्ती घूमी एक आदमी मर गया एक बटन दबा और एक लाख आदमी मर गए दोनो मे क्या फक है ? जिसने एक लाख को मारा वह पागल हो गया उसने देखी थी, अपनी की, वह विनाश लीला, ऊपर से भगवान की तरह भगवान कभी पागल नही होता ऊपर से सब देखता है सुधीर उसी भगवान का अश है पागल नही हुआ बच्चे पदा किए और अब उनकी फीस, उनके खाने, उनके लिए कपडो का इतजाम करता घूमता है वह पागल नही हुआ देखा था उसने भी तो। बाद जाकर उसे सडी नाग लम्बे-लम्बे कीडे सटक के किनारे सिर नाली मे लुढका हुआ गुप्ती ने जो सूराख बनाया था, वह उसी के लहू ने मूद दिया था

सूराख के मुह पर लहू जम गया और सूराख बद हो गया

सूराख ?

कहा करता था वह ? वह कौन ? कोई भी। कहता था, "इस डेढ इच के सूराख के लिए बडी-बडी लडाइया हुइ। हजारो लाखो लोग मारे गए। बद करवा दो इन सब साले सष्टि द्वारो को, मिट्टी गारे से "

आह ! पर कोई भी सूराख जब बद होता है। तो अपने ही जमे लहू

से उसने देखा था उसकी गुप्ती से बना सूराख
नही, जागो नही, देखो देखो सुनो
हर-हर-महादेव अल्लाहो-अक्बर

चार गलिया समानातर दो हिंदुओ की दो मुसलमानो की दो गलिया चारो को जोडती हुई दोहरी सीढी

जन्माष्टमी का दिन कृष्ण जन्म लेंगे हर साल लेते हैं पर इस साल

हर-हर महादेव अल्लाहो-अक्बर

जापान के नागासाकी की आग बुझ गई सुधीर का नागासाकी आज भी दहक रहा है रोज आग तेज हो जाती है सब जलकर भस्म हो जाएगा चार गलिया चहल-पहल छोटे-बडे बच्चे पिट्ठू बादी, आख-मिचौनी भागम भाग कौन हिंदू, कौन मुसलमान कुछ पता नही हुह अनजान लोग

पर आज जन्माष्टमी है कृष्ण भगवान जन्म लेंगे

गली का वह नुक्कड सडक पर उतरता हुआ एक आदमी वासुदेव कल तक इसका रग गेहुआ था आज कैसा काला है कृष्ण काले थे जन्म लेंगे गली के नुक्कड पर इसकी दूध की दुकान है और पीछे अखाडा है मिट्टी मे दड पलता है शादी जो नही की सब हसत है

चारो तरफ कर्फ्यू है एक अमानवीय सन्नाटा बाहर कही कसे मुसलमाना को पुलिस का सिपाही साथ लाकर उनकी गली तक पहुचाता है

'वासुदेव, मुगा " एक फुसफुसाहट।

"कौन है साथ मे ?" एक उत्साह भरा प्रश्न।

"चद्रसेन।"

"हर-हर-महादेव, एक पुण्य और कमा लू।"

सुधीर ने अपनी दीवार मे सूराख करके उसमे आख लगा रखी है एक आख बद है

बारह मा की घोबन देखो आगर का ताजमहल देखो दिल्ली का नालकिला देखो देखो, दखा जल्दी देखो बिडला मदिर मत्रह साल का सुधीर देख रहा है।

कितना मजा आया खाली मकान हिंदुआ की भीड घुसी कुछ माल पत्ता मिलेगा क्या ले गए होगे साले साथ कल ही तो भागे हैं, पुलिस एस्कोट म आपाधापी कहा है माल क्या खोलें, क्या तोडें सब एक-दूसरे को धकिया रहे हैं बद्री पहलवान को कौन धकियाएगा एक मुसलमान को रोज मारने का प्रण लिया है पहलवान ने उससे पहले थाली पर नही बैठेगा एक बडे ट्रक पर झपटा है बद्री वह जानता है कोई उसके आडे नही है फिर भी झपटा है ट्रक खुला है ऊपर कपडे कपडो के नीचे

ओह! कपडो के नीचे

एक बच्चा सोया हुआ मुश्किल से छ महीने का जिंदा है पर गहरी नींद सोया है अफीम का पानी दिया होगा

बद्री नाराज है कैचो, खोदा पहाड, निकला यह चूहा उसने दोनो हाथ पकड कर चूहे को अधर मे लटका लिया है चूहा जाग गया है आख खोलकर चारो तरफ देख रहा है दुनिया का पहला अहसास मा न हो, तभी दुनिया को देखा जा सकता है

चारा और ठहाके गूज रहे हैं

यह ठहाका उठान के आखिर मे चीत्कार जैसा क्यो लगता है

बद्री के हाथ की किरपाण घूमी है और बचे हाथ की मुट्ठी मे दो छोटे छोटे हाथ और आधा धड लटका रह गया है

दोनो छोटी छाटी बाहो म फसे सिर मे उगी दो छोटी-छोटी आखें अभी भी खुली हैं

सुधीर अपनी चेतना मे बन सूराख में से देख रहा है

वासुदेव आगे बढा है दबे पाव हाथ मे मजबूत लट्ठ तली म लोहे का कुदा

एक बुजुर्ग, सिर सफेद, दाढी सफेद गोरा चमकदार रग खरामा-

खरामा धरती की तरफ देखते हुए चल रहे हैं शायद खुदा को याद करते थोड़ी देर मे घर आ जाएगा डर क्या है, सिपाही साथ है

साथ मे चन्द्रसेन है, सिपाही

चारो तरह सन्नाटा सौप्तिक पर्व के अत मे जो सन्नाटा पढने वाले की चेतना पर छा जाता है वही बाहर फैल कर जम गया है

वासुदेव दबे पाव दिन मे

अश्वत्थामा दबे पाव रात को पाचो पाडवो के वध के लिए शकुनि और कृपाचार्य शिविर के बाहर अश्वत्थामा के लिए शुभकामना करते हुए

सुधीर ने देखा, वह खडे शकुनि और कृपाचार्य गली के नुक्कड पर सास बाधे

और वासुदेव का सधा हुआ हाथ घूमा धुस्स। नही बडे मिया वही गिरे और ढेर हो गए

वासुदेव भागा कही कोई नही जिसका डर हो, पर वासुदेव भाग कर गली के नुक्कड पर पहुचा

शकुनि और कृपाचार्य ने उसे गले लगा लिया

चन्द्रसेन सडक पर सीधा चला जा रहा है

सुधीर की चेतना मे बना सूराख फटकर चौडा हो गया है

दीखते दृश्य का दायरा बढ गया है

यह क्या हुआ ? यह बाइस्कोप मे घूमती तस्वीरो की स्पीड कसे बढ गई ? क्रम कैसा गडडमडड हो गया है। एक ही वक्त दो तस्वीरें, ऊपर नीचे, एक-दूसरे पर चिपकी हुई। कुछ दीख रहा है कुछ या ही नजरा के नीचे से निकलता जा रहा है

चारो तरफ दुकानें बहुत चौडी सडक सडक के किनारे एक चिता जल रही है किस की चिता है, पता नही इस बस्ती के सभी मुसलमान हजारो हजार के जलूस मे जा रहे है एक औरत धोबियो के मौहल्ले से आई, भागती हुई, उस जलूस में शामिल होने के लिए पकड लिया बोटी-बोटी उडा दी दो आदमी उतरे ट्राम से कल घर छोडकर गए थे आज घर देखने आए हैं पकड लिया दोनों को सडक पर जल रही

चिता मे धकेल दिया उठ उठ कर भागे नही मौत का घेरा नही टूटेगा क्या किया तुम्हारे भाइयों ने, हमारे भाइयो के साथ वहा बदला लेंगे याद करोगे

पर सुना नही किसी ने किसी औरत को मारा हो फिर ? तिम जिले मकान की छत शाम का वक्त जलूस को गए दो घंटे हो गए खाली मकाना की तलाशी ली जा रही है खाली मकानो मे आग लगाई जा रही है कीमती समान

अरे ! यह जीने के किवाड ऊपर से बद कैसे हैं ? जरूर छत पर कोई है तोडो तोडो किवाड, तोडो

एक छोटी-सी भीड सुधीर साथ है

ताला टूट गया छत खुल गई

और

सुधीर हडबडा कर उठ बैठा। चारो तरफ देखा। फिर जोर से चीखा "रमा, ओ रमा।"

रमा उसके सिरहाने कुर्सी पर बैठी थी। उठकर सामने आई। सुधीर की शक्ल देख कर घबरा गई। पूछा, "क्या हुआ ? सपना देखा ?

"नही। सच।"

"पानी लाऊ ? '

"नही। एक बात बताओ। तुम भगवान म विश्वास करती हो ? '

सुधीर पलग पर दोनो हाथो मे अपना सिर लिए बैठा था। और अभी भी ऐसा बोल रहा था, जैसे सोते म बोल रहा हो। रमा ने चाहा कि उसे हल्का कर दे। बोली, 'यह भगवान आज कहा से आ गया और मरे विश्वास करने न करने स क्या होता है। तुम तो नही करते।

'रमा!"

सुधीर ने जिस तरह पुकारा, रमा डर गई। बोली हा।"

"जो पूछा है। उसका जवाब दो। तुम भगवान म विश्वास करती हो ?"

हा करती हू।'

"मानती हो कि भगवान एक है ?"

"हा, मानती हू ।"

"और यह भी मानती हो कि सभी जीवो म उसी का अश होता है या वही होता है "

"हा, वह तो है ही "

' तो जो पाप मेरे दोस्त ने किया, सच नही है कि मैंने ही किया

"सच है "

"तो अगर मैं अपने किए का पश्चाताप करू और किसी और के किए का पश्चाताप भी करू तो क्या तुम उस पश्चाताप म मेरी भागीदार होगी।"

रमा को कुछ समझ नही आया कि क्या हो रहा है। वह घबरा गई। सुधीर के पास पलग पर बैठ गई, बोली, "क्या है, बात बताओ ना।"

"ठीक है। नही दोगी। अच्छा, एक बात बताओ।"

"क्या ?"

' तुम पर मैंने बहुत अत्याचार किया है ?"

"पता नही।"

"बताओ।"

रमा खीझ गई, बोली, "यह क्या नाटक चल रहा है आज ? तुम्ह जाना नही है ? याद है ना, सज्ञा की फीस जानी है।"

"चली जाएगी।'

"कहा से आएगी ?"

"आ जाएगी।"

रमा ने सुधीर की तरफ देखा, उठकर खडी हुई फिर कहा, कल से मैं नौकरी पर जाऊगी। सज्ञा से मैंने पूछ लिया है। सदीप और सुधीर आधे दिन घर पर रहेंगे और आधे दिन स्कूल मे।"

सुधीर चुप बना रहा।

रमा मिनट भर खडी देखती रही फिर अदर रसोई में चली गई। उसे आशा थी, सुधीर कुछ कहेगा और दोनो के बीच की सवादहीनता टूटेगी। पर

दिन भर भटककर आखिर शाम के पाच बजे सुधीर प्रतिभा के पास

पहुच गया।

प्रतिमा उस दिन बहुत खुश थी। पता नहीं क्यो।

हर बात पर हसती। बीच बीच म सुधीर को घिस भी देती, आज फिर मुह लटका रखा है। क्या है ? क्या हो सकता है कि किसी दिन हम सुधीर माइनस समस्या से मुलाकात करें।"

सुधीर बोलने को होता तो बात काट देती, "नही बाबा, नही। समाज नही। समाज को बीच मे न लाओ। मैं जानती हू, मतलब तुम से सुन सुन कर जान गई हू। समाज बहुत निमम है, निर्मोही है, क्रूर है और अयायी है, आज कोई नई बात करो।'

"क्या नई बात ? जैसे ?"

' जसे तुमने कभी किसी से प्रेम किया हो ? या कभी किसी की हत्या की हो ? मेरा मतलब है, कभी आदमी जसा बताव किया हो ? '

' किया है।'

'क्या ? प्रेम या हत्या ?"

"एक ही बात है। हमारे यहा तो प्रेम भी हत्या ही की तरह किया जाता है। डरते-डरते करो और फिर जल्दी से जल्दी भागो कही कोई देख न ले। यानी प्रेम करो या हत्या, एक ही बात है।"

"भई, तुमने क्या किया है ? प्रेम ? या हत्या ?"

"दोना पे हाथ अजमाया है। पर बद किस्मती देखो, दोनो म ही कुछ हाथ नही लगा। प्रेम म लडकी नही मिली और हत्या मे सजा बनी बात, लडकी और सजा पर्याय, हैं ना।"

"और ये रमाजी ?"

"राम राम ! रमाजी लडकी नही हैं, पत्नी हैं।'

अचानक बात रुक गई। दोना को महसूस हुआ जैसे शू य बीच म आ गया हो और बात करने को कुछ भी बाकी न हो। यह क्या हुआ ? दोना अचानक अपनी अपनी कोठरी म बद हो गए। पर दोनो की ही समझ मे नही आया कि ऐसा अकारण क्यो हुआ। प्रतिभा के मन म एक तीव्र भाव लहका—सुधीर फौरन उठे और चला जाए। सुधीर भी लगभग समझ गया कि वह असगत हो चुका है, उसे उठ जाना चाहिए। सवादहीनता की

यह स्थिति कुछ ही मिनट रही, पर दोनो को ही लगा कि वे चुप्पी की गर्मी मे पिघलने लगे है। इस चुप्पी के अतिरिक्त भी दोना के अदर कुछ था जो दोना का पिघला रहा था। सुधीर के मन मे सजा की फीस रेगिस्तानी चक्रावात उठा रही थी और प्रतिभा के मन मे कुछ एक अमूत वेदना थी जो उसे बीच से चीरे दे रही थी। यह प्रतिभा का स्वभाव है जब वह कही गहरे मे एक वेदना का अनुभव करती है, तो पहले बहुत हसती है, खूब खिल-खिलाती है, फिर अचानक अपने मे घुट कर कमरे मे चटखनी अदर से वद करके घटो बिस्तर मे पडी शू य मे ताका करती है। उस समय घर का काई भी सदस्य उसके कमरे क दरवाजे पर हाथ नही रख सकता।

कुछ ही मिनट और खिसके होगे कि प्रतिभा के लिए सुधीर का बैठा रहना असह्य हो गया। उसने एकदम बुझे स्वर म कहा, "तुम्हें कुछ कहना है सुधीर ?'

सुधीर चौका, बोला, "नही," फिर एकदम खुद को सही करता हुआ बोला "हा कहना है।"

"कहो।"

"कुछ तुम्हारी तबियत खराब हो गई है।"

"नही। कहो।"

प्रतिभा की आवाज के ठडेपन ने सुधीर का नतिक साहस धूल की तरह उसक मन पर से झाड दिया। पर परिस्थिति ज य अनैतिक साहस जिद किए खडा था। उसे उठकर बाहर आ जाना चाहिए था, पर वह बैठा रहा चुपचाप। वातावरण मे एक धुआ सा भरने लगा।

"सुधीर ज्रा जल्दी। मैं उधर जाना चाहती हू।"

सुधीर चुप रहा। उसकी आखो का पीला लेंस पिघलने लगा। पर उस स्थिति से वह घबराता है। उसने जल्दी से कहा, "मुझे कुछ और पैसे चाहिए।" प्रतिभा ने सुना। उसे इसी वाक्य की आशका थी। फिर भी यह आशा भी थी कि शायद इस वातावरण म सुधीर यह सब न कह पाए और एक भद्दी स्थिति से बच जाए। पर वाक्य आया और प्रतिभा के अदर की सारी भाव जडता टूट गई। अजीब खुद मे गर्क आदमी है। कोई दूसरा तो शायद इसके लिए शायद इसके अपने दायरे से बाहर होता ही नहीं।

तो ? नही और नही, यह खेल है। अपने दायरे से बाहर जाकर खेलना खतरनाक है। इस आदमी का चेहरा दखकर जो करुणा मन मे पैदा होती है उसे पिंजरे म रखना होगा। पिंजरे से निकला जानवर या तो खुद को खा जाता है या सामने वाले को न प्रतिभा खुद मरना चाहती है, न चाहती है कि सुधीर मारा जाए नहीं, यह क्रम तोडना होगा यह अस्वाभाविक क्रम

उसने बहुत धीरे से, आवाज को जरा अतिरिक्त मीठा बनाकर कहा, "पर पैसे तो आज बिलकुल नही हैं, घर मे सुधीर। इस समय तो मैं कुछ भी नही कर सकती।"

सुधीर चुप रहा। उस की आखा का पीला मोम जलकर धुआ बाहर फेंकने लगा। वह चुप अगुलियो को मरोडता तोडता बठा रहा। मिनट भर बाद उसन प्रतिभा की तरफ देखा। प्रतिभा ने भी उसकी तरफ देखा। देखते ही उसे फुरफुरी-सी आई जैसे किसी डरावने, लिसलिसे समुद्री जानवर से छू गई हो। उसका मन हुआ, वह उठकर अदर भाग जाए। पर उसके हर समय सतर्क रहने वाले दिमाग ने बताया कि भाग जाने से इस आदमी का दायरा फल जायेगा और हो सकता है, वह स्थिति और भी खतरनाक हो। उसने फिर उसी मन्दी और मीठी आवाज मे कहा, "आई एम सॉरी, सुधीर, आज घर मे पसा नही है।"

"ठीक है, अच्छा। दोहरा क्या रही हो ?"

"यो ही, तुम्हें विश्वास न हो शायद।"

सुधीर के चेहरे पर एक कडवी मुस्कराहट उभरी और डूब गई। उसने कहा, "विश्वास न होता तो तुमसे मागता नही।"

"क्या करू ? आज घर म है ही नही।"

"ठीक है चलता हू।'

सुधीर उठकर खडा हो गया।

उसने चारो तरफ देखा

कितनी पीली रोशनी है चारा तरफ की खाली दीवारो पर पील कागज की तरह चिपकी हुई जगह-जगह कोनो में छोटे बडे जानवर बठे है अलग अलग सूरत वाले सामने दीखते काले स्क्रीन पर कुछ बहुत

दीर्घकाय जानवरों की छायाएं दिख रही हैं   शायद वे जानवर अंदर आने की कशमकश में हैं   प्रतिभा कोच में सिर झुकाए बैठी है   कैसा सांवला लग रहा है रंग इसका   क्या हो गया है इसे   ?

अरे, क्या हुआ इसे ? नहीं है तो नहीं है, इस म

सुधीर कोच की पीठ पकड़े खड़ा है   उस घुमेर आ रही है

उसने कहा है, ' पांच मिनट और बैठ सकता हूं ?"

प्रतिभा ने कहा है, 'हां हां बैठो। क्या हुआ ?"

'कुछ नहीं" सुधीर बैठ गया।

आगे सुधीर को कुछ मालूम नहीं क्या हुआ। उसे कुछ खाने को मिला। फिर तीन सौ रुपये मिले, इस वाक्य के साथ कि, "यह मेरी तुम्हारी पैसे की आखिरी 'ट्रांजैक्शन' है।" सुधीर ने विदा ली। वह धीरे धीरे चलकर जीना उतरा और फिर खिंचता हुआ सड़क पर आ गया   सड़क जो दूसरी सड़क तक पहुंचेगी और वह सड़क तीसरी तक और फिर वह लम्बी अजगरी सड़क जो उसे घर के पास उगल देगी

पैदल चलें   ?

हां, पैदल   धीरे धीरे   बस में जेब बहुत कटती है

सुबह सजा की फीस जाना है

इस इतने बड़े शहर म सड़कों पर कितना घिनौना अंधेरा रहता है

क्या बजा होगा ?

क्या पता ?

चलो सुबह से पहले तो पहुंच ही जायेंगे

सुबह ही तो सजा की फीस जमा होनी है

2

अजगरी सडक तक पहुचने से पहले सुधीर सु न रहा। खुद म भी उससे एक शब्द नही बाला गया। पर उस सडक पर उतरते ही पता नही क्या हुआ कि उसके भाव जगत म से लावा ही लावा फूट कर वहन लगा। खुद सुधीर उस लावे की गर्मी और गति से दहल गया कुछ देर चकित रहने के बाद वह उस विस्फोट का मूक दप्टा मात्र रह गया एक एक शब्द उसकी नजरो के नीचे से होकर बहने लगा

मिल गए सुधीर ने दाया हाथ छाती पर बनी जेब पर रखा सौ-सौ के तीन नाटो की कडक्डाहट महसूस की आवाज ने हाथ को छुआ उसकी चेतना पर एक ठेस सी लगी हाथ छाती पर से गिरकर लटक गया वह फिर होठो ही होठो मे बुदबुदाया "मिल गये।" कल सना की फीस चली जाएगी फीस आदमी को सुसस्कृत बनाने की कीमत या भविष्य म जैसे तैसे नौकरी करके जि दा रह सके उसका 'प्रीमियम' पढने लिखने से सस्कृति का तआल्लुक क्या है राममनोहर कितना पढा लिखा है कसे साला बोलता है औरो के और औरता के बारे म सस्कृति सभ्यता क्या कहना था यूनिवर्सिटी का वह प्रोफेसर एक दिन—मैं लौटे मे दातुन बजाने का आदी नही हू। किसी सम्भ्रात महिला की बात चल रही थी और वहा बठे सभी सम्भ्रा त लेखक हस पडे थे। उस वे 'स स आफ ह्यू मर' कहते हैं। इसी की एक और मिसाल भी तो याद है सुधीर को—सस्कृति के एक प्रतिनिधि का औरता के बारे म एक शाश्वत सत्य का उदघाटन—कह रहे थे—इनके दो ही जगह खाज उठती है, एक गले मे और एक वहा, दोनो जगह का खाज मिटाते रहो औरतें तुम्हारी हैं यह है पढाई लिखाई से प्राप्त भाषा की परिस्कृति पहल शायद औरतो के बार म ऐसे नही बोलते थ क्या कहता था वह नेहरू—किसी समाज की सामाजिक-नतिक स्थिति जाननी हो तो उस समाज म *स्त्री की क्या स्थिति है यह जान ला लखक व्यापारी राजनता* क्या फक है तीनो म ? तीनो की मूल प्रवत्तियो म फिर यह नाटक

क्यो बात यही हुई ना आदमी आदमी है बाकी सब ऐसे हैं जैसे कोट, ओवरकोट, स्वेटर, पुल ओवर, धोती या कमीज वगरह वगरह यह 'असल' है ना, उदू का शायर मतलब खुद को मानना है लम्बी दाढी, सिर पर लम्बे अन धुले बाल कुछ सफेद, कुछ काले पिछले सत्रह साल से यह उसका परिचित है कभी-कभी तो उस पर बहुत प्यार आता है सुधीर, यार पाच रुपये तो दे नही हैं अच्छा काम्प्रोमाइज, फिफ्टी-फिफ्टी, ढाई रुपये छोड दिये, ला, ढाई रुपये दे क्या करेगा ? यह पूछना 'आउट ऑफ ऐटिकेट' है मैं कुछ भी करू रडीबाजी करूगा, तू कौन होता है साले पूछने वाला।

ढाई रुपये मे रडीबाजी ? वह तो एक रुपये मे भी हो सकती है।

तो ठीक है एक रुपया ले, जा

'असल' बीच सडक पर खडा होकर चीखेगा फाश से फॉश गाली देगा, कहेगा, "यह चालाकी है। यह हरमजदगी है, सुधीर। हम तुझमे मोहब्बत करते हैं। हमे तुझमे ऐसी उम्मीद न थी, तू भी साले कमीना निकला "

सुधीर एकदम गम्भीर बनकर रहेगा "असल—हम भी तुझमे मोहब्बत करते हैं।"

"फिर यह टुच्चापन क्यो ?"

' डार्लिंग, मेरे पास देने के लिए एक रुपया ही है।"

"कितने रुपये हैं तेरी जेब म ?"

"चार रुपये तीस पसे।"

' हिमाब से फिफ्टी फिफ्टी कर।"

"यह नही हो सकता।'

"क्यो नही हो सकता ?"

सुधीर ने कहा 'देख, हिमाब समझाता हू तुझे। पहली बात यह है कि तू इतने दिन बाद मिला है, 'आउट आफ एटिकेट' है, कि साथ बैठकर चाय न पियें। नम्बर दो यह कि खाली चाय न तुझे पसन्द है न मुझे, तो एक एक प्लेट समोसा भी चलेगा। अब जोड अस्सी पसे चाय के और अस्सी अस्सी पैसे की दो प्लट समोसो की। कितने हुए ? दो रुपये चालीस

पसे। अब बोल, कितने बचे ? एक रुपया नब्बे पैसे। है ना। अब यह तेरा 'चायस' है, चाहे नब्बे पैसे ले लो या एक रुपया। बोल ?"

सुधीर को याद है 'असल' कई मिनट तक उसकी तरफ देखता रहा था। उसकी आखो मे चमक आ गई थी। पता नही मोहब्बत की या भूख मिटेगी, इस आशा के कारण। पर यह चमक फौरन मिट गई थी। उसने ढेर सारी गालिया उगलते हुए कहा, "पर हरामजादे, तुझे पता कैसे चला कि मुझे भूख लगी है।'

सुधीर ने और छेड़ दिया। धीरे से बोला, "तू भी 'असल' का पागल है।'

और फिर क्या नही हुआ। 'असल' ने सुधीर के पूरे खानदान को लपेट कर गालिया दी। नई से नई गाली गढने म असल' माहिर है। सुधीर को भी द्वेषहीन, स्नेहपूरित गालिया सुनने मे बडा रस मिलता है। वह चुपचाप खडा सुनता रहा और 'असल' ठडा होता गया। अचानक असल चुप हो गया। मिनट भर सास लेकर बोला, "तेरा 'आफर' अभी है ?"

"है चल।'

"विदड्रा नही किया ?" साथ साथ चलते असल ने पूछा।

' मैं कोई पागल हू।"

'तूने यह मज़ाक किया है ?"

"नही, सीरियसली' कह रहा हू, मैं पागल नही हू।'

"इससे कोई और मतलब तो नही है ?'

"मुझे क्या पता ? मैं कह रहा हू, मैं पागल नही हू, कोई हो मुझे क्या ? '

पर 'असल' चुप हो गया था। सुधीर ने प्यार से आदमी के उस अपरूप को देखा। मले चीकट कपडे, काले-सफेद सरकडो म से उगा हुआ चेहरा, 'असल' के नयन नक्श तीखे पर वक्त की झाड़ू से पिटे। सुधीर ने बाह पर से पकडा कहा, ' बताऊ तुझे। मुझे कसे पता चला कि तुझे भूख लगी है ?'

"बता।"

"मोटी बात। मुझे भी भूख लगी है।"

"पागल का बच्चा। तेरे ख्याल से जो और लोग तुझे मिलते हैं, उन्हें कभी भूख ही नही लगती। बहकाता है साला मुझे?

"उन्हे लगती है, पर वक्त पर। बस, बाहर भी भूख उन्हें उसी वक्त दिखाई देती है। मैं और तू वक्त के मोहताज नही हैं। भूख किसी भी वक्त लग सकती है, इसलिए किसी भी वक्त जहा होती है, दीख सकती है।"

'सुधीर, तू साले है, जीनियस। उल्लू का पट्ठा। बहनचोद।"

रमा नौकरी पर जाने लगी है। सज्ञा ने खुद कुछ ट्यूशन पकड लिए हैं। किसी ने पगली को जान से मारने की कोशिश की। वह बाल-बाल बच गई। रेल की पटरियो पर दो आदमी और कट गए। पीछे की पोश कालोनी मे दो रुपये और बीस रुपये का नोट और एक डाक टिकट छापने वाली एक मशीन पकडी गई हरद्वारी बहू को जलाकर मारने के आरोप से बरी हो गया। कीकर के जगल म दो गुटो की सारी रात लडाई हुई, पत्थरो और लाठियो स, बहुत लोग घायल हो गए, मरा कोई नही। पुलिस न सुबह फैसला करा दिया। सब न हाथ पैर जोडे

सुधीर ने लिखने की बहुत कोशिश की। कुछ नही हुआ। रमा का काम करना उसे बहुत तक्लीफ दे रहा था। उसस रहा नही गया। उसने भी थाडा-बहुत प्रूफ-रीडिंग का काम आसपास से पकडना शुरू कर दिया। पर उसे लगा यह काम उसके सिरदर्द को बढाता है, उसमे पिनें चुभने का 'इफक्ट' पैदा करता है फिर भी

हा, मुकदमे की तारीख से दो दिन पहले वह बहुत सनक होता है

एक दिन सज्ञा न कालेज से आकर कहा, "पापा आज शाम को मेरे कुछ दोस्त आएगे। भास्कर भी, बातचीत मे हिस्सा लोगे?"

'लूगा। श्रोता की हैसियत से।"

सज्ञा हस पडी, बोली, "आपकी जनरेशन, पापा, इतने 'हिपोक्रेट' क्यो है?"

"इसमे क्या हिपोक्रेसी' हो गई?"

"मतलब, कोई तुमसे पूछेगा तो जवाब नही दोगे, कहोगे — मैं श्रोता हू। अरे, कहो उत्साह से हिस्सा लोगे। हम लोगो की चुनौती झेलने को तुम लोगो को तैयार होना चाहिए।"

"कोई चुनौती है, तुम्हारी तरफ से ? पर छोडो, लेकिन मैं तो अपनी पीढी का प्रतिनिधि नही हू। वैसे भी मैं हर दष्टि से असफल आदमी हू मैं "

सना तिलमिला गई, चेहरे पर गहरी भावना लाकर बोली, "मैं तुम्हें असफल आदमी नही मानती। जो आदमी हर परिस्थिति मे अपनी जिद पर अडा रहे, अपने सिद्धान्त को न तोडे और जिसका सोचने का अपना अलग तरीका हो वह कभी असफल नही कहला सकता। तुम जिसे सबसे कम महत्व देते हो—पैसा और दुनियाबी कामयाबी— बेहद अफसोस की बात है, यही तुम्हारी हीनता ग्रन्थि का कारण है। अपने ही अन्दर साप की कुडली मे जकडा आदमी, पापा तुम्हे उससे मुक्त होना चाहिए तुम "

'सना।

'हां पापा!"

तुमसे जरा-सी गलती हो गई पहचानने म।

"क्या ?

"साप तो मेरे अन्दर था है, पर वह उस कारण नही जन्मा जो तुम समझी हो वह '

'मैं नही सुनना चाहती वो किस कारण जन्मा है, मैं चाहती हू, तुम उसे कुचल दो उसके प्रभाव से मुक्त हो जाओ सही मानी म मेरे पापा हो जाओ। कहते कहते सना विह्वल हो उठी। पलग पर बैठे सुधीर के पास ही बैठ गई और उसकी तरफ टुकुर-टुकुर ताकने लगी।

सना की दष्टि से बचने के लिए सुधीर ने कहा, "सना, एक कप चाय ही ले आ बनाकर फटाफट।'

"कहती हू अम्मा म।'

'आपफोह। सनाजी, अच्छी चाय चाहिए।'

'अम्मा अन्दर रसोई म है। तुम्हे डर नही लगता ?' कहकर सना हस पडी।

सुधीर भी हल्का हो गया था। बोला लगता है पर मुझे क्या मालूम वह रसोई म है। मैंने तो समझा अभी आई ही नही।"

'अरे पापा, तुम्हें इतने दिना म इतना भी पता नहा चला कि अम्मा

जब रसोई म होती हैं तो ऐसा लगता है जैसे दसियो चूहे एक साथ खटर-पटर कर रह हैं।"

सुधीर कुछ सोचन लगा था। मजाक का मजा नही ले सका।

बोला, "पर आज जल्दी क्यो आ गई ?"

'पता नही।'

"रमा ओ रमा।" सुधीर ने अधीर होकर पुकारा।

रमा हमेशा की तरह धोती के पल्ले से हाथ पोछती हुई अन्दर घुमी। आकर खडी हो गई। रोज़ की तरह 'क्या है' नही कहा।

सुधीर और सना, दोनो न रमा का चेहरा देखा। भारी था।

"क्या हुआ रमा ? जल्दी क्यो आ गई ?'

'नौकरी छोड दी।"

'अच्छा किया बहुत अच्छा किया पर हुआ क्या ?"

रमा के चेहरे पर एक गहरी वितृष्णा का भाव उतरा पर उसने फौरन ही उसे दबा दिया कहा, "चाय रख दी है।"

'पर हुआ क्या ?"

"पर—

"छोडो, यह पर पर, चाय पियो और करो लफ्फाजी। जिनका पेट बातो से भरता है उनको क्या जरूरत है यह जानने की कि दुनिया म क्या हो रहा है।'

कहकर रमा अन्दर चली गई।

सुधीर और सना दोना पर सकता छा गया। दोनो समझ गए कुछ अनिष्ट घटा है। सना क चेहरे पर तनाव इतना गहरा था कि सुधीर देखकर घबरा गया। उसका अपना मन बहुत तीता हो गया था और अचानक सिर मे तीखे दद की लहरें उठने लगी था। सना मिनट भर सुधीर का विकृत होता चेहरा देखती रही। उसे अदर से एक विरक्ति का अनुभव हुआ, एकदम ठडी आवाज मे उसन कहा, "तुम्हे पता है पापा, अगर तुम दोना मे झगडा हुआ तो मैं किसकी तरफ हूगी ?"

सुधीर ने शुष्क स्नेह से सना की तरफ देखा ।

है, 'पता है, रमा की तरफ, तुम ईमानदार ह

"तुम्हे दुख नही होगा ?"

'होगा। तुम्हारे बिछुडने का। पर तुम्हारी सही निणय लेने की क्षमता पर खुशी होगी।"

सना हतप्रभ रह गई। मुग्ध भाव से पिता की ओर देखती हुई बोली, "ओह ! पापा ! तुम बहुत 'डिसैप्टिव' हो पता ही नही चलता कि—"

पर इससे पहले कि सना बात पूरी करती रमा ने दोनो के बीच म चाय रखते हुए बात काट दी, "चलो, चाय पिओ, गला सूख गया होगा।"

दोनो चुप होकर चाय पीने लगे। रमा का चेहरा अब कुछ सहज था। दोना ने नही चाहा कि नौकरी की बात शुरू करके फिर उसका मूड खराब किया जाए।

चाय पीकर सना दोस्तो के स्वागत की तयारी म लग गई।

कुल मिलाकर छ लोग आए। भास्कर, सुनीला, मिलिन्द राजीव, रेणु और मजूषा। सब एकदम युवा। एकदम ताजे, हृष्ट पुष्ट। सुधीर को बहुत अच्छा लगा। उसका मूड कुछ-कुछ ठीक हो गया। नए खून का अदृश्य प्रभाव उसे अनुभव हान लगा। सब बी० ए०, एम० ए० के छात्र थे। पहले तो कुछ देर फुटकर हसी मजाक और चाय होती रही। फिर सना ने जसे वलप कर दिया, "भास्कर, क्या कह रहे थे तुम उस दिन कि हमारा सारा भारतीय समाज अनैतिकता का नही एक सामूहिक निर्नैतिकता का शिकार है हम सबस पहले इस पर चोट करनी है। अनीति स आदमी लड सकता है पर निनीति से कैसे लड़े ? यही हमारे देश के बुद्धिजीविया और राज नीतिना का सक्ट है कि वे इस तथ्य को पहचान नही पा रहे हैं। किसी भी तरह की 'मौरल सैंस' का होना समाज परिवतन के लिए बहुत आवश्यक है। यही थी ना तुम्हारी बात ? एम आई क्लीयर ?"

भास्कर ने कहा, 'हा मैं यही कह रहा था। मेरी धारणा यही है। पर सुविधा क लिए इस प्रश्न को तीन हिस्सो म बाट लें। यह स्थिति है या नहीं ? यह समाज-परिवतन की प्रक्रिया म बाधक है या सहायक और एसी स्थिति क्यो है ? क्या सुधीर जी, आपका क्या मत है ? आप मरी इस धारणा से सहमत हैं ?'

सुधीर ने इस दृष्टि से कभी नही सोचा था। पर बात काना म पडते

कुछ कम उदास है

वह उठकर कुर्सी पर बैठ गया है सोच रहा है रमा चाय बना रही है अखबार आ गया है पर अभी सुधीर ने खोला नही है

चाय द दे रमा तो अखबार पढा जाये

रमा चाय द गई

खडखडा कर अखबार खुला और बहुत सारी खबरो के साथ एक ऐसी खबर सुधीर की नजरो के सामने फैल गई जिसने अचानक उसके चेतन मन को अवचेतन म धकेल दिया—सुधा गुप्ता के हत्यारे को दस साल की सख्त कैद—हत्यारा! देखा था सुधीर ने उस हत्यारे को मुश्किल से अठारह साल का होगा सुनहरा रग लम्बी मजबूत काठी घुघराले बाल नयन नक्श थोडे मोटे, पर आखें बडी-बडी उसकी भी तारीख थी उस दिन कचहरी म पर वह अपना केस टलवा कर सारा दिन उस हत्यारे की सुनता रहता था उसे याद थी अखबारो की वे सारी खबरें जो उन दिनो छपती रहती थी सुधा कालिज मे पढती थी हत्यारा चार पाच साल से उसी घर मे नौकर था उस दिन घर मे अकेली थी नहा कर निकली फिर पता नही क्या हुआ डबल रोटी काटने के चाकू से नौकर ने सुधा को गोद गोद कर मार डाला

उसके सिर के बाल उखडे हुये अलग पडे मिले शरीर पर अनगिनत घाव बने शरीर खून से लथपथ हो गया

नौकर दो दिन पहले घर से भाग गया था मालिक लोग उसे मना कर वापिस घर ले आए सब उसे बहुत प्यार करते थे घर का सारा काम वह घर के आदमी की तरह निपटाता था फिर? फिर यह क्या हुआ? सबने कहा—बच्चे की तरह पाला, और यह किया हरामजादे ने सुधा की सादी तय हो गई थी घर म जेवर कपडा आ गया था उसी पर नजर होगी लडकी ने जान पर खेलकर मुकाबला किया पर

हर पुलिस ने बताया कि नौकर घर से एक पसे का सामान भी नही ले गया अगले दिन अपनी कोठरी म पडा पाया गया

ये छोटे लोग होते ही ऐसे हैं सुधा गुप्ता के घरवालो न भरसक

कोशिश की कि नौकर को फांसी ही लगे पर जज को शायद दया आ गई और उसने उसे सिर्फ दस साल की सजा दी यानी अठारह साल मे अट्ठाईस साल तक बाहर आएगा तो ठीक हो जाएगा

सुधा गुप्ता के एक रिश्तेदार कचहरी मे खडे कह रहे थे—साले को सिर्फ फांसी मिलनी चाहिए जिन्दा रहा तो वापिस आएगा और यहा-वहां ऊलजलूल बकेगा ये कमीने लोग 'लूज टाकिंग' बहुत करते हैं।

सुधीर ने धीर से कहा था उनसे—आप इसे इसके गाव भिजवा दीजिए ना। आप ऊलजलूल बातों से बच जाएंगे और इसकी जान बच जाएगी।

'और इस कुत्ते की औलाद ने हत्या जो की है ?"

सुधीर को हसी आ गई थी, उसने कहा था, "देखा आपने हमारे यहा की न्याय प्रणाली कितनी पुष्ट है कुत्तो तक का न्याय करता है। पर आपने एक कहावत सुनी है—' आदमी जब कुत्ते की तरह इस्तेमाल किया जाता है तो बहुत खतरनाक जानवर होता है।"

' आप कौन हैं ? '

कुत्ता। इसलिए इसका रिश्तेदार हुआ।"

वे साहब बहुत तैश म आ गये थे मुह से झाग टपकाते बोले थे, "वह सडासी देखी है जिससे सडक पर आवारा घूमते कुत्ते पकडे जाते है।'

सुधीर ने देखी है वह सडासा। पेट पर या गले पर धसती है और कुत्ता ऊपर उठ जाता है। फिर रोटी के साथ जहर की गोली और उसकी आवारगी खत्म। पर यह सिर्फ कुत्तो के साथ ही नही होता

क्या नाम था उन सेठजी का बिशालचन्द एक नौकर मरवा कर उन्होंने दहलीज म गडवा दिया था कई साल बाद पता चला मुकदमा चला और गवाहियो की कमी मे फुस्स हो गया सुना गया कि सेठजी की गरहाजिरी मे सेठानी उससे अपने सारे शरीर पर तेल मलवाती थी कहते हैं उसका हाथ तेल मालिश का सिद्ध हस्त था एक दिन सेठ को पता चल गया और

किसी भी आदमी को गुलाम बनाने का एक मात्र तरीका यह है कि उसक अन्दर की 'मॉरल स स' को मार दो। वह आपका उम्र भर एहसान

मानेगा और आपका गुलाम रहेगा। आदमी को सबसे अधिक तकलीफ यह कम्बख्त 'मॉरल सेंस' ही देती है। यह मरी नही कि सुख ही सुख। दुख फिर पास फटक नही सकता। अन्दर की लडाई खत्म हुई नही कि खुले मैदान मे भागने की सामर्थ्य सौ गुनी हो जाती है। आदमी की तरक्की का असली राज

ठहरो सुधीर। बुद्धिवादी न बनो। तुम्हारी असफलता का कारण यह नही कि तुम मे 'मारल सन्स' है, पर यह है कि तुम उसकी आवाज को, उसके निर्देश को साफ-साफ सुन समझ नही पाते। हमेशा दुविधा मे रहते हो जो आवाज देर से सुनाई देती है, भ्रम पदा करती है। अन्तकरण ठीक वक्त पर नही चेत पाता, स्वस्थ नही होता और सुनो, यह सोचना कि सफल वही हो सकता है जो पहले अपने अन्दर की आवाज को सुनना बन्द कर दे निहायत मूर्खता की बात है, सिले सूट को दोबारा थान म बदलने की कोशिश है यह झूठ है

फिर सच क्या है ?

वह ढ़ढना पडेगा पर इस सच मत मानो। झूठ को सच मनोगे तो मानसिक स्तर पर मर जाओगे।

मैं जिन्दा हू ही कहा ?

हो सकता है इसका कारण यही हो कि तुम्हे झूठ को सच मानने की आदत हो।

हा, हो तो सकता है, पर

सुधा गुप्ता पहले उस नौकर से 'खेल' कराती थी। खेल-खेल म एक तरफ कुछ चिपचिपा पैदा हो गया और इसी फरेब म फसकर उस खूबसूरत चेहरे का सीखचो के पीछे चले जाना झूठ है, सेठानी का उस घटना के बाद भी हस-हसकर पार्टिया मे शामिल होना झूठ है, हरद्वारी का पत्नी को मारकर निद्वन्द्व चाय बचना झूठ है, सैकडो लोगो के मुह से कौर छीन कर सेठो का ऐय्याशी की जिन्दगी बिताना और आदमी को कुत्ता की तरह इस्तेमाल करना झूठ है, पति का पत्नि का और पत्नी का पति का उम्र भर धोखे म रखना झूठ है यह झूठ है कि आदमी अपनी यशलिप्सा के लिए हजारो हजार, लाखो लाख आदमियो को मरवाता रहा है और आज

भी निसकोच मरवा देता है, यह झूठ है कि आदमी कुछ पैसों के लिए या कोई काम निकालने के लिए अपनी पत्नी को रात भर के लिए छोडकर वापिस आ सकता है, अपनी पत्नी की इच्छा के विरुद्ध और ये तो सब छोटे छोटे सच हैं, क्या यह सच नही कि आदमी ने ऐसा बम बना लिया है जिसे किसी शहर पर छोडा जाएगा तो सब मारे जायेंगे, पर सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी वाह ! क्या प्रतीक-बम है, हमारी सभ्यता का आदमी मर जाएगा सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी यह काम तो यह सभ्यता बिना किसी बम के भी बखूबी कर रही है इसके लिए बम की क्या जरूरत है आदमी मर रहा है और सम्पत्ति

और सुधीर यह बात भी तो सच है कि तुमने एक आदमी की जान ली जिससे तुम्हारी कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नही थी व्यक्तिगत क्या, कैसी भी दुश्मनी नही थी

वही तो, मैं तो कह ही रहा हू वह सच है पर इसी तक पर और सब भी सच हुआ ना

अब समझ में आया कि अनतिक और निर्नैतिक में क्या फर्क है ?

क्या ?

अपना किया अपराध निन तिक होता है और दूसरे का किया अनतिक

मैंने हमेशा उसे अनतिक माना

तो खुद को सजा दो न्याय व्यवस्था तुम्हें सजा नही दे रही इस सुविधा को अपने अस्तित्व की शत क्यो बनाये बैठ हो ?

हा यह तो है ऊपर से देखने से

फिर झूठ बोल रहे हो। ऊपर-नीचे से कुछ नही। तुमने शादी की। बच्चे पदा किये। उनमें रस लेते हो उत्तरदायित्व निभाने के नाटक के नाम पर। खुद को सजा दो और अब मैं पूछ रहा हू कि क्या यह सच नही है कि उसके बाद तुमने अनेक अपराध किये और उन सबके लिए माफी सिफ इसलिए चाहिए क्योकि वे सब एक बडे अपराध के हैंग-ओवर मे हुए। क्या यह सच नही है कि औरो को [illegible]

हो कि कोई और तुम्हें अपराधी न कहे। बता सकते हो तुमने

मार को क्या मारा ?

मैं मामूहिक मन्जी' का शिकार हो गया था।

फिर भी मानते हो तुम आदमी हो बौद्धिक हो लेखक हो और क्या यह सच नहीं है, तुम आज तक अपने इस अपराध की कहानी को छिपाए फिरते हो

हा सच है, मुझमे साहस नहीं हुआ

और क्या यह सच नहीं है कि तुम प्रतिभा के पास सिर्फ इसलिए जाते हो कि वहा बठकर, उसके सौन्दर्य और उसके गुणो की प्रशसा करके तुम एक नात्मिक तोष का अनुभव करते हो उसके अच्छे प्रभाव को तुम अपने जख्मो पर लेप की तरह इस्तेमाल करते हो यह जानते हुए भी कि वह तुमसे प्रेम नही करती जानते हो ना ?

जानता हू

फिर क्या जाते हो उसके पास ?

तुम्हारी बात सच है

यह स्वार्थ नही है ?

है।

फिर या तो उसके पास जाना छोड दो, या उसे बताओ कि तुम हत्यारे हो

प्रतिभा के पास जाना नहीं छोड सकता

तो उसे सब बता दो। और रमा को बता दो कि तुम प्रतिभा के पास जाना नही छोड सकते। उसके शरीर को उसके हाल पर छोड दो। कम से कम तुम्हे रमा को धोखा नही देना चाहिए

यह धोखा है ?

इससे बडा धोखा दुनिया मे कोई नही। सब तरफ से अपने लिए सुख लूटने की इच्छा मे से ही इस तरह का धोखा आदमी अपने निकटतम सम्बन्धियो को देता है इसको युक्तिसगत साबित करने के लिए बडी-बडी दार्शनिक बातें करता है जहा तुम नही हो वहा होने का भ्रम पैदा करना धोखा नही तो क्या है और इतना समर्थ आदमी कैसे हो सकता है कि एक ही वक्त मे सारी जगह रह सके तुम्हे रमा का साथ छोड देना

चाहिए

रमा को छोड दू ?

नही, रमा को स्वतन्त्र कर दो अपना अपराध कम करो और मुझमे क्षणा को स्वत त्र रूप से भागने की बात मत करना यह सुविधा का दर्शन है क्या तुम उससे स्वत त्र हो सकते हो जो तुम्हारे साथ हुआ है सुखद क्षणो के लोभ मे क्षण की स्वतन्त्रता और सुखद क्षणा के प्रभाव स खुद को बचाने के लिए काल के नैरन्तर्य म शरण लेने की विडम्बना से खुद को बचाओ अपराध तुमने किया है और तुम मानते हो कि तुम, सिर्फ तुम उसके लिए जिम्मेदार हो, तो इस स्थिति को, अपने मन को पूरी तरह धोने के लिए

तुम बहुत भावना रहित हो यह सब तुम आदमी के बारे म बोल रहे हो या

तुम आदमी हो ना मैं तुम्हारे बारे मे बोल रहा हू

रमा ने अचानक आकर सोच के प्रवाह को तोड दिया, "चाय और पियोगे ?"

रमा को पहचानने म सुधीर को देर लगी, पहचानते ही कहा, "पी लेंगे।"

"अरे तुमने सुना ?"

"क्या ?'

"हरद्वारी बरी हो गया।"

"तो मैं क्या करू ?'

' तुम क्या करोगे ? मैं कह रही थी कि कम लोग खून करके भी—"

अचानक सुधीर जोर से चीख उठा ' तुम चाहती हो रमा, उसकी जगह मैं फासी पर चढ़ जाऊ ?"

"अरे ! पागल हो गये हो तुम ? मैंने यह कब कहा ?"

"और क्या कहा तुमने ? बोलो ? और क्या मतलब है, तुम्हारी बात का ?"

रमा रुआसी हो उठी, बहुत धीरे से बोली "मैंने तो यो ही कहा था सुना था तुम्हें तो मेरा बोलना ही बुरा लगता है "

"तो क्या सजा है इसकी ?"

"सजा ? किसकी सजा ?"

"इसकी कि मुझे बोलना बुरा लगता है।"

"क्या हो गया तुम्हें आज ?"

"पागल हो गया हू। बोलो। बुलाओ चार आदमी। पकड कर करा दो पागलखाने म जमा "

रमा एकदम रो पडी। सुधीर के सामने से हट गई। रसोई म बठकर रोने लगी। चुपके-चुपके। स ना ने सोते-सोते सब सुना था। उठकर बठ गई। सुधीर की तरफ एक वितृष्णा भरी नजर से देखा। फिर उठकर रसोई म आ गई और मा के ठीक सामने बैठ गई। धीरे से कहा, "चुप रहो।"

सदीप और सुधीर भी पास आकर बैठ गये। सज्ञा ने दोनो को देखा कहा, "जाओ, बाहर खेलो जाकर।"

दोनो उठने लगे तो पूछा, 'चाय पी ली ?"

"हा,' दानो ने एक स्वर म कहा।

"तो जाओ।"

दोना चले गये तो रमा से बोली, "मा।'

रमा ने सज्ञा की तरफ देखा। फिर नजरें झुका ली। रमा की आखें लाल थी।

सना ने कहा, "मा, दुख मत करो। मैं हू।"

झटके से रमा की झुकी गदन और झुक गई। रूधे गले से बोली, "नही दुख नही कर रही। और होने को ता सभी कोई हैं।'

"सिफ होने के लिए होने से क्या होना है। अरे मा, मुझे याद ही नही रहा बताना। हम लोग तुम्हारे उस मालिक से मिले थे।

'किसस ?"

'अरे वही जिसके यहा तुमने नौकरी की थी। जिसने तुमस पूछा था कि घर काम करोगी क्या, चौके-बतन का, या आया का ।'

रमा की गदन और झुक गई। बाली, "तो तू वहा हो आई ?'

मैं नही मा, हम गये थे। मैं सुनील, भास्कर और मिलिन्द। बात

की तो घिघियाने लगा। माफी मागने लगा। बडा मजा आया! पर एक बात बताओ मा, बात सिर्फ इतनी ही थी कि

"तेरे लिए चाय मैं बनाऊ या खुद बनाएगी? मेरे हाथ की बनी चाय तो तुझे पसन्द आती नही।"

संज्ञा सब समझ गई। इसलिए बात खत्म करके हसती हुई बोली, "तुम्हें चाय बनानी आती ही नही तो मैं क्या करू। चाय मे दूध का स्वाद अलग पत्ती का अलग और चीनी-पानी का अलग अब तुम्ही बताओ, ऐसी चाय किसे अच्छी लग सकती है? बताओ?"

"अच्छा बाबा, बना ले खुद। मुझे तो तेरी समझ मे कुछ नही आता। बस।"

'नही, ऐसी बात तो नही है। रोना तो खूब आता है।"

"ठीक है, तू भी कह ले। क्या कसर रखनी है?"

संज्ञा ने अपनी चाय बनाना शुरू कर दी। बनाते-बनाते बूढी दादियो की तरह बोलती रही, "कहूगी नही। मैंने तो एक दिन नानी से कह दिया था कि नानी, इस हमारी मा को कुछ तो सिखाया होता। तो मालूम है मा, नानी क्या बोली थी?"

"क्या?"

"कहने लगी कि अरी बेटी, हमने कब सोचा था कि लडकी हमारी ऐसे घर म जाएगी कि बस हाथ मले और बतन ममले। भगवान की दया से आज भी घर म सब कुछ है। अपने मामा की बात छोड, इतना तो अभी भी मैं ही निकाल दू कि छोटा-मोटा काम अपना कर ले। यही कर ले, इसी शहर म। पर उसम, हमसे पैसा लेने मे, तेरे बाप की नाक नीची होती है। और उनकी बात क्या कहू, हमारी अपनी जाई को यह बिल्कुल पसन्द नही है अम्मा, नानी के पास आज भी बहुत पमा है?"

रमा को यह सब कभी सुख नही देता। उसने कहा 'होगा, हम क्या। दूसरों के पैसो पर नजर नही रखनी चाहिए। अपनी रूखी-सूखी दूसरे की घी चुपड़ी से स्वाद होती है।'

"वह दूसरी कहा से हो गई। तुम्हारी मा है।"

"मैंने कभी अपनी मा स कुछ नहीं मागा। तीज-त्यौहार पर या ब्याह-

टेहले पर। कभी नही। जो दे दिया हाथ पसार कर ले लिया। और मागा तो मैंने इनसे भी कभी कुछ नही। पूछ ले कभी कहा है कि चार इच कपडा ला दो या कभी कहा हो कि—"

सना दु ख और क्रोध से भर आई, बोली, "इसे क्या गुण मानती हो? बडा तीर मारा है कि नही मागा।"

रमा हस पडी स्नेह से बेटी की तरफ देखती हुई बोली, "तू कमाने लग, तुझसे माग लिया करूगी।"

"मुझ पर यह इनायत क्या?"

"क्योकि तू मुझसे वाकई प्रेम करती है।"

"तुम्हारी मा ने तुमसे प्रेम नही किया?"

"किया होगा। याद नही है।'

'क्या मतलब?'

"पुराने घरो मे सिर्फ लडको को प्रेम करने की प्रथा थी। वही हमारे घर मे था। लडकिया तो घर की केंचुल कहलाती थी। बढी और उतार कर फेंक दी। सन्ना, जो आदमी अपने से प्रेम न कर उसस कुछ भी मागते बहुत सकोच होता है

"हा मा, वह तो है।'

दोनो चुप हो गइ। सना चाय पी रही थी। रमा बैठी पैर की चुटकी घुमा रही थी। सुधीर बाहर के कमरे म अपनी कुर्सी म धसा बठा था चुपचाप। घर मे एक सन्नाटा व्याप्त था कि उसे फोडते हुए सदीप और समीर किवाड खोलकर घर में घुसे, आगे पीछे, चिल्लाते हुए 'पुलिस, पापा, पुलिस। मोटर भर कर

सना और रमा बाहर निकल आइ।

"क्या है समीर क्यो चीख रहे हो?"

'अम्मा, पुलिस आई है। हमारे यहा।"

"हमारे यहा! हमारे यहा क्यो आएगी?"

'नहीं अम्मा। हमारे यहा आई है। हमारा पता पूछ रहे थे, एक आदमी बना रहा था।

दोनो साथ-साथ बाल रहे थे और हाफ रहे थे।

इस बार सज्ञा और रमा ने सुधीर की तरफ देखा, सफेद सुधीर अपनी कुर्सी में जडवत बैठा था ।

रमा ने कहा, ' ये कह रहे है, हमारे यहा पुलिस आ रही है ।"

"आने दो । मैं हू तो, तुम्हे क्या चिन्ता है ? '

वैसे तो कालोनी में पुलिस अक्सर आती रहती है । एक बार आई थी कि एक क्वाटर में रहने वाला एक रिक्शेवाला स्मगलरो का स्वयसेवक पाया गया था और उसकी बीवी उसके समूह की सेविका । बीवी खूबसूरत थी । छरहरा बदन और छोटी सी गदन पर रखा ग्रामीण पर खूब आकपक चेहरा । रोज सुबह वह पति के रिक्शे को पानी से धोती और सूखे कपडे से रगड रगडकर साफ करती । पति चला जाता तो बहुत देर तक क्वाटर के बाहर खडी होकर वह अपने अध नग्न शरीर का प्रदशन करती । पडोसी उसकी आलोचना करते पर अक्सर रिक्शेवाले के जाते ही उससे गपशप करने अपने अपने क्वाटर के बाहर आ खडे होते । वह ज्यादातर ब्लाउज-पेटीकोट में ही रहती, और उसकी चाल, उसके बदन के सारे जोड मोड 'कैमरा आई' पर उभार देती । एक दिन किसी पडोसी स्त्री ने कह दिया था कि, "तू धोती क्यो नही पहनती, बाहर खडी होती है जब ?"

तो उसने जवाब दिया था, "नही पहननी हवा मेरे बदन में घुसती है, तकलीफ तुझे क्यो होती है ?"

पडोसिन ने हसकर कहा था, "अरी, तेरे बदन में कुछ भी घुसे तकलीफ होगी तो तुझे होगी । मैं तो इसलिए कह रही थी कि बुरा लगता है ।"

' क्या बुरा लगता है ?"

' ऐसे बाहर निकलना ।"

"तो तेरा वह चगडा, रिक्शेवाले के मोड पर मुडते ही किवाड खोल कर क्या अपनी मा के पैर छूने को निकलता है ।"

' क्या कहा ? कौन निकलता है ?'

"वह तेरा बाबू ।"

' वह तेरी तरफ को मुह करके थूके भी नही ।"

' हा थूकता तो वह तेरी ही तरफ मुह करके है । मेरी तरफ तो वह भरी नजर से देखता है । अच्छा लगता है, कभी-कभी तो "

एक दूसरी पड़ोसिन ने पहली को समझाया, "अरे, किसके मुंह लग रही है यह तो रंडी है रंडी तू भी "

रिक्शेवाली बिखर गई। भयानक वाक् युद्ध हुआ। बहुत मुश्किल से, बहुत लोगों के बीच-बचाव के प्रयास से दोपहर तक युद्ध शीत युद्ध की स्थिति तक पहुंचा। दशा की लड़ाई में पहले शीत युद्ध होना है फिर युद्ध और औरतों की लड़ाई में पहले युद्ध फिर शीत युद्ध। शाम को औरतों के पतियों में युद्ध के मनोरंजन से जनता वंचित रह गई क्योंकि पुलिस ने आकर एक दूसरा ही नाटक मंच पर बिखेर दिया। मनोरंजन उसमें भी बहुत था। पर थोड़ा भय भी था, क्योंकि पुलिस भी थी। इस पोशाक में पात्र अक्सर भय का संचार करते हैं और नाटक के अंत को गुह्य रखने में आस्था रखते हैं। यहां भी अंत के प्रति सबकी जिज्ञासा कुंठित ही रह गई। जो मंच पर हुआ वह सिर्फ इतना था कि पुलिस के आने के कुछ ही देर बाद एक कार और दो मोटर साइकिलें आकर रुकीं। कुछ भारी भर-कम इज्जतदार से लोगों ने क्वार्टर में बैठकर पुलिस से बातचीत की। फिर सब चले गये। सुबह सबने देखा रिक्शेवाला रिक्शा खुद धो रहा है पड़ोसियों को निराशा हुई पर तीन दिन बाद जब फिर रिक्शे के पास वही पेटीकोट लहराता दीखा तो सबने छोटी छोटी लम्बी सांसें फेंककर मन रोज के काम में लगा दिया

सबने तय किया, इसे रंडी कहना गलत है। नहीं कहना चाहिए

और पुलिस उस दिन भी आई थी जिस दिन दो रुपये के नोट और डाकखाने के टिकट छापने वाले लोग पकड़े गए थे। उनमें एक नेताजी भी थे, कालोनी के। रामलीला देवी के जागरण और जन सेवा में सबसे आगे रहते। एक बार तो रामलीला में पूरे पांच सौ रुपये दे दिये थे। संयोजक ने रुंधे गले से मंच पर से कहा था, लालाजी हमारी कालोनी की ही नहीं, हमारे देश की शोभा हैं। ऐसे ही लोगों के भरोसे से यह धरती खड़ी है। इनके चेहरे पर वही प्रभामंडल है जो कृष्ण के मुख पर था राम के मुख पर था, और और ' आगे तीसरा नाम याद न आने के कारण संचालक महोदय मंच पर खड़े खड़े ही रो पड़े थे

नाटक का अंत इस मामले में भी गुह्य ही रह गया था। लालाजी

लगने लिए मुस्कराते-घूमते पाये गये थे—और बहुत दिनों बाद पता चला था कि इस केस में मशीन मैन को पांच साल की सजा हो गई थी क्योंकि मशीन उनके घर पर लगी पाई गई थी। लालाजी ने तो पहले ही कालोनी में सम्पत्ति की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी।

और एक बार चोर की तलाश में एक बार रेल से कूदे डकैतों का पीछा करते हुए।

दिल्ली और उत्तर प्रदेश की सीमा पर बनी इस कालोनी का अपना एक महत्व है।

पर आज पुलिस एक बहुत ही अलग तरह के उद्देश्य से आई थी। सदीर और समीर का ख्याल गलत निकला। पुलिस उनके यहां नहीं, उनके ठीक बराबर के क्वार्टर में आई थी। उसे खाली कराने।

भटनागर ने मकान खाली कराने...

भटनागर के परिवार की एक कहानी है।

वह पहले एक अखबार के दफ्तर में काम करता था। टाइमकीपर था। साढ़े तीन सौ रुपये महीना तनख्वाह मिलती थी। पत्नी, एक चौदह-पन्द्रह साल की लड़की और दो छोटे लड़के। सबका रंग निहायत गोरा। लड़की का कद लम्बा बदन इकहरा। बाल तांबे के रंग के। नयन नक्श इरानवी और आंखें भटकी हुईं। दोनों लड़कों के बालों का रंग ठीक-ठीक सुनहरा। दोनों आगे पीछे भागते तो बहुत खूबसूरत लगते। बच्चों की मां पूरे स्वांग में मनोरंजन का साधन। छोटी से छोटी बात पर लड़ने मरने को तैयार। सिर के बायें आधे के बाल सफेद, दायें आधे पे काले। नयन नक्श असाधारण तौर पर तीखे। आंखें बहुत बड़ी-बड़ी पर रूखी। चेहरा भरा भरा पर खुरदरा। चलने फिरने के ढंग में एक अस्वाभाविक उतावलापन। लड़ाई के वक्त का वाक्य विन्यास अनोखा। जैसे—"घड़ाली, बात बनाई, ले के बात बनाई बाल झुलस दूं। आग लगा दूं मेरे बच्चों को लावारिस समझे है, लड़की को नाम रखे, हा ते के बात बनाई थी जाई नहीं है कम्बख्त मैं, मैं सब जानूं, सबके लच्छन हा ले के बात बनाई किसी के खान नहीं जाने हैं ये हरामजादा ऐसा न होना तो ले के बात बनाई।"

बच्चों के पीटने का उसका ढंग भयानक। कपड़ों को भी

काई इतनी निममता से कूटता हो। बच्चो के चिचियाने की आवाज आती तो सुधीर खाने की थाली छोडकर हट जाता। बच्चे कमर मे पिटत तो पूरे ब्लाक की रूह काप उठती। पर बाहर पिटते तो बच्चे चारो तरफ खडे होकर तालिया पीट-पीट कर हसत। छोटे छोटे दो बन्दरनुमा बच्चे जब जान बचाने के लिए इधर उधर भागते तो बन्दरिया के नाच का मज़ा देते। सब निस्सकोच मज़ा लेते। बीच बचाव करने का साहस तो भला था ही किसमे। कौन बला मोल ले सिर। पर एक दिन के हगामे ने पूरे पडास की शान्ति का भग कर दिया।

भटनागरनी को फूल पौधा का शौक। हर क्वाटर के बाहर पडी दस गुणा दस की पथरीली ज़मीन को लान बनाने की उसने भरपूर कोशिश की। भटनागर को भेजकर कहीं कहीं से पौधे मगवाए। कुछ बाहर घूमते पौधो वाले से खरीद लिए उधार। छोटे बच्चे को वह दिन भर एक ही काम मे लगाए रहती। इट इकट्ठी करके लाओ। क्यारियो की सुरक्षा के लिए मजबूत दीवार खडी करनी होगी। घर म खाना बने या न बने नया पौधा दीखेगा तो घर मे आएगा। उधार बढता गया। नौकरी के बावजूद घर की हालत निहायत खस्ता। कि पूरे ब्लाक को एक दिन सूचना मिली कि भटनागर की नौकरी छूट गई। पैसो की जरूरत के दबाव मे अपनी टाइम कीपरी का नाजायज इस्तेमाल किया और नौकरी से छुट्टी। भटनागरनी को पता चला। एकदम बिखर गई। भटनागर की आदत थी शाम के वक्त नीचे पट और ऊपर कुछ नहीं' पहनकर वह अपने मिनी बगीचे म खाट पर बैठकर बीडी पीता था। उस दिन भी पी रहा था कि हाथ म बास की लबी सी खपच्ची लेकर भटनागरनी आई और उसी तेवर से जैसे वह बच्चा को पीटती थी भटनागर को पीटना शुरू कर दिया। पहले तो भटनागर चुप चाप बैठा पिटता रहा। चारो तरफ खडे लोग देखते रहे और हसते रहे। पीठ लहूलुहान हो गई फिर अचानक फुदककर उठा और तेजी से कमरे म घुस गया। दशको की सास रुक गई। उन्हे लगा कि कहानी म जोर आया। भटनागर को गुस्सा आ गया है। यह बात सच है पडोस के लोगो को भटनागर म गुस्सा देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। किसी पडोसिन ने कहा भी, ' मद की बात है आखिर कब तक गुस्सा नहीं आएगा, आज साल

उधेड देगा रखकर ऐसा तो कही देखा न सुना।'

पर दशको ने एक शाम म सिसकरी भरी जब उन्होन पाया कि भटनागर अन्दर डण्डा लेने नही सिर्फ कमीज़ पहनने गया था। और जब वह बिल्कुल ऐसे जैसे शाम की सैर को निकला हो रेल की पटरी की तरफ जा रहा है। बच्चो न उसके पीछे भागने की कोशिश की है पर मा ने चीख कर उन्ह रोक लिया है और उसी आवाज मे पति को बता दिया ह कि 'शरम-दार है तो फिर घर म वापिस मत आइयो।'

पास पडोस की शान्ति गरीब-परिवार से भग नही होती। गरीबी से पैदा हुई परिवार की विकृतियो से होती है। उस दिन वाकई पूरे पडोस पर सकता छा गया। कही भटनागर

और जो जाग रहे थे उन्हाने देखा कि रात के ग्यारह बजे भटनागर उसी चाल से वापिस घर आ रहा है। मुह मे उसके बीडी का पटबीजना है। सास पल खोलता है ता पटबीजना चमक उठता है

भटनागरनी अपने बगीचे म चारपाई पर जागती लेटी है। पति को देखकर उसने मुह घुमा लिया है। पर पास लेटी लडकी उठकर बैठ गई है। पिता के साथ उठकर कमरे म आई है। मदद करके उसकी कमीज़ उतरवाई है खून के धब्बो मे रगी कमीज। पीठ देखी है। खिडकी की मुडेर पर से एक डिबिया उठाई है और कमर पर देख देखकर लगाने लगी है। धीरे से पूछा है 'बहुत लगी है?"

"नही। तरी मा ने खाना खा लिया?"

"हा नौकरी कैसे छूट गई?"

'और मिल जाएगी।"

लडकी चुप हो रही है।

"यहा भी लगा जरा सा। यह डिबिया कहा से आई? घर म थी?"

'मैं लाई थी।"

"कहा स?"

'कही से भी। तुम्ह क्या। खाना दू?"

"तूने खा लिया?"

'हा।"

"नही खाया होगा तून, मैं जानता हू।"

"तुम्ह खाना है या जाऊ बाहर ?"

"मैं न लूगा तू जा।"

रात बीत गई। सुबह आई। भटनागर पत्नी के जागने से पहले ही घर से भाग गया। लडकी किसी पडासी से कुछ आटा वाटा मागकर लाई। नौ बजे भटनागरनी भी निकल गई। नौकरी की तलाश मे। बच्चो को कह गई घर का ख्याल रखना और कही मत जाना।

पन्द्रह दिन की दौड धूप के बाद भटनागरनी को सत्तर रुपये महीने और भटनागर को सौ रुपये महीने की नौकरी मिल गई। सुबह आठ बजे दोना निकल जाते और शाम को सात बजे वापिस घुसते। दोनो बच्चे दिन भर घर के बाहर उदास बैठे रहते। कभी-कभी इधर उधर खेलते तो कोई न कोई पडोसी किसी न किसी बात पर धमका देता और वे फिर उदास होकर खाट पर टागें नीचे लटका कर स्थापित हो जाते। एक दिन भूखे थे किसी पडोसिन ने खाना दे दिया। शाम को भटनागरनी के आने पर स्नेह से कहा "अरी, कम से कम बच्चा को तो रोटी दे के जाया कर। काम तो सभी करते हैं अपनी अपनी तरह से बच्चो को बिलबिलाता कोई नही छोडता इस तरह। हम से तो देखा नही जाता, पडोस क बच्चे। आज मैंने खिलाया दोनो को सामने बिठलाकर। ऐसे खाया दोनो ने जैसे

भटनागरनजी ने आग लग गई। अचानक उसके मुह से निकला, "क्यो अनीता तो थी यहा।"

पडोसिन ने आश्चय के भाव को चेहरे पर क्रीम की तरह पोतकर कहा, अनीता ? वह तो दिन भर यहा नही दिखती। हमने तो समझा, उसका भी कही काम लग गया है।"

कहकर पडोसिन धोती के पल्ले से हमी छिपाती अन्दर घर मे घुस गई और किवाड अन्दर स बन्द कर लिया।

और पहली दफा लोगा न देखा कि भटनागरनी निढाल होकर चार-पाई पर बैठ गई है। पर पाच मिनट ही बठी रही वह। उठकर खडी हुई दोना छोटे बच्चे कापते हुए एक कोन म खडे थे। पहले एक-एक चपत — दोना को पडा। फिर वह कमरे म गई। किवाड अन्दर से बन्द किये।

अनीता खाना बना रही थी। बाहर की बातचीत वह सुन रही थी। अपना भविष्य जानती थी। मा को आते देखा तो अगीठी के पास से हट गई। आग का डर। मा ने उसे देखा ता शेरनी हो उठी। चुटिया पकडकर लडकी को जमीन पर पटका और हाथो से लातो से धुआधार बात करती हुई बोली, "मैं भी कहू, रोज कौन दे-दे तुझे उधार, अब पता चला कि चाम की कुल्हडी म से निकाल निकाल कर खिला रही है चडाली, नाम डुबा दिया खानदान का "

कार्यक्रम लम्बा चलता पर भटनागर आ गया। भटनागर का तो खैर कुछ नही था पर उसके साथ कोई और भी था। बात चुक गई। पर अगले दिन से भटनागरनी के दिमाग की तुर्शी और बढ गई। तीनो बच्चों को वह ताले म बन्द करके जाती। कोई उसके फूल पौधो या ईंटा को छू भी देता तो उससे लडती। रात के आठ-नौ बजे अक्सर किसी से लडती पाई जाती। ब्लाक के लोग खुश, राज का तमाशा राज की रौनक। बिना टिकट का। लड-झगडकर वह सर्दी हो या गर्मी, नहाती। लडते-लडते कोई उसके बगले म घुस आता तो वहा पानी छिडकती। घर के लोगो के लिए तो सख्त कानून था ही। 'लैट्रिन मे कोई पेशाब करने भी घुसगा तो उसे नहाना पडेगा।' रोज काम पर से आने के बाद पहले नहाती फिर एक घडे पानी छिडकती घूमती। लोग हसत तो उन्हें गालिया देती।

पर इतनी सफाई पसन्द औरत ने अपनी जिदगी की लडाई म एक नया आयाम जोड दिया। रात भर लडकी और दोनों लडको को साथ लेकर वह चारो तरफ से गोबर बीनती, और सुबह चार बजे उपले पाथती। तभी सबको नहलाती और सुला देती। खुद न सोती। मौत तो उस कभी किसी ने देखा ही नही था पतले-दुबले बदन की इस औरत मे गजब का जोर था। रात दिन की यह महनत भी लडने म उसके उत्साह को कभी कम नहा कर पाई। पर घर धीरे धीर बगार मोत रहा। सुबह-शाम पैस मागन वालो की भीड लगी रहती। घर मे हर समय अकाल की स्थिति बनी रहती। बगीचा धीरे धीरे प्लाट हो गया। अनीता धीरे धीरे बहुत से लोगो की प्यारी हो गई। क्वाटर का मुकद्मा चला। एक महीने

के अन्दर अन्दर मकान खाली करो का हुक्म जारी हो गया, कचहरी से। और आज लेबरआफिस के कारिंदे आ गये है कचहरी के। हुक्म की तामील कराने। पुलिस साथ है कि कही कोई गडबड न हो।

इन क्वाटरो की भी एक कहानी है। यह जमीन डी० डी० ए० की है क्वाटर सी० पी० डब्ल्यू० डी० ने बनाए हैं मिल्कियत लेबर मिनिस्ट्री की है और मिनिस्ट्री की तरफ से लेबर कमिश्नर फैक्ट्री मालिको की जमानत पर मजदूरो को किराये पर देता है। किराया फैक्टी मालिक मजदूरो की तनख्वाह मे से काटकर लेबर कमिश्नर को देता है। अगर किसी मजदूर की नौकरी छट जाये तो छै महीने के अन्दर अन्दर क्वाटर खाली करना होता है, न करने पर उसको किराये का लगभग तीन गुना भुगतान करना पडता है। इन छै महीनो का किराया मजदूर को चुकता देते वक्त मालिक काट लेता है और लेबर कमिश्नर को भेज देता है।

फैक्ट्री मालिक का भी इस सारे मकडी जाल मे थोडा सा फायदा होता है। एक तो जरा मजदूर दबकर रहते हैं क्योकि उन्हे मालूम होता है कि नौकरी गई तो क्वाटर भी जाएगा और यह तय है कि किसी कम आमदनी वाले आदमी के लिए नौकरी छूटने से भी अधिक खतरनाक स्थिति मकान छूटने की होती है। खास तौर से बडे शहर मे। बच्चो के स्कूल, चारो तरफ फैला लेन-देन, मकानो के निरन्तर बढते किराये, फिर व्यवस्थित घर। और भटनागर के घर मे तो

पुलिस पीछे और लेबर आफिस के लोग आगे आगे। पीछे पीछे बच्चो की भीड। एक मनोरंजक तमाशे की उम्मीद। पडोसी दफ्तर जाते-जाते रुक गये। सब को आशा थी कि पुलिस वाले जोर मारे भटनागरनी से क्वाटर खाली नही करा सकती। सब की जुबान पर—देखें, क्या होता है?

हुआ कुछ खास नही। भटनागर और भटनागरनी दोनो अपने-अपने काम पर चले गये थे। अनीता भागकर बुलाकर लाई। दोनो ने एक दूसरे की तरफ देखा। फिर पुलिस की तरफ और फिर चुपचाप सामान निकालकर रखना शुरू कर दिया। पडोसी बहुत निराश हुए। कोई रौनक

नही हुई। यह क्या बात हुई ? दफ्तर से रुके लोग चले गये। क्या है ही क्या देखने के लिए। एक रेढा आएगा और सामान उठा ले जाएगा। दोनो मियां बीवी और तीनों बच्चे पीछे पीछे होंगे पैदल।

चला एक बला टली।

पर जिनकी जिन्दगियों मे तमाशा होता है, वह लोगों को तमाशे का रस देकर ही रहते हैं। सामान बाहर निकल गया। सामान बाहर निकला रखा रहा। क्वार्टर पर सरकारी ताला लग गया। दोनो पति पत्नी कुछ देर खड़े सोचते रहे। दोना छोटे बच्चो को ढूह बने सामान पर बिठा दिया गया। अनीता सामान के आगे बगीचे की तरफ पैर करके बैठ गई। पति-पत्नी नये मकान की तलाश म निकल गये।

और वह सामान चार दिन तक उसी स्थिति म पड़ा रहा। बच्चे वहीं बैठे रहे अनीता यहा वहा से लाकर कुछ उन्हें खिलाती रही, पति पत्नी मकान ढूढते रहे और चारो तरफ के लोग ठहाके लगा लगाकर हसते रहे

नहीं गया उसे लगता रहा कि कुछ होगा और उसके घर का सामान भी साथ ही साथ उठकर चला जाएगा। वह जानता था कि जब तक केस कोर्ट में है, ऐसा नहीं हो सकता, पर एक सैकिण्ड के लिए भी यह भय वह अपने अन्दर से नहीं निकाल सका। पाचवें दिन घर से बाहर निकला तो बाहर की दुनिया को पहचानना बहुत मुश्किल पड़ा। बस्ती, पटरिया, पान की दुकान गली, गली, फिर बड़ी सड़क। उसे लगा वह किसी एक दम अनजान दुनिया में निकलकर बाहर आया है। सड़क पर आते ही वह सवाल उसके सामने लपककर खड़ा हो गया। कहा जाए? और क्या जाये? एक ही सिक्के के दोनो तरफ ये दोनो सवाल लिखे हैं और वह सिक्का सड़क पर आते ही उसके अन्दर उछलने लगता है। चित पट के खेल की तरह। कभी एक सवाल ऊपर होता है तो कभी दूसरा। पहले सिक्के की इस चित पट का सुधीर बड़ा मजा लिया करता था पर आज सिक्के के धार दार किनारे उसके भीतर के मास को कही कुतर रहे हैं और उसे सास लेना दूभर हो रहा है। अचानक उसके सिर में एक सवाल बड़ी तेजी से घूमा है। उसके ठीक सामने, सिर से निकलकर धरती पर गिरा है और दिवाली के उत्सव में छूटने वाली चकरी की तरह घूमते घूमते ही बड़ा होता गया है। सुधीर ने ध्यान से सवाल का मजमून पढा है—यह तुम खुद से इतने अपरिचित क्यो रहते हो? सवाल उसने कई बार पढा है। मतलब समझने की कोशिश की है। कौन किससे अपरिचित रहता है? सुधीर सुधीर से? या नम्बर दो नम्बर तीन से और

क्या कर डाला सुधीर तुमने अपने साथ? तुमने कुछ ऐसा किया जो शायद तुम्हारे स्वभाव के विपरीत था। कुछ दिन तुम्हारी समझ में नहीं आया कि कौन तुम्हारे अन्दर बड़ा हर समय सियार की तरह रोया करता है। उस आवाज को अनसुना करने के लिए तुमने कुछ ऐसे कार नामे करने शुरू कर दिये जो तुम्हारे स्वभाव के और भी विरुद्ध थे। सुधीर नम्बर एक था। गला घोटने की प्रक्रिया में पैदा हुए दूसरे सुधीरो की संख्या बढती जा रही है। असली सुधीर और प्रतिभा का सुधीर एक तरफ और अन्य अनेक सुधीर लड़ाई जारी है देखा, प्रतिभा जीतती है कि दुनिया

अपने जिन्दा रहते प्रतिभा को हारने दोगे ?

नही, प्रतिभा जीतेगी

पर, यह शरीर, इसको जिन्दा रखने के साधन और वह शरीर को झुलसा देने वाली लपटें

कुछ भी हो, जैसे भी हो, प्रतिभा को जीतना ही चाहिए नही तो आदमी आदमी से सहानुभूति रखना छोड देगा

हा, प्रतिभा को जीतना चाहिए

सुधीर सोचता खडा था कि बस आ गई। सब भाग दौडकर चढ गये। बस खिसकने लगी तो अनमने मन से सुधीर भी चढ गया

अजीब मौसम है आज। पूरे आकाश मे धुध जसे बादल घिरे हैं। कैसे होता है कि मौसम का धुध दिमाग की पोरो म फस जाता है और पूरे शरीर को, पूरी चेतना को कुतरने लगता है। सुधीर इस समय बहुत कोशिश कर रहा है कि यह सोचे कि उसकी इस स्थिति का कारण क्या है। वह अपने सिर को कुरेद रहा है। धागे का एक सिरा मिल जाय जिसके सहारे वह कारण तक पहुच सके। पर धागे ही धागे हैं, सिरा कोई नही प्रतिभा को देखते ही धागो पर लिपटी मैल सा साफ हो जाती है पर सिरा उसे तब भी नही मिलता।

एक भाई भी था सुधीर का। था नहीं है। दूसरे शहर मे रहता है।

हा, था नही, है।

बस भागी जा रही है।

बाहर की धुध और गहरा गई है।

रमा ने हसकर कहा था, "तुम्हारी वजह से नहीं। तुम तो उनके घर मे कभी रहे ही नहीं। पर मैं सोचती, तुम नही हो आते तो मुन्ना का क्या होगा ? मैं उसे पाल-पोसकर बडी कर सकूगी। कोई भी हुनर मेरे पास था नही। मजदूरी करने या खुद को बचने का संस्कार नहीं था और सबसे अधिक यह कि पता नही तुम कहा होते। तुम सुनकर थोडा-सा भूल सकते हो कि अपने शरीर का जो उच्छिष्ट मुझे देते रहे हो उस पर ... का बोझ है और जब तक जिन्दा हू रहेगा "

"तुम मुझसे बहुत प्रेम करती हो रमा ?

रमा हंस पड़ी थी, कहा था, "बिल्कुल नहीं करती हुजूर !"

"तो ? '

"तो क्या । नहीं करती ।" फिर कुछ देर रुककर कहा था, "तुम्हें एक बात बताऊं । हम जो रात को करते हैं, लुक छिपकर, उसका विरह प्रेम के विरह से ज्यादा धारवाला होता है । कभी-कभी उसको हम प्रेम का विरह मान लेते हैं । पर "

वह बहुत देर तक हंसती रही थी । फिर चुप होकर बहुत गम्भीर होकर कहा था, "यदि मैं तुमसे प्रेम करती होती तो तुम्हें ठीक से जानने के बाद एक मिनट भी तुम्हारे पास नहीं रहती ।"

"क्या मतलब ?"

' नहीं समझे ?'

"नहीं ।"

' नहीं ही समझे हो खुद, तो मेरे समझाने से क्या समझोगे ?'

"फिर भी ' '

' देखो लेखक महोदय, बात यो है शायद कि प्रेम करने या पाने के बाद आदमी शेर हो जाता है । अपने जगल का राजा, और तुमने सुना ही होगा कि शेर भूखा मर जाता है, घास नहीं छूता तुम नहीं मानते कि प्रेम के अनुभव के बाद बाकी की तमाम दुनिया घास फूस हो जाती है "

"तुम्हारे खयाल से प्रेम इतना सकीण होता है "

"हा, सकीण तो होता ही है, प्रेम गली अति सकरी, याम दो न समाए "

"तो "

रमा के चेहरे पर उद्वेग उभर रहा था, उसने जल्दी से बात काट कर कहा था क्या, तुम नहीं जानते मुझे छूते हुये तुम्हारे हाथ ठंड क्यों हो जाते हैं ? तुम, काम पूरा करने के लिए जबदस्ती खुद मे गर्मी नहीं भरते ? '

' पर "

' और यही चीज़ मुझे तुमसे बांधे हुए है तुम कहीं ईमानदार हो, तुमसे ईमानदारी की उम्मीद की जा सकती है ।"

बहुत पुरानी बात है। सज्ञा तब मुश्किल से पाच की रही होगी। उन दिनो रमा के तेवर कुछ और ही होते। बात को सीधे और चुभते ढग से कहना उसे आता था। अब तो वह बुझ चुकी है। सज्ञा जब साफ-सुथरी बातें करती है तो बस मुग्ध भाव से उसकी तरफ देखती रहती है। एक दिन बेहद आवेश मे उसने कहा था—लडकी एकदम मुझ पर गई है। उन दिनो की रमा की मुस्कराहट कितनी मनोहारी होती थी। अब तो

उन्ही दिनो एक दिन सुधीर ने कहा था, 'तुम आज भी किसी से सम्बन्ध बनाओ तो मुझे कोई एतराज नही है।

रमा हस दी थी, कहा था, "अर्जी सीधी लिखो न, लेखक महोदय, हेरा फेरी क्यो करते हो ?"

"हेरा फेरी क्या है इसमे ?"

"वह क्या कहते हैं, दिवाली को—'आपको दिवाली की बधाई' और कदम से कदम मिलाकर वाक्य आता है—'आपको भी'। यही बात है ना।

सुधीर झुझला उठा था। बोला था, 'तुम तो हर बात का गलत मानी लेती हो।"

रमा जोर मे हस पडी थी, हसते हसते कहा था, "चोरी पकडी गई, लेखक महोदय की। मुझे इजाजत दे रहे हैं। भई, व्यक्ति की स्वतन्त्रता मे विश्वास करते हो तो उगली खडी करके रास्ता क्यो दिखा रहे हो। सुख की होड म हो तो लूटो। मेरी मर्जी होगी ।"

"सुख की नही प्रेम की बात कर रहा हू।"

'यह प्रेम क्या चीज होती है ? मुझे मालूम है, औरतें इस शब्द से चिढती हैं।"

"तुम्हारा दिमाग खराब है।"

'अरे नही जी, दिमाग खराब होने की कोई बात ही नही है। जो पौधा बिना बीज के पैदा हो उसम हम औरतो की कोई रुचि नही होती।'

'तुम क्या सारी औरतो की नुमाइन्दा हो।"

"मैं उन्हे जानती हू ठीक कह रही हू। इसीलिए औरतें ज्यादा शक्की होती हैं, अपनी बिरादरी को जानती हैं।'

क्यों आ रही हैं ये सब बातें याद उसे ? रमा का पुराना स्व सना का वह बाल रूप । उसके वह छोटे छोटे खेल । अदना, पर कित भरे । वह खाना खाने बैठता, तो उसके सामने पर जरा पीछे हटक जाती । हर आधा मिनट के बाद थाली अपनी तरफ घसीट लेती और दोनों मुटिठया टिकाकर झुक जाती। सुधीर के लिए थाली ह मुश्किल हो जाता। थाली छुडा ली जाती तो रोती। तब कोई डेढ की थी फिर छै साल की हुई आखें खाल खोलकर दुनिया लगी बातें सुनने लगी माचिस जलाती और तिल्ली को यहा फेंकती मजा लेती और एक दिन एक भयानक खेल खेल डाला ि से एक कागज जलाया और जला हुआ कागज सन्यिा के कपडा म दिया कपडे जलने लगे तो तालिया पीट पीटकर हसने लगी रमा बाहर थी घर म घुआ

सुधीर को याद है वे सारी सर्दिया उन तीना ने एक ही पलग पर ही रजाई मे बिताई थी।

इस समय वह कहा जा रहा है ?

राममनोहर की तरफ चलते हैं

वहा जाकर क्या होगा ?

कुछ काम की तलाश करें। ऐसे कितने दिन चलेगा।

नही। मुझे नही करना। क्या होता है काम करके ? आर्थिक समः तो वही की वही खडी रहती है। राममनोहर का कितना काम किया ? तब भी हर समय भिखारी ही बने रहते हैं। कभी ऐसा नही हुआ कि

तो कहा जायें ?

यह बस तो थाडी देर म उतार देगी

प्रतिभा के यहां चलें ?

पर

फोन पर पता चला प्रतिभा घर म नहीं है अच्छा ही हुआ इ समय उसके लिए कोई भाव नहा है मन म मिलनी है ता अजीबन लगता है दोपहर हो गई है चलें कुछ दर पाक म चलकर लेटें शादी के पहले के कितने ही दिन पार्कों म बीता करते थे कितनी ह

रातें भी अलग-अलग शहरो मे वह कौन से शहर की बात है सर्दियो की रात एक पाक म सोया हुआ था वह सर्दी मे सिकुडा हुआ एक निहायत पतला सा कबल था उसके पास उसी मे उसने अपने शरीर की गठरी बाध रखी थी सर्दी फिर भी बहुत लग रही थी एक सिपाही आया था उसे जगाया था उसने, हाथ के डडे से कुरेदकर जाग तो वह रहा ही था उठकर बैठ गया सिपाही ने पूछा यहा कोई जगह है सोने की, तुझे पता नही कि यहा सोना मना है। वह चुप रहा था सिपाही ने फिर कहा था—चल भाग यहा से वह उठकर खडा हो गया था चुपचाप पर पता नही सिपाही को क्या सूझी थी कि उसने सुधीर के बदन पर लिपटा कम्बल उतार लिया था और यह कहता हुआ वहा से चला गया था कि—न कम्बल होगा, न यहा सोयेगा, साला, कानून तोडता है

आज भी याद करके हसी आ गई आज पाक म सोया जा सकता है न कम्बल है, न रात है, न उतनी सर्दी है बदन पर कम्बल न हो तो कानून तोडने की सजा भी कोई क्या देगा

पाक म घुसकर उसने एक अच्छी सी जगह टटोली और लेट गया लेटते ही उसे नीद आ गई सोते सोते उसने खुद से कहा, कितनी बढिया नीद आती है पाक मे

सुधीर की आंख खुली तो शाम होने वाली थी। पाक मे गहमागहमी बढ गई थी। चारो तरफ बच्चे खेल रहे थे। खेलते बच्चा के बीच सोया एक आदमी जरूर मनहूस लग रहा होगा। उसने सोचा। उनके खेल मे बाधा पड रही होगी, उसके होने से। वह उठा और पाक के गेट पर जाकर खडा हो गया

उसका दिमाग इस समय बिलकुल खाली है
यह कौन-सी जगह है, जहां वह खडा है
कौन सा शहर
सोने से पहले का कुछ उसे याद नही है
इस जगह वह पहले कभी नही आया

अब कहा जाना है
कहा जाये ?
जाना तो कही न कही पडेगा ही

कुछ दूर चलकर सुधीर एक बस स्टाप पर खडा हो गया है एक बस आई बिना नम्बर देखे वह उस पर चढ गया है

बस मे भीड बहुत है सुधीर ढढ रहा है कोना सबसे पीछे पर उस कोने मे कोई खडा है उसकी तरफ देख रहा है सुधीर ने भी देखा है कैसी नजर है उसे धुरधुरी-सी आई है वह आगे खिसक जाना चाहता है पर भीड वह फ्गा खडा है

नजरें उस पर टिकी हैं वह आगे खिसकना चाहता है पर भीड के शिकजे मे हिलने डुलने की कोई गुजाइश नही है वह खिडकी से बाहर देख रहा है कुछ ही दूर बस के साथ साथ एक रेल भाग रही है कभी रेल आगे तो कभी बस सुधीर सोच रहा है बस से कूद पडे रेल पकड ले

बस ने उसे उगल दिया है और रेल गायब हो गई

वह एक तरफ चल दिया है पदल सामने दिखत जगल की तरफ शाम का वक्त है जगल मे घुसते घुसते रात हा जायगी

जगल म घुसते ही वह जगल का हिस्सा हो जायगा अलग से आदमी नही रहेगा

सुधीर चल रहा है सुधीर भाग रहा है सब पीछे छूटा जा रहा है नही, सब नही जो उसकी चेतना के अश नही थे, पीछे छूट गये हैं

पर उसको हमेशा सजग रखने वाला उसे लगा घुन उसे लग रहा है, उसी की घटती-बढती रफ्तार से कोई उसके पीछे भाग रहा है वह दिखता नही है पर है जरूर

कितना अघारी अकेलापन है

सब छूट गये हैं

क्या यह सत्य है कि प्रतिभा अपने नाखूनों की चिमटी म इस बन सजूरे को पकडकर उसमें स बाहर फेंक देना चाहती थी होगा सब

रुककर सोचने की सुविधा नही है वह पास आता जा रहा है तेज भागना है जगल की तरफ

हर शहर एक दायरा होता है भागते भागते सुधीर दायरे से बाहर निकल आया है और तभी किसी ने जोर से उसे आवाज दी है

वह ठिठक गया है अब बचने की कोशिश बेकार है उसे डर लग रहा है वह सुन है पर उसे पता है वह दायरे से बाहर आ गया है और अब किसी तक उसकी आवाज नही पहुच पाएगी आवाज वह देगा भी क्यो मदद उसे नही चाहिए

तभी पीछे के आदमी ने उसकी तरफ आकर दोस्ती का हाथ बढा दिया है

उसने पाया है, उसका हाथ उठ रहा है मिलाने के लिए

ओह ! कैसा बर्फीला हाथ है जैसे किसी मुद्दत से मरे पडे आदमी का हाथ हो

अनुपस्थिति

1

सुधीर को घर से गायब हुए दो महीने हो गये। कुछ पता नही वह कहा है। है भी या नही। जाने के बाद घर उसका कोई पत्र नही आया। शुरू शुरू मे एक पत्र प्रतिभा के नाम आया था, लिखा था—

प्रतिभा

घर छोड आया हू कई दिन हो गये सोचा, जिस आदमी का घर मे होना, न होने से ज्यादा खतरनाक हो, उसे बहुत बुरे फल की इतजार नही करनी चाहिए वैसे छोडते वक्त सब दिमाग मे नही था मुझे लगा, कोई उगली पकडकर यहा तक छोड गया है दिमाग की उस अतिरिक्त अवस्था म भी तुमसे मिलने की बात मन मे आयी थी, इसलिए तुम्हें ही पत्र लिख रहा हू शायद फिर कभी न लिख सकू चलने से पहले मैंने तुम्हें फोन किया था, तुम घर मे नही थी

जितने दिन मैं तुम से मिलता रहा एक बात कहना चाहता रहा। तुम्ही से कह सकता हू। दूर आकर कह रहा हू, क्योकि कहने के बाद तुम्हारे सामने बैठना सम्भव नही था। अब भी मेरा विश्वास है कि पढकर तुम वितृष्णा से भर उठोगी। तुम्ही क्या, कोई भी उस बात को जानकर मुझसे घृणा कर सकता है। बल्कि उसे करनी चाहिए। यहा हू इसलिए सुविधा मे हू, तुम घृणा करोगी या नही पता नही चलेगा। कोई घृणा करे इससे बहुत डर लगता है। और कोई तो खैर छोडो, पर तुम

मेरे सिर पर एक हत्या का वजन है बीसियो साल पहले की बात है हुआ यो कि पर वह सब नही, मैं तुम्हारी या किसी की नही चाहता सजा चाहता था, पर साहस नही हुआ

अब तुम्हे छूट है, घृणा करो पर कुछ बातें और कहना चाहता हू तब से आज तक मैंने कभी किसी को 'प्लेजर इस्टिक्ट' का शिकार नही बनाया, किसी को कभी ब्लेकमेल नही किया, मानवीय स्तर पर कभी किसी को अपने से छोटा नही समझा, किसी की उपेक्षा नही की इसीलिए सबसे लड झगड लेता हू, झगडता रहा हू, और अगर मुझे अपने बारे म गलतफहमी नही है तो स्नेह-प्यार के मामले मे किसी से झूठ नही बोला। न ही सच बोलन मे सकोच किया। यह सब कहकर मैं अपने बोझ से मुक्त होना नही चाहता पर अगर वह सच मैं बाल सकता हू तो क्या यह सच बोलने का मुझे अधिकार नही है ? वैस किसी भी सच झूठ का मेरे लिए अब कोई मूल्य नही है। जिस चीज का मेर लिए हमेशा बहुत मूल्य रहा वह मुझे कभी नही मिली या शायद मैं उसके योग्य नही था। शायद क्या नही ही था। तुमसे मुझे आशा बधी हुई थी कि तुम मुझे उस योग्य बना दोगी। पर कुछ ही दिना बाद मुझे लगने लगा था कि तुम्हारे लिए मैं सिफ एक सलेट हू जिस पर वडे मे बडा सवाल निकालकर मिटाते किसी को कोई तक्लीफ नही होती। अपनी आदत से लाचार होकर तुमने मुझे वहुत कुछ दिया और आज मेरे मन पर उसका वजन है। पहले जिसमे खुशी होती थी, पिछले दिनो उसी चीज से अन्दर का सकोच बढन लगा। मैं तुम्हे दोष नही दे रहा। तुम मुझे, जाहिर है, वही मानोगी, जो मानना चाहोगी मैं तो अपने अन्दर फूलते निरथकता बोध की बात कर रहा था। हा, सच है इसे तुम मेरा अह कह सकती हो, कि किसी के किसी भी स्वभाव के 'प्लेजर इस्टिक्ट' का शिकार होते भी मुझे उतनी ही तक्लीफ होती है जितना किसी को शिकार बनाते। देखो प्रतिभा, मेरी किसी बात का बुरा न मानना, मैं गहरे आत्मिक क्लेश म से बोल रहा हू। उन दो अपराधा के गिल्ट से भी अधिक त्रास आज मुझे अपने हाने का गिल्ट' है। और वह गिल्ट तुम्हारी देन है। तुम, मुझे पूरी आशा है, समझ जाओगी कि यह आरोप मैं क्या लगा रहा हू।

तुम्हे मालूम है प्रतिभा आवाज कभी नही मरती, सवव्यापी होती है। तुम्हारी आवाज से बचने के लिए वह शहर छोड आया। वह आवाज मेरे गिल्ट को चमकाती है। पर महसूस कर रहा हू कि दूर आकर आवाज

और साफ और तेज हो गयी है अब कहा जाऊ ? बता सकोगी ? मन म सोचना मुझे पता चल जायेगा यदि

तुम्हारा,
सुधीर

प्रतिभा काप उठी थी। यह क्या हुआ ? यह तो उसे पता चल चुका था कि सुधीर घर से भाग गया है। सज्ञा न फोन कर बताया था। प्रतिभा तत्काल पति के साथ सुधीर के घर गयी थी। रमा और सज्ञा को आश्वासन दिया था। फिर पति ने यथाशक्ति सुधीर की खोज की थी। पर उसे अन्दर से विश्वास था कि सुधीर दो चार दिन इधर उधर रहकर लौट आयेगा। वह उसे मूलत चलित-चित्त का एक ऐसा आदमी मानती रही है जो जिन्दगी की सीधी लडाई से कतराता है और जिन्दगी के बाहरी और अन्दरूनी ढाचो पर लुक छिपकर वार करता है, पर पत्र की भाषा उसे कुछ ठोस और गम्भीर लगी। कही कुछ कर न डाले ? पर इससे भी अधिक सकोच उसे इस बात का था कि इस पत्र का जिक्र वह सज्ञा और रमा से नही कर सकती थी। एक तो उन दोनो का कही जिक्र नही था और दूसरे पत्र को गलत समझा जा सकता था। अन्दर के इस झूठ को लेकर वह उन दोनो के सामने थोडा सकोच महसूस करती। वसे भी अपने जीवन को जिस तरह व्यवस्थित करने की योजना सज्ञा रमा ने बनायी उसमे प्रतिभा को अपने करने योग्य कुछ भी दिखायी नही दिया। पर खबर बराबर लेती रही। और दो महीने बीतते-बीतते सभी को लगने लगा कि सुधीर अब कभी लौटकर नही आयेगा।

प्रतिभा को यह बात थोडी अटपटी लग रही है। सुधीर के पत्र ने उसके मन म थोडी खरोच डाली है। यह सच है कि वह सुधीर म प्रेम नही करती, पर सुधीर नही होगा, या उसके किसी भी प्रकार के अनिष्ट की आशका मात्र से वह हमेशा घबरा उठी है। अब जब वह आशका विश्वास मे बदल रही है तो सुधीर और उसके साथ हुई बातें, वायवीय होकर उसके चारो तरफ घुट रही है और उसके अन्दर भी एक घुटन पैदा कर रही हैं। वह खत उसने बार-बार पढा है और हर बार उसके मुह

से अलग अलग ऊंचाई निचाई में 'मूल था, चू पडा है। उसने खुद से पूछा है—तुमने उसे सलेट समझा? नहीं कभी नहीं। सुधीर से मिलकर हमेशा उसे खुशी होती रही है। उसका मन हुआ है वह अपने अन्दर का सब कुछ उसके सामने उडेल दे। अपने सस्कार, अपनी सामाजिक स्थिति की बाधाओ के बावजूद वह उससे मिली है, उसके बारे में महसूस किया है, उसके बारे में सोचा है। उसने अपने पिछले जीवन में क्या किया उसको लेकर वह उससे घृणा क्यो करेगी?

उससे घृणा करना बसे उतना आसान भी नहीं है। कुछ था तो उसमें जो अपनी तरफ खीचता था। हा, था तो। पर कुछ ऐसा भी था जो ठिठकाता था। आप उस तक पहुचिये, और ठिठककर खडे हो जाइये। एक दायरा उसने अपने चारो तरफ खीच रखा था। किसी का भी उस दायरे में घुसना निषिद्ध था। उस दायरे में खडा खडा वह चीख चीखकर रो-रोकर पास बुलायगा पर दायरा नहीं हटायेगा उसने लिखा है—'तुम चाहती तो " पर मैं क्यो चाहती? उसकी समस्या को अपनी समस्या वह क्यो बनाती? किसी का अच्छा चाहना, किसी के लिए कुछ करना और बात है। पर वह अन्दर के सच की कीमत पर नहीं हो सकता। अन्दर का सच? यह क्या मुहावरा हुआ? अन्दर का सच क्या बाहर के सच का विरोधी होता है? होता तो है, पर होना नहीं चाहिए। बिना बात मन और मनतर में मनौवल भी चलती रहती है। पर जो भी हुआ, बहुत बुरा हुआ क्या वह बाकई उसके चारो तरफ लिपटे काटेदार तार से बने उस दायरे को पिघला सकती थी? यह तो वही मानता था पर, वह क्यो ऐसा करती क्या करती वह ऐसा

सुधीर की खोज अब सिर्फ औपचारिकता रह गयी है। सबने मान लिया है कि अब वह नहीं आये प्रतिभ ' चि वह खबर अभी खबर बनकर नहीं प्र में गूजती रहती है

सुधीर के घर की खा कर ली है। सना न कुछ टयूशन है रमा के सिवाय f ध्यान

नही है।

एक दिन रमा ने कहा था—कोई विधवा होती है, और कोई सधवा। मुझे पता ही नही, मैं क्या हू। अचानक प्रतिभा के मुह से निकल गया, "हिंदुस्तान में किसी औरत को पता नही होता कि वह विधवा है या सधवा। पति के घर में होने से ही क्या हो जाता है?"

उसे याद है रमा उसे भौंचक देखती रह गयी थी। प्रतिभा को लगा था कि वह कुछ बहुत ही आक्रामक बात कह गयी है।

सुधीर के पत्र की वह लाइन प्रतिभा को बहुत चुभी है कि "तुमने मुझे हमेशा सलेट समझा।" सलेट ढूढने भला वह इतनी दूर क्यों जाती। उसके अपने समाज में बहुत से लोग हैं जो उसके लिए सलेट का काम दे सकते हैं। फिर सुधीर तो अच्छी सलेट भी नही था। उस पर तो शब्द चिपकाते थे। ऐसी सलेट क्या फायदा जिस पर जितना चाहे पोचा मारो, लिखे शब्द चिपटे ही रहें उस दिन क्या कह दिया था मैंने ? सुधीर तुम समझते हो कोई भी ऐसी स्त्री जो एक सुरक्षित जीवन जीने की आदी है, किसी ऐसे आदमी से प्रेम कर सकती है जिसके पास या तो सुबह का इंतजाम है या शाम का। ओह क्या तमाशा खडा कर दिया था सुधीर ने ? ऐसा लगने लगा था वह वाकई आत्महत्या कर लेगा। कितना समझाया कि उसके बारे मे नही कहा है, पर

बहुत सारे सवाल थे जो सुधीर से करना चाहती रही अब शायद वह नही ही आयेगा

प्रतिभा अपने ड्राइंग रूम मे बैठी हुई है। दोपहर का वक्त। पति तो सुबह नौ बजे से पहले ही चले जाते हैं। एक लडका है आठ साल के करीब का। सुबह सात बजे स्कूल जाता है और दो बजे आता है। यही वक्त होता है, जब प्रतिभा लिखती, पढती है और सोचती है। इस वक्त वह पढना चाह रही थी। दास्तास्की का उपन्यास 'ईडियट' उसके घुटने पर औंधा लेटा है। पता नही कितनी बार उसने यह उपन्यास पढा है, पर मन कभी नही भरा। आज भी सुबह से उसको नस्तास्या और प्रिंस मिश्किन घेरे हुए थे। रागोजिन एक तीखी रोशनी की तरह उभरता डराता और आकर्षित भी करता। उपन्यास के छोटे-बडे सभी चरित्र किताब मे से निकल

कर प्रतिभा के चारो तरफ इकट्ठा हो गये है। ऐसे मे किताब भला कसे पढी जाती। प्रतिभा ने किताब को घुटनो पर ही सुला दिया और सामने के नीले आसमान मे से कटे स्क्रीन पर ताकने लगी। गुलमोहर और नागचम्पा बीच-बीच मे हिलकर उसका ध्यान तोडते पर वह फिर खुद को सोच के एक अमूत बिन्दु पर टिका देती, और अपलक दृष्टि स नीचे स्क्रीन पर उभरती मिटती अनदीखती आकृतिया का खेल देखती।

वसे बैठकर साचने की प्रतिभा की आदत नही है। वह जब बाहरी काम धाम म पूरी तरह डूबी होती है, तभी उसका सोच भी एक दिशा, एक तरतीब पकडता है। सोच का भटकाव उसे कभी भी पसन्द नही आया। पर जब से सुधीर गायब हुआ है अकसर उसकी सोच एक भटकाव के शिकजे मे फमी दीखने लगी है। सुधीर उसके लिए काई भी नही था। फिर भी उसका गायब हो जाना

आदमी थोडा ऊबड-खाबड ही था। था नही, है। कही न कही होगा। सुधीर मर नही सकता। ऐसे लोगो का अन्त थोडा नाटकीय होता है। पर नाटक तो इस अन्त मे कम नही है। नाटक उसकी हर अदा म था। नाटक वह बनाता था। हमेशा आवेश मे बात करेगा। प्रेम की भी और शत्रुता की भी। अपनी मूखता की बातें खूब हस हसकर सुनाता। सिफ मूखता की ही नही, तकलीफ की भी। पर सुनाते-सुनाते पूव स्मतियो से उसका सिफ सिर ही हिलता, शरीर सारा शान्त पडा होता। कभी-कभी लगता उसके सिर का शरीर से कोई सरोकार नही है। पर अपनी किमी पुरानी तक लीफ की कहानी सुनाते हुए वह रह-रहकर कोच म करवटें बदलता। वातावरण को अतीत म घसीट ले जाने की उस आदत थी। इतने सहज भाव से वह अपने श्रोताओ को अपने साथ बहा ले जाता

क्या सुना रहा था उस दिन

'एक दिन एक लडकी भगाने का मौका बना। लडकी मुझस प्यार करती थी। उमकी चिटठी मिली—तो एक हफ्ते के अन्दर मुझे ल जाओ नही तो आत्महत्या कर लूगी। बस, मैं गया उस शहर म और उठा लाया उमे ''

कैसे उठा लाये, तुम तो ऐसे कह रहे हो, जस किसी कानिग पर से

कभी उठा लाये हो ?"

"नही, बहुत झंझट करना पडा । उस गली मे जिसमे वह रहती थी कभी मैं भी रहता था। वहा का बच्चा-बच्चा मुझे जानता था। मेरे और उसके प्रेम-प्यार की खबर भी खूब मशहूर हो चुकी थी। उसके मा-बाप बहुत सतक रहत । जिस तरह का उद्याम प्रेम था हम दोनो का इससे उन्हें ही क्या, गली के हर आदमी को आशका थी कि कुछ अनथ किसी दिन जरूर होगा मेरा गली मे दिखना अपशकुन पर उस तक चिट पहुचानी जरूरी एक पाक में बैठा यही सब सोच रहा था कि "

बात तोडकर उसने हसना शुरू कर दिया। हसता रहा, जब तक कि बोर होकर प्रतिभा ने कह नही दिया, "हो गयी खत्म कहानी ?"

'कहानी ? यह कहानी है ?"

"और नही तो क्या। किसी बम्बइया फिल्म का टुकडा लग रही है।" सुधीर एकदम गम्भीर स्वर में बोला था, "मुझे भी तब से आज तक वह फिल्मी टुकडा ही लगता है। अत भी उसका कुछ-कुछ फिल्मी हुआ पर खरोंच वह बहुत गहरी दे गया। और तुम्ह ताज्जुब होगा, उसका बिछुडना नही, दद एक और ही बात का है। सुनाऊ ?"

"सुनाओ।"

" तो मैं पाक में एक बच पर बैठा यह सब सोच ही रहा था कि सामने ही एक मदारी दीखा। अपनी बदरियो को चने खिला रहा था एक सेकेंड में एक स्कीम दिमाग में घुस गयी "

सुधीर दाबारा हसना शुरू करने को ही था कि प्रतिभा ने टोक दिया, "कैसी स्कीम ?"

'ओफ्फोह ऐसी जल्दी क्या पडी है।"

"जल्दी है।"

'क्या ?'

"तुम्हें जाना है।"

ओह तो ठीक है। बाकी कहानी फिर "

'नहीं पूरी करो।"

'तुम्ह उत्सुकता क्या है ?'

"मैं देखना चाहती हू, अपराध में तुम्हारी कितनी गति है ?"

"हा गति तो है। पर तुम इसे अपराध मानती हो ?"

"पहले पूरी कहानी सुनाओ। तब बताऊगी।"

तो सुनो। सक्षिप्त म। मैंने मदारी का तय किया। उस घर का पता समझाया। मैंने उस लडकी का एक नाम रखा था—सुरभि। वह नाम मदारी को रटवाया। एक छोटी-सी चिट पर सन्देश लिखकर दिया—उस वक्त यहा मिला। मदारी ने अपना काम बखूबी किया। वह वहा मिली और मैं उसे ले भागा।

"फिर ?"

फिर क्या। पुलिस म रिपोर्ट दज हुई और "

"पूछ रही हू, खरोंच किस बात की लगी ?"

और प्रतिभा ने पाया सुधीर खुद को बोलने मे असमर्थ पा रहा है। उसने स्नेह से कहा, "क्या हुआ ?"

"फिर किसी दिन सुनाऊगा।"

किसी और दिन जो सुधीर ने सुनाया बहुत ही साधारण घटना थी। पर प्रतिभा को पता लगा कि सुधीर उसे ऐसे सुना रहा है जस उसने किसी की हत्या ही की हो और सच्चे मन से पश्चाताप म सुलग रहा हो। प्रतिभा की यह कभी समझ म नही आया, जो सबकी नजर में अपराध ह, सुधीर की नजर में एक सामा य घटना है, वसे छुटपुट अनतिक घटनायें उसके पूरे मुह पर कालिख सी पोत देती हैं। अपराध भावना और छलकती कपट हीनता का अजीब सा घोल बातें करते हुए उसके चेहरे पर पुता प्रतिभा को हमेशा दिखा। सुधीर कहता भी था, अपराध समाज की जडता को तोडता है प्रेम व्यक्ति को सघटित करना है। दोना का अ यो याश्रित सम्ब ध है।

पता नही क्या क्या बोलता था सुधीर

कभी प्रतिभा को गहरी जुगुप्सा का अनुभव होता तो कभी बेहद प्यार आता लगभग एसा ही जैसा किसी मा का अपने शरारती बच्चे पर आता है

वह बात कितनी छोटी थी

उस लडकी को लेकर सुधीर ने चौबीस घट किसी दोस्त के यहा बिताये थे। दोस्त कही कही खाने-पीने का इतजाम करने चला गया था। वह गया था कि दो एक घटे म आयगा। दोस्त का मकान यमुना के किनारे खडी एक पोश कालानी म था। अच्छा सादा-सवरा कमरा। वातावरण मे नदी किनारे की गन्ध वह हसकर कहा करता उस पर ओपरा असर सवार हो गया उस लडकी ने बताया था कि वह महीने से है नला म सग्त दद है पर सुधीर पर आये हुए ओपरे असर ने एक नही मानी थी यहा तक कि उसी के सामने उस लडकी ने जब जाघो म से एक चीथडा चुटकी से पकडकर निकाला था और पलग की बाही पर सजा दिया था, तब भी उसे घिन नही आयी थी। वह विरक्त नही हुआ था पर निपटकर जो तनाव उसने उसके चेहरे पर देखा था, वह उसे अब तक सालता रहा था जिसने उसकी स्थिति का नाजायज फायदा उठाया उसके प्रेम को अपमानित किया उसके साथ बलात्कार किया उसकी हत्या की वह

वह पागल था प्रतिभा के मन मे उसका यही इमेज था। बात का बतगड बनाना उसकी आदत थी। एक मालिक ने तीन दिन काम कराया और दस रुपय दकर टाल दिया तो नाराज। अगले दस दिन काम धाम की छुट्टी। वह चढ रही थी, बस कडक्टर ने घटी मार दी, वह गिर पडी बस, बस कडक्टरो की पूरी जमात जलील जो होता है उस पर आश्चय करने का उसे रोग था सहज सत्य उसके गले मे हमेशा अटका रहता कभी नीचे न उतरता। जो बातें आदमी को उदास करती थी यह आदमी उस औरत को देखकर हुआ क्यो ? लीजिए अब औरत को दरवर रोया करे उसकी बातें याद करके अभी भी प्रतिभा को हसी आ रही है। वह नहीं है, या शायद कही नही है, वह उसके लिए कुछ सुख का विषय नही है। पर जो या ही उदास रह, जिन्दगी का रस लेना न जाने, न उसम रस पदा कर सक उसका होना न होना एक ही बात है

अचानक प्रतिभा चौंक उठी। नही एसा नही सोचना चाहिए और फिर यह क्या सोचे वह। अपने परिवार के लिए सुधीर की अपनी उपयोगिता थी। सपना उससे बहुत प्यार करती है। उस अपने पिता से कोई

शिकायत नही है। कितने कृतज्ञ भाव से उसके बारे मे बात करती है। अक्सर कहती है, "पता नही क्या था उनके भीतर, कभी बताया नही। कहा करते थे बडी हो जा, फिर बताऊगा। हर सोच मे आदमी को स्वतन्त्र होना चाहिए, यह दिशा और नैतिक साहस उन्होंने ही मुझे दिया है।"

प्रतिभा ने एक दिन टटोलने के लिए पूछा था, "सोच के स्तर पर कोई पूरी तरह स्वतन्त्र हो सकता है?"

सज्ञा ने निर्द्वन्द्व कहा था, "अपने किये प्रत्येक काम को ध्यान से देखता रहे, उसका—पिछले अगले कामो से सम्बन्ध बिठाता रहे तो हो सकता है।"

"यह तुम्हे उन्होंने ही बताया था।'

"नही, पर उनके सोचने के ढग स मैंने यह सीखा। अक्सर लगता था कि वह हर समय अपनी मानसिकता मे जकडे रहते थे, पर मैं जानती हू, अपने किये अच्छे बुरे कर्मों को अपने ही क्षितिज पर घटते हुए देखते थे पर परिणामो मे डरना नही चाहिए शायद उनमे नतिक साहस की कमी थी वह खुद को दख सकते थे पर खुद से डरते भी थे।

प्रतिभा को आश्चय हो गया था। उसने धीरे से पूछा था, ' तुम्हे अपने पिता के बारे म कुछ मालूम है।"

"कुछ नही। उन्होन कभी कुछ नही बताया पर इतना अन्दाज है मुझे कोई भारी वजन था जरूर उनके मन पर। पता नही क्या था इतिहास से कन्नी काटो जाटी, तो वह बहुत डक मारता है और इतिहास को सिर्फ अपने प्रति नही सबके सामन स्वीकार करना होता है। तभी हम इतिहास को, वक्त का जीत सकते हैं। मुझे तकलीफ है कि मरे पिता वक्त को बहुत सीमित अर्थों म जीत पाये।

' क्या मानी ? '

"छोटे छाटे सच बोलकर वह खुश हो लेते थे।"

फिर एक मिनट रुककर बोली ' एक दिन मुझसे बोले—तुझे वहां नही जाना है। मैं चुप रही। अपने वहा जाने को मैं ठीक मानती थी। गयी। फिर शाम को खुद ही कहा—तूने विरोध क्यो नही किया जो न्याय सगत लग उसके लिए किसी का भी विरोध करना चाहिए। पर मैं जानती हू

कि जो आदमी अपने अन्दर के अन्याय का जमकर विरोध नही कर पाया वह बाहर के अन्याय का फिर भी

प्रतिभा ने बहुत कुछ कहना चाहा था। पर चुप रही थी। सिर्फ कहा था, "सामर्थ्य की कमी के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए सञ्ञा।"

"नहा आटी, यह सहानुभूति-वहानुभूति मेरे वस का धन्धा नहीं है।" ये शुरू शुरू की बातें हैं। सुधीर तब गायब हुआ हुआ था। तभी वह दो बार सुधीर के घर गयी थी। अब नहीं जाती। कभी कभी सञ्ञा का फोन आता है। दोनो एक दूसरे को बता देते हैं कि कोई सूचना नहीं मिली। प्रतिभा कभी यह पूछना नहीं भूलती कि—सब ठीक चल रहा है ना, और सञ्ञा का एक जवाब होता है—बहुत बढ़िया आन्टी, कोई बात होगी तो बताऊगी। बहुत दिन हो गये आप इधर से निकली नही। कभी आइये ना। वह हमेशा कह देती—आऊगी। साथ ही—तुम आना किसी दिन। पर प्रतिभा को मालूम है, दूरी बढ रही है। वह यह भी जानती है दूरी के बढने का कोई कारण नही है। हा कारण तो नही रहा पर यह आज सुधीर इस तरह

प्रतिभा ने पाया कि पता नही कब वह सामने दीखते आसमान के टुकड़े की तरफ मुह किए किए कोच पर ही अधलेटी हो गयी है। और शाम ने धीरे से उसके कान मे कहा है, पति के आने का वक्त हो रहा है।

"पर यह सुधीर आज इस तरह मेरे दिमाग पर क्या छाया है? कही कुछ कर तो नही बैठा?" उसने उसी तरह लेटे लेटे खुद से पूछा है।

एक दिन प्रतिभा ने सञ्ञा से भी पूछा था, "सञ्ञा तुम्हे क्या लगता है, सुधीर कही कुछ "

"क्या आत्महत्या? नही आटी, जो खुद से डरते हैं खुद को नही मारा करते। डरकर आदमी औरो को मारता है। हा, औरो से डरकर खुद को मार सकता है, पर मुझे विश्वास नही होता वह औरो से डरते थे।"

'कभी कभी खुद से डरकर भी आदमी '

सना ने बात काट दी थी, कहा था भरे-पूरे व्यग्य से, "नही आटी, इतने बड़े आदमी नही थे हमारे पिताजी " और कहकर वह खुलकर

हस दी थी।

पर प्रतिभा के अन्दर की आशका उस दिन से और बढ गयी थी।

कैसा लगा था उस दिन सुधीर पहली बार घर आया था वह हस-हस के पागल हो गयी थी। सुधीर पर नही। अपने लडके के एक कमेंट पर। क्या कहा था उसने ?

कहा था उसने "मम्मी य भी लखक थे ?

'हा, क्या ?"

' ये लेखक लोग इतने फनी क्यो होते हैं ? '

"ये फनी लग रहे थे ?" प्रतिभा ने हसते हुए पूछा था।

' हा ।"

उस दिन भी प्रतिभा को हसी आयी थी। अभी भी एक उदास हसी उसे झनझना गयी है। उससे अगले दिन उसने सुधीर को बताया था। सुधीर खिलखिलाकर हस पडा था। कहा था, ' उसने सिफ बाहर से देखा है अन्दर से तो मैं और भी फनी हू।"

प्रतिभा को अच्छी लगी थी सुधीर की प्रतिक्रिया पर

पर क्या छोडो, जो नही है, उसके बारे म क्या सोचना। नहीं है मानो, अपने आसपास। उसके बिलकुल न होने की बात सोचते तकलीफ होती है।

आज देर कर दी अविनाश ने आने मे।

प्रतिभा उठकर कोच पर 'रिलक्स्ड' भाव स बैठ गयी।

अधेरा पूरी तरह होने वाला है।

प्रतिभा बहुत देर चुपचाप बठी रही। उठकर बत्ती नही जलायी। प्रतिभा को अपन व्यतीत के बारे म सोचने की आदत नही है। पर आज उसे कुछ ही देर बठने के बाद महसूस होने लगा कि जानी-पहचानी तस्वीरें अधेरे म इधर उधर तिरमिराने लगी हैं ये आज कहा से आ गइ

नही इन तस्वीरो को मिटाना होगा प्रतिभा उठकर खडी हो गई। कोच के पीछे लगे स्विच-बोड की ओर हाथ बढाकर उसने कमर की बत्ती

का स्विच टटोला और दबा दिया। पर कमरे मे रोशनी होते ही प्रतिभा काप उठी सुधीर उसे कोच पर बैठा हुआ दिखा पर सिर्फ एक पल के लिए फिर खाली सोफा दिखा और एक पल म सारा कमरा उसे लेकर चारो तरफ घूम गया और रुककर खडा हो गया —प्रतिभा ने दोनो हथेलियो से सिर दबा लिया उसी पोज म खडी वह उस खाली सोफे को देखती रही सुधीर की आदत थी, हमेशा इसी कोच पर बैठना था प्रतिभा और बच्चे अक्सर इस बात को लेकर बहुत हसते एक ही कोने म एक सोफे पर एक ही अन्दाज से बैठा आदमी जड हो जाता है। पर उसका कहना था —एक दिन प्रतिभा न जब पूछा था कि हम ने यह सोफा तुम्हारे नाम तो लिख नही दिया कही और बैठोगे तो हम तुम्हे उठा नही देंगे— राज कुर्सी बदलने से आदमी की धुरी टूट जाती है। और ऐसे बडे लोग मुश्किल म ही मिलते हैं जो जीवन को चारो तरफ चक्रवात की तरह घूमने दें और धुरी को भी पिघलने मे सुरक्षित रक्खे।—पागल था। कौन इतना सोचे ? जिन्दगी जीने के लिए होती है, सोचने के लिए नही। सोचते ही जिन्दगी के रस का स्वाद तीता हो जाता है। सुधीर का दोष यही है, या दोष यही था कि वह जीता कम था सोचता अधिक था पर आज यहा दीखा क्यो ? क्या उसने कुछ कर डाला ? लगता तो यही है तो ? तो क्या अविनाश म कहती हू पता करने को

क्या होगा पता करके ?

और प्रतिभा ने अन्दर कुछ बेचैनी महसूस की। वह कमरे म यहा से वहा और वहा से यहा घूमने लगी घूमने से लगा कि बेचैनी और बढ रही है वह चलते चलते रुकी और एक सोफे पर बैठ गयी पर बैठते बैठते ही वह अन्दर तक चौक उठी वह उसी सोफे मे धस गयी है जिस पर पर चौंककर वह उठी नही और भी गहरे म धस गयी उसे लगा सोफे मे से सुधीर की गध आ रही है उस गन्ध ने उसे चारो तरफ से लपट लिया है

2

इस शहर की अलग अलग बस्तियो का आकाश रात को अलग-अलग रग का होता है। सुधीर जिस कालोनी मे रहता था उसके आकाश के अपने कई रग हैं। एक पट्टी गहरे काले की, एक पीले काले की और बाकी आकाश धुए पर चितकबरा, अधेरा। पीला काला चिमनिया से निकले धुए से बनता है। रात को इकट्ठा होकर वह अलग अलग तरह के रूप भरता है। कभी कभी तो एक भयानक दैत्य का आकार लेकर वह नीचे धरती पर उतरने लगता है और बहुत नजदीक से बस्ती के लोगो के खेल-करतब देखता है। मुह खोलता है, ब द करता है। बरसात के दिनो मे तो जोर से हस भी पडता है।

बरसात जाने वाली है।

कडाकेदार गर्मी पड रही है।

गर्मी का मौसम गरीबो के लिए अच्छा मौसम है।

रमा अभी-अभी काम पर से आयी है। आते ही वह रसोई म घुस जाती है। उससे थोडी ही दर बाद सज्ञा आती है कालिज और ट्यूशन से निपटकर। साथ मे कभी कभी भास्कर भी। बैठने के साथ चाय का एक कप उ हे देकर रमा को एक खास तरह का सुख मिलता है। सज्ञा के चेहरे पर चढी थकान की पत चाय की गर्मी से पिघलकर मिटती है तो रमा को लगता है उस दिन उपलब्ध कर लिया। सदीप और समीर को अब अकेले रहने की आदत लग गयी है। अकेला आदमी जल्दी बूढा होता है। सदीप और समीर ने उम्र के तकाजे पर जिद करना छोड दिया है। ये आपस म बैठकर सुधीर के जाने के कारणो की खोज किया करते हैं। बहुत खाजबीन और बहस मुबाहिसे के बाद उ हें दो ही कारण मिल हैं। एक यह कि अम्मा हर समय पसे मागती रहती थी और दूसरा यह कि सना उनके साथ लडती थी। इ ही कारणो क दबाव म इन दोनो न अपना एक सगठन बना लिया है। सज्ञा और रमा से व सिफ मतलब की बात करते हैं।

कनस्तर में आदमी सिर्फ उतने ही दिन इन्तजार कर सकता है । जब पापा गये तो शायद ..."

रमा ने टोक दिया, "सना, कम से-कम मेरे सामने तू उनके बारे मे तुझे पता नही है पगली, उस आदमी ने बहुत तकलीफें उठायी है तू तब बहुत छोटी थी ..."

सना हस पडी, बोली, 'मा, बुरा न मानो, मैं पापा के खिलाफ कुछ नही कह रही । सिर्फ एक छोटा सा सच कहा है—किसी का इन्तजार करने के लिए भी बैठने की जगह और खाली वक्त चाहिए । पापा अगर घर म साल भर का खाना पीना छोड जाते तो हम लोग साल भर तक उनका निर्द्वन्द्व इन्तजार करते । भूखे पेट इन्तजार का रस थोडा तीता हो जाता है । रही बात उनके कष्ट उठाने की, वह सच है, पर उसका बदला उन्हे मुझसे तुमसे, और सदीप समीर से नही लेना चाहिए था । ताकतवर आदमी बदला उनसे लेता है जो उसे कष्ट देते है और कमजोर आदमी अपने से कमजोर को ढूढता है और ..."

रमा तिलमिला उठी । उठकर खडी हो गयी । बोली 'सना उन्होंने हमें स्वतन्त्र किया है । बदला लेना बन्द किया है और तू चाह तो मैं भी तुझे स्वतत्र कर सकती हू । कम से कम मे गुजर करने की मुझे आदत है । मैं अब भी इन्तजार करती हुई हू, मुझे भूख कभी नही लगी इन दोनों के काबिल मुझे मिल जाता है ...'

"छोडो मा तुम तो बुरा मान गयी । मैं तो सिर्फ बात कह रही थी ।'

मैं भी बात ही कह रही हू । मेरी तरफ से तू स्वतन्त्र है । हा, एक बात कि ताकतवर वही नही है जो हर समय बदला लेने के मूड म रहे या हर सही गलत तरीके स मनचाहा छीनता फिरे, चुपचाप सहन करने के लिए बहुत ताकत चाहिए और जहा तक मुझे मालूम है तेरे पापा न ...'

सना ने बात काट दी ' मा मैं अपने पापा से किसी से भी कम प्यार नही करती पर मानती हू कि तुमने उन्हें कमजोर बनाया तुम चाहती तो ।

वह कमजोर नही थे।

थ ।

दोनो को लगा कि एक निरर्थक द्वन्द्व की स्थिति बीच मे बिना बुलाये आ गयी। पर तभी दोनो की नजर कमरे के एक कोने म खडे हतप्रभ सदीप समीर पर पडी। जो ऐसे भयताडित खडे थे जैसे उन्ह आशका हो कि पूरा कमरा किसी विस्फोट से परखचे-परखचे उडने वाला है। सना और रमा का क्लेश पल भर म काफुर हो गया। दोनो खिलखिलाकर हस पडी। दोनो ने आगे बढकर एक-एक कबूतर को दबोच लिया।

गर्मी के दिना मे रात के आठ बजे के बाद खुले म घूमने म मजा आता है। जब से सुधीर गया है, सना इस बात पर हमेशा बजिद रही है कि खाना-पीना निपटाकर घूमने चला जाय। ज्यादातर चारो जाते भी हैं। रमा का मन नही होता पर सना की जिद के सामने झुकना उसे अच्छा लगता है। घूमना तो खर उसे हमेशा अच्छा लगता रहा है पर अब निकलते हुए एक आशका उसके कान के पास मक्खी की तरह भिनभिनाया करती है। रास्ते म कोई मिलेगा और पूछेगा, सुधीर का कुछ पता लगा ?"

या 'हमारे लायक कोई सेवा बताओ, सना की मा।"

या "एसा कैसे चलेगा बहिन, जवान लडकी सिर पर बैठी है उसका ब्याह काज "

या "सना बहुत होशियार लडकी है। हम करेंगे उसके लिए काम की कोशिश "

या 'सुधीर न बुरा किया। उसे ऐसा नही करना चाहिए था।'

लोगो की बातो से भी अधिक रमा को इस बात मे डर लगता है कि पता नहीं सना किसको किस बात का क्या जवाब दे डाले और बिना मकसद एक आदमी दुश्मन बन जाये। पर सना जिद करती है और लाख आशकाओ को कधो पर लाद वह उसके साथ घूमने निकल पडती है

उस दिन

घर म निकलते ही दीखा कि सामने पटरियो पर रेल रुकी खडी है। बहुत से लोग पटरियो के नीचे लटके छोटे से ढलान पर खडे हैं थोडी-थोडी दूर पर आदम-गुच्छा बनाये। अधेरे के बावजूद यह महसूस किया जा सकता है कि कोई कट गया है। दूसरे-तीसरे दिन इस तरह की घटना यहा होती ही रहती है। पर इधर कुछ दिना से जब भी ऐसा कुछ घटता है

इन चारो के अन्दर भय की एक चीख उमड पडती है। इस समय भी चारो मडक के बीचोबीच ठिठके खडे हैं। चारो जानते हैं कि उनके मन म क्या है पर बोलने का साहस किसी म नही है और पटरी तक जाने म हरेक कतरा रहा है। पर दुविधा की जडता को सबसे पहले सज्ञा ने ही फोडा।

"तुम ठहरो यहो मा मैं देखकर आती हू।'

'नही, तू नही जा तो सदीप तू जा, किसी से पूछ लीजिया कि क्या हुआ है ? '

पर अकेला सदीप घुप अधेरे को चीरकर रल तक पहुचने से कतरा रहा है।

' चल समीर दोनो चले।"

दोनो चलत हैं। पहले अधेरे मे गायब होते हैं। फिर ढलान पर चढते हुए दीखते हैं और फिर भीड म खो जाते हैं।

"बहुत देर हो गयी। जा तो सज्ञा, देख तो '

"मा, अभी तो गये हैं।'

' अच्छा, तू ठहर यही, या वापिस घर चल मैं देखकर जाती हू।

"जरा ठहरो न मा।"

"तू ठहर। रेल है। बच्चे हैं। कही नीचे न घुस गए हो। चल दी तो तू ठहर।"

' वह निकल आये भीड म से वह देखो, वह आ रहे हैं।"

' हा। लगते तो वही हैं पर ये इतना भागकर क्या आ रहे हैं ?"

"हा भागकर क्यो आ रहे हैं ? चलो देखते है।"

सज्ञा और रमा आग बढ गयी हैं। दोनो बच्चे अधेरे मे डूब गये हैं। अब अधेरे में से निकलेंगे। दोनो के दिल धडक रहे हैं। पता नही क्या खबर लाते है

वह निकल आए कितने बेतहाशा दौडे चले आ रहे हैं। दूर से ही चीख रहे हैं कुछ समझ नही आ रहा पास आ रहे हैं

' मा पापा नही हैं मा पापा नही है मा

रमा ने अचानक चीखकर दोनो को झपट लिया है—चुप दोनो सहम रुक गये है। थोडी दूर। चुप हो गये हैं। ' पास आओ ना। रुक क्यो

गये ? कौन था ?" रमा ने कहा है। दोनो ने एक सुर मे कहा है, 'पापा नही " कहते-कहते दोनो अचानक रो पड़े हैं। रमा ने आगे बढकर दोनों का खुद से चिपटा लिया है। दोनो को चूमा है। चुप कराया है। लेकर वापिस आयी है। सज्ञा को कहा है, "घूमना छोड सना चल, घर चलें।"

"चलो मा।"

सदीप का हाथ सज्ञा ने पकड लिया है। समीर रमा के हाथ मे है। सज्ञा ने बेहद स्नेह से सदीप से पूछा है, "रोया क्यो था रे ?"

सदीप न सज्ञा की तरफ देखा है। अपना हाथ छुडाया है। मा क पास गया है। धीरे से पूछा है 'मा पापा कब आयेंगे ? बताओ ना ?"

रमा गुप-चुप है।

3

दोना बच्चे सो गए पर रमा और सज्ञा को नीद नही आयी। सज्ञा बहुत उद्विग्न थी। उसन ही बात शुरू की।

'मा तुम्ह मालूम है, आनन्द अकल ने आत्महत्या क्यो की।" रमा चुप रही सिर्फ सज्ञा की तरफ देखा।

दोनो अपनी-अपनी चारपाई पर बठी हैं। एक दूसरे की तरफ मुह किये। दोनो की पीठ से चिपके समीर और सदीप सो रहे है। रात के दस बजे हैं।

"मैंने बताया था न, पापा के दोस्त मिले थे। उन्होंने बताया।" रमा चुपचाप सज्ञा की तरफ देखती रही।

सज्ञा चुप रहने मे असमर्थ पा रही थी। बोली, "तुम्ह पता है, मा, पागलपन किसे कहते हैं ? जब आदमी किसी एक इच्छा को बाकी सब इच्छाओ की कीमत पर पूरी करना चाहे। आनन्द अकल इसी तरह के

पागल थ।'

इस बार रमा ने धीरे से कहा, 'शायद तेरे पापा भी।"

'हा शायद। शायद क्या, थे ही। तुम्हे मालूम है मा, आनन्द अकल बहुत बढिया नाटक लिखते थे।"

"हा, एक दिन बताया था तेरे पापा न।"

"उनके कई नाटक छपे, कई स्टेज हुए कई असफल। पर उनके चेहरे पर कभी किसी ने न खुशी की लहर देखी न दुख की छाया। तुम्हे तो मालूम ही होगा उन्होंने शादी नही की थी। पिता थे और अकेले पिता का घर म होना उन्हे काटता था। मा शायद बचपन म ही मर गई थी। घर का मकान था। पर जब भी कोई दोस्त उनके मकान को लेकर उन पर तज करता तो तिलमिलाकर कहते—मकान मेरे बाप का है, मेरा नहा है। इतने बड मकान के बावजूद अपने लिए कमरा अलग ले रखा था। ज्यादातर वही सोते। पिता जिस तरह एकदम बच्चो की तरह देखभाल, सरक्षण और चिन्ता करते इससे उन्हे कोफ्त होती। पर पिता की लाचारी '

रमा न जसे चौंककर पूछा, 'हा, बताया था तेरे पापा ने। उनके पिता का तो दुख हुआ होगा। कसे हैं अब वे ? कुछ पता है ?"

"हा मा पता है, वह चल बसे

आह कोई इस तरह चला जाय, तो चल बसना ही ठीक है "

'नही मा, ऐसा न कहो तु मैं तुम्हे बहुत प्यार करती हू खर छोडो तुम्हे जान कौन दगा और आनन्द अकल की बात '

'—। क्या हो गया था ?

इस बार सना कई मिनट चुप रही। फिर अपनी आदत के खिलाफ उसने धीरे और मन्दी आवाज म कहना शुरू किया—'तुम्हे पता है मा, आदमी नाटक-कहानी क्यो लिखता है ? आदमी के जीवन का कोई एक सुनहरा या गहरा काला क्षण उसके मस्तिष्क मे पडा फलता सिकुडता रहता है घूमता जमता रहता है पिघलता रहता है और कभी-कभी इतनी गर्मी महसूस करता है कि भार बन जाता है। पर एक वक्त आता है जब यही क्षण पारदर्शी स्फटिक का आकार ले लेता है इसके नयन नक्श निकल आते

है। इस स्फटिक के मूर्त-अमूर्त रूप को शब्दों में पकड़ने की कोशिश करता है और इसी तरह का प्रयास कभी नाटक कहलाता है, कभी कहानी और कभी कविता "

रमा ने टोक दिया, "सज्ञा"

'हां मां'

'बिटिया, किससे अब ये बातें कर रही है। मेरी समझ में यह बिल्कुल नहीं आता है वह होते तो "

सज्ञा ने फौरन बात संभाल ली। बोली, "तो ऐसा ही एक नाटक था आनन्द अंकल का लिखा हुआ, वे चाहते थे, वह नाटक खेला जाये, वह क्षण उन्हें अपने से बाहर घटता हुआ अनुभव हो और वे स्मृति मोह की घुटन से मुक्त हो जायें पर "

'छोड़ सज्ञा, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा " रमा खुद में डूबी थी।

'सुन लो मां, शायद साल दो साल बाद तुम्हें भी समझ आने लगे।"

"तो सुना '

"हां सुनो, बहुत दिनों तक वह चाहते रहे कि वह नाटक मंच पर हो, नहीं हुआ और एक दिन जब हुआ तो "

सज्ञा चुप हो गयी। रमा के लिए तो सारी कहानी सिर्फ कहानी थी, उसके तल को वह छू ही नहीं रही थी। सज्ञा जानती थी, पर वह बोले जा रही थी, शायद वह रमा से अधिक सारी कहानी खुद को ही सुना रही थी।

सज्ञा ने और भी धीमी आवाज में कहना शुरू किया, "आज पापा नहीं हैं, मुझे उनकी बातें उनके जाने के बाद समझ आ रही हैं। आनन्द अंकल की कहानी ने मुझे झिंझोड़ दिया है। मैं आज तक सोचती रही कि हर बात को साफ-साफ समझा जा सकता है पर मां कोई अगर यह कहे कि आनन्द अंकल ने इसलिए आत्महत्या कर ली क्योंकि उनका एक नाटक अच्छी तरह नहीं खेला गया था तुम्हें हंसी नहीं आयेगी? मैं तो खूब हंसती। पर आज नहीं हंस पा रही हूं और रो इसलिए नहीं पा रही क्योंकि पापा नहीं हैं। उनके गले से लगकर "

"जब तक वह रहे तब तक तो उनसे लड़ती रही

' हा, मां, मैं उनकी बातें समझती तो शायद वह "

'छोड़ सका तो क्या हुआ था आनन्द का ?"

बताया तो मा, उनका एक नाटक ठीक स्टेज नही हो पाया । दर्शकों और दोस्तों ने उनकी मजाक उड़ायी । वह बर्दाश्त नही कर पाये और "

"ठीक बात बतला ।"

'बताती हू मा, जरा चुप रह लू और तुम भी चुप रहना ।"

दोनो चुप हो रही । रात के ग्यारह बज चुके होंगे । बत्ती जली है । कभी-कभी रोशनी म लिपटा सन्नाटा अधेरे म लिपटे सन्नाटे से ज्यादा भयावह होता है । खास तौर पर तब जब रोशनी को अधेरे म खिसकाने म भी डर लग रहा हो । सदीप और समीर इन दोनो के मानसिक ऊहा पोह स बेखबर सो रहे है । रमा सज्ञा की तरफ मुह किये लेटी है पर सज्ञा की दृष्टि ऊपर छत पर टिकी है।

अचानक सज्ञा ने कहा है, "मा, पापा की तकलीफ भी वही थी जो आनन्द शुक्ल की जान ले गयी ।"

रमा ने भटकती नजरो से सज्ञा की तरफ देखा ।

' तुमने वह कहानी सुनी है मा ?"

कौन सी कहानी ?"

' मैं सुनाती हू । तुमने भला कहा सुनी होगी । मैं ही सुनाती हू समुद्री तूफान मे एक जहाज फसा और डूब गया । सब मर गये पर एक लड़की बच गयी । चौदह प द्रह साल की । एक सुनसान निजन टापू पर उसे होश आया । पहले वह बहुत रोई फिर इधर-उधर भटकने लगी। शुरू शुरू मे रात के वक्त उसे डर लगता, फिर वह डर भी उसका साथी हो गया । वह उस टापू के जड-जगम का एक हिस्सा हो गयी । वहा के जानवर वहा की वनस्पति ने उसे पहचान लिया । रहने तो वह लगी पर अ दर उसके कुछ घुटता रहा । गाढ़ा होता रहा । फूलता फलता रहा । कभी-कभी वह अ दर का अमूत सास पर इतना दबाव डालता कि वह रो पड़ती । बहुत-बहुत देर तक वह अकेली बैठी रोती रहती । पर उस सुन-सान टापू पर कौन था जो उसकी वेदना समझता उसे चुप करता । वह

खुद ही रोती और खुद ही चुप हो जाती। रोते का उसे एक ही फायदा होता, सांस लेने में थोड़ी आसानी हो जाती। सांस ठीक होते ही वह फिर उस भीषण समुद्र के बीच तरते, निजन टापू पर किसी ऐसे जन्तु की तलाश में निकल पडती, जो उसकी भाषा समझ सके, पर ''

'तू आनन्द की बात सुना रही थी सज्ञा।"

रमा ऊबने लगी थी।

पर सज्ञा के लिए रमा शायद थी ही नहीं। फिर भी उसने कहा, "वही सुना रही हू मा, तुम सुनो ता। सोना मत। मैं कह रही थी, कि वह लडकी, जिसकी उम्र बढ चुकी थी, दसियो साल वह वहा रह चुकी थी, उस निजन टापू पर ऐसे किसी जीव को ढूढती रही जो उसकी बात समझ सके। तुम्हें मालूम है मा, उसकी बात किसने समझी उसे मन-चाहा प्राणी मिल गया। एक दिन वह रो रही थी कि उसने देखा एक काला साप उसके ठीक सामने कुडली मारे बैठा है और रह रहकर अपना फन जमीन पर पटक रहा है। कभी वह कुडली मारे मारे जमीन पर घूम जाता है तो कभी अपना फन एकदम ढीला छोड देता है तो कभी फन को जमीन पर ऐसे रगडता है जसे उसके अन्दर की व्यथा उसको मथ रही हो उस लडकी ने देखा देखती रह गयी पर यह समझते उसे देर नहीं लगी कि उसे वह मिल गया है जिसकी उसे तलाश थी ''

'तेरा दिमाग तो ठीक है सना। साप भला आदमी की बात क्या समझेगा? तू आज "

'मा, आदमी ही आदमी की बात मुश्किल से समझता है पर खैर, जो भी हो, उन दिन से वह निजन टापू उस लडकी को अच्छा लगने लगा रोना उसे तब भी आता, पर कारण बदल गया था। अब जब भी उस साप की याद आती वह रोती और रोते ही साप भागता हुआ उसके पास आता और उसके पर में सिर पटकता। और इस तरह अपना प्यार प्रगट करता "

रमा उठकर बैठ गयी। सना का मुह ध्यान से देखने लगी। सज्ञा ने कहा, साप उस लडकी के लिए दुनिया का सबसे सुन्दर प्राणी हो गया। तुम्हें मालूम है मां, सुन्दर कौन होता है?"

"पता नही क्या बक रही है ? वह आनन्द की बात बतानी हो तो बता, नहीं तो मैं बत्ती बुझाकर सोती हू ।"

सना की बातें रमा की समझ मे नही आ रही थी पर उसे लग रहा था उसका मन कुछ हल्का हो गया है । उसे अन्दर ही अन्दर लड़की की बाता पर हसी भी आ रहा थी। पर सना गम्भीर थी । उसने फिर उसी आवाज म बोलना शुरु किया जस कही और खड़ी होकर खुद स बोल रही हो, "हम सभी लोगा म सा, एक साप कुडली मारे बैठा होता है, जो जब भी हम रोते है, हमारे सामन सिर धुनता है। वह हमारी बात समझता है और पल भर चुप रहकर सना न कहा, आनन्द अकल के अन्दर का यह साप मार दिया गया और उन्होने हमेशा के लिए इस निजन द्वीप से जाने का फैसला कर लिया "

"हुआ क्या था, बताती क्यो नही ? '

"बताया तो, बता तो रही हू, उनके अन्दर का साप मार डाला गया। उस साप की एक केंचुली थी एक नाटक—सुनहरे और काले रग की केचुली। रगो की बुनावट इस तरह थी कि साप और आनन्द दोना के अस्तित्व का अथ मिलते थे। जिसने उसे स्टेज पर पश किया उसने रगों की बुनावट बदल दी। अथ बदल गये। सारा व्यामोह टूट गया। आनन्द डर गय। साप अचेत हो गया। पहले साप मरा, फिर "

"यह सब क्या है सना ?" रमा लगभग चीख उठी।

सना जाग उठी। हसन लगी। बोली, "कहानी है मा।"

"सो जा। यह कसी कहानी है। पागल।"

"हा। बत्ती बुझा दो मा। नीद आ रही है। मा, पापा, मालूम है, क्यो भाग गये ? '

क्यो ? मैं ता समझती हू वे पसे की कमी से घबरा गये।"

"वही तो मा। इतने दिन साथ रहकर भी तुम पापा को न समझ सकी।"

तो ? क्यो भाग गये ? तू ही बता। मैं मूख ही सही। रमा ने झुझलाहट भरे स्वर म कहा।

"मैं बता भी दूंगी, तो भी तुम्हारी समझ मे नही आयेगा।"

"नहा सही, तू बता।" रमा रुआंसी हो आयी थी।

"तो सुनो। पापा को एक सार की तलाश थी। एक दिन उन्हें लगा कि उनकी तलाश खत्म हुई, सार मिल गया। पर जिसमे उन्होंने साप का भ्रम बनाया वह साप न होकर निजन द्वीप पर भटकती वह लडकी थी। पापा डर गये। डरकर भाग गये और यह निश्चित है कि अब कभी इस शहर म नही आयेंगे। पर पर तुम सो जाओ मा मैं और पता नही क्या-क्या बकूंगी पापा के उन दोस्त ने मरा मारा मानसिक सतुलन बिगाड दिया है कल मैं भास्कर से मिलूंगी तो कुछ ठीक होगा।'

'सना। कौन थी यह ? प्रतिभा ?"

"हा मा। प्रतिभा आंटी। मरा ख्याल है।

'तुझे कस मालूम ?"

"बताया ना। मेरा अन्दाजा है।'

"नही। तुझे पता है। मुझे बता।"

'नही मा। मैं सच कह रही हू। मुझे कुछ नही पता। सिर्फ अन्दाजा है। पर इतना विश्वास से कह सकती हू कि दोनो को अपने-अपने साप की तलाश थी। इसी तलाश की प्रकृति के एक होने के कारण वे एक-दूसरे के पूरक होने मे असमर्थ थे। पापा इस तथ्य को जान गये थे। सहन नही कर पाये, चल गये।"

'आह एसा था क्या। मैं तो समझी थी कि "

"क्या समझी थी ?"

'कुछ नही। सो जा। और मुझसे बहस न किया कर। मुझे तुझसे कुछ नही समझना।'

"मा।"

"बत्ती बुझा दू ?"

'मा-मा "

"क्या है ?'

"आज मेरे पास सो जाओ। मुझे बहुत डर लग रहा है।"

अचानक रमा का शरीर ढीला पड गया। आख गीली हो गयी।

उसने उठकर बत्ती बुझा दी। सज्ञा की खाट के पास आकर गिरी हुई आवाज मे कहा, "चल उधर को हो। पता नही कहा से क्या-क्या सीखकर आती है।"

'मा, इस इतवार को पापा की सब लिखी चीजें निकालनी है।"

'अच्छा। निकाल दूगी। क्या करेगी उनका ?"

"छपवायेंगे।"

4

इतवार को सज्ञा ने सुबह स ही घर मे एक तूफान सा खडा कर दिया। अलमारी की सारी फाइलें निकालकर सारे पर्चों पर फैला दी। सदीप और समीर के लिए कमरे मे घुमने का निषेध हो गया। रमा रसोई के काम मे डूबी रही। सज्ञा एक एक कहानी के बिखरे पन्ने इधर उधर से पूरे करती रही और दीवार से पीठ लगाकर उन्हे पढती रही। पढती रही और गम्भीर होती रही। उसे महसूस होना रहा है कि सुधीर भाप बनकर सारे वातावरण मे फैल गया है और एक तीखी गन्ध फैला रहा। पढते पढते सज्ञा का दम घुटने लगा तो वह जोर से पुकार उठी 'मा"

रमा रसोई से भागकर कमरे मे आयी। इतनी भडभडाई आवाज रमा ने सज्ञा की कभी नही सुनी थी। उसने एकदम पास आकर पूछा, "क्या हुआ ? क्या है सज्ञा ? क्या हुआ ?'

सज्ञा ने डरी हुई मा की तरफ देख, खुद को सभाला, हलके से हस कर कहा, "कुछ नही मा। यो ही तुम्हारी याद आ गयी थी मा, तुम्हें मालूम है पापा के मन मे किस चीज का इतना वजन था कि वे इतनी दबी जुबान मे बोलते थे, अपनी कहानियों म

' मुझे सज्ञा कुछ मालूम नही है, मुझे उन्होने कभी कुछ नही बताया

पर यह बात सच है कि उनके मन पर हमेशा कोई दबाव रहता था जिसके कारण कभी वह खुलकर सास नही ले सके। मैंने बहुत बार जानना चाहा पर मुझे तो वह हमेशा हसी मे उडा देते। तुझे शायद बता देते, पर तूने जबसे होश सभाला, हमेशा उनकी बात को काटा ही "

"तो ?"

"उनसे पूछकर देखें।"

"क्या फायदा पूछने से ? और क्या फायदा जानने से ? अब जान भी जायेंगे तो उनका तो कोई भला हो नही सकता। फिर जब उन्होंने हमे इस काबिल समझा ही नही कि अपने मन की कोई बात बतायें तो ठीक है, नही सही। अब उनके बारे म दूसरो से पूछताछ करते घूमना, क्या अच्छा लगता है।"

सना ने धीरे से कहा, "मा इतने हल्के स्तर का अभिमान सहारा नही बन पाता। पर छोडो, वह समस्या मेरी है। मैं बात करूगी प्रतिभा आटी से। तुम और तुम्हारा स्वाभिमान कही बीच म नही होगे।"

रमा मिनट भर चुप रही फिर अचानक उसे कुछ याद आया। तेजी से बोली, "कल, वह वकील की चिट्टी आयी थी, तूने देख ली ?"

"नही तो, कहा है, क्या लिखा है ?"

"लिखा है हम मुकदमा हार गये। मकान एक महीने के अन्दर खाली करना होगा। कई तारीखें पडी, कोई गया ही नही, इसलिए एकतरफा फैसला हो गया। यह मान लिया गया कि हमारे पास कहने को कुछ नही है।"

"ओह !"

"अब क्या होगा ?"

"होना क्या है। इस मकान से पहले क्या सडक पर रहते थे ?"

"कौन मकान ढूढेगा ? मकान मालिक मकान देते हुए सौ बातें बना देगा। किसी की बधी आमदनी नही है। यहा तो सब जानते हैं, नयी जगह डेढ सौ सवाल " रमा की आखो में भय के मारे आसू छलक आये।

घबराहट सना के अन्दर भी थी। पर उसने मा को साहस बधाते हुए कहा, "तुम चिन्ता न करो मा, सब ठीक हो जायेगा। मैं भास्कर से बात

करूगी।"

"तपन ही क्या करेगा। लडका ही तो है बेचारा।'

"वह सब ठीक कर लेगा।"

'चलो वह टीक कर ले और तुझे कुछ खाना नही है आज। सुबह से इन कागजो से चिपकी है

"बस मा, अभी आती हू बस, दस मिनट छाट ली मैंने पापा की बीस कहानिया एक सकलन छपवाऊगी इनका और तुम चिता न करो मा, सब ठीक हो जाएगा। तुम क्यो करती हो फिक्र मैं जा हू '

रमा ने विह्वल कठ स कहा, "तू तो है ही। तू ही ता है। पर सन्ना इनको छपवाने के चक्कर मे तू मत फसियो। यहा बहुत झझट है किताब छपवाने मे तू कहा "

"मैं छपवाऊगी मा। झझट तो जीने म भी है। मैंने पापा के प्रति बहुत अन्याय किया है, उसके पश्चाताप का यही एक तरीका है "

तेरी मर्जी। तू किसी की सुनती थोडे ही है पर पर किसी भी कीमत पर मत छपवाना किसी भी कीमत पर प्राप्त सफलता सतोष नही देती "

"हा मा। मैं जरूर छपवाऊगी।"

इतवार के दिन तीसरे पहर भास्कर नियम से आता रहा है। इस इत वार को भी आया। उसके बठने के पहल ही सना ने सुधीर की कहानियो की फाइल रख दी। अधिकार से बोली 'इनम से कुछ का पढो और अपनी राय दा।"

भास्कर कहानियो मे डूब गया। सना एक कप चाय बनाकर उसके पास रख गयी। रमा पडोस म किसी के घर बैठी थी। कई कहानिया पढ कर, काफी देर चुप रह कर भास्कर ने गदन उठाकर कहा, 'सना ये कहा निया छप नही पायेगी।'

"क्या? क्यो नही छप पायेंगी?"

भास्कर गम्भीर था, बाला देखो सना समाज किसी की भी बात सिफ स्वाथवश सुनता है। उसम से कुछ उसका मनोरजन हो, कुछ उसे नया विचार मिले, पढकर उसमे कही कुछ जागता हुआ दीखे, या उसको अपनी

किसी तकलीफ के अर्थ समझ मे आयें। इन कहानियो मे इनमें से कुछ भी नही है। ये मन मे उठती लहरों के आपसी विलोल की 'क्लीनिकल रिपोर्टस' हैं। पर एक बात माननी पड़ेगी, उस मन की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है जिसमे यह सब होता रहा। कितनी व्यथा, कितना विषाद, कितना सन्नाटा और अपनी ही भाषा से कितनी विरक्ति।

"भास्कर, इन्हें छपवाना है। पापा के अन्दर का यह सब निरर्थक नही हो सकता। यह सकलन छपवाना है।"

"कोशिश करते हैं। पर एक बात मैं भी मानता हू कि व्यक्ति मन की सारी बुनावट बाहरी दुनिया की देन होती है। बाहरी दुनिया को उसके प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। देखते है कोशिश करते हैं।"

"और यह क्या मुहावरा तुमने इस्तेमाल किया था—भाषा से विरक्ति इसके क्या मानी ?"

"भाषा मानी समाज, अपने समाज से विरक्ति, यही तो।"

"ओह। समझी। पर भास्कर इन्हें छपवाना है।"

"हा हा, पूरी कोशिश करेंगे।"

"और यह मकान भी छोड़ना होगा।"

"क्यो ?"

"हम मुकदमा हार गये। वकील की चिट्ठी आयी है।"

"चलो अच्छा हुआ। बात खत्म हो गई। मकान का इंतजाम तो कुछ न कुछ हो ही जायेगा।"

"और भास्कर तुम्हें एक बात बताऊ ?"

"क्या बात ?"

"दो तीन दिन से मुझे पापा बहुत याद आ रहे हैं।"

"क्यो कोई खास घटना घटी क्या ?"

"हा भास्कर मेरी इस छोटी सी जिंदगी की सबसे बडी घटना। पापा के एक दोस्त है विनायक जी, वह मिले थे, कई दिन हुए। बहुत बातें हुईं। पता चला कि पापा जो दीखते थे, वह ही नही थे।" सज्ञा ने ऐसे कहा, जैसे बहुत बड़े मच पर से पर्दा उठा दिया हो।

भास्कर ठहाका मारकर हंस दिया। हंसते-हंसते बोला, "यह घटना

है ? अरे सनाजी आपको मालूम होना चाहिये कि यह बात हम सबके बारे मे सच है। जो मैं हू, यदि वही दीखू भी तो कौन मुझे आदमी कहेगा, पशु फिर क्या होता है। तुम भी बस, कमाल करती हो।"

"भास्कर, मैं मजाक कर रही हू ?"

'नही मैं कर रहा हू।"

'कर सकते हो, तुम्हें मालूम है, पापा को खोकर मैंने क्या खोया है ?"

"क्या ?'

"आत्महत्या और भास्कर तुम्हें मालूम है, आदमी का आत्मविश्वास कब टूटता है।"

'तुम्ही बताओ।"

"जब आदमी सीखना बन्द कर देता है। पापा नही हैं, किससे कुछ सीखू ? मैं अपनी जिंदगी की लडाई लड़ूं या कहते-कहते सज्ञा का गला भर आया। उसने जोर लगाकर खुद को सभाला, फिर बोली, 'तुम्हे पता है भास्कर मैं पापा से कितना प्यार करती थी और उन्होंने कभी मुझे नहो बताया कि ' कहते-कहते सज्ञा जोर से रो दी। रोते रोते ही उसने कहा "अगर वह मुझे बताते तो "

भास्कर ने आवाज दी बेहद स्नेह से, "सना "

तुम जाओ। मुझे किसी की मदद की जरूरत नही है। मैं खुद छपा लूगी पापा की कहानिया। मैं जानती हू, इन कहानिया मे उनकी घुटन मौजूद है। हो सकता है '

सना ' भास्कर ने पुकारा।

सज्ञा पर उस पुकार का कोई असर नहीं हुआ। बोली 'देखो भास्कर तुम्हारे साथ रहकर जो सपाटबयानी मैंने सीखी, उसी ने मुझसे मरे पापा, को दूर कर दिया। काश। मैं धीरज से उनकी बात समझने की कोशिश करती तो शायद वह न जाते। तुम जानते हो "

'सज्ञा मेरी बात तो सुनो '

मुझे सोचने दो तपन। मैं तुम्हारी बात सुनना भी चाहती हू और समझना भी चाहती हू। पर मुझे सोचने का वक्त दो। पहले मैं महसूस

करना चाहती हू कि पापा के घर छोडने की जिम्मेदार मैं हू। यह अहसास पक जायेगा तो हो सकता है मैं और कुछ सोच सकू। तब तक तुम्हे इतजार करना होगा। चाहो तो करना "

"तो मैं चलता हू "

'हा जाओ।"

सना भास्कर को छोडने बाहर तक आयी। भास्कर चला गया तो इधर उधर देखा। रमा कही नही दीखी। सन्ना घूमी और सीधी आकर पलग पर बैठ गयी। पश्चिम की तरफ खुलने वाली खिडकी की दीवार से कमर टिकाकर। सुधीर शाम के वक्त जब भी घर मे होता था, इसी तरह बैठकर सूरज का डूबना देखा करता था, खिडकी की सलाखो मे से। सन्ना ने खिडकी मे से देखा, सूरज डूब रहा था।

5

अपने विशाल ड्राइग रूम मे, हल्की नीली रोशनी मे लिपटी बैठी प्रतिभा का चेहरा ऐसे दीख रहा है जैसे बडे-से गमले मे मोतिया रग का बडा-सा एक फूल दहक रहा हो। रात के आठ बज चुके हैं। अविनाश अभी तक नही आये। प्रतिभा के अन्दर की ऊहापोह उसके चेहरे पर अतिरिक्त लवण बिखरा रही है। पलका का अनचाहे मे झपक जाना ही यह आभास देता है कि वह मूर्ति नही है। सामने दीखता पूरा स्क्रीन काला हुआ पडा है। कही काई रोशनी की किरण नहीं है। अभी कुछ देर पहले टेलीफोन की घटी बजी थी। सोते-सोते ही प्रतिभा उठकर गयी। गलत नम्बर था। प्रतिभा के होठा पर हल्का-सा व्यग्य उभरा। उसने टेलीफोन का प्लग निकाल दिया। फिर कोच पर पहले की तरह आकर बैठ गयी। किचन मे नौकर खाना बना रहा है। बीच-बीच मे आकर प्रतिभा को कुछ बता जाता

है या उससे कुछ पूछकर और उसकी 'हा हू' लेकर चला जाता है। उसने मालकिन को पहले कभी इस तरह बैठे नही देखा। किताब हाथ में हो, तब तो इतनी देर चुप बैठा हज्म किया जा सकता है, पर

रामसिंह ने आकर बताया "खाना बन गया।"

प्रतिभा ने हल्का-सा चेहरा घुमाकर रामसिंह को पहचाना। पल भर उसके खडे रहने के ढग को देखा। बात कहकर रामसिंह जड हो जाता है। प्रतिभा को हमेशा इस बात पर हसी आती है। आज भी आदत से लाचार उसे हसी आ गयी। उसकी जडता दूर करने के लिए उसने पूछा, "बच्चू कहा है ?

"अपने कमरे में हैं।"

"अभी तो सवा आठ हुए हैं। थोडी देर बाद उसका खाना लगा देना। मैं बाद में खाऊगी।

रामसिंह चला गया।

प्रतिभा भी उठकर खडी हो गई। अपने दोनो हाथो से उसने चेहरे पर झुके बालो को पीछे किया। दोनो हथेलियो से बालो को सिर पर दबाया। जसे उन्हे आइन्दा झुकने को मना कर रही हो। झटके से घूमी और ड्राइग रूम से निकलकर अपने कमरे में घुस गयी।

उसके कमरे की बत्ती अभी किसी ने नही जलायी है। घुप अधेरा है। प्रतिभा को पता है उसका पलग कहा है, मेज कुर्सी कहा है फुटकर कुर्सिया कहा रखी हैं। कमरे में घुमकर अधेरे में ही, वह अपने पलग तक पहुची है, बैठ गयी है, जोर से पुकारा 'रामसिंह"

रामसिंह आया है। दरवाजे पर खडा हो गया है। उसकी छाया दीख रही है।

'साहब आयें तो खाना खिला देना। मेरी तबीयत ठीक नही है। मैं सो रही हू।'

"जी।"

'टेलीफोन के पास या छाया, वह आयें तो मुझे आवाज दे लेना। साढे नौ बजे तक न आयें तो तुम चले जाना, खाना मेज पर लगाकर। समझे।

प्रतिभा जानती है, रामसिंह को यह सब बताने की जरूरत नहीं है। वह घर के सब नियम-कायदे, तौर तरीके जानता है। बरसों से उनके यहां रह रहा है, पर प्रतिभा कुछ बोलकर खुद को जगाना चाहती है। वह और भी बोलती पर उसने देखा है, छाया दरवाजे पर से हट गयी है।

प्रतिभा पलंग पर दीवार की तरफ मुंह करके लेट गयी।

क्या है जिसने आज उसके पूरे दिमाग को पिघला दिया है?

सुधीर

नहीं। सुधीर में वह सामर्थ्य उसे कभी नहीं दीखी। सुधीर उसकी बात सुनता ध्यान से था, समझता बिल्कुल नहीं था। ऐसा आदमी सामने तो जगह ले सकता है पर मन में जगह नहीं, वह बिल्कुल नहीं पर यह मानसिक स्थिति? सामने की जगह अचानक खाली हो गयी, इसलिए शायद पर

नहीं। कुछ और है। कौन नहीं है जो सिर में हवा-ही हवा भर गयी है। या कौन आने वाला है कि जिसके आगे इतना सारा शून्य ठिठका खड़ा है। या शायद मैं ही रुककर खड़ी हो गयी हूं। बहते चले जाने में अपने अस्तित्व का बोध भी बह जाता है। रुककर अपने अस्तित्व को खुद ही छूकर देखने को जी करता है। मैं और बीतता समय आमने सामने हैं। एक-दूसरे को पहचानने के लिए स्वीकारने नकारने के लिए। पर पर यह प्रश्न अचानक आ कहां से गया यह।

सुधीर के जाने के कारण उसके अनस्तित्व में चले जाने के भय के कारण? नहीं नहीं, नहीं, सुधीर का मेरी मानसिक स्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं है मेरे मानस में सुधीर कभी रहा ही नहीं वह

अविनाश नहीं आये। आज बहुत देर कर दी। आ जाते तो खुद में इतना डर न लगता। पता नहीं कितनी देर में आयेंगे। नींद भी तो नहीं आ रही। अकेले अंधेरे में अनचाहे लोग घुसे चले आते हैं

पता नहीं कैसे लोगों की कहानियां सुधीर सुनाया करता था। कितने सहज भाव से कितनी भयानक कहानियां

आदमी कैसे मरता है, कैसे जीता रहता है और आदमी म [illegible] जीने मरने से बेखबर रहता है इसकी अनगिनत कहा

सुनायी हैं उसकी अपनी नजरों के सामने घटी सच्ची कहानियां

ओह फिर सुधीर सुधीर के शरीर में फूटता अंधकार किसी को भी सौंप सकता है बत्ती जला लूं नहीं अंधकार और गाढ़ा हो जायेगा यह अन्धकार उस अन्धकार की किरणों को कुंठित करता है

यह अविनाश आज कहां जम गये ?

कुछ पता नहीं चलता अविनाश का भी

लेटे-लेटे प्रतिभा उनींदी हो आयी

या बाहर की दुनिया से अन्दर की दुनिया में लुढ़क गयी

रात के कोई दस बजे अविनाश घर में घुसे। बेहद थके हुए। रामसिंह जा चुका है। प्रतिभा के कमरे में अंधेरा है। बच्चे बत्ती खुली छोड़कर सो गये हैं। अविनाश को अटपटा लगा। प्रतिभा को जल्दी सोने की आदत नहीं है। उसके आने तक वह जरूर जागती है। बच्चे के सोने के वक्त वह उसके पास जरूर होती है। सो जाता है तो ठीक से ढकती है बत्ती बुझाती है। पर रोजाना के काम और नियमों की उपेक्षा करते प्रतिभा को किसी ने नहीं देखा। तबीयत खराब हो गयी लगती है। देखना चाहिए। खाने के मेज पर जाते जाते अविनाश प्रतिभा के कमरे की तरफ मुड़ गया।

अन्दर जाकर पलभर खड़ा रहा फिर बत्ती जला दी। प्रतिभा सो रही है। दोनों बाहों के गड्ढे में सिर दुबकाये, उलटी। प्रतिभा ऐसे कभी नहीं सोती। हमेशा सीधी सोती है। उसका चेहरा सोते हुए बहुत आकर्षक लगता रहा है। पर आज तो उसका चेहरा दीख नहीं रहा। बिना चेहरे के शरीर

अविनाश बढ़कर प्रतिभा के पलंग पर बैठ गया। उसके बालों में हद दर्जे की कोमलता से अपनी उंगलियां पिरो दीं। मुंह उसके कान तक ले गया। धीरे से पुकारा, "प्रतिभा"।

कुएं की तलहटी में डूबी बाल्टी को जैसे दस उंगलियों वाला कांटा उबार लाता है, उसकी तरह सैंकड़ों ध्वनि रश्मियों से बना अविनाश का सम्बोधन डूबी प्रतिभा को ऊपर घसीट लाया। वह जागी। करवट ली। आंखें खोलकर देखा। अविनाश को पहचाना। अविनाश ने उठने में उसे सहारा दिया, उसके दोनों कन्धों को थामकर, उस पर झुककर कहा, "क्या

हुआ प्रतिभा, तबीयत तो ठीक है ? '

प्रतिभा अविनाश से लिपट गयी। बोली कुछ नहीं। उसकी छाती पर चेहरा घिसती रही। अविनाश भी चुपचाप उसके शरीर को सहलाता रहा। जानता था, शान्त हो जाएगी तो खुद ही बतायेगी, क्या हुआ है ?

कुछ देर बाद प्रतिभा ने पूछा, "खाना खा लिया ?"

अविनाश हंस पडा। बोला, "अरे छोडोगी, तभी तो खाऊंगा। सुनकर प्रतिभा को भी हंसी आ गयी। बोली, "पहले इधर ही आ गये थे ?"

"तुम्हे देखे बिना भूख लगती कहा है।"

"हा भूख तो देखकर लगती है। चलो चलो, पहले खाना खा लो चलकर "

"तुमने खा लिया ?"

"मुझे भूख नही है।"

"तबीयत ठीक नही है ?"

"नहीं, ठीक है।"

'ठीक है ?"

"एकदम ठीक है।"

"फिर ?"

"फिर क्या—यों ही सो गयी थी।"

अविनाश चुप हो गया। जल्दी से जाकर मुंह-हाथ धोए और खाने की मेज पर आ बैठा। प्रतिभा खाना परोसने लगी थी। परोसती रही। अविनाश उसे ध्यान से देखता रहा। उसे लग रहा था कि अब भी प्रतिभा सो रही है। उसका मन मस्तिष्क फिर कहा ओर चला गया है।

रोटी का पहला टुकडा तोडते हुए अविनाश ने स्वर को उत्साह से भरकर कहा, 'प्रतिभा, वह तुम्हारी धाय मा मिली थी।"

'कौन धाय मा ?"

तुम्हारी धाय मा। सावित्री। जिसने तुम्हें पाल-पोसकर बडा किया। तुम भूल गयी ?"

'भूलूगी क्यो ? कहा मिल गयी ?"

"मिली थी। बहुत अचानक। उधर हमारी फक्टरी से परली तरफ

मजदूर बस्ती है ना वहीं रहती है। मैं एक कारीगर की तलाश में गया था कि एक झोंपड़ी के सामने पड़ी खाट पर उसे बैठे पाया। मैंने तो देखते ही उसे पहचान लिया। नमस्ते की। उसे पहचानने में देर लगी।"

"बहुत बूढ़ी हो गयी है ?'

"नहीं कमी ही लग रही थी। मैंने अपनी शादी पर एक बार ही तो देखा था। फौरन पहचान गया, उसी से समझ लो कि तुम्हें तो उससे बहुत लगाव था। नहीं ?"

"था तो। पर खाली लगाव रखने से क्या होता है। वह वहां है, मैं यहां हूं आराम से।'

'तो ? और क्या होना चाहिए था ? '

अविनाश, उसे यहां बुला लेते हैं।'

बुला लो। आ जायेगी ?'

'हां आयेगी तो नहीं। वह मुझे अपनी लड़की की तरह मानती थी, बस मैं ही उसे मां की तरह न मान सकी।'

'क्या तुम तो उसे बहुत मानती थीं।' कहकर अविनाश को लगा उसने यह बात सुनाकर प्रतिभा को और भी अनमना कर दिया है। उसने दरअसल सोचा था कि धाय मां का जिक्र प्रतिभा को हल्के फुल्के मूड में घसीट लायेगा। पर हुआ उससे उल्टा ही। वह चुपचाप खाने लगा। प्रतिभा सामने बैठी अविनाश को देख रही थी। अविनाश की आखें बहुत गहरी काली हैं। मिठास से देखना है तो अन्दर तक हिला देता है। पर अविनाश कभी अपनी आंखों का इस्तेमाल तब तक नहीं करता जब तक उसे ठीक प्रत्युत्तर की आशा न हो। इसलिए इस समय वह चुपचाप बैठा खाना खा रहा है कि अब प्रतिभा का मूड ठीक करने की कोशिश नहीं करेगा। रात को सोकर ठीक हो जायेगा।

प्रतिभा अविनाश को जानती है। वह बोर होना बिल्कुल पसन्द नहीं करता। वह समझ गयी है कि अविनाश ने खुद को वापिस खींच लिया है। उसे खीझ हुई। अन्दर कुछ कुलबुलाया। धीरे से बोली, 'तुम्हें मालूम है अविनाश हम लोग धाय मां की इतनी तारीफ क्यों करते थे ?"

नहीं क्यों ?'

"क्योकि वह कभी किसी से कुछ मागती नही थी।"

प्रतिभा न व्यग्य मे हसकर कहा।

अविनाश ने प्रतिभा की तरफ देखा। कहा, "इस पर ता किसी की भी तारीफ की जा सकती है।'

"हा वही ता। स्वाभिमान का यह स्वरूप मुझे भी बहुत माहित करता है। पर अविनाश, अपनी सारी सुख-सुविधा का आन द लेत हुए जब हम उनक गले म, जिनके पास सास लने की भी सुविधा नही होती, स्वाभिमान पहना दते है, ता मनोरजक नही लगता ? मोटर बोट पर बठ-कर डूबते आदमी की जिन्दगी बचान की लडाई की "

अविनाश ने बात काट दी, कहा, आज कोई खास घटना घटी है प्रतिभा ?'

नही। घटना कोई नही घटी। बात कह रही थी। जिसके पास कुछ नही है, किसी से यदि कुछ नही मागता वास्तव म बडी बात है, पर जिनके पास दन का सब कुछ है लोगो को जरूरत से मरते देखते रहते हैं, किसी को कुछ नही देते और मरने वाला की इसलिए तारीफ करत हैं कि उ होने किसी स कुछ नही मागा और, इसलिए बुराई करते हैं कि उसे मागने की आदत है या वह बेईमान है, या चोर है, या "

अविनाश न फिर बात काट दी, "क्या होना चाहिए ?'

प्रतिभा हस पडी बोली "मुझे क्या पता। मैं तो कह रही थी कि ये नियम कायदे, ये मान मूल्य कही कुछ लोगो की सुरक्षा के लिए ही तो प्रचारित नही किय जाते ? मैं तो

"नियम कायदे नही हाने चाहिए ?'

"सब पर लागू न हो सके तो बिल्कुल नही होने चाहिए।'

'आज तो "

कहते कहते अविनाश रुका तो प्रतिभा खिलखिलाकर हस पडी। हसते-हसते कहा, 'चैन से खा लो। कही भूचाल नही आ रहा। ऐसे देख रह हो, जैसे मुझे पहचानत ही न हो।

'तुम पहचान बदलती हो।'

"खुद को पहचानने की कोशिश मे हो तो बाहर के आदमी को एसा

लग सकता है। चलो छोड़ो। कुछ और लोगे ?"

"नहीं।"

वाशिंग पर मुंह धोकर अविनाश लौटकर आया तो उसने पाया कि प्रतिभा ड्राइंग रूम के बीचो-बीच चुपचाप खड़ी है। अविनाश आकर उसके ठीक सामने खड़ा हो गया। उसके दोनों कंधों पर अपने दोनों हाथ रखे। होंठ उसके चेहरे के एकदम पास ले जाकर कहा, "तुम अपने कमरे में सोओगी ?"

"हां।"

"डर तो नहीं लगेगा।"

प्रतिभा हंस दी, 'डर तो कभी नहीं लगा।"

"जरूरी नहीं है कि जो कभी न हुआ हो, कभी न हो। पर ठीक है, डर लगे तो पुकार लेना।"

अविनाश ने प्रतिभा के गालों पर हल्के से होंठ छुआये। एक हाथ से उसका कंधा थपथपाया। मुड़ा और "गुड नाइट डार्लिंग" कहता हुआ कमरे की तरफ बढ़ गया।

प्रतिभा कई मिनट सोचती खड़ी रही। फिर सब तरफ की बत्तियां बुझाकर कमरे में आकर पलंग पर लेट गयी। बत्ती उसने बुझा दी।

6

प्रतिभा ने सपाट लेटकर नजरें छत पर टिका दीं। दीवार पर छिपकली की तरह चिपकी घड़ी से टिक टिक कर रही है। अंधेरे के कुएं में टीकरों की तरह, एक एक करके डूबते हुए। आवाज करता आएगा और बे-आवाज डूब जायेगा। प्रतिभा कभी अंधेरे में घड़ी की तरफ नहीं देखती। इस घड़ी की सेकंड-सुई पर भी रेडियम है। अंधेरे में उसका रेंगना डराता

है। इसीलिए प्रतिभा ने अपने पलग का सिराहना घडी की तरफ कर रखा है। रेंगते जानवर की आवाज सहन की जा सकती है, पर वह दीखे भी

प्रतिभा पलकें बन्द करने से घबरा रही है।

उसको खुद मालूम नही है वह क्या सोच रही है

उठकर बत्ती जला ले ?

नही रोशनी मे आदमी नगा हो जाता है

जो भी है ढका रहे छुपा रहे तभी तक वह सच भी रहता है। सच उघड जाय तो बडा भदेस लगता है, कभी कभी घिनोना भी नही बत्ती नही जलानी है पर जिनसे डर लगता है वे अधेरे म ही आते हैं नही, सुधीर से मुझे कभी डर नही लगता वह नही है, तब भी नही हा, यह तो है, हा, यह तो आदमी का न रहना बहुत डराता है वह न रहने पर भी नही डराता था ता वह कुछ ऐसा ही

था, है नही ?

प्रतिभा को विश्वास हो गया है, अब वह कभी लौटकर नही आयेगा कभी नही

तो वह बे सिर-पर का आदमी कोई ठीक परिचय ही नही बनता था उसका कुछ लाग होते हैं जिनका परिचय ठोस नही होता पारे की तरह आकार बदलता रहता है सुधीर के चेहरे पर पारे की झलक रहती थी

सुधीर ?

प्रतिभा अभी भी छत पर ही ताक रही है

अचानक उसे दीखा घडी—छिपकली रेंगकर छत पर आ गयी है और सेकड सुई ठुमक-ठुमककर छिपकली की पीठ पर दायरे में घूम नाच रही है

प्रतिभा को हल्की सी झुरझुरी आयी। पर कुछ ही सकड बाद उसे दृश्य में रस आने लगा भय भी रसीला होता है उसने मन-ही-मन में सोचा कभी-कभी

सेकड सुई दायरे खीच रही है

हर दायरा नही हर दायरे में कुछ दृश्य उभरता है। बेआवाज। घडी

पर से टूटकर नीचे गिरता है और प्रतिभा तक आने से पहले ही अंधेरे में डूब जाता है प्रतिभा सिर्फ दूर से देख पा रही है

एक पिंजरानुमा कमरा सलाखों के पीछे खड़ा सुधीर उसके पीछे छुपी खड़ी रमा रमा की टांगों से लिपटी छोटी सी सशा और सुधीर के चेहरे पर विक्षेप उसके हाथ हिल रहे हैं उसके होंठ हिल रहे हैं उसके काले चेहरे पर सूदी आंखें बाहर निकल पड़ रही हैं वह जोर-जोर से कुछ बोल रहा है

प्रतिभा के अंदर बैठे किसी व्यक्ति ने उससे पूछा है—क्या बोल रहा है ?—और प्रश्न के साथ ही कमरे की छः फुट ऊंची छत नीचे खिसकी है सब लोगों ने कुछ पल हाथ पैर पटके मुंह को पूरा खोला है फिर छत और फर्श की मिटती दूरी के साथ मिट गये हैं सलेट पर लिखी गिनती की तरह

पर इससे पहले कि प्रतिभा चीखकर उठकर बैठती, सलेट तेजी से घूमी है नया दायरा खींचा है और नया दृश्य उभरा है

पानी की लहरें फौज के दस्ते की तरह बढ़ती हुई किनारे की रेत पर नंगे पैर भागता एक आदमी चेहरा नहीं दीख रहा भागते आदमी सब यकसां लगते हैं लहरें बढ़ रही हैं फौज बढ़ रही है आदमी भाग रहा है पूरे आसमान में चिड़िया-ही चिड़िया भर गई हैं बहुत खूबसूरत लग रही है हजारों सितारे जुगनू बन गये हैं आदमी भाग रहा है न पीछे मुड़कर देखता है न ऊपर देखता है

"यह सुधीर है ?" प्रतिभा ने खुद से पूछा है।

और पूछते ही आसमान साफ हो गया है फौज रुक गयी है चारों तरफ रोशनी हो गयी है क्योंकि भागता हुआ आदमी चिन्दी चिन्दी होकर आसमान के विशाल गड्ढे में गायब हो गया है

इस बार प्रतिभा का शरीर कांपा है उसकी पपोटों में सिलवटें पड़ी हैं होंठ हिले हैं तो वह सुधीर था सुधीर शायद अब नहीं रहा

प्रतिभा झटके से ऊपर आयी है। उसे महसूस हुआ है कि बहुत तेज प्यास लगी है। उसकी पसलियों के नीचे कुछ फड़फड़ाया है। वह हड़बड़ाकर उठ कर बैठ गयी है। हल्का सा डर लगा है। सिर में घुंघ भरी है।

वह उठी है। सोती-सी, अंधेरे में ही दरवाजा खोला है। बाहर निकली है। अविनाश के कमरे तक पहुची है। पल भर खडे रहकर उसने सोते अविनाश को महसूस किया है। धीरे से पलग पर लेटी है। मिनट भर सपाट लेटी रही फिर एक आक्रामक पशु की तरह अविनाश से लिपट गयी है। सोते सोते अविनाश ने उसे छाती से लिपटा लिया है।

कुछ दर वाद दोनो गहरी नीद में सो गये

सुबह नौ बजे सज्ञा न प्रतिभा को फोन किया।

प्रतिभा तभी तभी नाश्ते स निपटकर बैठी थी। अविनाश फैक्टरी और बच्चा स्कूल जा चुका था। अकली वठी प्रतिभा रात के सपनो क बारे में सोच रही थी कि फोन की घटी न उस चौंका दिया। लगभग इसी वक्त रोज नही तो एक दिन छोडकर सुधीर फोन किया करता था। सुधीर वापिस आ गया क्या ?

वह उठी। फोन तक पहुची। रिसीवर उठाया। कान तक पहुचान से पहले ही माउथ पीस में कहा, "हलो '

"प्रतिभा जी बोल रही हैं ?"

"हा प्रतिभा ही हू ।'

"मैं हू आटी, सज्ञा। नमस्ते। आपसे मिलना चाहती हू।"

"आओ ना। यहा आ सकती हो ?"

"आ सकती हू आटी। कब आऊ ?"

"जब तुम्हे सुविधा हो। अभी चाहो तो अभी आ जाओ।"

"ठीक है आटी, आती हू। घटे भर मे पहुच जाऊगी। ठीक रहेगा ?

"हा, हा ठीक है। सुनो सना घर में सब ठीक है न।

"बस आपसे मिलने को मन है और एक बात भी आपसे करनी है।"

"सज्ञा कोई खबर मिली है क्या ? '

"नही, खबर तो कोई नही मिली। मिली होती तो मैं सबसे पहले नही बताती। तो मैं आती हू।"

"हा, आओ। मैं इन्तजार करूगी।"

"ओ० के० '

मुह-ही मुह में ओ० के० कहकर प्रतिभा ने रिसीवर रख दिया।

उसका मन थोडा भारी हो गया। पता नहीं सज्ञा क्या बात करेगी। यह सुधीर कौन था ? आदमी न होकर आदमी का खोल। माना कि जिन्दगी का हर तीखा अनुभव शरीर का थोडा-बहुत मास नोचकर ले जाता है, आदमी को खोखला कर जाता है पर मरते दम तक रहता तो आदमी ही है। इस तरह ककाल तो नही हो जाता। इस आदमी ने क्यो इतना सहा कभी समझ नही आया। एक दुघटना किसी को पूरी तरह चकनाचूर तो नही करती। पता नही चला वह नतिक मूल्यो से अधिक बधा है, या उद्याम आवेगो से, या उसके दोनो रूप ही मात्र धोखा थे ? अपने प्रति ध्यान खीचने के तरीके ? प्रतिमा को यह भी कभी समझ नहीं आया कि वह हमेशा सुधीर के मनोभाव को लेकर दुविधा में क्यो रही ? और फिर उसके प्रति इतनी गहरी सहानुभूति प्रतिमा

जब से सज्ञा को सुधीर का पत्र मिला है और उसे सुधीर क अन्दर घूमती गिल्ट की गरारी का पता चला है उसका मन बहुत खराब हुआ है। यह क्या कमजोरी है ? गिल्ट' है तो मजा बाहर से आये इसका इन्तजार क्यो ? यह सच है कि गिल्ट का होना उसे साधारण के स्तर से ऊपर उठाता है। कितने ही लोगो ने हिन्दू मुस्लिम दगो में हत्यायें की हैं। सब चैन से खा पी रहे है। किसी मे कोई 'गिल्ट' नही है। फिर सुधीर ही क्यो हो ? पर 'गिल्ट' का न होना हा वह तो है 'गिल्ट का न होना पूरे समाज शरीर को गला दता है। दीख तो रहा है चारो तरफ। सुधीर में 'गिल्ट' हो और साथ में जिजीविषा भी हो तो क्या इस उसका अपराध मानेंगे ? गिल्ट' न हो और जिजीविषा हो तो आदमी दूसरे की कीमत पर जीना सीख जाता है। गिल्ट' न होना एक छूत की बीमारी है, एक दूसरे को लगती है। हर मूल्य नगण्य हो जाता है हर अपराध छोटा हो जाता है क्योकि उससे बडा अपराध करने वाला बराबर में खडा होता है निद्वन्द्व निर्विवेक

तो ?

तो क्या ? प्रतिभा, सुधीर के घर से चल जाने में कही तुम भी दोषी हो। तुम्हारे लिए वह मनोरजक प्राणी क सिवाय कुछ नही था। तुमने उस सहानुभूति दी उससे अपना बौद्धिक मनोरजन किया, स्नह कभी

नही दिया   नही, यह सच नही है   मैं उसमें कुछ नही कर सकती थी दोस्त जिजीविषा का साथी हो सकता है, 'गिल्ट' का नही, मत्यु बोध का तो बिल्कुल नही   सुधीर का गिल्ट' पककर मृत्यु बोध बन गया था। बडे-से बडा दास्त आदमी की चेतना में घुले मत्यु बोध को निचोडकर नही निकाल सकता

निकाल सकता हैं

नही निकाल सकता

निकाल सकता है प्रतिभा   तुम निकाल सकती थी   मत्यु बोध जिजीविषा से बडा नहीं हो सकता   तुम उसकी जिजीविषा बन चुकी थी, पर   मैं क्या करती वह ? मैं अपना बलिदान क्यो करती ? मैं अपने से झूठ क्यो बोलती ? मैं सुधीर से प्रेम नही करती थी

वही तो प्रतिमा   वही समस्या है   सम्बन्धो का आधार जहा अपना सुख हो

बको मत। सुख की नही सच की बात कर रही हू ।

प्रतिमा सोचकर देखो। या शायद सोचो मत, महसूस करके देखो। सोचकर आदमी सच को झूठ और झूठ को सच बना लेता है

मुझे ऐसा करने की कोई जरूरत नही है

बात जरूरत की नही स्वभाव की है

सोचते-सोचते प्रतिभा सुन हो गई। उसके पूरे दिमाग मे झनझन होने लगी   बहुत देर वह इसी हालत में बठी रही। यह भी भूल गयी कि सजा आन वाली है। अन्दर उसके छाट-छाट चक्रवात उठत घूमते रह और उसक दिमाग को काटते रह

अचानक वह जोर से बोल पडी, "नही, मैं कुछ नही कर सकती थी। अपनी ही केंचुली म बधे पडे आदमी के ब धन कोई नही खोल सकता। वह चाहता तो अपना इलाज कर सकता था। जिसने अपने सारे अग प्रत्यग अपने ही खोत म छिपा रखे हो, उसे भला   "

कहत कहते प्रतिभा सकोच और आत्म ग्लानि से भर उठी। उसका मन और भी किचमिचा होता पर तभी दरवाजे की घटी बजी और प्रतिभा

ने खुद को सभाल लिया। नौकर को आवाज देने के वदले ;उठकर खुद ही दरवाजा खोलने चल दी।

7

सज्ञा प्रतिभा के घर पहली ग्फा ही आयी थी। ड्राइग रूम म दोनो जनी वरावर-वरावर बैठी। दोनो के मन दुविधा जडित थे। दुविधाए अलग-अलग थी। प्रतिभा मन ही मन निश्चय कर रही थी कि सुधीर क 'गिल्ट की बात सज्ञा को वता देगी। और सज्ञा सोच रही थी कि कहानिया छपवाने की बात प्रतिभा को कही बचकाना न लगे। वह यह भी चाहती थी कि घर और किसी समस्या का जिक्र न ही आये तो अच्छा है। उधर वह मुग्ध भाव से प्रतिभा का रूप भी देख रही थी। उस ज्वलन्त रूप ने भी उनके मन मे पैदा हुए सकोच को थोडा नुकीला किया था। प्रतिभा वसे कई दफा घर गयी थी पर इतनी सुन्दर वह सना को कभी नहीं लगी थी। उन दिनो म उसने ध्यान से देखा भी नही था।

प्रतिभा ने वात शुरू की कैसी हो सना?"

'ठीक हू आटी।'

"और रगा जी?'

'वह भी ठीक हैं आपको अक्सर याद करती हैं।'

"क्या लोगी? चाय या कॉफी?

"कुछ भी। जो आपको ज्यादा पसन्द हो।"

प्रतिभा हस पडी बोली 'आज तो हम वह पियेंगे जो तुम्हे ज्यादा पसन्द हो।

सज्ञा भी हस दी। प्रतिभा की आवाज की मिठास स वहुत प्रभावित हुई। बोली तो चाय ही वनवा लीजिये।'

प्रतिभा ने नौकर को आवाज देकर दो कप चाय बनाने को कह दिया। कहकर वह थोडा अपनी कोच मे मुडी। सज्ञा के कंधे पर रखे हाथ पर अपना हाथ रखा और नरल स्नेह से कहा, "हा सुना क्या बात करने को कह रही थी?'

सना अचानक कुछ बोल नही पायी। अन्दर-ही-अन्दर बात का सिर ढूढती रही। देर होती देख, प्रतिभा ने और भी स्नेह से कहा, "अरे सज्ञा तुम, तुम और सकोच? मैंने तो सुना था सकोच जैसी हल्की चीज तुममे जरा भी नही है।"

सज्ञा हस दी, बोली, "आपने किससे सुना? पापा ने कहा होगा। ह आटी उनके सामने कुछ भी कहने मे मुझे कभी सकोच नही हुआ। बहुत बहस करती थी उनसे।"

पर आखिरी बात कहते कहते सज्ञा की आवाज भारी हो गई तो प्रतिभ ने फौरन बात को सभालते हुए कहा, "मेरे सामने भी तुम्ह कोई सकोच नही करना चाहिए। चाहो तो मुझसे भी बहस कर सकती हो।" प उससे पहले वह बात तो शुरू करो जिस पर तुम

'आटी, आपको मालूम है, पापा घर से जाने को मजबूर क्यो हुए?

प्रतिभा स्तब्ध रह गयी। इस प्रश्न की उसे बिल्कुल आशा नही थी पर चुप रहना, उसने सोचा, और भी अनुचित होगा, इसलिए लगभग फौर ही कहा इसका ठीक उत्तर देना तो सना मेरे लिए बहुत मुश्किल है फिर भी यह मुझे हमेशा लगा कि तुम्हारे पापा के मन पर कोई वजन थ जो बराबर उनके व्यक्तित्व की खडें खोखली कर रहा था। उनका मन ह चीज से उचटता था। बच-बचकर चलना उनका अभ्यास "

सज्ञा ने बात काट दी पूछा, 'आपको कुछ अन्दाजा है वह किस बा का वजन हो सकता है।'

प्रतिभा चुप रह गयी। दुविधा की एक आधी उसके दिमाग को झिझो गयी। यह लडकी अपने पिता का यह कडुआ सच झेल पायेगी? कही टू न जाये? पिता को बहुत प्रेम करती है। अन्दर के अमृत विश्वास का केन्द्र बिन्दू मानती है पिता को। हत्या की बात सुनकर कही चौंक न उठे। सारे हरे पत्ते झड जायें। इतनी कम उम्र का ठूठ ?

प्रतिभा को चुप देखकर सज्ञा ने बहुत धीरे से कहा, "पता हो तो बताना जरूर आटी।"

प्रतिभा फिर भी कुछ नही बोल सकी। कुछ देर चुप रहकर बोली, "ठीक तो कुछ मालूम नही है सज्ञा।"

सज्ञा का स्वर अचानक ठडा हो गया। उसने कहा, 'आपको मालूम है आटी। मुझे विश्वास हो गया।"

प्रतिभा को लग गया कि अब बिना बताये निस्तार नही है। उम्र मे अपने से इतनी छोटी के सामने इसके हित के लिए भी वह झूठा पडना नही चाहेगी। उसने धीरे से कहा, "तुम ठीक समझी हो सज्ञा, मुझे मालूम है। पर सोचती हू तुम कही "

सज्ञा ने फिर बात उठा ली, "आटी, पापा के न होने से अधिक असह्य बात मेरे लिए और क्या हो सकती है।

प्रतिभा ने हामी भरी, "हा, यह बात तो सच है सज्ञा। तो, ठीक है, बताती हू।'

प्रतिभा ने नौकर को आवाज दी। चाय जल्दी लाने को कहा। फिर सज्ञा से कहा, *"तुम इधर आओ सना, ठीक मेरे सामने।"*

सना चुपचाप जहा इशारा किया गया था, बैठ गयी।

प्रतिभा ने कहना शुरू किया, "तुम्हारे पापा का एक पत्र उनके जाने के बाद मुझे मिला था। उसी के जरिये उन्होने बताया कि उनके सिर पर एक हत्या का वजन है। सन सतालीस के हिन्दू मुस्लिम दगो मे उनके हाथ से एक मुसलमान मारा गया था और तब से उनका व्यक्तित्व उनके खुद के लिए एक पहेली बन गया। उन दिनो की बहुत सी घटनाए पहले भी वह मुझे सुनाया करते थे। कैसे आदमी को मारकर लोगो ने धन लूटा और वे इज्जतदार आदमी बने बैठे हैं। पैसे वालो के बारे मे वह यह मानने को *तैयार ही नही होते थे कि किसी-न किसी तरीके से आदमी को मारे बिना* कोई इतना धन इकट्ठा कर सकता है।

'मुझे तो हमेशा लगता रहा सना कि जो भी उनसे सहानुभूति-स्नेह *रखता था उससे कही गहरे मे वह घृणा करते थे। खुद से खिलवाड करना* शायद उनका स्वभाव बन गया था। तुम्हे सच बताऊ सज्ञा, मेरे वह बहुत

प्रिय दोस्त थे। पर मैं हमेशा उनसे डरती रही। कभी उनके प्रति आश्वस्ति का भाव नहीं जागा '

बोलते बोलते अचानक प्रतिभा को लगा जैसे वह विषय मे भटक रही है। एकदम अपनी ही बात काटकर बोली, "यही वह घटना है सज्ञा जिसने सुधीर के व्यक्तित्व को विकृत कर दिया था। शायद।"

सना ध्यान से सुन रही थी। धीरे से पूछा, "आपको इस का विश्वास है आटी कि पापा ने ऐसा किया होगा ? यानी वह ऐसा कर सकते हैं, आपको भरोसा होता है ?"

प्रतिभा का मन भर आया। स्नेह से सज्ञा की तरफ देखकर कहा सज्ञा, "ऐसी बात म कोई अपने ही बार मे झूठ क्यो बोलेगा।"

"तो आपको विश्वास है ?"

"सुधीर ने खुद लिखा है।"

'आटी, आपको उन्होने अपनी लिखी कुछ कहानिया पढवायी थी क्या ?'

"हा, कुछ तो मैंने पढी है।"

"कैसी लगती हैं ?"

"मुझे तो बहुत अच्छी लगी हैं।"

'म उसी सिलसिले मे आपके पास आयी थी। मैं चाहती हू कि उनकी कहानिया का एक सकलन छप।'

"जरूर छपना चाहिए।"

"पर मैं तो किसी को जानती नही।'

"मैं जानती हू तुमने कहानिया निकाल ली हैं क्या ?'

"हा आटी, बीस कहानिया मैंने छाटी हैं। लायी हू आप भी देख डालिये मेरा यह काम करा दीजिये आटी। मैं पापा की एक किताब छपी हुई देखना चाहती हू।"

'मैं पूरी कोशिश करूगी सज्ञा आशा करो कि हो ही जायेगा। मेरे लिए भी यह बहुत खुशी की बात होगी।"

फिर पलभर रुककर बोली, 'सुधीर ने ऐसा किया होगा, तुम्हें विश्वास नही है ?'

प्रतिभा को चुप देखकर सज्ञा ने बहुत धीरे से
बताना जरूर आटी।"

प्रतिभा फिर भी कुछ नही बोल सकी। कुछ देर
"ठीक तो कुछ मालूम नही है सज्ञा।"

सज्ञा का स्वर अचानक ठडा हो गया। उसन कहा, "
आटी। मुझे विश्वास हो गया।"

प्रतिभा को लग गया कि अब बिना बताये निस्तार
अपने से इतनी छोटी के सामने इसके हित के लिए भी वह
चाहेगी। उसने धीरे से कहा, "तुम ठीक समझी हो सज्ञा,
पर सोचती हू, तुम कही

सज्ञा ने फिर बात उठा ली "आटी पापा के न होने से
बात मेरे लिए और क्या हो सकती है।'

प्रतिभा ने हामी भरी "हा, यह बात तो सच है सज्ञा।
बताती हू।"

प्रतिभा ने नौकर को आवाज दी। चाय जल्दी लाने को
सज्ञा से कहा, "तुम इधर आओ सना, ठीक मेरे सामने।"

सना चुपचाप जहा इशारा किया गया था, बैठ गयी।

प्रतिभा ने कहना शुरू किया, "तुम्हारे पापा का एक पत्र
के बाद मुझे मिला था। उसी के जरिये उन्होने बताया कि उन
एक ह या का वजन है। सन सतालीस के हिन्दू मुस्लिम दगो मे
से एक मुसलमान मारा गया था और तब से उनका व्यक्तित्व
के लिए एक पहेली बन गया। उन दिनो की बहुत सी घटनाए पर
मुझे सुनाया करते थे। कसे आदमी को मारकर लोगो ने धन लू
इज्जतदार आदमी बने बैठे हैं। पैसे वालो के बारे मे वह यह
तैयार ही नहीं होते थे कि किसी-न किसी तरीके से आदमी को
कोई इतना धन इकट्ठा कर सकता है।

'मुझे तो हमेशा लगता रहा सना कि जो भी उनसे सहानु
रखता था उससे कही गहरे म वह घृणा करत थे। खुद से खिलव
शायद उनका स्वभाव बन गया था। तुम्ह सच बताऊ सज्ञा, मेरे

प्रतिभा सकोच-जड हो गयी । चुप रही ।

पर सज्ञा प्रवाह मे थी। बोली, "आपसे पापा ने कभी बताया था कि मैं आपसे मिलने को बहुत उत्सुक थी ? '

"दरअसल, मैं पापा से इतना लडती थी कि मेरी इस इच्छा को कभी वे 'सीरियसली' ले ही नही पाये शायद कभी उन्हे ऐसा भी लगा हो कि यह भी मेरे हर समय उछलते विद्रोह का ही एक रूप है। पर आज आपसे सच बता रही हू । बडी इच्छा थी आपको देखने की। जानती है क्यो ? मैं बतानी हू । मैंने इन दिनो से पहले पापा को कभी किसी चीज से डरते नही देखा था ओह ऐसा बालक, आपने आटी, कोई देखा है जो दिन भर मेहनत करके एक खिलौना बनाये और शाम को उसी को लात मारकर तोड दे और खिलखिलाकर हसे, खूब हसे, या उदास होकर ऐसे बैठ जाए जसे उसका खिलौना किसी और न तोडा हो मैं और अम्मा जब भी उन्ह रात को घर आने मे देर होती तो हमेशा सोचती, पता नही आयेंगे कि नही । रात के एक-एक दो दो बजे तक बियाबान सुनसान इलाको म अकेले घूमते रहते। मा पूछती—तुम्ह डर नही लगता ? तो हसकरकहते डर काह का ? पर ये सब कहानिया पढी तो लगा कि इनके लेखक से अधिक भयभीत आदमी तो मिलना ही मुश्किल है। सोचती रही। उनके बारे मे बहुत से किस्से सुने थे। हमेशा यही पता चला कि डर उन्ह छू नही गया। जिन दगा का जिक्र आप कर रही हैं उनके बारे मे उनके दूर के एक रिश्तदार बताते थे कि कसे वह बेधडक खतरा म घुस जाते थे। रात के सन्नाटे म मीलो मील सियार कुत्तो की आवाज सुनते हुए गाव के बीहड रास्ता म भटकना उन्हें रस देता था। एक बार किसी दोस्त की बहिन गायब हो गयी। इन्होने उद्धार का बीडा उठाया। शहर के एक बहुत भयानक गैंग क कब्जे से वह मिली। गग के कुछ लोग पकडे गये। उनमे से एक की बहिन एक दिन अम्मा के पास आयी, बोली।

"चूडिया फोड ले, तेर उस करतार को जिन्दा नही छोडेंगे। जो रग-रलिया मनानी हो दो चार दिन मना ले।' अम्मा दिन भर रोती रही। शाम को पापा घर आये तो उन्ह बताया। पापा जोर से हस पडे। बोले—तुम्हे पता है रमा मैं सत्तर साल की उम्र से पहले नही मरूगा। मेरे हाथ

सना अपने कालिज के बस्ते म से कहानिया निकाल रही थी। बस्ते पर झुके-झुके ही बोली, "मुझे विश्वास है आटी, मेरे पापा ऐसा नही कर सकते थे।"

प्रतिभा धक से रह गयी। सना के स्वर का विश्वास उसे चौंका गया। फिर भी उसने पूछा, 'यह सिर्फ विश्वास भी होता तो हो सकता है।'

सना ने कहानिया निकाल ली थी प्रतिभा को थमाती हुई वह एक हसी हस दी। बोली, "आटी, ये कहानिया न पढी होती तो निश्चय ही मैं भी आपकी तरह विश्वास कर लेती। पर इन्हे पढकर मुझे लगा है कि जो आदमी कल्पना मे टाइम स्पेस, इतिहास और सारे मानवीय सम्बन्धो को पिघलाकर गडड कर सकता है, वह अपने या किसी के भी बारे कोई भी कल्पना कर सकता है। दृश्य मे अपनी जगह किसी और को और किसी की जगह खुद को बिठा सकता है। पापा को झूठी कहानिया सच्ची बना बनाकर सुनाने का शौक था। हम लोग हमशा उन पर हसते थे। मुझे मालूम है आटी, पापा पक्के झूठे आदमी थे।'

कहकर रमा निर्द्वन्द्व भाव स हस दी और इस बार प्रतिभा की बारी थी मुग्ध होने की। वह मिनट भर उसे देखती रही फिर आगे बढकर उसके कन्धे पर अपना हाथ रखकर बोली "तुम्हारा विश्वास ही जीते, सुधीर झूठे आदमी साबित हो।

'आटी किताब के लिए पूरी कोशिश करना।"

'तू चिन्ता न कर सना यह हो जायेगा। तू कह सकती है ना ?"

सना बहुत खुश हुई, बोली, "अरे आटी इतनी देर से दम घुट रहा था, अब ठीक हुआ है।'

नौकर चाय रख गया था। दोनो ने चाय प्यालो मे डाली और पीने लगी। पीते पीते अचानक सना ने कहा "आपको एक बात बताऊ आटी।"

हा क्या ?'

'पापा आपको बहुत प्रेम करते थ।"

प्रतिभा हस पडी, 'पगली।'

"सच आटी रात को मैं देर तक पढती होती तो अक्सर उन्ह बुदबुदाते सुनती—आपका नाम।'

प्रतिभा सकोच-जड हो गयी। चुप रही।

पर सज्ञा प्रवाह मे थी। बोली, "आपसे पापा ने कभी बताया था कि मैं आपसे मिलने को बहुत उत्सुक थी?"

"दरअसल, मैं पापा से इतना लडती थी कि मेरी इस इच्छा को कभी वे 'सीरियसली' ले ही नही पाये शायद कभी उन्हे ऐसा भी लगा हो कि यह भी मेरे हर समय उछलते विद्रोह का ही एक रूप है। पर आज आपसे सच बता रही हू। बडी इच्छा थी आपको देखने की। जानती है क्यो? मैं बताती हू। मैंने इन दिनो से पहले पापा को कभी किसी चीज से बधे नही देखा था ओह ऐसा बालक, आपने आटी, कोई देखा है, जो दिन भर मेहनत करके एक खिलौना बनाये और शाम को उसी को लात मारकर तोड दे और खिलखिलाकर हसे, खूब हसे, या उदास होकर ऐसे बैठ जाए जैसे उसका खिलौना किसी और ने तोडा हो मैं और अम्मा जब भी उन्ह रात को घर आने मे देर होती तो हमशा सोचती, पता नही आयेंगे कि नहीं। रात के एक-एक दो-दो बजे तक बियाबान सुनसान इलाको म अकेले घूमते रहते। मा पूछती—तुम्हें डर नही लगता? ता हसकर कहते डर काहे का? पर ये सब कहानिया पढी तो लगा कि इनके लेखक से अधिक भयभीत आदमी तो मिलना ही मुश्किल है। सोचती रही। उनके बार म बहुत से किस्से सुने थे। हमेशा यही पता चला कि डर उन्ह छू नही गया। जिन दगो का जिक्र आप कर रही है उनके बारे मे उनके दूर के एक रिश्तदार बताते थे कि कैसे वह बेधडक खतरो म घुस जाते थे। रात के सन्नाटे म मीलो मील सियार कुत्तो की आवाज सुनते हुए गाव के बीहड रास्तो म भटकना उन्हे रम दता था। एक बार किसी दोस्त की बहिन गायब हो गयी। इन्होने उद्धार का बीडा उठाया। शहर के एक बहुत भयानक गग के कब्जे से वह मिली। गग के कुछ लोग पकडे गये। उनमे से एक की बहिन एक दिन अम्मा के पास आयी, बोली।

"चूडिया फोड ले, तेर उस करतार को जिन्दा नही छोडेंगे। जा रग रलिया मनानी हो दो चार दिन मना ले।' अम्मा दिन भर रोती रही। शाम को पापा घर आये तो उन्ह बताया। पापा जोर से हस पडे। बोले—तुम्हें पता है रमा मैं सत्तर साल की उम्र से पहले नही मरूगा। मेरे हाथ

म यही लिखा है।

और उस धमकी के बावजूद वही रात को ग्यारह-बारह एक बजे घर आना और निश्चिन्त भाव स—और कहानियां म बस डर ही डर। आप बता सकती हैं आंटी, यह क्या रहस्य है।"

प्रतिभा ध्यान से सुन रही थी। बोली 'रहस्य तो है। तू ही बता। तूने कुछ सोचा लगता है।"

"हा आंटी, मैंने सोचा है। आदमी मरकर जिन्दा हो जाये तो डर लगता है ना ?

प्रतिभा ने हामी म सिर हिला दिया और अपनी बडी-बडी आखें सन्ना पर टिका दी।

सन्ना ने कहा, 'बस, शायद ऐसे ही कोई घटना अगर अन्दर दोबारा जिन्दा हो जाए तो बहुत डर लगता है। जैसे मरकर जिन्दा हुए आदमी का चेहरा विकृत और डरावना होता है। आंटी, युद्ध हो रहा हो तो कोई नही डरता, या युद्ध से पहले डर लगता है या युद्ध होने के बाद, उसे याद करके। दूसरे विश्व-युद्ध के युद्ध-बन्दियों को जब उन्ही के कारनामों की रीलें दिखायी गयी तो उनमे से कई एकदम पागल हो गये, न्यूरेम्बर्ग ट्रायल के समय दरअसल डरावना या तो भूत होता है या भविष्य और जिस आदमी के दिमाग मे भूत और भविष्य पिघलकर एकरस हो जाय और ऐसा आदमी बाहर से तो सिर्फ रोशनी लेता है, दृश्य तो उसके अन्दर ही होते हैं और फिर डर ही डर पर यह डर वह व्यक्त तो तभी करता है ना, जब अन्दर देख रहा हो, यानी लिखते हुए पापा ने जो बाहर देखा

प्रतिभा को अन्दर से थोडी घबराहट महसूस हो रही। उसने सन्ना को टोक दिया, 'तो तुम्हे विश्वास नही है कि सुधीर ने हत्या की होगी।'

सन्ना आधा मिनट चुप रही। अपने दिमाग मे फूलता फलाव उसने समेटा। हल्की सी हसी। फिर धीरे से कहा, "आपको विश्वास हो तो मैं भी कर लेती हू।"

क्या मतलब ?"

'मेरा मतलब कि पचास आदमी पाच आदमियो को मारने गये। इनमे पाच ने पहल की। एक एक को मार दिया। तो क्या बाकी के पैंतालीस

निर्दोष हैं। मेरे विचार से तो जब जर्मनी की फौजो ने पोलड, चेकोस्लाविया और फ्रास मे नरसहार किया तो उस वक्त उस देश का हर नागरिक हत्यारा था। उसके बाद बहुत से नवयुवको ने इस दबाव म आत्महत्या की और आटी हमारे यहा जो भूख से हत्याए होती हैं वे हम सब लोगो की की हुई हत्यायें हैं। कल ही अखबार मे पढा था कि एक मा न भूख स तग आकर पहले अपने दो बच्चो का कुए म फेंका, फिर खुद कूद पडी बाद मे पुलिस पहुची और लाशें बाहर निकालकर आत्महत्या का केस रजिस्टर किया आपको हसी नही आती आटी ? हम लोग समूह समाज की बातें करते हैं और सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी से कतराते ह मुझे खुशी है आटी, अगर पापा उस सामूहिक अपराध की जिम्मेदारी लेना चाहते हैं और सोचन पर गव का अनुभव भी होता है, पर मेरे ख्याल स ।

प्रतिभा अचानक उठकर खडी हो गयी। सना के दोना कधो पर हाथ रखकर उस पर झुकी। उसका सिर चूमा। स्नेह विगलित कण्ठ से कहा, "सज्ञा बेटे, मैं समझ गयी। एकदम समझ गयी पर यह तो बता, इतनी सी उमर मे इतनी तकलीफ, इतनी चेतना

' चेतना हाती है तो इसी उम्र म होती है।

"हा वह तो है। मेरी एक बात का विश्वास करोगी ?

"करूगी आटी।"

"मैं सौ फीसदी तुम्हारे साथ हू। और तुम मुझे अपना समझोगी। अपनी मम्मी स भी कहना कि मैं सुधीर की ही दोस्त नही थी उनकी भी हू। वे भी उतनी ही प्रिय हैं मुझे।"

सज्ञा के चेहरे पर से एक काली छाया तेज़ी से तरकर निकल गयी। मन का मल साफ करने के लिए वह जोर से हसी। बोली, ' कह दूगी आटी। पर उन्हें आपसे एक शिकायत है, और शायद मुझे भी।"

"मुझसे क्या ?" प्रतिभा ने चकित होकर पूछा।

"आप चाहती तो पापा को जाने स रोक सकती थी।"

प्रतिभा टक भरकर सना को देखती रही। कही सज्ञा यह तो नही कह रही कि सुधीर उसकी वजह से चला गया। नही, सज्ञा की दष्टि स्वच्छ है। आरोप नही है। उसमे बस वेदना है। और अगर कर भी रही हा तो

हज क्या है। सुधीर मेरा दोस्त था। उसकी त्रासदी की जिम्मेदारी

प्रतिभा न आत्म विश्वास से सीधी गदन करके कहा, "मैं उसका प्रायश्चित करूगी सना, मुझे पता नही तुम्हारा वह विश्वास सच है या नही। पर तुमने मेरी चेतना की जडता को दूर किया है, मैं आभारी हू।"

"नहीं आटो ऐसा न कहो। शर्मिन्दा न करो।'

"सच कह रही हू।"

सज्ञा चलने लगी तो अचानक रमा ने पूछा "अरे, सज्ञा, तुम्हारे क्वाटर क मुकदम का क्या हुआ?"

"वह तो आटी हार गये। तारीखो पर कोई जा नही सका। और इकतरफा फसला हो गया '

"ता?'

'इसी महीन म मकान खाली करना होगा।'

'ओह बताया नही। खैर चिन्ता न करना। और आइन्दा तुम मुझस कुछ नही छिपाओगी। यह मेरा हुक्म है।"

सना हस पडी। बोली, "अच्छा आटी।'

फिर और भी हसकर बोली 'सिफ घर की या अपनी भी सब बातें बतानी होगी।'

प्रतिभा स्नह से गदगद हो उठी। सज्ञा को एकदम बगल म दबाकर कहा, 'अपनी पहल कुछ है क्या?"

"होगी तो, जरूर बताऊगी। वायदा।

प्रतिभा ने सोचकर कहा, किसी दिन भास्कर को लाना साथ।' उसने एक दिन भास्कर का सुधीर के घर देखा था।

सना न मचलकर कहा 'अन्दाजे न मारो आटी, मैं, खुद ही बता दूगी। और एक काम्पलिमट दू—आप बहुत खूबसूरत हैं। कोइ भी आप से बच सकता है।

अच्छा' प्रतिभा ने हसकर कहा।

फिर कहा, 'सुबह फान करना सज्ञा।"

'करूगा आटी। पर एक बात है।"

'क्या?'

"आप फोन पर हसेंगी नही। नही तो मेरे हाथ से रिसीवर छूट जायेगा। इतनी मिठास मुझसे बर्दाश्त नही होती।"

और दोनो जनी खिलखिलाकर हस पडी।

वापिस आकर कोच मे डूबते-डूबते प्रतिभा के मुह से निकला, "बाप की तरह पागल है।"

पर डूबकर वह इतने गहरे म खो गयी कि घटो उसे अपना कोई अता-पता नही रहा।

8

रात को खाने पर अविनाश बहुत ही हल्की-खुश मुद्रा म था। पर अपनी आदत के अनुसार कोशिश करके प्रतिभा अविनाश का साथ नही दे पायी। वह चुप बैठी चबा-चबाकर खाना खाती रही। गरदन झुकाकर सब्जी की कटोरी म ताकती हुई। यह उसका खास अदाज है। अविनाश जानता है, प्रतिभा कही और है। वह लडके से हसी मजाक करने लगा। प्रतिभा को उसने अकेला छोड दिया। यह सच था कि प्रतिभा अपने मे डूबी थी। पर उसे अच्छा नही लगा कि उसे इस तरह अकेला छोडा जा सकता है। उसने धीरे से कहा, "अविनाश।'

अविनाश प्रतिभा की वापसी स बहुत खुश हुआ। एकदम पूरा ध्यान प्रतिभा की तरफ फेंककर बोला, "यस डार्लिग।"

'तुम्हे एक कहानी सुनाऊ?'

"नयी लिखी है?"

"नही कहानी तो बहुत पुरानी है। हुई पता नही कब थी? पहले इसे शेक्सपीयर ने लिखा था पर मैं इसे दूसरा मानी देना चाहती हू।

सुनोगे ?"

अविनाश प्रतिभा के स्वर की खुश्की से परेशान था। मगर बोला, "सुनाओ।"

प्रतिभा ने सिर को हल्के से और झुकाया बोली, "कोई नयी कहानी नही है अविनाश, यही जूलियस सीजर की हत्या की कहानी। सब सभासदो ने मिलकर फैसला किया कि सीजर को मारना है। तय हुआ, सभासद अपना छुरा सीजर के खून मे डुबोयेगा। और फैसले के हिसाब से सीजर मारा गया। शेक्सपीयर की ट्रेजडी यह थी कि सीजर को मारने म उसका बहुत नजदीकी और प्रिय दोस्त ब्रूटस भी शामिल था सीजर ने अन्त म कहा भी—येट्ट ब्रूटस।—पर मैं सोचती हू कि कब हम किसी के भी मरने पर सामूहिक जिम्मेदारी मानने का नैतिक साहस अपने अन्दर पैदा कर सकेंगे? कब होगा कि कोई मरेगा और हम कहेंगे—इसे भगवान ने नही, हमने मारा है।"

अविनाश यकायक गम्भीर हो उठा, बोला, 'मैं कुछ समझा नही प्रतिभा क्या हुआ ?"

प्रतिभा ने कहा "आज सज्ञा आयी थी।"

"ओह तो?"

'सुधीर का कुछ पता नही चला।"

"हू

'व लोग मुकदमा हार गये। इसी महीने मकान खाली करना है।"

'अरे यह तो बुरा हुआ।

"हा बहुत बुरा हुआ।'

और एक मिनट रुककर बोली, कल-परसो के अखबार म एक खबर छपी थी तुमने पढी थी।"

'कौन-सी खबर ?"

'स्टेट्समैन के पाचवे पेज के एक कोने मे छपी एक डेढ इच की खबर। एक औरत ने अपनी दो बच्चियो को कुए मे फेंक दिया फिर खुद कूद पडी। पुलिस ने तीनो की लाशें निकाली। माना जाता है कि गरीबी से तग आकर मा ने ऐसा किया। वह खुद बरसो से बीमार थी। मैं

पूछती हू अविनाश उसकी मृत्यु का कौन जिम्मेवार है ? किसी को भी ट्रेजेडी उसकी व्यक्तिगत नियति क्यो होती है। बता सकते हो अविनाश, कोई अकाल मत्यु मरता है तो कौन उसे मारता है ?"

अविनाश जोर से हस पडा, "कम-से-कम मैं नही मारता, मैं दावे से कह सकता हू कि मैं कभी किसी की मत्यु का जिम्मेवार नही हू।"

पर प्रतिभा उसी तरह गम्भीर बनी रही। उसने अपने सामने रखी प्लेटें एक तरफ खिसकाते हुए कहा, "मैं जानती हू अविनाश कि तुम नही हो। पर हम हैं—हम सब। वह किसका वाक्य था—जब तक दुनिया मे एक भी आदमी भूखा है, विश्व शाति की बातें करना मूखता है और और विश्व युद्धो को कोई नही टाल सकता।"

अविनाश ने धीरे से कहा, "तुमने खाना क्यो छोड दिया ?"

प्रतिभा आवेश मे आकर उठकर खडी हो गयी। । उठकर अपनी कुर्सी के पीछे खडी हो गयी। कहना शुरू किया, "नही अविनाश मुझसे निगला नही जाता। कोई मा अपने बच्चे को उछालकर कुए मे फेंक दे और फिर खुद को भी कुए म धकेल दे—कल्पना कर सकते हो उस मा की मन-स्थिति, कितना फफूद उसके दिमाग पर उसे आया होगा कितने काटे उसके शरीर मे उग आये होगे कितना गाढा अधेरा उसकी आखो मे और हम लोगो के लिए वह बस एक खबर है—डेढ इच, सिंगल कालम कैसे खा पाते हैं हम यह खाना, यह खबर पढकर भी ?"

"क्या करना चाहिए प्रतिभा ?"

"मुझे पता नही अविनाश, पर मैंने अपने लिए तय कर लिया है।"

"क्या ?"

"धीरे धीरे पता चल ही जायेगा।"

और अविनाश को अपनी तरफ देखना छोडकर वह अपने कमरे मे घुस गयी और अन्दर से चटखनी बद कर ली। कमरे की बत्ती पहले ही जली हुई थी। सुधीर की कहानियो की फाइल उसके पलग पर रखी थी। अविनाश के आने से पहले ही उसने तय किया था कि वह आज सब कहानिया पढकर ही सोयेगी।

रात का एक बज गया। प्रतिभा ने बीसो कहानिया पढ डाली।

हाथ की फाइल पलग के पास तिकोनी मेज पर रखकर वह बुदबुदायी ये कैसी कहानिया हैं ? नीचे बहता लावा, ऊपर सुनहरी धूप—आधे आसमान पर—और आधे आसमान मे घुप इबो लेने वाला अंधेरा आधी पर तैरते तिनके—पत्ते—धूलकण तेज हवा, काले सपाट शून्य के दरवाजे पर दस्तक देती और शून्य के गोल कमरे म बनी खिडकी की सलाखो के पीछे खडा सुधीर—द्रष्टा—लेखक—भोक्ता—और अपने ही अस्तित्व का कैदी सष्टा के गव से मुक्त भोक्ता के वेदना म आकठ हुआ

ओह सुधीर, ये कहानिया तुमने मुझे पहले पढ़ने को क्यो नही दी ? शायद मैं तुम्हारे अन्दर जमे शून्य, तुम्हारा दम घोटते और बफ को पिघलाने मे थोडा-बहुत सफल हो सकती अब क्या करू ? तुम्हारे अतिरिक्त की यथाशक्ति सहायता करके 'कान्सोलेशन प्राइज' मारू ? खुद को गौरवान्वित अनुभव करू, क्योकि मुझमे तुम्हारी पत्नी, पुत्री और और बच्चो के प्रति करुणा हुई ? किसने की ? तुम्हारे कैद से बाहर निकलने के सारे रास्ते किसने बन्द किये ? सुधीर तुम वापिस आओ मैं तुम्हें एकदम ठीक कर दूगी, तुम्हारे अन्दर के सारे भय को जो तुम्हारी चेतना पर कालिख की तरह पुता है पोछकर साफ कर दूगी फिर मुझे मालूम है तुम्हारी चेतना से सतरगा प्रकाश फूटेगा तुम

मैं सच कहती हू सुधीर, तुम आओ, और लौट आओ और देखोगे कि कसे तुम्हारे अन्दर का जड अन्धकार बहकर बाहर निकलता है कैसे तुम्हारे आधे अंधेरे आकाश मे भी चौंधिया दने वाला प्रकाश छा जायेगा कैसे तुम्ह लाचार रखने वाली सलाखें मोम की तरह पिघलकर खुद तुम्हें बाहर आने का इशारा करेगी सुधीर तुम तो कहते थे, तुम मुझे बहुत प्रेम करते हो तुम चाहोगे कि मैं भी उम्र भर इस आग मे सुलगती रहू कि मैंने भी एक हत्या की है और वह भी उसकी जिस मैं अनचाहे ही प्रेम करने लगी थी और बहुत छोटे-छोटे कारणा मे जिसके सामन और अपने सामने भी स्वीकार नही कर पायी सुधीर तुम नही आय तो मुझे खुद से इम रूप से, इस समद्धि से नफरत हो जायगी वह खुदी जो बस अपनी सुख कामना की चहारदीवारी हो वह रूप जो बस मुख के एक क्षण का उच्छवास हो और समृद्धि चेहरे पर चढाई गयी एक 'वैनिशिंग क्रीम'

मैं इन सबसे नफरत करके इनके अर्थों को महत्व देना नही चाहती पर यह तभी हो सकता है जब

"प्रतिभा खुद को धोखा दे रही हो।"

"क्यो ?"

"तुम सुधीर से न प्रेम करती हो, न कर सकती हो।"

"क्यो नही कर सकती ?"

"देखा, करती होती तो कहती—मैं करती हू—यह नहीं कि क्यो नही कर सकती। जबकि तुम जानती हो कि प्रेम करने का कारण होता है, न करने का कोई नही होता।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"सिर्फ इतना कि खुद को धोखा मत दो। करुणा को प्रेम की रूई म मत लपटो, नही तो अगर सुधीर लौट आया तो अपने ही जाल मे फस जाओगी। सज्जा प्यारी लडकी है, उसके लिए जो भी सम्भव है कर डालो। इन कहानियो को छपाने की कोशिश कर दो और"

"तुम पागल हो। मैं उनके लिए सब कुछ करूगी। ऐसा कि तुम याद रखो कहानिया तो छपेगी ही और सुन लो, मैं पूरे मन से चाहती हू कि सुधीर लौट आये, समझे ?"

प्रतिभा सोचते सोचते उठकर बैठ गयी थी। वह अब तक लेटे ही लेटे पढ रही थी। पर सोचने की प्रक्रिया ने उसे उद्वेलित कर दिया था। उसे पता ही नही चला कि कब वह उठकर बैठ गयी। आत्म विस्मृत सी

तभी किसी ने धीरे से उसके कमरे का दरवाजा थपथपाया प्रतिभा चौंकी चौंककर दरवाजे की तरफ देखा अगली थपथपाहट के इतजार मे

कौन हो सकता है

बाहर हवा तेज चल रही है शायद

इधर से हवा कसे थपथपा सकती है

तो ?

और इस दफा थपथपाहट के साथ अविनाश की आवाज भी आयी,

'प्रतिभा' बहुत हल्की जैसे कही दूर नेपथ्य से पुकार रहा हो अविनाश है, प्रतिभा ने खुद से कहा। वह धीरे से पलग से उतरी। उठकर मोहित सी दरवाजे तक पहुची। चटखनी खोली और धीरे से कहा—तुम ?

अविनाश ने कमरे मे घुसकर प्रतिभा की कमर के नीचे दोनो बाह पिरोई और उसे एकदम अपने शरीर से सटा लिया।

"तुम सोये नही ?"

"मैंने सोचा तुम आओगी, कल की तरह।"

"मैं सुधीर की कहानिया पढ रही थी। सज्ञा छोड गयी थी।"

"कैसी हैं ?'

"केन नोट बी डिपाण्ड, केन नोट बी एक्सप्लेंड"

"मैं भी पढूगा।"

"हा, पढना।"

"प्रतिभा, तुम इन लोगो के लिए क्या करना चाहती हो ?"

"क्या कर सकती हू, तुम्ही बताओ। मैं तो लाचार महसूस कर रही हू।'

"खैर, सोच लेना। जो भी चाहोगी, हो जाएगा देखो कितनी कोशिश की सुधीर का कुछ पता नही चला तुम क्या सारी रात "

प्रतिभा ने बात काटकर कहा, "मुझे विश्वास है अविनाश, सुधीर एक न एक दिन जरूर लौटकर आयेगा सज्ञा जैसी बेटी का विछोह कोई बहुत दिनो तक सह नही सकता पर छोडो उसे तुम सोओ जाकर सुबह इतनी जल्दी उठते हो बिल्कुल न सोने से तबीयत खराब हो जायेगी "

अविनाश ने अपने खास अन्दाज से अपने होठ प्रतिभा के होठा पर छुआय और अचानक उसे छोड दिया। ओ० के० कहकर कमरे से बाहर हो गया।

प्रतिभा खडी रही हिली दरवाजा अन्दर से बन्द किया पलग पर आकर चित लोट गयी। बत्ती उसने अब भी नही बुझाई।

9

सुबह फोन पर उसने सज्ञा से कहा, "सज्ञा तुम सब चिन्ताए छोडकर पढने लिखने म मन लगाओ। अपनी मम्मी से पूछना कि वे उसी मकान मे रहना चाहती हैं या मकान बदलने मे उन्हे सुविधा रहेगी। उसी मकान मे रहना चाहे तो मुकदमे की अपील की बात सोची जाये। और कहानिया मैंने पढ डाली हैं। बहुत बढिया कहानिया हैं। मैं एक दो दिन मे ही किसी से 'कान्टेक्ट' करूगी। तुम अब बिल्कुल चिन्ता न करना। बस, अपनी पढाई मे मन लगाओ और सुनो, तुम मुझे रोज फोन करोगी?"

"हा आटी, रोज करूगी उसी वक्त जिस वक्त पापा करते थे।"

प्रतिभा ने हसकर कहा, "हा उसी वक्त।" फिर एकदम मिठास से भरे गले से कहा, और कोई बात सज्ञा?"

"नही आटी और सब बात बढिया है।"

'तुमने वायदा किया है कि तुम मुझसे कुछ छिपाओगी नही।"

पक्का वायदा है आटी, पर एक वायदा आपको भी करना होगा कि आप मुझे बहादुर लडकी बनायेंगी, मेरे आत्मविश्वास के पेंच ढीले नही करेंगी। जहा हार जाऊगी, आपकी मदद अवश्य लूगी, पर हारने के बाद और आपके सामने स्वीकार करूगी कि यहा हार गयी हू।"

प्रतिभा बहुत खुश हुई, कहा, "ओ० के०, मुझे मजूर है।"

"तो कल इसी वक्त?'

"हा, इसी वक्त, मुझे इन्तजार रहेगा।"

फोन रखकर प्रतिभा कहानियो की फाइल लेकर बैठ गयी। उन्हे एक क्रम दिया। एक बार फिर सबको पढ डाला। इस बार उसे लगा कि प्रभाव और बढ गया है। कुछ देर बैठी सोचती रही। फिर कागज-कलम लेकर एक छोटी-सी भूमिका उन कहानियो के लिए लिख डाली। लिखकर पढी। अच्छी लगी। घडी देखी। एक बजने वाला है। अविनाश आ ही

रहा होगा। उसे सुनाऊगी।

प्रतिभा अविनाश का इतजार करने लगी।

अविनाश ठीक वक्त पर आ गया। आते ही मुह-हाथ धोने के लिए गुसलखाने मे घुस गया और खाने की मेज पर पहुचते-पहुचत उस हुक्म मिला, "पहले यहा बैठकर मेरे ये दो पेज सुनो कहानी-सग्रह के लिए भूमिका लिखी है। बैठो।"

अविनाश हस पडा, बोला "लिख भी डाले।" और प्रतिभा के पास वाली कोच पर बैठकर बोला, "सुनाओ। खाने की जल्दी नही है। अब नही जाना। बच्चो को भी आ जाने दो, साथ ही खा लेंगे। सुनाओ।"

प्रतिभा ने पढ़ना शुरू किया—

"हर मन एक आकाश होता है। उसम दीखता बहुत कुछ है, पर अनदीखता इतना होता है कि व्यक्ति स्वय एक कौतूहल की स्थिति मे रहता है, उम्र भर। जो दीखता है वह भी कम रहस्यमय नही होता, रोज रूप और आकार बदलता है। आदमी के मन मे पूरी दुनिया होती है, बाहरी भी और अपनी भी, दोनो मिलकर एक नयी दुनिया के रूप मे आदमी के सामने आती है। यह नयी दुनिया आदमी के लिए एकदम अपरिचित दुनिया को खोजने जानने की उत्कट लालसा ही इन कहानियो की प्राणशक्ति है।

"अब तक हमारी भाषाओ मे जो लिखा जा रहा है, वह या तो बाहरी दुनिया की आलोचना है या अन्दरूनी दुनिया की मोह-जडित अभिव्यक्ति। मेरे विचार से दोनो आशिक यथाथ होते हैं। इन दोनो तत्वो को कम-बढ अनुपात मे मिलाकर एक रासायनिक मिश्रण भी यहा-वहा मिलता है पर मेरे विचार से वह सम्पूर्ण यथाथ का आभास मात्र ही देता है। पर इन कहानियो म ऐसा नही है। यथाथ को अपनी सम्पूणता म पकडने की जागरूक चेष्टा है और इस प्रक्रिया मे लेखक पाठक का एक नयी दुनिया से साक्षात्कार कराता है। मेरे विचार से इसे साहित्य के क्षेत्र म उपलब्धि ही माना जाना चाहिए।

'एक बार और। इन कहानियो को पढकर किसी को लग सकता है कि ये एक भयभीत व्यक्ति की काल्पनिक मनोदशाओ के बिम्ब चित्र

हैं। पर ध्यान से देखने पर लगेगा कि बार-बार दुहराये गए शब्द 'भय' के अर्थ यहां कुछ और ही हैं। यह तो मान्य तथ्य है कि भय संवेदना को धार देता है और दूसरा यह तथ्य भी निर्विवाद रूप से माना जाना चाहिए कि विशाल वक्ष समुद्र, और गहन-गह्वर के समान रात के आकाश को देखकर जो भय लगता है, उसमें और बिच्छू को देखकर लगने वाले डर में फर्क है। बिच्छू को मारा जाता है या उसकी उपेक्षा की जाती है। पर समुद्र का, आकाश का भय मोहित करता है और प्रेरणा देता है कि इन दोनों के रेशे रेशे को जानें, उसे पलकों से छुएं, उसके सौन्दर्य को सराहें। भय अपने अन्दर के गहन-गह्वर रात्रि आकाश के रेशे रेशे को छूने की उत्कट जिज्ञासा का पर्याय है।

और अन्त में मैं एक बात कहना चाहूंगी कि लेखक जब कुछ लिखने का निर्णय करता है, यह जानते हुए भी कि हो सकता है इस लिखे को हुए कोई न पढ़े और पढ़े तो रस न ले पाये और लिखता जाता है, तो मानना होगा कि उसका आत्मविश्वास और विचार-दृढ़ता अमित है।

इन शब्दों के साथ कहानियां पाठकों के हाथ में—"

अविनाश चकित प्रतिभा को बैठा देखता रहा। प्रतिभा पढ़कर हल्की हो चुकी थी। हंसते हुए बोली, "कैसी है?"

अविनाश हंसा नहीं। धीरे से बोला, "एक बात बताओ प्रतिभा, यह कथा-कहानी आदमी क्यों लिखता है?"

इस बार प्रतिभा जोर से हंस पड़ी "एक बात बताओ अविनाश, आदमी का शरीर क्या बढ़ता है? आदमी का दिमाग हर समय फड़फड़ाता क्यों रहता है? और किसी खूबसूरत चीज को देखकर पूरा शरीर अचानक क्या बोल उठता है? लिखना यानि अभिव्यक्ति भी एक नैसर्गिक प्रक्रिया है।"

'निरर्थक?'

"दुनिया में निरर्थक कुछ नहीं होता। पर सार्थक होने में और नाक की सीध में चलने में फर्क है।

अविनाश मिनट भर चुप रहा। फिर बोला देखो प्रतिभा, मेरा साहित्य से कोई लेना देना नहीं है। मैं एक साधारण आदमी की तरह बोल रहा हूं, मैं तो यह जानता हूं कि आदमी जो भी करता है उसके सही

उपयोग को ध्यान मे रखकर करता है। यह बात उसके मन मे कितनी भी गहरे मे हो, होती जरूर है। तुम नही मानती ?"

"मानती हू, बस फक इतना है कि कभी कोई आदमी उपयोगिता को अधिक महत्व देता है और क ोसिफ उसके सौन्दय को। उपयोगिता जानने और उपयोगिता को महत्व देना दो अलग प्रवतिया हैं। पर छोडो, चलकर खाना खाओ। तुम जिन्दगी को जिन्दगी मानते हो, जिन्दगी को बोझ मानने का शौक मत पालो।" कहकर प्रतिभा खुलकर हस दी।

अविनाश ने हसी मे साथ दिया पर अनमने भाव से। खाने की मेज पर दोनो अधिकाश समय चुप रहे। हा-हू के सिवाय दोनो मे से कोई कुछ नही बोला। कही गहरे मे डूब रहे। मेज पर से उठते हुए प्रतिभा ने धीरे से कहा, "अविनाश

"हा।"

"वह पुराने वाले मकान मे दो-तीन कमरे तो खाली पडे हैं ना ?"

"हा।"

"आदमी भेजकर उनकी सफाई करा देना जरा।

"कल करा देंगे।

"हा, कल ही करा देना।"

अविनाश चुप रहा तो प्रतिभा ने ही फिर कहा, 'मैं चाहती हू सज्ञा को यह 'आफर' दे सकू।"

"हा, कल करा देंगे।"

दोनो के बीच की चुप्पी फिर जम गयी तो दो चार मिनट इधर उधर घूमकर दोनो अपने-अपने कमरे म घुस गये।

प्रतिभा को तीसरे पहर सुस्ता लेने की आदत है। सुबह से जिस तरह वह कहानियो म उलझी रही है थकान महसूस होना स्वाभाविक ही था। वह लेटत ही सो गयी। और सोते ही उसके अन्दर एक बहुत बडी दुनिया जाग गयी जिसके पात्र परिचित थे, पर व्यवहार सबके अपरिचित

सुधीर था एकदम आधुनिक स्माट पोशाक मे कोई पार्टी अपने उरूज पर थी चमकीले चेहरे भडकीले कपडे सगमरमर का चिकना-चुपडा फश हवा मे नीली रेत के दानो की तरह घुली रोशनी फश पर

तैरते लोगो को जकडे सगीत-लहरियो की रेशमी डोरिया कुछ छोटे-छोटे मजाक, हवा मे तैरते, तितलियो की तरह, गुदगुदी करते वह यानी सुधीर, तैरकर, प्रतिभा तक आया है प्रतिभा ने अपनी बाहे सुधीर की तरफ फला दी हैं अचानक उसकी पोशाक बदल गयी है वही, ऊची-नीची पट, पायचो पर से फटी हुई थैले की तरह ढीली-ढाली कमीज दोनो मटमले रग के प्रतिभा के बढे हुए हाथ टूटकर गिर गये हैं पर आगे बढना उसने बन्द नही किया जब तक कि भयभीत सुधीर ने पीछे हटना आरम्भ कर दिया

पल दो पल की आख मिचौनी के बाद दृश्य घुल गया नया दृश्य नई मच सज्जा

एक आधुनिक सजा धजा विशाल कमरा कमरे का एक कोना बैठक का आभास देता है दूसरा बैड रूम का, तीसरा स्टडी का, चौथा किचन का कमरे के ठीक बीच मे एक गोल तख्त तख्त पर बेहद गुद-गुदा गद्दा गद्दे पर उनावी सनील की चादर और उस तख्त के ठीक बीच म बैठी प्रतिभा प्रतिभा बठी है स्टडी की तरफ एक मेज एक कुर्सी मेज पर बहुत सारी बिखरी किताबें मेज के एक कोने पर टिका टाइपराइटर

प्रतिभा पूरी गदन घुमाकर स्टडी की तरफ देख रही है

अचानक गोल तख्त ने घूमना शुरू कर दिया है स्टडी मे रखी कुर्सी पर एक प्रतिभा उभर आयी है किचन मे प्रतिभा चाय बना रही है ड्राइग रूम मे एक कोच पर बैठी सामने के नीले स्क्रीन पर उभरते बादलो को देख रही है और बेड रूम मे

बैड-रूम मे कोई है प्रतिभा नही कोई और एक पुरुष भी उसकी पीठ प्रतिभा की तरफ है सुधीर की पीठ की तरह की पीठ घूमते तख्त पर बठी प्रतिभा के हर चक्कर का एक क्षण बैड रूम मे बीतता है

तख्त और तेजी से घूमने लगा प्रतिभा को घुमेर आ रही है प्रतिभा ने आखें मूद ली हैं अब उसे कुछ दिखायी नही दे रहा है नही यह सच नही है आखें मुदी होने पर भी उसे दीख रहा है अन्दर कोई

है कौन वस, कोई है प्रतिभा ने जोर से आखें खोली हैं उसे शायद डर लग रहा है वह उठकर बैठ गयी है

उसने महसूस किया है, कमरे मे रोशनी कम हो चली है। शाम होने वाली है। शायद अविनाश भी क्या अभी तक सोया ही पडा है ? और बच्चे

प्रतिभा उठकर खडी हो गयी है

10

दु स्वप्न की तरह वक्त की पत वक्त की दूसरी पत पर चढ गयी। प्रतिभा को जो काम बहुत आसान लगा था, बहुत मुश्किल निकला। सुधीर की कहानिया नही छप पायी। प्रयास मे जो अनुभव प्रतिभा को हुए उनका परिणाम यह निकला कि प्रतिभा को कहानियो की इस फाइल से डर लगने लगा। महीना वह फाइल साथ लिए घूमी है। सफलता तो नही मिली पर जितना व्यग्य और उपहास उसे सहन करना पडा है उससे उसका सारा मन गहरी वितृष्णा से भर उठा है। रमा ने प्रतिभा के मकान मे आना मजूर किया तो उसे बहुत खुशी हुई। सज्ञा की पढाई लिखाई का वह व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखने लगी है। उसे अग्रेजी पढाती है और अन्य विषयो म भी मदद करती है। रमा ने इसी तरफ की एक फक्टरी मे नौकरी कर ली है। प्रतिभा ने घुमा फिराकर बहुत कोशिश की कि रमा उस तरह की छोटी नौकरी न करे पर रमा का तक एकदम सीधा रहा दिन भर खाली रहकर मन नही लगता। आपकी यही मदद बहुत है कि सज्ञा की पढाई न छूटे और जब तक सज्ञा हम सबको सभालने के काबिल नही हो जाती हम लोग आपके मकान मे रहें, पर इससे अधिक मैं तो इसे भी आप पर अन्याय ही मानती हू

प्रतिभा हस पडती, कहती, "दोस्ती की इतनी सजा किसी एक को नही मिलनी चाहिए कि और लोग दोस्ती करना ही छोड दें।"

प्रतिभा को अक्सर लगा कि सीधी-सादी दीखती औरत समझ बूझ मे किसी स कम नही है। पर रमा से उसके सम्बन्ध अब तक भी औपचारिक ही रहे हैं। उधर सज्ञा पर जितना स्नेह वह उडेल रही है उसस कभी-कभी तो अविनाश को भी आश्चय ही होता है। कभी-कभी स्नेह से हसकर कुछ कह देता है तो प्रतिभा तपाक से कहती है, "मेरे और सज्ञा के मामले मे बीच में मत बोला करो।"

अविनाश हसता हुआ पूछता है, "कहानी-सग्रह का क्या रहा ?"

"नही छापता कोई।"

"क्यो ?"

"कहते हैं, ये कहानिया नही हैं, एक पागल का 'डिलीरियम' है। कौन पढ़ेगा इन्हें ?"

"सुधीर पागल तो कभी नही लगा ?"

"पागल न होता तो भाग क्यो जाता ?"

'उल्टी बात कह रही हो। पागल आदमी भी कभी भागता है।"

"सुधीर भी भागा नही है, गायब हुआ है, खो गया है।"

अविनाश ने एक दिन गम्भीर होकर पूछा था, "तुम्हे पता है प्रतिभा सुधीर की मूल समस्या क्या थी ?"

"मालूम है।"

अविनाश चुप रहा, इस इन्तजार मे कि प्रतिभा बतायेगी पर जब वह बहुत देर नही बोली तो पूछा, "क्या समस्या थी ?

"क्या करोगे जानकर ?"

"यो ही, जानना चाहता हू।'

'बहुत उलझा हुआ मामला है।"

"अरे तुम बताओ भी। तुम्हारे खयाल से उलझे मामले तुम्ही समझ सकती हो। शायद हमारी भी कुछ समझ मे आ जाये।'

प्रतिभा हस दी। हसकर फिर चुप हो रही तो अविनाश ने कहा, "नही बताना चाहती या तुम्हारी भी कुछ समझ मे नही आया।"

है और बस, कोई ? प्रतिभा ने और न आगे सोची है उसे लगा डर लग रहा है यह उत्तर ठीक नहीं है

उसने महसूस किया है कमरे में रोशनी कम हो गयी है। शाम हो गयी है। शायद अँधेरा भी कहाँ अभी तक आया ही रहा है ? और सच

प्रतिभा उठकर खड़ी हो गयी है

10

दुःस्वप्न की तरह पवन की पर्त पवन की दूसरी पर्त पर चढ़ गयी। प्रतिभा को जो काम बहुत आसान लगा था, बहुत मुश्किल निकला। सुधीर की कहानियाँ कहाँ छप पायीं। प्रयास में जो अनुभव प्रतिभा को हुए उनका परिणाम यह निकला कि प्रतिभा को कहानियों की इस फाइल से डर लगने लगा। महीनों यह फाइल साथ लिए घूमी है। सफलता तो नहीं मिली पर जितना व्यंग्य और उपहास उसे सहन करना पड़ा है उससे उसका सारा मन गहरी वितृष्णा से भर उठा है। रमा ने प्रतिभा के मकान में आना मंजूर किया तो उसे बहुत खुशी हुई। सज्ञा की पढ़ाई-लिखाई का वह व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखने लगी है। उसे अंग्रेजी पढ़ाती है और अन्य विषयों में भी मदद करती है। रमा ने इसी तरफ की एक फैक्टरी में नौकरी कर ली है। प्रतिभा ने घुमा फिराकर बहुत कोशिश की कि रमा उस तरह की छोटी नौकरी न करे पर रमा का तर्क एकदम सीधा रहा, दिन भर खाली रहकर मन नहीं लगता। आपकी यही मदद बहुत है कि सज्ञा की पढ़ाई न छूटे और जब तक सना हम सबको सभालने के काबिल नहीं हो जाती हम लोग आपके मकान में रहें, पर इससे अधिक मैं तो इसे भी आप पर अन्याय ही मानती हूँ

प्रतिभा हस पड़ती, कहती, "दोस्ती की इतनी सजा किसी एक को नही मिलनी चाहिए कि और लोग दोस्ती करना ही छोड दें।"

प्रतिभा को अकसर लगा कि सीधी-सादी दीखती औरत समझ-बूझ मे किसी से कम नही है। पर रमा से उसके सम्बन्ध अब तक भी औपचारिक ही रहे हैं। उधर सज्ञा पर जितना स्नेह वह उडेल रही है उससे कभी-कभी तो अविनाश को भी आश्चय ही होता है। कभी-कभी स्नेह से हसकर कुछ कह देता है तो प्रतिभा तपाक से कहती है, "मेरे और सज्ञा के मामले म बीच म मत बोला करो।"

अविनाश हसता हुआ पूछता है, "कहानी-सग्रह का क्या रहा ?'

"नही छापता कोई।"

"क्यों ?"

"कहते हैं, ये कहानिया नही हैं, एक पागल का 'डिलीरियम' है। कौन पढेगा इह ?"

"सुधीर पागल तो कभी नही लगा ?"

"पागल न होता तो भाग क्यो जाता ?"

'उल्टी बात कह रही हो। पागल आदमी भी कभी भागता है।"

"सुधीर भी भागा नही है, गायब हुआ है, खो गया है।"

अविनाश ने एक दिन गम्भीर होकर पूछा था, "तुम्हें पता है प्रतिभा सुधीर की मूल समस्या क्या थी ?"

"मालूम है।"

अविनाश चुप रहा, इस इतजार मे कि प्रतिभा बतायेगी पर जब वह बहुत दर नही बोली तो पूछा, "क्या समस्या थी ?

"क्या करोग जानकर ?"

"यो ही, जानना चाहता हू।

'बहुत उलझा हुआ मामला है।"

"अरे तुम बताओ भी। तुम्हारे खयाल से उलझे मामले तुम्ही समझ सकती हो। शायद हमारी भी कुछ समझ मे आ जाये।"

प्रतिभा हस दी। हसकर फिर चुप हो रही तो अविनाश ने कहा

प्रतिभा पति की चालाकी समझ गयी, हसकर कहा, "बताती हू, सुनो जो समझती हू, यो शायद सुधीर खुद भी मरी इस 'एनलिसिस' का स्वीकार न करता। पर मैंने कई तरफ से सोचकर देखा है। मैं हर बार इसी नतीजे पर पहुची हू। सुधीर दरअसल महत्वाकाक्षी बहुत था। सेन्सिटिव भी बहुत था। आकाश-वृत्ति का एक जीव जिसका धरती पर ज्यादातर सम्बन्ध टूटा रहता। उधर सुधीर को एक रोग लग गया।

"यह था गहराई से सोचने का। यानी उसको लगने लगा कि जो दीखता है वह सच नही होता, सच उसके पीछे कही होता है। इस धारणा ने उसे दीखती दुनिया से और भी काट दिया। इस पर तुर्रा यह कि जब वह अदूरदर्शिता के कारण किसी काम मे असफल होता तो एक तरफ तो इसका यह कारण मानता कि दीखती दुनिया ने उसके साथ छल किया है और दूसरा कारण जो वह मानता वह और भी मनोरजक है। उसकी मान्यता थी कि उसके स्थूल शरीर मे एक सूक्ष्म वायवीय शरीर है जो उसके किये-धरे को नष्ट भ्रष्ट करने मे आनन्द की प्राप्ति करता है। इस वायवीय को वह अपना सत्य मानता था और नष्ट करने की प्रवृत्ति को मनुष्य की मूल प्रवृत्ति। तुम्हे ताज्जुब होगा कि सुधीर को यदि कही सफलता मिलती तो उसे अस्वाभाविक लगता और उसे असफलता मे बदलने की भरसक करता और बदल ही डालता और फिर अन्दर कही तुष्टि का अनुभव। कोशिश करता कि देखो, जो मैं जानता था वही हुआ। सुधीर के साथ एक और बात बहुत मजेदार थी कि ऊपर से देखने से वह आशावादी लगता था पर वास्तव म वह बहुत अघोरी स्तर का निराशावादी था। अन्दर की निराशा को छिपाने के लिए वह झूठ पर झूठ बोलता। कल्पना म अपनी आकाक्षाओ को पूरी होती देखता। पर उसके लिए प्रयास कभी न करता, क्योकि मानता था कि उसकी कोई आकाक्षा कभी पूरी नही हो सकती। तुम्हे अविनाश क्या बताऊ, सुधीर को किसी से मिलने वाली घृणा एक सकड म समझ आती थी पर यदि कोई उसका भला चाहता था उससे स्नेह करता तो वह उससे झूठा और ढोगी समझता और उसके विश्वास को बार-बार ठेस पहुचाता और यह वह तब तक करता रहता जब तक सम्बन्ध टूट न जाते तो उसी अन्दाज से उनके टूटने के कारण ढूढता और

काफी दिनों तक शोकग्रस्त रहता सोचता वह बहुत था पर

अविनाश ने टोक दिया, पूछा, "बहुत उलझाव है प्रतिमा क्या उसने बताया कि उनकी यह हालत कब से और क्यों हुई ?"

"बताया था, पर मुझे पता नहीं क्यों कभी उस बात पर पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ। उसका कहना था कि जब यह सत्रह साल का था, उसके हाथ से हिन्दू मुस्लिम दगा मे एक मुसलमान की हत्या हो गयी थी, उस 'गिल्ट' ने ही उसके व्यक्तित्व को तोड़ दिया है "

अविनाश ने तत्काल कहा, "यह हो तो सकता है तुम्हें विश्वास क्यों नही है ?"

सुधीर मूलत डरपोक आदमी था। मैंने उस डर को बहुत ही ठीक समझा है। उसका कहना है कि बाहर देखी हर घटना उसके अन्दर दोबारा घटती थी और जिस तरह मुर्दे के जी उठने पर आदमी डर जाता है उसी तरह घटना के दोबारा घटने पर भी आदमी डर उठेगा। सुधीर को डर बाहर से नही अन्दर से आता था। दूसरी बात यह कि उसे एक शौक था कि घटना मे कर्त्ता की जगह वह खुद को रख लेता था "

तुम्हारा मतलब यह है कि उस मुसलमान की हत्या उसने नहीं किसी और ने की घटना जब दोबारा सुधीर के अन्दर घटी तो हत्या सुधीर कर रहा था '

'बिल्कुल यही हुआ होगा अविनाश, और क्योंकि सुधीर अन्दर के वायवीय सत्य को बाहर के ठोस सत्य से अधिक यथार्थ मानता था इसलिए "

अविनाश झटके से उठकर खड़ा हो गया "प्रतिभा, बहुत जोर पड़ता है दिमाग पर। चलो कहीं घूमने चलती हो ?"

"चलो, कहां चलें ?"

अविनाश खड़ा-खड़ा सोचता रहा, फिर अचानक प्रतिभा की तरफ मुड़कर बोला, 'फिर भी, जो इतने दिनों तक यह सब झेलता रहा, वह अब अचानक, इस तरह "

प्रतिभा ने कहा, बैठो, बताती हूं।" अविनाश बैठ गया।

प्रतिभा कई मिनट चुप रही, फिर बोली, "असल अविनाश सुधीर

मुझसे प्रेम करता था। और मुझे लगा कि शायद पहली ही दफा उसके मन मे प्रेम पैदा हुआ था। गोकि उसके अपने पहले हुए सम्बन्धो की बहुत सी कहानिया मुझे सुनायी पर वे, मेरे ख्याल से सभी उसके कल्पना शिशु थे।

मुझसे कभी उसने यह बात छिपाई नही और उसकी आदत के खिलाफ मेरा विश्वास जीतने की जी-जान से कोशिश की। उसकी कोशिश मेरे धर्म-सकट को बढाती रही। मैंने साफ ही बताया कि मैं बदले मे कुछ नही दे सकती पर यह भी सच है कि मैं चाहकर भी उसे तोड नही पाई समझ गयी थी कि वह कम से कम आश्वासन हाथ से छूटते ही अनर्थ कर सकता है। दूसरा यह कि शायद मुझे आशा मित्रता उसके व्यक्तित्व की सिलवटें निकाल सकती है अ दर कही मुझे रस और तुष्टि देता था, पर इनके साथ ही भी थी मेरा एकमात्र बल तुम्हारा विश्वास था मैं, आज भी चाहती हू कि वह लौट आये और मैं उसे ठीक

'कैसे ठीक करोगी तुम उसे?"

"यह तो ठीक से नही कह सकती, पर जब से म यह बात फूलती जा रही है कि मैं उसे ठीक कर इस विचार स भारी रहने लगा है।"

दोना चुप हो गये। बहुत देर चुप बैठे

"मैं मानती हू अविनाश, कि आदमी बडा होता है पर छोडो, कही घूमने च चलते हो।'

कहते कहते वह उठकर खडी हो

11

एक दिन रमा ने सना से कहा,' तेरे पापा। साल भर से ज्यादा हो

बहुत दिनो बाद रमा ने पति का जिक्र किया था। सज्ञा अचानक उदास न हो सकी। धीरे-से बोली, "हा मा, अब तो मुश्किल ही लगता है। कोई खबर भी तो नही आयी।"

रमा ने फिर कहा, "सज्ञा तुझे पता है, वह किससे नाराज होकर गये है? जरूर मुझसे ही तू जल्दी से यह इम्तिहान पास कर ले। नौकरी मिल जाये तुझे कही तो तेरे ब्याह मे आसानी "

"मा सदीप और समीर जब तक बडे नही हो जाते, मैं ब्याह नही करूगी।"

रमा हस दी, बोली, "तेरे पापा ने सजा मुझे दी है, तू उसमे से छीन-झपट क्यो करेगी?"

मैं उनकी कोई नही होती?"

"बेटी होती है। कुछ धन सम्पदा छोडकर जाते तो वह सब तेरा और इन दोनो का होता। पर "

"मा, ये सब बातें मुझसे मत किया करो और होगा वह जो मैं चाहूगी। मैं इन दोनो का भविष्य तुम्हारे हाथो म "

पर बात कहते-कहते सज्ञा को महसूस हो गया कि बात सख्त हो गयी है। वह चुप हो गयी।

रमा ने ही धीरे से हसकर कहा, "मैं जानती हू सज्ञा, तुझे किसी बात के लिए राजी करने को मुझे प्रतिभा जी से कहना पडेगा कहूगी। पर यह निश्चित समझ कि तेरे पापा तेरी बलि नही ले सकेंगे। बलि, जिसकी वह लेना चाहते हैं उसी की होगी। मैं जानती हू उन्होने कभी मुझसे प्रेम नही किया पर वह जानते थे कि मैंने उनसे बेपनाह प्यार किया है। प्रेम मे बलि सुन सज्ञा वह भास्कर आजकल तुझे नही मिलता?"

"नही मा, वह नाराज है।

"क्यो?"

"हम यहा क्यो आए। प्रतिभा आटी का एहसान क्यो लिया। वह अब हमे छोटी तबीयत का आदमी समझने लगा है।"

"और वह तुम्हारा आदोलन?"

"परीक्षा हो ले तो "

पल भर रुककर रमा बोली, "तुम्हें मालूम है सज्ञा, मैंने प्रतिभा का एहसान लेना मजूर क्यो किया।"

"क्यो ?"

"सिर्फ तेरे लिए।"

"मेरे लिए ? क्या मानी ?"

रमा हस पडी। बोली, "तेरी नकेल मुझसे सभाले न समलती, इसलिए।"

सज्ञा बिफर उठी, "मा।"

"हा सज्ञा बिटिया। याद रखना, तेरे पापा के न होने ने मुझे कमजोर नही किया, तेरे होने ने किया है। यह मत समझना कि तेरी समझदारी पर मेरा विश्वास नही है, पर "

'पर क्या ?"

'तेरी इतनी समझदारी ही से तो मुझे डर लगता है।"

सज्ञा को हसी आ गयी। बोली, "तुम तो अम्मा बस, अम्मा हो।"

फिर रुककर बोली, 'अच्छा अम्मा, एक बात बताओ ? तुमने पापा से कभी झगडा क्यो नही किया ?"

रमा ने कहा, 'कोई मुझसे प्रेम न करे और मैं उससे सिर्फ झगडती फिरू इतनी छोटी मैं नही हू। पर छोड, यह बता सज्ञा उस कहानी सग्रह का क्या हुआ ? उसका छपना शायद सम्भव नही है ?"

इस बार सज्ञा बहुत उदास हो गयी। बहुत धीमे स्वर म बोली, "आटी को बहुत अपमान सहना पडा उस कहानी-सग्रह को लेकर। किसी ने कहा—आप इसे क्यो लिए घूम रही हो ? आपको सुधीर से इतनी हमदर्दी क्या है ? किसी ने कहा कि आपके पास तो बहुत पैसा है, लागत आप दे दीजिए, छाप हम देंगे। एक वाला—प्रतिभा जी, आपके पति को मालूम है कि आप सुधीर के प्रति इतना स्नेह रखती हैं। और न जाने क्या-क्या। मैंने मना कर दिया है आटी से, अब कोशिश न करें। देखा जायगा। नहा छपता तो न छप। मैं कमाने लगूगी, कुछ पैसा जोड लूगी तो खुद छपवा दूगी। चिन्ता न करना मा, पापा की यह इच्छा मैं जरूर पूरा करूगी।'

रमा हस दी। बोली, "चल छोड उसे भी, जब वे ही नही हैं तो किसे

दिखाने की इच्छा पूरी करेगी ?"

कुछ देर दोनों चुप रहीं। फिर सज्ञा बोली, "इस साल मैं बी० ए० कर लूंगी मा। मन लगाकर पढ रही हू, साथी-सगी सब छोड दिये हैं। टाईप और शार्टहैंड सीखकर कही "

इस बार रमा तिलमिला उठी, 'तू इस तरह न बोल सना, तेरा वह पहले जैसा हमला करता स्वर बना रहे। तेरा यह दीन दुनियादार स्वर सुनकर मुझे उनका बहुत ध्यान आता है। अभी मैं जिन्दा हू और एक बात का मुझे पूरा विश्वास है—रमा जो तुझे वाकई बहुत प्यार करती है, वह तुझे "

'मा, आटी को प्रतिभाजी क्यों कहती हो ? उम्र मे तो वे तुमसे छोटी ही होगी।"

रमा ने फिर हसकर कहा, 'हा, उम्र मे तो छोटी ही होगी पर और बहुत से मामलो में मुझसे बहुत बडी हैं। फिर उनके हम पर "

"उन्होंने तो कभी जताया नही।"

'यह उनका बडप्पन है, पर एहसान एहसान ही होता है।"

सज्ञा का मन भारी हो गया। दरअसल पिछले कुछ दिनो मे जो व्यवहार प्रतिभा से उसे मिला था उसने उसे इतना जीत लिया था कि कृतज्ञता की भाषा उसके दिमाग मे आती ही नही थी। निर्द्वन्द्व वह अपनी सब बातें प्रतिभा से कहती, बहस करती, जीतकर खुश होती और हारकर हस देती। सुखद भविष्य के सपने उसे फिर सताने लगे थे और पापा दूर छोटे-से काल बिन्दु के सिवाय कुछ नही रहे थे। पर रमा हमेशा उसे कही गढे मे धकेलने की कोशिश करती। उसे अक्सर मा के इस रवये पर झुझलाहट आती। पर मा को बुरा न लगे इसलिए झुझलाहट को वह निगल जाती और मा का मन, बात बदलकर, बहलाने की कोशिश करती। पर एक दिन वह प्रतिभा से कह ही बैठी, "यह अम्मा, आटी, बहुत बार करती है।'

प्रतिभा ने कहा "क्या हुआ ?"

'हर समय बस जो नही है उसका नाम रटना और जो है उन्हें अपने से दूर रखना। यह भी कोई बात हुई।' सना ने उत्तेजित स्वर में कहा।

प्रतिभा स्नेह से हस दी, 'पगली सना रानी, पास वही रहता है जो

पास होता है, वह है या नही इससे कोई फर्क नही पडता। तुम्हारी अम्मा उन लोगो मे से नही है जो सुविधा के लिए किसी को पास किसी को दूर रखते हैं। उनके पास वही रहेगा जो उनके पास होगा। तुम्हारे पापा से वह बहुत प्रेम करती हैं, मुझे मालूम है।"

"आपको कैसे मालूम ?"

"तुम्हारे पापा ने ही बताया था।"

"पर पापा ने तो शायद कभी उन्हें प्रेम नहीं किया।"

अचानक प्रतिभा के मुह से निकला, "तभी तो तुम्हारे पापा को उन्होने रोका नही, जाने दिया।'

"चाहती तो रोक लेती ?"

'मेरा ऐसा विश्वास है।"

पल भर चुप रहकर सज्ञा ने कहा, 'और आपने क्यो नही रोका, आपसे तो वे

प्रतिभा हस दी। बोली, "मैं क्यो रोकती ?"

"क्या मानी ?"

"पूछ रही हू, मैं क्यो रोकती ?"

पहले तो सज्ञा कुछ समझी नही टकटकी लगाकर प्रतिभा को देखती रही। फिर धीरे धीरे बात समझी तो उसकी आखें गीली हो आयी। प्रतिभा के पास खिसकत हुए कहा, "तो वे कही भी नही थ आटी, कभी कभी मुझे लगता है, पापा मुझे पुकार रहे हैं। साफ उनकी आवाज सुनाई देती है।'

प्रतिभा न हाथ बढाकर सना के कधे पर रख दिया। पूछा, "अब क्या सीधे घर जा रही हो ?'

"मैं भी चलूगी। बहुत दिन हो गये रमा जी स मिले। वह तो हमारे यहा आना पसन्द नही करती।'

'यह बात बिलकुल नही है आटी, जरा सकोची है।"

मा का पक्ष ले रही है, जस मैं उन्ह जानती ही नही। हा भई, मा आखिर मा है।' कहकर प्रतिभा हस दी तो सना ने भी हसकर कहा 'मैं ता कही की भी नही रही। मा कहती है, मैं आपकी सुनती हू, बस,

और आप "

प्रतिभा ने कहा, "इसे कहते हैं, दोनो हाथो म लड्डू होना।" कुछ देर बाद दोनो एक घर से निकलकर दूसरे घर की तरफ चल दी।

12

गाम का वक्त। घनी बस्ती का यह मकान। प्रतिभा को यह मकान उसके पिता ने दिया था। पुराने किस्म का पक्की ईंट और ऊचे पत्थर के चौतरे वाला। चौक मे भी ईंट की जगह पत्थर ही लगे हैं। तिमजिला। सज्ञा को जो कमरे मिले हैं वह तीसरी मजिल पर हैं। ऊपर की छत भी इन्ही के पास है। बाकी के सारे मकान मे किरायेदार रहते है, ये तीन कमरे खाली हा रहे। कभी कोई खास जरूरत पड जाये तो किसी का मुह न ताकना पडे। सना से जब मकान की समस्या की बात सुनी तो ये ही कमरे उसके दिमाग मे उभरे थे। इन लोगो के आने से पहले इन्हें ठीक करा दिया गया। छत की मुडेर भी चारो तरफ से ऊची कराई। छोटे बच्चे हैं, कही चोट फेट न खा लें। इन लोगो के आने से पहले प्रतिभा आकर सब देख गयी। जिस दिन ये लोग आये उससे अगले दिन फिर आयी अविनाश के साथ। सतुष्ट हुई और खुशी खुशी वापिस गयी।

अविनाश अपनी इस पत्नी को जानता है, जो वह सोच लेती है, करती है इसलिए उसके किसी काम मे वह बाधा नही देता।

पर आज प्रतिभा दूसरे ही मन से बाहर निकली है। रमा से बात करन का उसका बहुत मन रहा है। कभी खुलकर बात नही हुई। आज मौका लगा तो

रास्त मे प्रतिभा ने पूछा, "कितने बजे आ जाती हैं, रमा जी।"

'मात बजे तक।

"तब तो ठीक है। हम लागा के पहुचने-पहुचते आ जायेंगी।"

"नही भी आयी तो ज्यादा इ तजार नही करना पड़ेगा "

प्रतिभा, सना और रमा मकान म लगभग साथ-साथ ही घुसे। प्रतिभा ने उत्साह मे कहा, "देख लीजिये, मैं ही आपसे मिलने आती हू, आप तो कभी आती ही नही।"

पर कहते-कहते ही प्रतिभा को अपनी गलती का एहसास हो गया। रमा के चेहरे पर लिखी थकान ने प्रतिभा को द्रवित कर दिया। जल्दी स कहा "शिकायत नही कर रही।"

रमा हस दी। हसी से थकान और खिल आयी, बोली, 'शिकायत करने का आपका हक है, आप जितना अपनापन हम और कहा से मिला है। बैठिये। आपके लिय चाय "

"आप बैठिये, सज्ञा बनाकर लायेगी।"

रमा फिर हस दी। बोली, "मुझ मालूम है, आपको सज्ञा के हाथ की चाय बहुत अच्छी लगती है।"

प्रतिभा ने कहा, "यह तो सच है, चाय तो हमारी सना अच्छी बनाती है।"

सज्ञा दोनों को चाय देकर फिर रसोई के काम म लग गयी।

चाय पीते पीते प्रतिभा ने अचानक कहा, "रमा जी, आप हम लोगा की बात नही मानेंगी ?"

'कौन सी बात ?"

यह नौकरी सच मानिये मुझे इतनी ग्लानि होती है कि मैं नौकरी के खिलाफ नही हू पर यह इस तरह की नौकरी ।"

रमा ने कहा "ग्लानि तो मुझे भी बहुत होती है, उन्होने भी हमेशा यही कहकर मुझे रोक दिया। पढी लिखी नही हू, इसलिए अच्छी नौकरी तो मिल नही सकती। वाकई, बहुत ग्लानि होती है। काश, पहल से नौकरी करन लगती तो हो सकता है यह दिन इस तरह न आता खर, वह सब छोडिये, जो हो गया, सो हो गया पछताने से क्या होगा पछतावा करने स गया दिन तो लौटकर आने स रहा। आप सुनाइय , घर म सब ठीक है न ?"

रमा का बोलने चालने का ढग प्रतिभा मे एक सकोच पदा करता है,

फिर भी जो सोचकर वह आज आई है पूछकर ही जायगी इसलिए उसने बातचीत को टूटने नही दिया। कहा, "हा, सब ठीक है सदीप समीर का मन लग गया यहा ?"

रमा ने हस कर कहा, "ये तो पहले भी मुझसे चिपटे रहते थे और अब भी और मन तो लगाना ही पडता है मन के हिसाब से दुनिया थोडे ही चलती है दुनिया के हिसाब से मन बनाना पडता है यहा तो फिर जगह भी हमारे पास है वहा तो ये खेलने को तरस गये थे यहा छत पर ।" फिर जरा रुककर जोर से हसकर बोली, "बोलती बहुत हू, है ना ?"

प्रतिभा का मन घुट रहा था। अचानक उसने अपना प्रश्न दाग दिया, 'आज एक बात पूछना चाहूगी आपसे, बतायेंगी ?"

रमा सतर्क हो गयी। प्रतिभा की तरफ टकटकी लगाकर देखती हुई बोली "क्यो नहीं बताऊगी, मालूम होगा तो जरूर बताऊगी।"

"सच सच"

रमा को चोट लगी, बोली, "आपको किसी ने कभी यह कहा कि मैं झूठ भी बोलती हू ?"

प्रतिभा हस दी, "नही, हमेशा यही सुना कि आप चाहकर भी झूठ नही बोल पाती इसीलिए पूछ रही हू आप कही मुझे दोषी मानती हैं?"

'किस बात मे ?"

'अपने इस यानी सुधीर के जाने मे ?'

रमा ने सुना, समझा और खिलखिलाकर हस दी, निर्द्वन्द्व स्वच्छ हसी। फिर रुककर बोली, "तो मतलब यह हुआ कि आप भी मुझे बेवकूफ ही समझती हैं प्रतिभा जी, मैं आपकी रत्ती भर दोषी नहीं मानती—जानती हू आपके प्रति उनके मन म क्या था, यह मुझे मालूम है उन्होने ही कई दफा बताया पर मैं उन्हे जानती थी प्रेम उनके यहा मन शरीर म लगा रोग था, कुछ लोग दरअसल इस रोग के बिना जी नहीं सकते खुद को नष्ट करने का उनके पास यही एक तरीका था मुझे वह न भी बताते तो भी पता चल जाता रोगी शरीर से वह मेरे पास आना छोड देते थे ऐसा कई बार हुआ मैंने तो हमेशा मुक्ति की सास ही ली आपका भला इसमे क्या दोष आप निश्चित रहिए मैं

जानती हू, इस रोग के कारण वही उनके अन्दर ही थे बाहरी कारण तो वह अपने को और औरो को समझाने के लिए गढते थे और एक बात और अगर मैं आपको दोषी मानती तब भी क्या मैं आपसे मदद ले लेती बुरा न मानियेगा पर बात यह सच है "

प्रतिभा को एक गहरी तुष्टि का अनुभव हुआ। उसका मन जो काफी पहले हो था आज स्नेह भाव भी पैदा होता दीखा। उसने रमा का हाथ अपने हाथ म लेकर कहा, "आपको धन्यवाद देती हू।'

रमा फिर हस दी, बोली, "जल्दी न करो प्रतिभा जी, अभी मेरी बात पूरी नही हुई। एक जगह मैं आपको दोषी मानती हू।"

प्रतिभा सप्रश्न सकौतुक दष्टि से रमा को देखती रह गयी।

रमा ने कहा, "अपने रूप गुण का इतना घमड नही करना चाहिए आदमी को" कहकर रमा हस दी।

"घमड, मैं समझी नही।"

"समझी क्यो नही ? सब समझती हैं आप। घमड नही तो और क्या है वह आपके रूप गुणो की तारीफ करते थकते नही थे, पर आप उनके कलेजे म फसे राग को पिघला नही सकी। आप चाहती तो वह न जाते और आप चाहती तो मेरा खोया पति मुझे मिल जाता, मेरे पास रहता "

"आप " प्रतिभा कहते कहते रुक गयी।

"यह कजूसी है प्रतिभा जी, आदमी की मदद उसी चीज से करनी चाहिये जो उसे चाहिए कुछ और देते रहना उसको भटकना है आप चाहती तो " कहते-कहते रमा की आखो म आसू उमड आये उसका सारा स्वरूप विकृत हो उठा। वह उठना चाहने लगी।

प्रतिभा हतप्रभ थी। धीरे से बोली 'पर आप तो कहती थी कि "

रमा ने कहा 'प्रतिभा जी जिस शीशे म अन्दर के इस रोग के कीटाणु दीखते हैं, वही इसका इलाज भी दीखता है इलाज क्या था मैं क्या जानू इतना जानती हू कि दूसरे को खुशी

रमा रुक गयी तो प्रतिभा ने कहा "रुक क्यो गयी ? कहिये ना।"

पर रमा आग कुछ नही कह सकी। बहुत देर चुप रहकर धीरे से बोली, "माफ करना प्रतिभा रानी, अन्दर के आवेश मे जाने क्या-क्या बक

ो। बुरा न मानना। मेरा विश्व स कर सको तो मान लेना कि मेरे मन
ाही कोई दुर्भाव नही है। जो मैं खुद न कर सकी उसके लिए दूसरे को
ा देना मेरा छोटापन ही है और कुछ नही।" फिर उठते हुए बोली,
ानी हू, सना क्या कर रही है आज बिना खाये नही जाने दूगी जो
है रुखा सूखा
प्रतिभा ने हा हू कुछ नही की, चुपचाप बैठी रही।

रात को बिस्तरे पर लेटते ही प्रतिभा का पूरा शरीर जलने लगा।
ा का एक एक वाक्य उसके कानो मे गम शीशे की तरह ढल रहा था।
से मानसिक रूप स वह सुन ही है। वैसे वहा उसने खाना खाया।
ाकर अपने घर आयी। यहा आकर घर के सब छोटे बडे काम किये।
वनाश के साथ बैठी थोडी-बहुत बातचीत भी की। पर जल्दी जल्दी
ा निपटाकर अपने कमरे म आ गयी और सीधे पलग पर पहुचकर सपाट
: गयी। उसके दिमाग म एक ही वाक्य धूमकेतु की तरह काप रहा था,
ा फटकारता मदद करनी है तो वह दो जिसकी जरूरत है कुछ और
रहना उसे भटका भटकाकर मारना है। क्या उसने सुधीर के साथ
ो किया है? नही, यह गलत है, यह आरोप है। दे वही सकता है कोई
सी को जो उसके पास हो। जो न हो वह और मान लो हो भी,पर मन
मारकर किसी को कुछ दना फिर मैंने सुधीर से एक बार भी झूठ
ी बोला। साफ कहा था उससे—मेरे मन मे न कोई गाठ है, न शून्य,
वनाश से मैं भरपूर प्रेम करती हू, उनका विश्वास मुझे प्राप्त है, फिर
यह मन सुधीर को लेकर इतना बेचैन क्यो है? हर समय क्यो मन
रता है कि रमा सक्षा सदीप समीर के लिए कुछ भी कर डालू? कितना
तरा मोल लेकर भी मन क्यो करता है जो किया है बहुत कम है?
ौर क्यो मुझ पर छाया रहता है? क्यो चाहना बनी है कि वह लौट
ये और मैं उसकी शान्ति के लिए बडे से बडा बलिदान कर डालू?
वनाश से जो मैंने कहा, क्या वही नही था जा रमा ने मुझसे कहा? फिर
ा के कहने पर मन इतना क्षुब्ध क्यों हुआ? क्या लगता था सुधीर
ा? मित्र? फिर कर्त्तव्य पूरा करने की खुशी क्यो नही है? क्या मैं
मानती हू, मुझसे कुछ गलत हो गया है? और यह मेरे अन्दर का

'गिल्ट' जो सुधीर बन कर पीछा कर रहा है? सुधीर म मेरे लिए तष्णा थी तो क्या मुझ म भी नही वह झूठ है मुझे उससे स्नेह था उसके साथ मिलना बैठना, अच्छा लगता था उसका रग बदलता 'इथीरियल' व्यक्तित्व उसकी बातें फेंकने की अदा तक्लीफ और पश्चाताप से झलकी मारता उसका चेहरा और चेहरे पर पल छिन तैरती परछाइया यह सब मेरे अन्दर एक अजीब सी स्फूर्ति पैदा करती वह मुझे बहुत कुछ सोचने को मजबूर करता, मेरी सवेदना पर चुटकिया काटता, पर यह सच है, मुझे उसस प्रेम नही था मैं उसस प्रेम करा ही ठहरो प्रतिभा जरा रुक रुककर सोचो जल्दी न करो जल्दी म आदमी अपनी सुविधा के तक गढ लेता है मेरे एक एक प्रश्न का उत्तर दो सोच समझकर क्या यह सच नही है कि उसने भी तुमसे झूठ नही बोला, तुमने बता दिया था कि वह तुमस क्या चाहता है? सच है पर यह भी सच है कि मैंने कह दिया था कि यह सम्भव नही है और यह जानकर भी अगर मित्रता रखना चाहो तो रखो, नही तो मिलना जुलना बन्द कर सकते हैं उसने क्या कहा? वह मिलते रहना चाहता था क्या मतलब हुआ इसका? मतलब क्या होना था, उसके लिए मेरी मित्रता कीमती थी और इसका मतलब यह नही हुआ कि वह अपना प्राप्य न पाकर भी तुम्हे तुम्हारा प्राप्य देते रहना चाहता था लगा सकते हो, पर इसमे मेरा क्या कसूर है, मैंने उसका अहित कभी नही चाहा यह सच है, न अहित चाहा, न चाहती हो, बल्कि जितना उसका हित तुमने किया किसी और ने शायद ही कभी किया हो, पर देख लो, उसका अहित हो गया, सुधीर नही है हो सकता है, दुनिया म ही न हो और हो सकता है वह पागल बना घूमता हो तुम खुद को इस नियति से असम्पृक्त कर सकती हो यह कहकर कि वह अपनी मूखता की सजा भुगत रहा है पर यह तुम्हे मानना पडेगा कि यदि वह पागल है और उस पागलपन मे भी तुम्हारा नाम ले रहा है तो

झटके स प्रतिभा उठकर बैठ गयी और उसने जोर से पुकार, अविनाश।'

पर पुकार कमरे की दीवारो से घुटकर रह गई। काफी देर वह

बैठी रही। कोई नहीं आया तो लेट गयी और इस बार लेटते ही उसे नींद आ गई। वह सो गयी।

बनारस। मणिकर्णिका से हरिश्चन्द्र घाट तक के घाटों की थाप से टकराती गंगा और उस पार फैली अथाह रेत। डूबता सूरज। अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग गाथा। रेत पर बिखरे चांदी के दाने। पानी में ठहरे हरे पौधों पर खिले उन्नावी फूल। रात का धरती में से फूटना। चारों तरफ मंदिरों की घण्टा ध्वनि की व्यापी कर्कशता। घाटों पर बिखरे आदमी रूपी मनके। घाटों पर अमूर्त घटिका धुआं भगवान के शरीर पर पिघलता आदमी का तेल वह

उधर सामने की रेती पर पड़ा एक आदमी। बीहड़। वन मानुष-सा सिर रेत में गड़ाये। शरीर पर से कपड़े फट हुए। चेहरा पहले बालों और फिर रेत में छिपा हुआ

पर वह सुधीर है अर्धविक्षिप्त अर्द्ध चेत अर्द्धमृत-सा अपने शरीर को रेत में घिस रहा है।

आदमी के स्खलन के समय कोई सितारा आकाश से नहीं टूटता। आकाश की तरफ मुंह उठाये, सुधीर सपाट रेत पर लेट गया है मरने के नजदीक पहुंचा व्यक्ति कितना रेतीला हो जाता है उसके दिमाग में छोटे छोटे दिये जल उठते हैं

बहती नदी ढलान पर बहती चारों तरफ घनघोर अंधेरा धरती और आकाश का भेद मिटा हुआ बहती नदी नहीं, बहता काला लावा गढ़ा पिघले राग जैसा और लावे पर जलते चिराग हर चिराग का एक जिन्दा अनुभव लपकता थिरकता नाचता अंधेरे में लड़ता

सुधीर के रोम रोम में चिराग जल उठा है

पूरा सुधीर काले लावे पर बह रहा है

खुद से बोलता बतियाता हंसता रोता यह सोचता कि यह नदी उसे जहां जाकर छोड़ेगी वहीं उसका घर होगा चिरागों से बुना गया घर

मणिकर्णिका घाट पर ऐसे कई घर बुने जा रहे हैं बहते-बहते वह देख रहा है कौन बुनेगा उसके लिए ऐसा घर कौन ? कौन है ?

सब डूब गये बस ये टिमटिमाते चिराग बचे हैं

क्या था वह शेर

हमारे बाद हमे ढूढने चली दुनिया,
जले चिराग, मगर देर से चिराग जले ।

सुधीर ने हसने की कोशिश की है, प्राण साथ छोडने को है, पर गलतफहमियो ने साथ नही छोडा कौन ढूढने चलेगा हमे हमारे बाद गिद्ध और चील या श्वान और शृगल या चीटी और मकोडे मरे हुए आदमी के पास एक भी आदमी ऐसा नही आता जो देखने म खूबसूरत हो,सुधीर बाबू, खूबसूरत जानवर जिन्दगी मे भी तुमसे कतराकर निकलता रहा कुछ शरीरो मे ऐसी बू होती है जिसके कारण खुशबू पास नही फटकती खुशबू ? कितनी चाहत रही है उसके मन मे कुछ पल खुशबू मे जीने की यह पता नही क्या हुआ यही तो दरअसल हुआ क्या क्या हुआ था ?

सुधीर की चेतना मे रग शाम के रगो की तरह डूब रहे हैं किसी ने प्रेम वार्ता करने के लिए रोशनी बुझा दी है

कौन ?

मैं हू प्रतिभा ! तुम्हें देखने आयी हू ।

आओ देखो ।

शरीर तो देख रही हू मन कैसा है ?

मन ? तुम्हें इतना भी नही पता प्रतिभा कि मन सिर्फ आदमियो के पास होते हैं, जानवरों के पास शरीर होता है । तुमने शरीर देख लिया, सब कुछ देख लिया । मन, प्रतिभा बहुत मुद्दत हुए, मर गया था, शरीर अब मर रहा है । बठो देखो । मरते शरीर की ऐंठन, सुना है 'मर्सडिव लोगो को बहुत रस देती है । बठो देखो तुम आ गइ, अच्छा हुआ । मेरे लिए चिरागो का एक घर बना देना उम्र भर प्रतिभा मरने के बाद भी कोई नोच-नाचकर खाये मुझे बहुत डर लगता है

मैं तुम्हें लेने आई हू सुधीर तुम ठीक हो जाओगे ।

नहीं ई मैं नही जाऊगा मैं वहा नही जाऊगा वहा वह सब होगे, वह मुझे जिन्दा ही नोच-नाचकर खा जायेंगे मुझे याद है उस आदमी की लाश कई दिनो तक उस घर के दरवाजे मे पडी रही थी जहा उसको मैंने मारा था लाश मे कीडे पड गये थे लम्बे लम्बे और नही वहा नही जाऊगा वह अभी भी वही पडा होगा मुझे घूरता हुआ और वह रजिया तुम्ह पता है, कि प्रतिभा, सायरा को सब लोग मिलकर मुझसे नोचकर ले गये थे और घर ले जाकर मार डाला था कालोनी की उस पगली की शक्ल उस, सायरा मिलती थी एक दिन रात का घर लौटते हुये मैंने उससे पूछा था तेरा नाम सायरा है ? तो मालूम है उसने क्या कहा था ? नही, मैं नही बता सकूगा, बस इतना बता सकता हू कि सुनते ही भाग आया था और फिर कभी पुलिया के नीचे से नही निकला। अरे, तुम चल दी, सुना नही जाता तो जाओ मैं जानता हू। मेरी आवाज तुम्हे हमेशा भदेस लगती है तुमने कभी जाना, तकलीफ से जब आदमी चीखता है तो उसकी आवाज पर तुम जाओ, मुझे भी कुछ नीद-सी आने लगी है अब मत आ लौटकर

सुधीर ने अपने चारो तरफ अधेरा कम्बल की तरह लपट लिया है नदी पर चिराग बह गये है

सुधीर ने करवट ली है धीरे से आख खोलकर चारो तरफ देखा है बुदबुदाया है इतने लोग बहे चले आ रहे हैं मुझे मारने आ रहे हैं शायद उठकर भागू नही आने दो सबका मुकाबला करूगा अभी मैं मरा नही हू डरकर मैं कभी नही भागा अब भी नही भागूगा कौन है कौन हो तुम लोग बोलो, नही तो

अरे यह तो रमा है, सना भी है, और सदीप और समीर भी सबसे पीछे प्रतिभा

सुधीर को फिर हसी आयी है कितनी दूर चलकर मुझे विदा दन आये हैं

रमा ने कहा है चलो घर चलो हम लोग तुम्ह लेने आये हैं

मैं घर ही तो जा रहा हू

तुम ठीक हो जाओगे पापा घर चलो

सब ठीक हो जायेगा बेटे, तू चिन्ता न कर   तुम सब लोग बैठ जाओ तुम्हे एक कहानी सुनाता हू   बैठो   सुनो।

छोडो कहानी वहानी, पहले जो लिखी वही सड रही है

किसने कहा यह ? प्रतिभा ने या रमा ने   रमा ने कहा होगा। रमा को कभी समझ नही आयेगा कि जो आज क सम्भ्रात समाज का समझ नही आता वह कल क सम्मानित समाज का पुराण होता है   मेरी कहानिया   अरे कहा गायब हो गये ये सब?   कहानी का नाम सुनते ही

सुधीर ने जोर से हसना चाहा है,   पर आवाज पसलियो मे फसी रह गयी   सो जाऊ ? लोगो का आना जाना तो चलता ही रहेगा   अपने लोग चैन से सोने भी नही देत   नदी कितनी तेज बह रही है   छाती पर अनगिनत चिराग जलाये   बन्द पलको क नीचे चीजें कितनी साफ दिखती हैं   वह प्रतिभा फिर लौट आयी   सबको नाव पर बैठाकर किनारे की तरफ भेजकर   इसे डर नही लगता   डर ? डर किसका ?

किसका क्या ? डर तो हवा म   ठड की तरह होता है   हा ठड है, तो हवा मे शायद मौत की झुरझुरी महसूस हो रही है   बैठो प्रतिभा तुम लौट क्यो आई ?

तुम्हे पता है मैं क्यो आई हू ?

नही

तुम क्या चाहते थे मुझसे   मैं कहने आयी हू कि मैं तुमसे प्रेम करती हू

सुधीर की आखें हस दी हैं

मैं सच कह रही हू

तुम समझती हो मैं नही जानता था

जानते होगे अब मैं कह रही हू

जले चिराग मगर देर से चिराग जले।

नही अभी वक्त है।

वक्त ! वक्त तो है   पर   तुम्हें मालूम है प्रतिभा, इस दुनिया की व्यवस्था का बुनियादी कानून क्या है ?   जिसे जो चाहिए उसे वह न मिलने दो   आदमी समाज का गुलाम इसी नियम के तहत रहता है

तुम्हें मैंने अपनी दुनिया माना था दुनिया का कायदा तुम ही भला अब तो प्रतिभा सुबह होने वाली है अब चिराग जलाने से फायदा तुम जाओ कोई देखेगा तो क्या कहेगा सुबह होने वाली है तुम जाओ

हा अब ठीक है इतने विशाल कम्बल के नीचे इतने विशाल बिस्तर पर, मैं अकेला बगल मे बहती नदी और नदी तट पर बहते चिराग

अब ठीक है अब मैं कुछ ढग की बात सोच सकूगा किसने कहा था कि धरती गोल है गोल धरती तभी दिखती है जब उसके अन्दर नफरत ही नफरत भरी होती है हाथ मे ली और लुढका दी अन्दर प्रेम हो जाये तो सब कुछ चपटा दिखने लगता है सब चीजें ठहरकर चलने लगती हैं प्रतिभा कैसे ठहर-ठहरकर चलती है कितनी धरती उसके शरीर मे बन्द है वह आनन्द क्या कहा करता था जानना मुश्किल है कि आदमी और औरत मे से कौन स्पेस है और कौन टाइम पर यह है कि दोनो मिल जाते हैं तो टाइम और स्पेस चेतना गायब हो जाती है अकेले मे न स्पेस होता है न टाइम न धरती गोल है न चपटी वह सरकस होता है न आकाश मे लटके झूले एक पर लडका एक पर लडकी दोनो न उडान भरी एक ही वक्त और एक ही झूले पर से पाव हटा दिये कलाबाजी खायी और आकाश के केन्द्र बिन्दु पर एक ने दूसरे के हाथ पकड लिए

नही पकड सके तो दोनो जमीन पर और पूछो उन दोनो से कि धरती गोल है कि चपटी

सुधीर ने करवट ली मरते हुए चौपाए की तरह।

मुझे माफ करना प्रतिभा मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया कोई भी व्यक्ति अपने स्वभाव को पिंजरे म बन्द करके शरीर स काम नही ल सकता वह भी किसी के आधार या किसी की प्रसन्नता क लिए तुम्हें पता है प्रतिभा मैं तुम पर तुम्हारी इस शक्ति क कारण ही मुग्ध रहा। तुम मे जो करुणा मेरे प्रति पदा हुई वह मेरे इतने दिनो तक जीवित रहने का आधार बनी तुम यह न समझना मैं तुमसे नाराज होकर जा रहा हू तुम्हें पता है मैं क्यों जा रहा हू मेरे मुह का स्वाद खराब हो गया है अब कुछ भी अच्छा नही लगता और ऐसे मे डर है कि मैं हर चीज का

बेस्वाद मानने लगू इससे पहले कि लोग मुझे पागल समझने लगे मैं जा रहा हू तुम

पता नही मेरे मुह का स्वाद क्यो खराब हुआ है? एक अपराध एक मुह का स्वाद ठीक कर देता है और दूसरे के मुह का स्वाद खराब जरूर मेरा ही दोष रहा होगा मैं अच्छा आदमी नही था इसलिए अपराधा का स्वाद लेना चाहता था मैं जीवन भर बेस्वाद पीता रहा और मौत को अपनी तरफ खिसकाता रहा पर मौत फिर तुम मिली और तब मैंने जाना, जिस आदमी के मुह का स्वाद खराब हो गया हो उसका जीना कितना निरर्थक होता है सायरा मिली थी कुछ ले गई थी कुछ दे गई थी पर अस्तित्व को खो देने की ताकत उसमे नही थी आनन्द ने आत्महत्या कर ली क्योंकि उसकी जुबान किसी ने टेढी कर दी थी आत्महत्या नही करनी चाहिए मौत को धीरे धीरे आप पास खिसकाना चाहिए तुम धीरे धीरे मेरे पास खिसकती थी। और अब जब कोई उतना ही धीरे-धीरे मेरे पास खिसक रही है तो

सुनो मैं आजाद होने वाला हू तुम्हे पता है हमारे यहा आजादी किसे कहते हैं? किसी को सिर के बल रेत मे गाड दो शुतुरमुग की तरह और समझो कि वह आजाद है तो।

तो क्या? हिचकिया आने लगी हैं शायद तुम याद कर रही हो शायद रमा, सना याद कर रही है ठीक है जरा नदी पर तैरते यह सब चिराग तो बुझा दू और इतनी दूर पदल जाना है जरा देहली तो पट जाए मुझे अब कोई खुद से शिकायत नही है जो अपराध मैंने सत्रह साल की उम्र म किया था या जो अपराध मैंने सत्रह साल की उम्र मे होते देखा था किसी ने मुझ उसकी सजा नही दी मैंने खुद दी सुनो प्रतिभा तुम बुरा न मानना तुमने मेरी चेतना को धार दी धार लगी छुरी चुभती तो है पर खुडी छुरी जानती हो बहुत जुगुप्सा पैदा करती है वह तुमने मेरी चेतना को धार क्यो दी प्रतिभा तुम ऐसा न करती तो कुछ दिन और जी लेता कुछ दिन और कुछ दिन

ता चलता हू चाहता हू तुम्हे खबर हो जाती। रमा और सना तो शायद खुद ही महसूस कर लेंगी और हां, मेरी वह आने वाली पीढ़ी

सदीप और समीर उन्ह कोई बताएगा कि अपराध की बुनियाद पर खडा किया गया महल बहुत भुरभुरा होता है हो सके तो प्रतिभा तुम उन्ह बताना -

एक आखिरी बात करुणा के कारण तुम भी अन्दर के मच को नकारकर मुझे प्रेम का नाटक करती तो मैं मानता कि मुझ पर एक और हत्या का भार आ गया है तुमने मुझे बचा लिया प्रतिभा तुम।

फिर हिचकी आ रही है पर इस बार शायद अकेली नही है मुद्दत म छाती मे अटकी सास की गाठ को भी खोलकर ला रही है चलू मैं भी उन लोगो के साथ निकल चलू सुबह हो रही है उससे पहले कि आकाश म रग बिखरें, धरती के दूसरे छोर के अधेरे म खो जाऊ अलविदा प्रतिभा रमा सज्ञा।

13

सुबह हो गई है। हरे कोपीन म लिपटी खडी सद्यस्नाता धवलवदना कोठी की पहली मजिल की बालकनी पर एक आराम कुर्सी पर बैठी प्रतिभा नीले खुले स्कीन पर खुले खाली कनवास को देख रही है। उसके मन शरीर म कई दिन से एक उमस सी भरी है। रात भर बारिश बरसी है। कोठी के माथे पर बिखरे हरे भर बाल गीले हैं बादल सारी रात तक इन बालो को भिगोते रहे सूरज निकलते ही शरारत से भाग गए प्रतिभा जानती है गीला शरीर सूरज की तपिश से नही सूखता सूरज रोशनी देता है गीले मन को सुखान की ताकत सूरज म नही होती हा हवा तेज चले तो सूखी रेतीली हवा गीले स गीला शरीर सूख जाता है।

सना पास हो गयी है अच्छे नम्बरो मे बहुत 'ब्राइट' है भास्कर से अब नही मिलती पूछती हू तो बस हस देती है घर सभाल लेगी।

पहले कहते हैं, बहुत पढती सोचती थी अब सिफ घर तक जाती सडक के बारे म सोचती है

सुधीर तुमने अच्छा नही किया लौट आओ सब ठीक हो जाएगा।

रमा बीमार रहने लगी है उसका बदन सूख रहा है रूखी रेतीली हवा से।

सूरज ऊपर चढ रहा है
अविनाश आज सुबह चले गए।
बच्चे स्कूल से ोपहर को आएगे
कितनी देर से नौकर भी कुछ पूछने नही आया।
कितना अकेला माहौल है।
सूरज ऊपर चढ रहा है।
नौकर आया है—डाक बीबी जी।
एक ही चिटठी है।
प्रतिभा ने खोल डाली—सरकारी कागज है।
लिखा है।

एक लाश के पास की गीली रेत मे आपका पता लिखा पाया। आपको सूचना दी जा रही है आकर शिनाख्त करें। चिटठी मिलने के तीन दिन के अन्दर अन्दर। नही तो लावारिस मानकर अन्तिम सस्कार कर दिया जाएगा—पुलिस महकमा बनारस।

प्रतिभा ने सिर पीछे कुर्सी पर टिका दिया है। धीरे ही होठो ही होठो म कहा—कर दो—अतिम सस्कार भी तुम्ही कर दो।

और अविनाश क आने पर कहा है—सुधीर मर गया। अविनाश ने चौंककर पूछा है—खबर आयी है ? रमा को खबर कर दी ? मैं जाऊ ?

प्रतिभा न मोह जड भाव से कहा, "रहने दो, उनके लिए तो वह मुद्दत हुए मर गया था, अब तो सिर्फ मर लिए मरा है "

अविनाश न त्रस्त आखो से प्रतिभा की तरफ देखा है और उसके ठीक सामने कुर्सी पर बठकर उसके दानो घुटनो पर अपने दोनों हाथ रख लिए है

सूरज आकाश मे बनी किसी गुफा म फस गया है।

□□